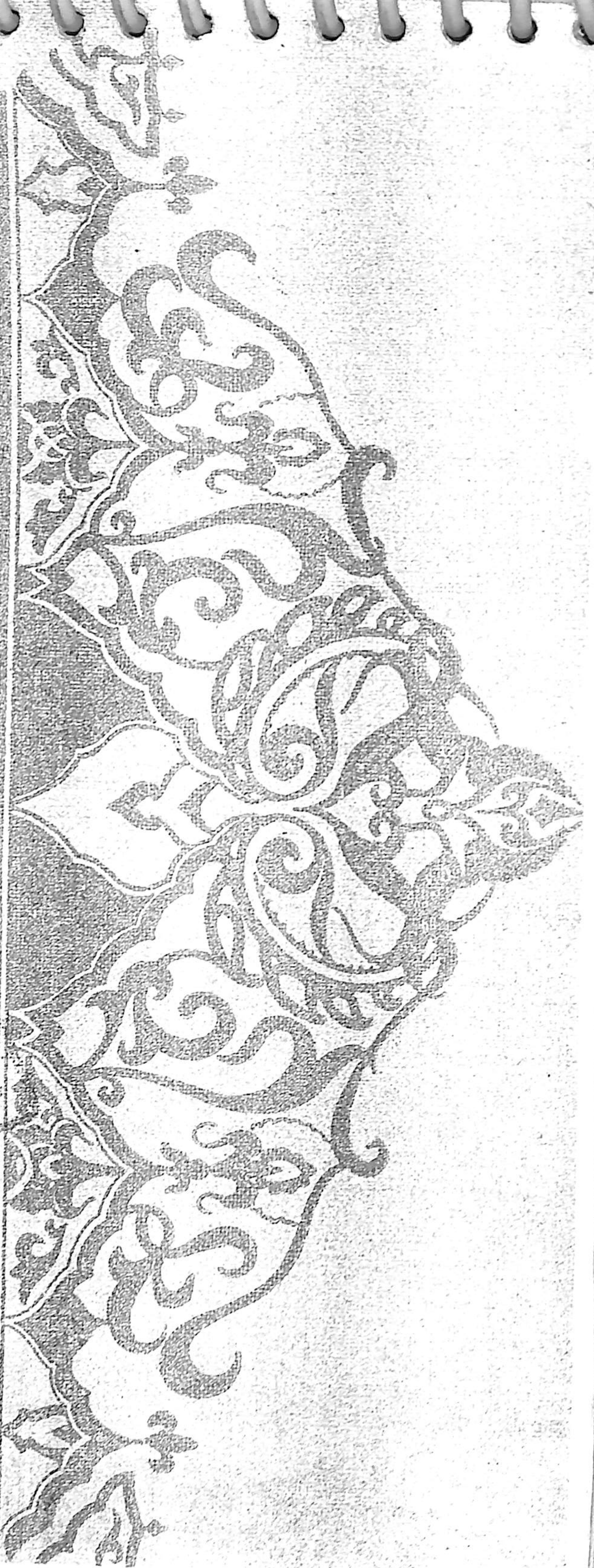


ईरान के सूफ़ी कवि

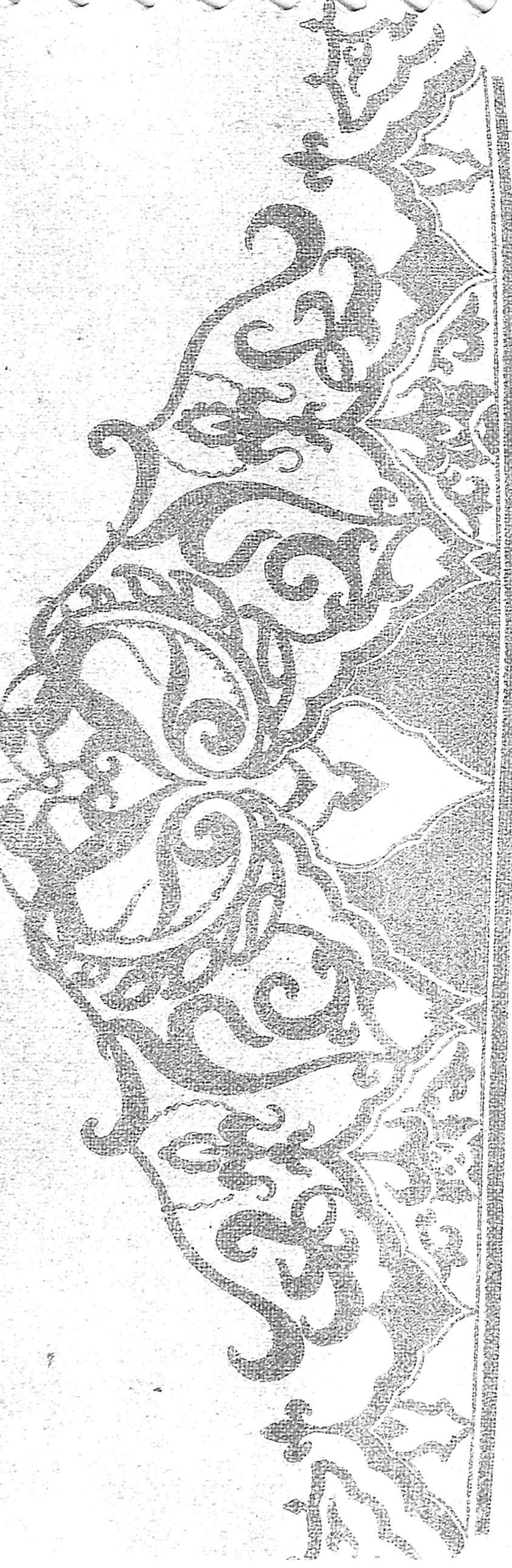
श्री बाँके बिहारी
श्री कन्हैयालाल



ईरान के सूफ़ी कवि

ईरान के सूफ़ी कवि

बाँके बिहारी
कन्हैयालाल



दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,

(पुस्तक मंदिर,)

त्यागरायनगर, मद्रास.

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा,
(पुस्तक मंदिर,)
त्यागरायनगर, मद्रास.

ईरान के सूफ़ी कवि

लेखक

श्री बाँकेबिहारी

श्री कन्हैयालाल



ग्रन्थ-संख्या—६८
प्रकाशक तथा विक्रेता
भारती-भण्डार
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
वि० '९६,
मूल्य ४॥)

मुद्रक—
कृष्णाराम मेहता
लीडर प्रेस, इलाहाबाद

दीवान सनाई
(प्राचीन पाण्डुलिपि का एक पृष्ठ)

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक में ईरान के सनाई, रूमी, अत्तार, शब्सतरो, निज़ामी, जामी, हाफ़िज़ और उमर ख़ैय्याम आदि नौ प्रसिद्ध सूफ़ी कवियों की चुनी हुई रचनायें संग्रहीत हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि इनके अतिरिक्त और प्रमुख सूफ़ी कवि हैं ही नहीं वरन् इन कवियों के प्रति मेरा विशेष प्रेम होना ही इस चुनाव का प्रधान कारण है। अनवरी आदि और अच्छे सूफ़ी कवियों को स्थान परिमित होने के कारण छोड़ देना पड़ा।

कविताओं के चुनाव के सम्बन्ध में मुझे केवल यही कहना है कि ये सूफ़ी सिद्धान्तों का निदर्शन हैं और प्रस्तुत संग्रह का ध्येय भी, रहस्यवादी सूफ़ी कवियों की वाणी में ही उनके सिद्धान्तों की व्याख्या कर देना है। कवियों के द्वारा ही सूफ़ी मत की अभिव्यक्ति सम्भव है क्योंकि कविता ही सूफ़ी मत का प्राण है।

मेरा विश्वास है कि साहित्यिक आनन्द के अतिरिक्त ऐसी पुस्तकों के अध्ययन से भिन्न राष्ट्रों की संस्कृति से परिचित होने में भी सहायता मिलती है।

संग्रह कवियों के क्रमानुसार है और रचनायें १००० से १५०० ईसवी अर्थात् पांच शताब्दियों तक विस्तृत सूफ़ीमत की रूपरेखा का सामान्य परिचय देती हैं।

अनुवाद केवल शब्दार्थ न होकर भावानुकूल रहे इस का प्रयत्न किया गया है। अनुवाद में मूल का सौन्दर्य्य अपेक्षाकृत घट जाता है इसीलिए कविताओं का मूल फ़ारसी रूप भी दे दिया है। इससे पाठकों को फ़ारसी के छन्द-सौन्दर्य्य, भाषा-माधुर्य्य और काव्य-संगीत का परिचय मिल सकेगा और अनुवाद उन्हें इन कवियों की भावना की अतल गहराई और कल्पना की ऊँची उड़ान तक पहुँचने में सहायता देगा।

सूफ़ियों और सूफ़ी मत से ही प्रस्तुत संग्रह का सम्बन्ध है अतः इन विषयों पर कुछ कहना असंगत न होगा। सामान्यतः विषय का विभाजन निम्न प्रकार से किया जा सकता है :—

(१) सूफ़ी शब्द

(२) सूफ़ी कौन हैं ?

(३) उनके मूल सिद्धान्त

१—सूफ़ी शब्द

इस शब्द के सम्बन्ध में बहुत सी धारणायें बन गई हैं। किसी की धारणा है कि यह फ़िर्क़ा कम्बल (सूफ़) पहनता था इसी कारण इन्हें यह नाम दिया गया। एक दूसरा मत है कि इनके पूर्वज अहले सुफ़्फ़ा अर्थात् हज़रत साहब के साथी थे इसीलिये यह सूफ़ी कहे जाने लगे। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि सूफ़ी का उद्गम फ़ैल सूफ़ (Philosophy) से है जिसका मूल अर्थ ज्ञान है।

इस सम्प्रदाय का हज़रत अली अर्थात् मुहम्मद साहब के दो सौ वर्ष बाद से अधिक विकास हुआ। इनके स्वतन्त्र विचारों के कारण इन पर अत्याचार बढ़ते गए परन्तु कुछ समय के उपरान्त इनके उच्च विचारों के कारण बहुतों ने इस सम्प्रदाय का आश्रय लिया और इसके सिद्धान्तों को समझ कर औरों को समझाने का प्रयत्न किया।

सूफ़ी विशेष रूप से ईरान का ही मत नहीं है। अपने वेदान्ती, भक्ति-मार्गी, कुछ अंशों में बौद्ध तथा पश्चिमीय रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय वाले सूफ़ियों से विशेष भिन्न नहीं हैं। मूलतः सब एक ही हैं परन्तु भिन्न भिन्न देशों में उनके नामकरण भिन्न हो गये हैं। वास्तव में वे सभी सत्य के अन्वेषक और अलौकिक प्रेम के भिक्षुक हैं।

२—सूफ़ी कौन हैं ?

सूफ़ी दिव्य प्रेम के भिक्षुक हैं। न इन्हें कुफ़्र से मतलब है न ईमान से, क्योंकि दोनों को यह ढोंग मानते हैं। संसार में हर ओर ढोंग देख कर तथा किसी को घंटा बजाते और किसी को बनावटी माला जपते देख कर इन का मन विरक्त हो उठता है। वे इन सब बाहर के बन्धनों को तोड़ कर पूजा जप और माला के पाखण्ड से बच कर अपने प्रियतम की खोज में ही तन्मय रहना चाहते हैं।

सूफ़ी के निकट मतमतान्तर ऊँच नीच, हिन्दू मुसलमान आदि का कोई मूल्य नहीं। वह तो संसार की विविधता में एकता देखता है, जहाँ कहीं उसे अपने प्रियतम का आभास मिल जाता है वहीं वह मस्तक झुका देता है। अपने मज़हब के सम्बन्ध में एक सूफ़ी ने कहा है :—

"मर्द आशिक़ रा न बाशद इल्लते,
आशिक़ां रा न देहे मिल्लते।
मज़हबे इश्क़ अज़ हमा दीनहा जुदास्त,
आशिक़ रा मज़हब व मिल्लत ख़ुदास्त।"

अर्थात् प्रेमी का लगाव संसारी इल्लत से परे है। उसका मज़हब कोई नहीं। सब दीनों से अलग वह केवल भगवत प्रेम ही से सरोकार रखता है।

यही वह अपने जीवन से बतलाना चाहता है। उसके निकट प्रेम ही साधन है प्रेम ही साध्य है। सूफ़ी उस परदे को हटाने का प्रयत्न करता है जो दैवी प्रेम को छिपाये है और अपने उद्देश्य को प्रेम ही द्वारा ढूँढ़ता है। अपनेपन को नष्ट करके, वह परमात्मा से मिलने की इच्छा रखता है। जहां एक बार वह परदा उठा कि वह प्रेम के अर्थ को जान जाता है, और उसमें तन्मय हो हरिभजन के आनन्द में डूबा अपने दिन बिता देता है।

३--सूफ़ी मत के मूल सिद्धान्त

सूफ़ी का प्रमुख ध्येय अपने अहं को मिटाना है। रूमी ने इसी को एक उदाहरण द्वारा बताया है :

" किसी ने प्रियतम के दरवाज़े पर जाकर खटखटाया। अन्दर से एक आवाज़ ने पूछा 'तू कौन है' ? उस ने कहा 'मैं'। आवाज़ ने कहा 'इस घर में 'मैं' और 'तू' दो नहीं समा सकते'। और दरवाज़ा नहीं खुला। वह दुःखी प्रेमी वापिस जंगल में तप करने चला गया। साल भर कठिनाइयां सह कर वह लौटा और उसने फिर दरवाज़ा खटखटाया। फिर उससे वही प्रश्न किया गया 'तू कौन है ?' प्रेमी ने जवाब दिया 'तू'। दरवाज़ा खुल गया। "

इस सत्य तक पहुँचने के लिए सूफ़ियों के मत में एक मार्ग बताया गया है और उसके समझने के लिए यह जान लेना ज़रूरी होगा कि इस मत के आधार-भूत सिद्धान्त कौन कौन से हैं। सूफ़ियों के मूल सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :

(१) परमात्मा का अस्तित्व है : वही केवल यथार्थता है और शेष सब माया है। प्रायः उसे ज्योति कहते हैं। केवल उसी का अस्तित्व है।

(२) सम्पूर्ण जगत यानी वाह्य सृष्टि सारहीन है। अपनी आन्तरिक ज्योति के अतिरिक्त वह भी असार है। यह आन्तरिक ज्योति पथ—प्रदर्शक का काम करती है और अन्तिम प्रकाश की ओर ले जाती है।

(३) सत्य की प्राप्ति जीवन का उद्देश्य है।

(४) इस की प्राप्ति बुद्धि या तर्क द्वारा नहीं हो सकती। वे इसके मूल सिद्धान्तों को नहीं समझ सकते। दर्शन शास्त्र या आत्मविद्या से कोई सहायता नहीं मिल सकती। सत्य, बुद्धि और ज्ञान के परे है। इस ईश्वरीय रहस्य का निर्णय तर्क शास्त्र द्वारा नहीं हो सकता।

(५) इस की प्राप्ति केवल आत्म—प्रकाश द्वारा हो सकती है। यह योगाभ्यास द्वारा प्राप्त हो सकता है, जिससे कुछ अनुभव प्राप्त होते हैं। प्रधानतः जब सांसारिक अस्तित्व का ध्यान नहीं रहता तब सिद्धि की अवस्था प्राप्त होती है। जब सीमित आत्मा इस महान ज्योति से मिलती है और उसमें विलीन हो कर अपने को भूल जाती है तभी यह अवस्था प्राप्त

होती है। या यों कहा जाय कि आत्मा ज्योति रूपी नदी में मिल जाती है जिसकी वह पहिले एक लहर मात्र थी।

(६) यह अभ्यास स्वयं नहीं किये जा सकते। गुरु का होना अति आवश्यक है। यात्रा आन्तरिक और रास्ता अदृश्य है। वही पथ—प्रदर्शक हो सकता है जो इस पर चल चुका है। वही इससे परिचित है। ऐसा व्यक्ति मुक्त होता है।

(७) बहुत खोज के बाद गुरु मिलता है, और वह तभी प्राप्त होता है जब कि जिज्ञासु की पिपासा बहुत अधिक हो जाती है। उस को पहचानना कठिन है, पर समय अनुकूल होने पर वह स्वयं जान लिया जाता है।

(८) गुरु में पूर्ण विश्वास बहुत आवश्यक है और गुरु की आज्ञा का पालन शीघ्र ही फलदायक होता है। विश्वास से ही शिष्य का मार्ग प्रकाश-मय हो उठता है, उसे दैवी दृष्टि प्राप्त होती है और अन्त में वह प्रेम सागर में मग्न हो जाता है।

यही सूफ़ी मत का सार है। प्रेमी सूफ़ी को एक एक पर विचार करना और चलना आवश्यक है।

सूफ़ियों का विश्वास है कि आत्मा को परमात्मा तक पहुँचने के लिए अनेक सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। उससे एकाकार होने के लिये 'नासूत, शरियत, मलकूत, जबरूत, मारफ़त, फ़ना, हक़ीक़त क्रमबद्ध सीढ़ियाँ हैं जिनको पार करने उपरान्त ही हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। इन सीढ़ियों पर पहुँचने का मार्ग 'अबूदयत, इश्क़, ज़ोहद, मारफ़त, वज्द, हक़ीक़त, वसल, फ़ना' है जिसे पथ-प्रदर्शक सच्चा गुरू बताता है। वास्तव में मार्ग और उद्देश्य का भेद एक सीमा तक पहुँच कर स्वयं ही मिट जाता है और साधक के निकट साधन और साध्य दोनों एक ही हो जाते हैं।

सूफ़ी के लिए दरिद्र परन्तु तप और पवित्रता से पूर्ण जीवन आवश्यक है। उसके लिए आत्म-निरीक्षण तथा मन की एकाग्रता अनिवार्य्य है जिसके साधन उसे सत्गुरु से ही प्राप्त हो सकते हैं। अपने ध्येय तक पहुँचे हुए सूफ़ी इसी को प्रमाणित करते हैं कि उनका अनुभव दिव्य ज्ञान के समान तर्क और बुद्धि के परे है। फिर भी उनके विश्वास की आधार-शिला होने के कारण वह अन्तर्गत अनुभव सत्य ही कहा जायगा। अस्तु हमारे तर्क और बुद्धि से परे जो एक अगोचर सत्य है सूफ़ी उसी में विश्वास रखता है। उसकी साधना उस तक पहुँचना है और उसकी सिद्धि उससे एकाकार हो जाना है।

यह विषय इतना विस्तृत है कि जिस पर विस्तार पूर्वक कुछ लिखना असम्भव है। सूफ़ियों के उत्पत्ति का अनुमान, मार्ग की अवस्थायें, रहस्य-

वादी के सात स्थान, गुरु की आवश्यकता, प्रेम की धारणा, मृत्यु का अनुमान आदि विषय ऐसे हैं जिनमें से एक एक पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं।

प्रस्तुत संग्रह का उद्देश्य सूफ़ी कविता का दिग्दर्शन मात्र था। गुल्शनेराज़, लवायह आदि पुस्तकें ऐसी हैं जिनमें सूफ़ी रहस्यवाद के सिद्धान्त विस्तार सहित दिये गये हैं। सादी की कृतियाँ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर जाने वालों के लिए नैतिक नियमों का संकलन है। उसकी तुलना बौद्ध साहित्य के अष्टाङ्गिक मार्ग से की जा सकती है।

हाफ़िज़ और उमर ख़ैय्याम प्रेम मदिरा का पान कराते हैं और अपने बाग़ के गुलाबों की भीनी भीनी सुगन्धि देते हैं। निज़ामी अपने गीतों में अलौकिक प्रेम की उमंग को लौकिक प्रेमी की भाषा में चित्रित करते हैं और महान रहस्यवादी जलालउद्दीन रूमी हमें इतनी ऊँचाई तक पहुँचा देते हैं जहाँ दिव्य स्पर्श का अनुभव होने लगता है।

वास्तव में सूफ़ियों की कविता में लौकिक आवरण में छिपी अलौकिकता हमें ऐसा आनन्द देती है जो चिर परिचित होने पर भी चिर नवीन है। पाठकों को मेरे इस कथन की सत्यता इस छोटी सी पुस्तक से मालूम हो जायगी।

मैं उन लेखकों तथा प्रकाशकों को धन्यवाद देता हूँ जिनकी निम्न पुस्तकों से मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में बड़ी मदद मिली :

लिटरेरी हिस्टरी आफ़ परशिया—ब्राउन—(४ जिल्दें—केम्ब्रिज यूनीवरसिटी प्रेस)

परशियन लिट्रेचर—लीवी

परशियन लिट्रेचर—जैक्सन

डिक्शनरी आफ़ इसलाम—ह्युज़

मनतक़ुत्तेर-अत्तार (नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

लैला मजनूँ—निज़ामी—(नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

गुलशने राज़—शब्सतरी—मुरत्तिबा व्हिनफ़ील्ड

दीवान हाफ़िज़ शीराज़—अबदुल फ़तह अबदुल रहीम—(इशातबए जामा उसमानया सरकार)

मिरातुल मसनवी—रूमी—मुरत्तिबा तलमाज़ हुसेन (आज़म स्टीम प्रेस—हैदराबाद)

रुबाईयात उमर ख़ैय्याम—(नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ)

गुलिस्ताँ व बोस्तां—सादी (मतबा, मुजबली, देहली)

दीवाने शम्शातबरेज़—अबदुल मलिक अरबी, गोरखपुर

लवायह् जामी—(मतबा मुजबली देहली)

रूमी—सुलेमान नदवी (मतबा मारिफ़ आज़मगढ़)

मैं स्वर्गीय मौलवी अन्सारी, पेश इमाम मुसलिम बोर्डिंग प्रयाग की स्मृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में कई महीनों तक आकर सूफ़ी कविता के अनुवाद में मुझे सहायता दी। उनकी सहायता के बिना सम्भवतः यह संग्रह कभी निकलता ही नहीं। मैं अपने मित्र श्री रामचंद्र टंडन का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रूफ़ ठीक करने में मुझे सहायता दी। इस पुस्तक के प्रकाशन और छपने में मदद देने के लिए मैं श्री राय कृष्णदास, डाक्टर मोतीचन्द तथा श्री वाचस्पति पाठक को धन्यवाद देता हूँ।

प्रयाग
१८-९-३९

बाँके बिहारी

क्रम

सनाई

(मृत्यु ११३१ ई०)

आपका पूरा नाम है अब्दुल मजीद मजदूद बिन अदम। आप ग़ज़ना के निवासी थे। किसी किसी की यह भी धारणा है कि आपका निवास स्थान बलख था। आप फ़ारसी भाषा के प्रथम तथा एक उच्च सूफ़ी कवि थे। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने अपनी 'लिटरेरी हिस्ट्री आफ़ परशिया' में आपके विषय में लिखा है :—

"मसनवी लिखने वाले तीनों लेखकों में आपका नाम सर्व-प्रथम है। अत्तार का नम्बर दूसरा, और जलालुद्दीन रूमी का तीसरा है।"

निस्सन्देह फ़ारसी भाषा के सूफ़ी कवियों में यह तीनों सर्व-प्रथम हैं। परन्तु यह जो उपर्युक्त स्थान इन लोगों को दिया गया है वह साहित्य के इतिहास तथा समय के अनुसार है। यदि कविता की उत्तमता, भाव-प्रदर्शन तथा विचारों की गम्भीरता पर दृष्टि डाली जाय तो रूमी का नम्बर पहला, अत्तार का दूसरा तथा सनाई का तीसरा होगा।

आरम्भ में सनाई भी एक दरबारी कवि थे और सुल्तानों की प्रशंसा में क़सीदे लिखा करते थे। परन्तु कुछ काल उपरान्त, सौभाग्य से इनकी भेंट एक सूफ़ी से होगई। जैसा कि दौलत शाह, जामी तथा अन्य इतिहास-लेखकों की पुस्तकों से प्रकट होता है। सत्संग का फल ऐसा हुआ कि जीवन के प्रति इनके विचारों में बहुत बड़ा उलट-फेर होगया। शम्श तबरेज़ के दीवान का सम्पादन करते हुए, उसकी भूमिका में, मौलवी अब्दुल मल्क़ अवरी ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

"एक दिन सनाई, सुल्तान महमूद की प्रशंसा में एक कविता लिख कर नदी की ओर जा रहे थे। मार्ग में एक शराबख़ाने के दरवाज़े से होकर निकले। उस समय लायेख़ार नामक एक प्रसिद्ध मदिरा-सेवी, साक़ी से कह रहा था कि सुल्तान महमूद के अन्धेपन के नाम पर एक प्याला भर दे। साक़ी ने कहा कि सुल्तान महमूद एक बड़ा भारी मुसलमान बादशाह है। दुनिया में मशहूर हो रहा है। उसके लिये ऐसा कहना मुनासिब नहीं है। लायेख़ार ने कहा कि वह बहुत बुरा आदमी है। अपने मुल्क को तो क़ब्ज़े में रख नहीं सकता है, दूसरे मुल्कों को जीतने के लिये फिर रहा है। यह कह कर उसने प्याला उठाया और पी लिया। अबकी बार उसने साक़ी से कविवर सनाई की भद्दी कविता के नाम पर दूसरा प्याला माँगा। साक़ी ने कहा कि सनाई तो एक बहुत ही ऊँची तबियत का शायर है। उसकी कविता तो बड़े मज़े की होती है। लायेख़ार ने कहा कि अगर वह ऐसा होता तो क्या ऐसे काम में लगा रहता। उसने कुछ बेहूदा बातें एक काग़ज़ पर लिख रक्खी हैं और इसके सिवा यह भी नहीं समझता कि वह किस लिये पैदा हुआ है।"

उसकी इन बातों से सनाई के हृदय पर एक ऐसा धक्का लगा कि उनके नेत्र खुल गये। सांसारिक बातों से हटा कर उन्होंने अपने दिल के घोड़े की बाग सत् की तरफ़ मोड़ दी और अब इस नवीन जगत में भ्रमण करने लगे। उन्होंने अपनी भावमयी कविता का आनन्द बहुतों को प्रदान किया। मौलाना रूम के सम्मुख यदि कोई उनकी प्रशंसा करता तो वह कह दिया करते थे, "यह तो सूर्य को अच्छा बतलाने के समान है।" मौलाना रूम ने अपनी मसनवी के आरंभ में सनाई के विषय में इस प्रकार लिखा है :—

"अत्तार रूह है, और सनाई उसकी दो आँखें। और मैं तो सनाई तथा अत्तार के पैरों के समान हूँ।"

प्रोफ़ेसर निकल्सन ने उनके विषय में कहा है, "मनुष्य का आरंभ विवेक-पूर्ण जीवन, सत, और तर्क से हुआ है।" जब रूमी के समान बड़े-बड़े विद्वानों ने सनाई की प्रशंसा की है तो उन्हें महान् कवि की पदवी से भूषित करना अत्युक्ति न होगा। बहुत से मनुष्य उनकी बड़ाई केवल इसी लिये करते हैं कि वह एक ईश्वर के प्रेम में मस्त कवि थे। परन्तु मेरी समझ में वह एक श्रेष्ठ सूफ़ी थे। और यद्यपि रूमी की समानता के न थे तब भी एक उत्तम और उच्च कवि थे। उनकी रचनाएं "दिल" और "इश्क़" बहुत ही उत्तम और उच्च भावनाओं की प्रेरक हैं।

सनाई की ख्याति उनके रचे हुए एक काव्य "हदीक़ा" के कारण और भी अधिक हो गई। इसमें ग्यारह सहस्र पद हैं। इन पदों में आध्यात्मिकता की तथा आत्मिक अनुभवों की झलक पूर्णरूप से वर्त्तमान है। ब्राउन का कहना है कि इस पुस्तक की प्रतियां बहुत सुलभ नहीं है। इनकी कविता के महत्व को समझने के लिये "दीवान" देखना आवश्यक है, जिसकी एक हस्तलिपि मेरे पास है और जिसमें से कई एक कविताएँ मैंने इस पुस्तक में उद्धृत की हैं। प्रोफ़ेसर ब्राउन का भी यही मत है। उनका कहना है कि "दीवान" में लिखी हुई कुछ कविताएँ "हदीक़ा" से भी कहीं उत्तम हैं, और उनमें सनाई के भाव-नियंत्रण और व्यक्तित्त्व की पूर्ण झलक विद्यमान है। उदाहरण के लिए उन्होंने निम्न आशय के पद उद्धृत किये हैं :—

"वह हृदय जो सांसारिक पीड़ाओं और कठिनाइयों से परे है बहुत ही उत्तम है।

उसे प्रेम की मुहर अथवा हस्ताक्षर भी नहीं प्रदर्शित कर सकते।

मैं केवल आपका प्रेम चाहता हूँ और यदि वैभव अथवा धन मेरे भाग्य में नहीं है तो उसकी कोई चिन्ता नहीं।

कारण कि धन का सम्बन्ध संसार से है और संसार तथा प्रेम कभी साथ-साथ चल नहीं सकते।

जब तक आप मेरे हृदय में निवास करते हैं तब तक वह सांसारिक पीड़ाओं का अनुभव भी नहीं कर सकता।" (लि० हि० प०, जिल्द २, पृ० ३१७)

सनाई की मृत्यु सन् ११३१ ई० में हुई।

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न-लिखित हैं :—

दीवान।

हदीक़ुल हक़ीक़त।

तरीक़ुत-तहक़ीक़।

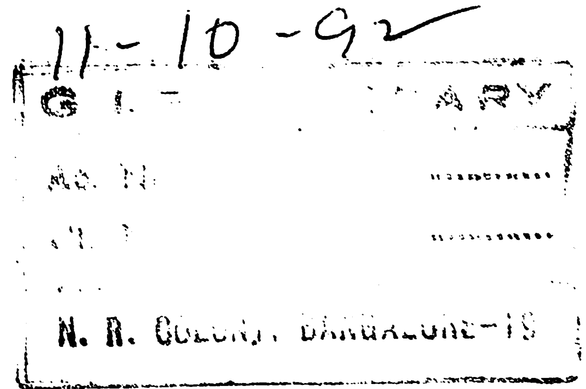
ग़रीबनामा।

कारनामा।

अक़्लनामा।

सैरुल इबालुल उलमद।

इश्क़नामा।



—

(१)

चंद अर्ज़ी दावाए दुरवेशो व लाफ़े आशिक़ी।
ना चशीदा शरबते आँ नाज़मूदा दर्दे दीं॥

(२)

तना पाए आँ रह नदारी चे पोई।
दिला जाय आँ बुत नदानी चे जूई॥
अर्ज़ी रहरवाने मुख़ालिफ़ चे चारा।
कि बर लाफ़ गाहे सरे चार सूई॥
अगर आशिक़ी कुफ़्रो ईमाँ यके दाँ।
कि दर अक़्ल रानास्त ईं नेक ख़ूई॥
तु जानी व अंकाशतस्ती कि शख्सी।
तु आबी व पिंदाश्ततस्ती सबूई॥
हमाँ चीज़ रा ता न जोई न याबी।
जुज़ीं दोस्त रा ता न याबी न जोई॥

---

(१) तू कब तक अपने इस उदासी वेष और प्रेम पर अभिमान करता हुआ बैठा रहेगा? न तो तूने अभी उसका शर्बत ही पिया है और न उस पीड़ा के आनन्द का अनुभव ही किया है।

(२) हे प्रेमी! जब तू उस मार्ग में आगे बढ़ने की क्षमता ही नहीं रखता तब व्यर्थ में क्यों दौड़ रहा है? ऐ मन! जब तू उस प्यारे का स्थान ही नहीं जानता तब व्यर्थ में क्यों उसकी खोज कर रहा है?

जब कि तू चौराहे पर खड़ा हुआ है तब इन भिन्न-भिन्न पथों पर चलने वाले पथिकों से किस प्रकार बच सकता है?

यदि तेरे हृदय में लगन लगी हुई है तो अपने धर्म और उसके विपरीत धर्मों को एक ही समझ। यह बुद्धिमानी की बात है और अच्छे स्वभाव से सम्बन्ध रखती है।

तू प्राण है, परन्तु तूने अपने आपको मनुष्य समझ लिया है। तू जल है परन्तु तूने अपने आपको घड़ा समझ रक्खा है।

अन्य वस्तुएँ खोज करने ही से प्राप्त होती हैं, परन्तु उस प्यारे के विषय में एक आश्चर्य की बात है। जब तक तू उसे पा न जायगा उसकी खोज ही न करेगा।

यक़ीं दाँ कि तू ऊ न बाशी व लेकिन।
चो तू दरमियाना न बाशी तू ऊई॥

(३)

ए दिल अर उक़बात बायद दस्त अज़ दुनिया बेदार।
पाकबाज़ी पेश गीरो राहे दीं कुन इख़्तियार॥
ताजो तख़्ते मुल्के हस्ती जुम्ला रा दरहम शिकन।
नक़्बे मोहरे मुफ़लिसी ओ नेस्ती दर जाँ निगार॥
पाय बर दुनिया नेही बर दोज़ चश्म अज़ नामो नंग।
दस्त दर उक़्बा ज़नो बर बंद राहे फ़ख़रो आर॥
चूँ ज़ना ता कै नशीनी बर उमीदे रंगो बू।
हिम्मत अंदर राह बंदो गाम ज़न मरदानावार॥
आलमे सिफ़ली न जाए तुस्त अर्ज़ी जा बर गुज़र।
जेहदे आँ कुन ता कुनी दर आलमे उलवी क़रार॥
ता न गरदी फ़ानी अज़ औसाफ़े ईं फ़ानी सक़र।
बे नेयाज़ी रा न बीनी दर बहिश्ते किर्दगार॥
गर चो बूज़र आरज़ूए ताजदारी रोज़े हश्र।
बाश चूँ मंसूरे हल्लाज इंतज़ारे ताजदार॥

विश्वास रख कि वह तुझमें सदैव वर्त्तमान रहता है, परन्तु जब तू बीच में से दूर हो जायगा उस समय बस वही वह रह जायगा।

(३) हे मन ! यदि तू उसे प्राप्त करना चाहता है तो संसार को त्याग दे और अन्तःकरण को शुद्ध करके उस धर्म मार्ग में आगे बढ़।

सिंहासन और ताज, राज्य और अस्तित्व सबको एक किनारे रख दे। भिखारी बन जा और यह समझ ले कि मैं कुछ हूँ ही नहीं।

इस संसार को ठुकरा दे, नाम और वैभव सबको लात मार कर आगे बढ़। तू अपने अभीष्ट पर ही ध्यान जमाए रख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा का कुछ विचार ही मत कर।

स्त्रियों के समान बनाव शृंगार करता हुआ कब तक बैठा रहेगा ? मार्ग में आगे बढ़ने का साहस कर और पुरुषों के समान दृढ़ता से क़दम आगे बढ़ा।

यह नाशवान् संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं हैं; अतएव यहाँ से चल दे और उस लोक में पहुँचने का प्रयत्न कर जिसके आगे अमर शब्द लिखा जाता है।

जब तक तू इस क्षणभंगुर जगत के मिथ्या बन्धनों को तोड़ कर शुद्ध न हो जायगा, तब तक तू ईश्वर के बनाए हुए उस स्वर्ग में शान्ति-पूर्वक नहीं रह सकता।

यदि तू मृत्यु के उपरान्त, उसके दर्बार में पहुँच कर ताज पाने की इच्छा

अज़ हदीसे इश्क़े जाँबाज़ाँ मज़न बर ख़ीरा लाफ़।
ता तू अंदर बन्दे इश्क़े ख़ेश माँदी उसतुवार॥

(४)

चूँ इश्क़ बदस्त आमद तन गोर कुनो ख़ुश ज़ी।
चूँ अक़्ल बपा आमद पै कोर कुनो ख़म ज़न॥
आतश अंदर ख़ाक़पाशाने हमा आलम ज़नद।
हर कि रा दर रूए आबे तुस्त बर सर बाद तू॥

(५)

ख़ारस्त हमा जहानो अंगह।
बूए तो दराँ मियाना वरदे॥
दर तो कि रसद बदस्त मरदी।
ता अज़तो न बूद पाए मरदे॥

(६)

ऐ न गुज़राए अक़्लो जानम।
वै ग़ारत करदा ईनो आनम॥

रखता है, जिस प्रकार कि बूज़र ने किया था, तो मन्सूर के समान अपने आपको मिटा कर उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न कर।

अपने आप को सबसे पहले मिटा डाल, तब सच्चे प्रेमियों के प्रणय की बातें करके अभिमान दिखा। यदि ऐसा नहीं कर सकता है तो अभिमान करना भी व्यर्थ है।

(४) यदि तुझे प्रेम प्राप्त हो जावे तो फिर शरीर से किसी प्रकार का सम्बन्ध मत रख (उसे समाधि में सुला कर आनन्द का जीवन व्यतीत कर) बुद्धि जब अपनी सीमा पर पहुँच जावे तो आगे बढ़ने का प्रयत्न छोड़ दे।

जिस मनुष्य के मुख पर तेरी आभा की झलक है, जिसके मस्तिष्क में तू बास करता है, वह समग्र संसार के ख़ाक उड़ानेवालों को भी जला कर भस्म कर देता है।

(५) यह सम्पूर्ण संसार एक काँटे के समान है और उसमें तेरी सुगन्ध एक गुलाब के पुष्प के समान व्याप्त हो रही है।

भक्ति द्वारा तुझ तक किसी की भी पहुँच नहीं हो सकती, जब तक कि स्वयम् तेरी ही तरफ़ से कोई सहायता न मिले।

(६) ऐ मेरे बुद्धि और प्राणों के साथी, और मेरे इस लोक और परलोक के सर्वस्व!

ऐ नक़्शे ख़याले तो यक़ीनम ।
वै ख़ाले जमाले तो गुमानम ।।
ता बा ख़ुदम अज़ अदम कम कम ।
चूँ बा तो शुदम हमा जहानम ।।

(७)

दीदए याक़ूब रा दीदारे यूसुफ़ तूतियास्त ।
जोहरए फ़रहाद बायद ता ग़मे शीरीं कशद ।।

(८)

न आँजा मेहतरी बाशद न आँजा केहतरी बाशद ।
न आँजा सरवरी बाशद न ख़ैलो नै हशम बीनी ।।
न दादे आलिमाँ मानद न ज़ुल्मे ज़ालिमाँ मानद ।
न जौरे जाबिराँ मानद न मख़दूमो ख़दम बीनी ।।
बज़ेरे ख़िश्तो गिल बीनी हमाँ शाहाने आलम रा ।
चुनाँ दिलवर हज़ाराँ पेश दर ज़ेरे क़दम बीनी ।।
बे आ ता अहले मानी रा दरीं आलम बग़म बीनी ।
बे आ ता लुत्फ़े रब्बानी व अहसानो करम बीनी ।।

तू ही मेरे विश्वास का आधार है, और तेरे ही सौंदर्य पर मुझे अभिमान है ।

मैं जब तक अपना निजत्व मानता हूँ, तब तक बहुत हेय और तुच्छ हूँ । परन्तु जब तेरे साथ हो जाऊँगा तब सारा संसार हो जाऊँगा ।

(७) याक़ूब की आँखों का सुरमा यूसुफ़ का दीदार है । उसी को लगा कर वह मिलन मन्दिर तक पहुँच सकता है । शीरीं के लिये तड़पने को फ़रहाद के समान हृदय की आवश्यकता है ।

(८) उस स्थान पर तुझे सभी समान दिखलाई देंगे । छोटे-बड़े का भेद-भाव कहीं भी दृष्टि में न आवेगा । वहाँ पर न कोई सेनापति होगा और न सेना ही ।

न विद्वानों की प्रशंसा ही शेष रहेगी; न आततायियों के अत्याचार ही रह जायँगे । न आतंकवादियों का आतंक रहेगा, न स्वामियों का ही अस्तित्व रह जायगा !

संसार के जितने भी सम्राट् थे, उन सभी को तू ईंट और मिट्टी के ढेर के नीचे दबा हुआ देखेगा, और इसी प्रकार सैकड़ों बलवानों तथा बहादुरों को पैरों के नीचे पड़ा हुआ पावेगा ।

यह आकर देख कि अपने आन्तरिक रहस्यों को समझने वाले लोग वास्तव में उदासीन रहते हैं, अथवा ईश्वर की दया, प्रेम और भक्ति का तमाशा देखते हैं ।

चे पाई गिर्द ईं मैदाँ चे गरदी गिर्द ईं ज़िंदाँ।
चे बंदी दिल दरीं वीराँ कि चंदीं रंजो ग़म बीनी॥

(९)

कज़ बराए पुख़्ता करदन किश्त आदम रा इलाह।
दर चेहल सुबहा इलाही तीनते पाकश ख़मीर॥
चूँ तोरा दर दिल ज़े बहरे दोस्त न बुवद ख़ार ख़ार।
नेस्त दर ख़ैरे तो ख़ैरे जाँ मकुन दर ख़ीर ख़ीर॥
अज़ हमा आलम गुज़ीरत अज़ हमा जानो दिलस्त।
आँ तुई कज़ कुल्ले आलम ना गुज़ीरी ना गुज़ीर॥
कम न गरदद गंजहाए फज़लत अज़ बदहाय मा।
तू निको कारी कुनो अज़ फ़ज़्ले ख़ुद बर मा मगीर॥
हेच ताअत नायद अज़ मा हम चुनीं बे इल्लते।
रायगाँ माँ आफ़रीदी रायगाँ माँ दर पिज़ीर॥

(१०)

दोस्ती दावा कुनी वो नफ़्स रा फ़रमाँ बरी।
गर समद ख़्वाही चिरा बाशी तलब गारे वसन॥

तू इस मैदान में इधर से उधर क्यों दौड़ रहा है और इस कारागार का चक्कर क्यों लगा रहा है ? इस ऊजड़ स्थान से क्यों प्रेम करने लगा है ? यहाँ रहने से तुझे बहुत से दुख उठाने पड़ेंगे, और सैकड़ों विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

(९) आदम की खेती को दृढ़ करने ही के लिये ईश्वर ने अपनी सृष्टि-रचना के समय उसकी पवित्र मिट्टी को चालीस दिनों में गूँधा था।

जब तेरे हृदय में दोस्त की चाह नहीं है और न उसके हाथ से निकल जाने का ही शोक है, तो तेरी भलाई, भलाई नहीं कही जा सकती। व्यर्थ में अपने आपको कष्ट मत दे।

यह सम्पूर्ण संसार नाशवान् है। दिल का भी कोई अस्तित्व नहीं है। एक तू ही ऐसा है जो इस सृष्टि में अमर कहा जा सकता है।

हमारे अनुचित कार्यों से तेरी दया की महिमा घटती नहीं है। तू दयालु है। हमारे इन कुत्सित कर्मों पर ध्यान न दे। हम तेरा दिया हुआ दण्ड सहन नहीं कर सकते।

हमसे इच्छारहित प्रार्थना संभव नहीं। यदि तूने हमें ऐसा उत्पन्न किया है तो बिना हमारी प्रार्थना के हमें स्वीकार कर ले।

(१०) तू ईश्वर का प्रेमी होने का भी दावा करता है और उस पर भी इच्छाओं के बन्धन में है। यदि तू वास्तव में, सच्चे दिल से भगवान् से लौ लगाए हुए है तो मूर्त्ति की इच्छा क्यों रखता है ?

हेच कस नसतूद दर यक हाल दो माबूद रा।
हेच कस न शुनूद रोजो शब क़रीं दर यक वतन ॥
ख़िरमने ख़ुद रा बदस्ते ख़ेशतन सोजेम मा।
किर्म पीला हम बदस्ते ख़ेशतन दोज़द कफ़न ॥
अज़ मुरादे ख़ेश बरख़ेज़ अर मुरीदी इश्क़ रा।
दर यमन साकिन न बाशी ता तु बाशी दर ,खुतन ॥
आज़ रा ख़ुरदन दिगर दाँ आरज़ू ख़ुरदन दिगर।
हर दो नतवानी तो ख़ुरदन या वलीदे या समन ॥
पाय आँ मरदाँ न दारी जामए मरदाँ मपोश।
बर्ग बे बरगी न दारी लाफ़े दरवेशी मज़न ॥

(११)

राहे अक़्ले आक़िलाँ रा रम्ज़े ऊ बर रम्ज़ बूद।
दर्दे जाने आशिक़ाँ रा दर्दे ऊ मरहम बुवद ॥

राहे दीं पैदास्त लेकिन सादिक़े दीदार कू।
यक जहाने शौक़ बीनम आशिक़े ख़ूँख़ार कू ॥

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं और इसी प्रकार रात और दिन का भी एक स्थान पर इकट्ठा होना असम्भव है। भगवान् से लगन लगा कर किसी दूसरी वस्तु की इच्छा हृदय में मत रख।

हम अपने ही हाथों से अपने खलिहान को (संचित सम्पत्ति को) नष्ट-भ्रष्ट कर डालते हैं। रेशम का कीड़ा भी अपने ही हाथों से अपने को कारागार में डाल लेता है।

यदि प्रेम तेरा उद्देश्य है तो सब से पहले अपने हृदय की आकांक्षाओं को मिटा डाल। उस सुन्दर स्थान (यमन) को प्राप्त करने के लिए इस स्थान (ख़ुतन) का त्यागना आवश्यक है।

लालच को मिटा देना और बात है, और आकांक्षाओं को मिटाना दूसरी बात है। ऐ आराम से दिन व्यतीत करने वाले, तू दोनों को एक साथ नहीं मिटा सकता।

तेरे पैर उन मुर्दों के पैरों से भिन्न हैं, अतएव उन के समान वस्त्र धारण मत कर। त्यागियों का सामान तेरे पास नहीं अतएव त्यागी बनने का दावा न कर।

(११) ज्ञानियों के ज्ञान मार्ग में उसके रहस्य बहुत ही गम्भीर हैं और प्रेमियों की पीड़ा के लिए वह मरहम का काम करता है।

सत्य धर्म्म का मार्ग कुछ कुछ दिखलाई अवश्य पड़ता है परन्तु पूर्ण रूप से हमारी दृष्टि में नहीं आता। प्रेम करने के लिये सभी स्थान उपयुक्त हैं परन्तु कष्टों और कठिनाइयों को झेल कर प्रेम करने वाला कोई भी नहीं है।

सालहा बाशद चो बुलबुल गुफ़तिश्रो ऊ ख़ुद नकर्द ।
बस बबाग़ आख़िर दमे किरदारे बेगुफ़ार कू ।।

सिर्रे बिस्मिल्लाह अगर ख़ाही कि गरदद ज़ाहिरत ।
चूँ "सनाई" अव्वल अलक़ाबे हसीं बायद निहाद ।।

ऐ ख़्वाजा तोरा दर दिल रैबस्तो सफ़ाए ।
बर हस्तिए ऊ चूँ कि हमीनस्त चे जाए ।।
गर बातिनत अज़ नूरे यक़ीनस्त मुनव्वर ।
बर ज़ाहिरे तो चूँ के हमी नेस्त सफ़ाए ।।
आरे चो बुवद सूरते तलबीस चो तहक़ीक़ ।
पैदा शवदो हर चे सवाबी व ख़ताए ।।
दावा के मुजर्रद बुवद अज़ शाहिदे माना ।
बातिल शवद अज़ अस्ल ज़े चूने व चराए ।।
ता शाहिदे वक़्ते तो बुवद हश्मतो नेमत ।
बीमारे दिलत रा न बुवद हेच शफ़ाए ।।
ईं हस्त वजूदश मुताल्लिक़ बरजाए ।
ईं हस्त हुसूलश मुतवल्लिद बरियाए ।।

वर्षों से तू बुलबुल के समान चहकता चला आ रहा है। कहता बहुत कुछ है परन्तु करता कुछ भी नहीं है। आख़िर कभी तूने शान्ति के साथ किसी बात पर अमल भी किया है ?

ईश्वर के रहस्य को तू तभी समझ सकेगा, जब कि पहले " सनाई " के समान अपने हृदय की पवित्रता को आवश्यक बना लेगा।

यदि तेरे हृदय में विश्वास के साथ ही साथ सन्देह भी है तो ईश्वर से मिलना असम्भव है।

परन्तु यदि तेरे हृदय में विश्वास का उजाला है तो वाह्य सन्देह की कोई चिन्ता नहीं है।

यदि सन्देह किसी प्रकार विश्वास के रूप में परिणत हो जावे तो निस्सन्देह अच्छे और बुरे का भेद प्रकट हो जावेगा।

निरर्थक किसी बात का दावा करना ठीक नहीं हुआ करता है। उसमें न तो किसी प्रकार की सचाई होती है और न कोई सार। ऐसे दावे के लिए किसी प्रकार के तर्क की आवश्यकता नहीं है।

जब तक संसारी पवित्रता और संसारी विभूतियाँ तेरा ध्येय हैं, उस समय तक तेरा रोगी हृदय कभी आरोग्य लाभ नहीं कर सकता।

संसार की श्रेष्ठ वस्तुएँ दुआ अथवा आशीर्वाद माँगने से ही प्राप्त हो सकती हैं, और संसारी वस्तुएँ छल तथा कपट से मिल सकती हैं।

ता ईं दो रफ़ीक़ाने तो हमराहे तो बाशन्द।
हरगिज़ न बुवद ख़्वाजा तुरा राह बजाए ॥
शौ नेस्त तू अज़ ख़ेशो मय अन्देश अज़ाँ पस।
यकसाँ शमुर ईं हर दो बजाए व वफ़ाए ॥
अन्दर सिफ़ते नेस्त चे नामे व चे नंगे।
बर बामे ख़राबात चे चुग़दे चे हुमाए ॥
गर निज़्दे "सनाई" न शुदे ख़िलअते अव्वल।
अज़ दीदा नमूदे रहे तहक़ीक़ सनाए ॥

ता कै ज़े हर कसे ज़े पए सीम बीमे मा।
वज़ बीमे सीम गश्ता निदामत नदीमे मा ॥
ता हस्त सीम बामा बीमस्त यारे ऊ।
चूँ सीम रफ़ दर पए ऊ रफ़ बीमे मा ॥
ऐ आँ कि मुफ़लिसीस्त बलाए अज़ीमे तो।
सीमस्त गोई अस्ल निशातो नईमे मा ॥
बेहतर बेदाँ कि हस्त तमन्नाए तो मुहाल।
सीमस्त वैहक अस्ले बलाए अज़ीमे मा ॥

अतएव जब तक यह दो प्रतिद्वन्दी तेरे साथ रहेंगे तब तक तू किसी भी पद को प्राप्त नहीं कर सकता है।

तू सब से पहले अपने अहंकार को मिटा डाल, बस इसके उपरान्त किसी प्रकार का भय न कर। समझ रख कि यह दोनों वस्तुएँ तेरे पद को बढ़ावेंगी।

मृत्यु के लिये गौरव और पद दोनों समान हैं। मदिरागृह की छत पर उल्लू हो अथवा हुमा, इससे किसी का क्या बनता बिगड़ता है ?

यदि "सनाई" को उसकी कृपा पहले ही से प्राप्त न हो जाती तो उसको उस तक पहुँचने का मार्ग भी नहीं दिखलाई देता।

हम चाँदी के लिये कब तक सब लोगों से भय खाते रहेंगे ? इसी चाँदी के डर से हमें लज्जित होना पड़ा है।

जब तक हमारी गाँठ में रुपया है तब तक भय भी हमारा साथ नहीं छोड़ सकता, परन्तु इसके जाते ही हमारा भय भी सदा के लिये किनारा कर जायगा।

तुम निर्धनता को सबसे बुरा समझते हो और कहते हो कि रुपया ही हमारी प्रसन्नता की कुंजी है।

ख़ूब समझ लो कि तुम्हारा यह विचार निरर्थक है और यह रुपया ही संसार में सब आपत्तियों की जड़ है।

आयन्द हर दो बाहम हर दो बहम रवन्द ।
गोई बिरादरन्द बहम बीमो सीमे मा ॥
गर मा हमा सियाह गलीमेम तुर्फ़ा नेस्त ।
सीमे सुपीद करदा सियह ईं गलीमे मा ॥
ऐ अज़ नईम करदा लिबासे ख़ुद अज़ नसेज ।
हाँ ता ज़े रूग किब्र नबाशी नदीमे मा ॥
गोई बरहना पायाँ बर मा हसद बरन्द ।
हर गह कि बिनगरन्द ब कफ़्शे अदीमे मा ॥
दर हसरते नसीमे सबाएम ए बसा ।
आरद सबा नसीमो नयारद नसीमे मा ॥
इमरोज़ पुख़तायेम चो असहाबे कहफ़ वार ।
फ़रदा ज़े गोर बाशद कहफ़ो रक़ीमे मा ॥
आलम चो मंज़िलस्तो ख़लायक़ मुसाफ़िरन्द ।
दर वै मुज़व्वरस्त मक़ामे मुक़ीमे मा ॥
हस्त आँ जहाँ चो सीमो फ़लक सीम दारे ऊ ।
मा गल्लादार अज़ो व अमल हम क़सीमे मा ॥

रुपया और भय संसार में साथ ही साथ आते हैं और चले जाते हैं । ऐसा ज्ञात होता है मानों वे दोनो सगे भाई हैं ।

हमारे भाग्य के मन्द होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है । इसी रुपये ने हमें ऐसा बनाया है । इसी के न होने से हमारी गणना अभागों में है ।

अपने वैभव से भी बढ़ कर तुमने उत्तम वस्त्र धारण किये हैं । सावधान ! अभिमान और अहंकार को लेकर हमारे पास मत आना ।

तुम कहते हो कि नंगे पाँव फिरने वाले हमारे जूतों को देख कर डाह करते हैं । परन्तु यह बात नहीं है । वह तुम्हारी नरी की जूतियों पर दृष्टि भी नहीं डालते ।

हम तो वायु के नरम और मस्त कर देने वाले झोंको के इच्छुक हैं । शीतलता के स्थान में वायु में कभी ताप भी हो सकता है । परन्तु वह हमारे लिये नहीं है ।

आज हम सुन्दर भवनों में बड़े आनन्द से शान के साथ लेटे हुए हैं, कल क़ब्र में हमें शरण लेनी पड़ेगी ।

संसार एक यात्रा है, और मनुष्य यात्री हैं । यहाँ पर किसी का विश्राम करना केवल एक धोखा है ।

परन्तु वह दूसरा लोक चाँदी के समान उज्जवल है । आकाश उसका कोषाध्यक्ष है । हमारे पास गल्ला बहुत है और आशाएँ बढ़ी हुई हैं ।

तीमारे बीम दाशतन्द अज़ मा हिमाक़त असत ।
तीमार दारद आँ के बमा दाद बीमे मा ॥

मा अज़ ज़माना उम्रे बक़ा वाम करदएम ।
ऐ वाए मा के हस्त ज़माना ग़रीमे मा ॥

दर वस्फ़े ईं ज़मानए नापायदारे शूम ।
बिशनौ कि मुख़तसर मसले ज़द हकीमे मा ॥

गुफ़ आँ ज़माना मारा मानिन्दे दाया अस्त ।
बस्ता दरे उमींदे रज़ीओ फ़तीमे मा ॥

ता ऊ बजामो दिल हमा गाँ रा बे परवरद ।
मानिन्दे मादराने शफ़ीक़ो रहीमे मा ॥

चूँ मुद्दते बरायद बर मा अदू शवद ।
अज़ बादे आँ के बूद सदीक़े हमीमे मा ॥

गर दानदत बदस्त शबो रोज़ो माहो साल ।
चूँ दाले मुनहनी अलिफ़े मुस्तक़ीमे मा ॥
अंगह फ़रो बरद बज़मीं बे ख़यानते ।
आँ क़ामते मुक़व्वमो जिस्मे जसीमे मा ॥

भय की चिन्ता करना हमारे लिये मूर्खता है । भय उसी के लिये छोड़ दो जिसने उसे उत्पन्न किया है, तथा जिसने तुम्हें वह प्रदान किया है ।

हमने ज़माने से दो वस्तुएँ ऋण में ली हैं । एक जीवन और दूसरी अमरता । हमारी बर्बादी इसी कारण हो रही है कि ज़माना यह चाहता है कि हम उससे ऋण लेते रहें ।

इस खोटे और भाग्यहीन ज़माने के लिये विद्वानों ने एक छोटा सा उदाहरण दिया है ।

वह कहते हैं कि यह हमारे प्रति एक धात्री के समान है । दूध पीने वाले तथा बड़े बच्चे दोनों ही इससे ऐसी ही आशा रखते हैं ।

हम चाहते हैं कि वह दिलोजान से सबका पालन-पोषण करे और हमसे एक दयालु माता का सा बर्त्ताव करे ।

परन्तु कुछ समय उपरान्त वही हमारा शत्रु हो जाता है । गोकि किसी समय वह हमारा एक शुभेच्छु मित्र था ।

समय ने—रात-दिन, वर्षों और महीनों ने—तुम्हारे ऊपर वह विपत्तियाँ गिराई हैं कि तुम्हारी कमर झुक गई है ।

अन्त में यही आपत्तियाँ एक घातक के समान तुम्हें मृत्यु के मुख में ढकेल देती हैं ।

पैवस्ता पेशे चश्म हमी दारद अनक़रीब।
अन्दामहाए कोफ़तए चूँ हशीमे मा॥
गोई सफ़ीह बूद फ़लाँ शायद अर बेमुर्द।
चूँ आँ सफ़ीह मुर्द नमीरद हकीमे मा॥
मा ज़ेरे ख़ाक ख़ुफ़तओ मीरास ख़ोर मा।
दादा व बाद ख़िर्मने हाए क़दीमे मा॥
गोई कि बाद मा चे कुनन्दो कुजा रवन्द।
फ़रज़न्दगानो दुख़तरगाने यतीमे मा॥
ख़ुद याद नावरी कि चे करदन्दो चूँ शुदन्द।
आँ मादरानो आँ पिदराने क़दीमे मा॥
पिन्दार गर तवल्लुदे अक़लस्त ला मुहाल।
आँ तुर्फ़ा बिनगरन्द कि नफ़से लईमे मा॥
शुद अक़्ले मा अक़ोल कि बस मा तग़ाफ़ुलेम।
फ़रयाद अज़ीं तग़ाफ़ुले अक़्ले अक़ीमे मा॥
गर जन्नतो जहीम नदीदी बेबीं के हस्त।
शग़लो फ़राग़ो जन्नते मा ओ जहीमे मा॥

यही समय हमारे टूटे हुए चूर-चूर शरीर को सदैव अपनी आँखों से देखता रहता है। उसमें दया का भाव कम है।

ऐसा ज्ञात होता है कि जो मनुष्य मर गया है वह जाहिल था और उसे मरना ही चाहिये था। अब ऐसे जाहिल की मृत्यु के उपरान्त हमारे विद्वानों की क्या अवस्था होगी ?

हम समाधिस्थ होंगे और हमारे उत्तराधिकारी हमारी सम्पत्ति को पाकर ख़ूब मज़ा उड़ाते होंगे।

हमारी मृत्यु के उपरान्त न मालूम हमारे बच्चों की क्या दशा होगी ? वे न मालूम क्या खायेंगे, पियेंगे और कहाँ जायँगे ?

तुम स्वयम् इस बात का विचार नहीं करते कि तुम्हारे अगले पुरुषाई न मालूम कहाँ चले गये और क्या कर गये।

अभिमान और अपनत्व का आविर्भाव होना बुद्धि से आवश्यकीय है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि हमारी तबिअत बहुत ही नीच है।

हम बहुत ही अधिक सुस्त हैं और इसी लिये हमारी बुद्धि भी मन्द पड़ गई है। इस मन्द बुद्धि के आलस्य पर शोक है।

तूने नरक नहीं देखा है। समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है।

रैहाने रूहे मा चे फ़राग़स्तो फ़ारेग़ी ।
मशग़ूलयस्त शग़लें अज़ाबे अलीमे मा ।।
सर गश्ता शुद "सनाई" यारब तु रहनुमाए ।
ऐ रहनुमाए ख़ल्क़ ख़ुदाए रहीमे मा ।।
मारा अगरचे फ़ेल ज़मीमस्त तू मगीर ।
यारब बा फ़ज़्ले ख़ेश्त ज़े फ़ेले ज़मीमे मा ।।

(१२)

ऐया माँदा बेमूजिबे हर मुरादे ।
हमा साल दर मेहनतो इज्तेहादे ।।
न दर हक़्क़े ख़ुद मर तोरा इनज़्याजे ।
न दर हक़्क़े हक़ मर तोरा इनक़यादे ।।
चो दीवानगाँ माँदई दर तफ़क्कुर ।
कि गोई तुरा चूँ बरायद मुरादे ।।
ज़े हिर्से दो रोजा मुक़ामे मजाज़ी ।
बहर गोशए करदा ज़ातुलइमादे ।।
हमाना बख़ाब अन्दरी ता बेदानी ।
कि मारा जुज़ी नेस्त दीगर मआदे ।।

हमारा जीवन आनन्दमय कैसे हो सकता है ? विश्वास तथा बेफ़िक्री से । कार्य में व्यस्त रहना तथा चिन्ता से परे रहना भी दुख देने वाली वस्तुएँ हैं ।

भगवन् ! "सनाई" सीधे मार्ग को भूल गया है । उसे फिर उसी सत्य मार्ग पर ला । तू ही संसार का पथ-प्रदर्शक और दयालु दाता है ।

यह सत्य है कि हम पापी हैं । हमारे कर्म बुरे हैं । परन्तु तू अपनी दया दिखला और हमें क्षमा प्रदान कर ।

(१२) तू बिना किसी इच्छा या स्वार्थ के वर्ष भर परिश्रम तथा प्रयत्न करता रहा है ।

न तो तू अपनी ही चिन्ता करता है और न ईश्वर की ही उपासना करता है ।

बस एक पागल के समान कभी इस गली में और कभी उस गली में घूमा करता है ।

तेरी कोई इच्छा किस प्रकार पूर्ण हो सकती है जब तू इस दो दिन के संसार में भवन निर्माण करने में लगा हुआ है ?

तू सांसारिक कार्यों में इस प्रकार संलग्न है, मानो स्वप्न देख रहा है । तनिक सावधान होजा और समझ ले कि तुझे और भी कहीं लौट कर जाना है ।

चे बेचारा मरदी चे सर गश्ता ख़लक़ी।
चे बर बातिले बाशद्त इसतिनादे ॥
मजाज़ीस्त ईं शूम दुनिया कि दायम।
तोरा नेस्त इल्ला बरू अत्तमादे ॥
पस ऐ ख़्वाजा दावा रसद आँ कसे रा।
कि माबूदे ऊ गश्ता बाशद जमादे ॥
पसंगह रसीदन बतह्क़ीक़े माना।
तमन्ना कुनी बा चुनीं एतक़ादे ॥
बेदानी हमीं मङ्क आँ क़द्र बारे।
कि जाए मईशत दो बाशद क़रादे ॥
तु गर राहे हक़ रा हमी जोई अव्वल।
तलब करदा बाशद सबीलुर रिशादे ॥
ज़ियादत बुवद मर तुरा हर ज़माने।
ब आमालो अफ़आले ख़ेश एतमादे ॥
पस अज़ नेस्ती साज़े आँ राह साज़ी।
कुजा बेहतर अज़ नेस्ती नेस्त ज़ादे ॥

तू लाचारी और विपत्तियों का शिकार हो रहा है। न मालूम तुझे क्या हो गया है जो एक निरर्थक बात पर विश्वास कर रहा है ?

यह अनित्य संसार तेरे लिये सुनहला है—मन-मोहक है—और तूने भूल से उसी में चित्त लगा रक्खा है।

फिर बता कि वह मनुष्य, जो एक सारहीन वस्तु की ओर आकर्षित हो रहा है, ईश्वर से मिलने का दावा किस प्रकार कर सकता है ?

और फिर संसार में इस प्रकार संलग्न रह कर तू आन्तरिक भेदों को किस प्रकार समझ सकता है ?

परीक्षा करने से तुझे यह तो ज्ञात ही हो जायगा कि जीवन व्यतीत करने के लिये दो संसार हैं।

यदि तू ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग समझ लेना चाहता है तो सबसे पहले एक सीधे और सच्चे मार्ग का इच्छुक बन।

इसके उपरान्त तेरी सदैव उन्नति होती रहेगी और तू स्वयम् अपने कार्यों पर विश्वास करेगा।

उस समय तू अपने आपको नष्ट करके उस मार्ग पर चलने को प्रस्तुत होगा, जहाँ कि अहंकार को मिटा डालने से बढ़ कर और कोई वस्तु ही नहीं है।

सलाहे "सनाई" दरीनस्त दायम ।
शवद दर रहे इश्क़ हमचूँ रिशादे ॥
बे गुफ़म सलाहे दिल अज़ रूए माना ।
सलाहस्त ईं मशहूर अन्दर फ़सादे ॥
न बीनी कि परवानओ शमा हरगिज़ ।
कि बर बातिनश ख़ीरा गरदद विदादे ॥
शवज़ ख़ुद वरी गर्दतावर हक़ीक़त ।
तुरा बे तो हासिल शवद इनहिदादे ॥
बरी गरदद अज़ ख़ेशतन चूँ "सनाई" ।
कुनद ऊ ज़े ख़ेशी ख़ुरा चूँ ज़ियादे ॥

(१३)

अगर मुश्ताक़े दीदारी व दायम ।
उमीदे दीदने दीदार दारी ॥
ज़े दीदारत न पोशीदस्त दीदार ।
बे बीं दीदार गर दीदार दारी ॥
दिला ता चूँ "सनाई" दर रहे दीं ।
तरीक़े ज़ोहदो इसतिग़फ़ारदारी ॥
मुसलमाँ नेस्ती ता हमचो गबराँ ।
ज़े हस्ती बर मियाँ ज़ुन्नार फ़दारी ॥

"सनाई" की भलाई इसी में है कि वह प्रेम का सदैव सीधा और सच्चा मार्ग पकड़े रहे।

मैंने अपने आन्तरिक विश्वास के बल पर मन को सत्यता का वर्णन कर दिया है। यह एक बहुत ही उत्तम वस्तु है। इसकी गणना बुराई में मत कर।

क्या तुम नहीं समझते कि दीपक और पतंगे में कैसा प्रेम है? पतंगा सदैव उसी के प्रणय में मस्त रहता है। वह कभी किसी दूसरे का ध्यान भी नहीं करता है।

अपने आपको भुला दे। हक़ीक़त (ईश्वरीय वास्तविकता) तक पहुँचने का यही उपाय है। इसी उपाय से तू अपने आपे को भी दूर कर सकता है।

जब "सनाई" का अपनत्व मिट जायगा तब वह अपनत्व का अभिमान रखने वालों के समान कैसे रहेगा?

(१३) यदि तेरे हृदय में दर्शनों की लालसा लगी हुई है, यदि यही तेरा अभीष्ठ है,

तो स्मरण रख कि वह तेरी दृष्टि से छिपा नहीं है। अगर तेरी (ज्ञान) नेत्रें हैं तो उसको देख ले।

ऐ दिल! तू "सनाई" के समान धर्म-मार्ग में पवित्रता और विवेक का ढोंग कब तक रक्खेगा?

क्या तू धर्म-मार्ग में दृढ़ नहीं है जो अग्नि की पूजा करने वालों के समान अपनी कमर में निजत्व का धागा बाँधे हुए है?

(१४)

अया अज़ चंबरे इसलाम दायम करदा सर बेरूँ ।
ज़े सुन्नत करदा दिल ख़ारी ज़े बिद्अत करदा सर मशहूँ ।।
हवा हमवारा शैताने शुदा बर नफ़्से तो सुलताँ ।
तनत रा जेह्ल पैरायः दिलत रा कुफ्र पैरा मूँ ।।
अगर दर एतक़ादे मन बशक्की ता बनज़्म आरम ।
अला रग़मे तो दर तौहीद फ़स्ले गोशदार अकनूँ ।।
तुरा पुरसीद ख़्वाहम मन ज़े सिर्रे बैज़ए मुर्ग़े ।
चे गुफ़्तस्त अन्दरीं माना तुरा तलक़ीने अफ़लातूँ ।।
सुपैदो ज़र्द मी बीनम दो आब अन्दर यके ख़ाना ।
वज़ाँ यक ख़ाना चन्दीं गूना मुर्ग़ आयद हमीं बेरूँ ।।
न गोई अज़ चे मानी गश्त परें ज़ाग़ चूँ कतराँ ।
ज़े बहरे चे दुमे ताऊस रंगीं शुद चु बू क़लमूँ ।।
हुमायो चुग़द रा आख़िर चे इल्लत बूद दर ख़िलक़त ।
चेरा शुद दर जहाँ ईं शूमो आँ शुद ईं चुनीं मैमूँ ।।
न गोई कज़ के मी गरदद चकाक इलहाने मूसीक़ार ।
न गोई कज़ चे मी मानद तदर्व अनवाए असक़ातूँ ।।

---

(१४) हे मनुष्य ! तूने सच्चे धर्म का त्याग कर दिया है। उसके पवित्र नियमों को छोड़ कर इन्द्रियों का दासत्व स्वीकार कर लिया है।

तेरे सिर पर सदैव शैतान सवार रहता है और धर्म्म-विरुद्ध आचरण करने तथा अपनी इच्छाओं को पूरा करने में तुझे अतीव आनन्द आता है।

यदि तुझे मेरे विश्वास के प्रति कोई सन्देह है तो मैं तेरे सम्मुख कविता की कुछ पंक्तियाँ कहता हूँ। यह उसके प्रति विश्वास प्रकट करती हैं। इन्हें ध्यान से सुनना।

मैं तुझसे चिड़िया के अंडे का राज़ पूछता हूँ। बता, अफ़लातून ने इस विषय में क्या कहा है ?

मैं देखता हूँ कि एक अंडे के अन्दर सफ़ेद और पीले, दो तरह के पानी हैं, और इसी अंडे से सैकड़ों प्रकार के पत्ती उत्पन्न होते हैं।

अब यह बता कि कौवे के पर काले क्यों हुए और मोर की पूँछ रंग बिरंगी क्यों हुई ? उसमें इतने रंगों का समावेश होने का क्या कारण है ?

उल्लू और हुमा के जन्म में क्या ख़राबी है, जिसके कारण उल्लू को लोग बुरा मानते हैं और हुमा का देखना शुभ शकुन समझा जाता है।

पपीहे को ऐसे मधुर स्वर में सुन्दर राग अलापना कौन सिखाता है, और चकोर को इतने सुन्दर वस्त्र पहनने को कौन देता है ?

तफ़क्कुर कुन यके दर ख़िलक़ते शाहीनो मुरग़ाबी ।
वे गोई क़ज़ चे मानी रास्त ईं ज़ीं सक़ अज़ आँसू ।।
यके चूँ रायते सीमीं हमेशा दर हवा नाज़ाँ ।
यके रा ज़ौरक़े ज़र्री रवाँ हमवारा दर जैहूँ ।।
गुरेज़ाँ ईं के चूँ गरदद बजाँ अज़ चंगे ऊ ऐमन ।
शिताबाँ आँ के चूँ रेज़द ज़े हिर्सो शहवा अज़ वै ख़ूँ ।।
अजबतर ज़ीं हमा आनस्त कीं परिन्दा मुर्ग़ाँ रा ।
मुरत्तब मसकने बादस्त दीगर साँनो दीगर गूँ ।।
यके रा बेशए साज़ी यके रा वादिए आँमू ।
यके रा क़ुल्लए क़ाफ़ो यके रा साहिले जैहूँ ।।
यके ख़ुद रा बतमए आँ बगरदूँ बुर्दा चूँ क़ारूँ ।
यके ख़ुद रा ज़े बीमे आँ व आब अफ़गन्दा चूँ ज़ुन्नूँ ।।
नगीरद बाद रा चंगाँ नशोयद आब रा रंगीं ।
यके ख़ूनीन इलमासस्त व दीगर ज़ौरक़े जौतूँ ।।
नगोई ता चेरा करदन्द फ़ेलो चंगे आँ ज़ाहन ।
नगोई ता चेरा दादन्द रंगे ईं बराँ अफ़सूँ ।।

शाहों और मुर्ग़ाबियों की तरफ़ ध्यान से देख कर बताओ कि इन में इतना अन्तर किस प्रकार हुआ ? किसने उनकी रचना में इतना भेद डाल दिया ?

जिसके कारण एक रुपहले झंडे के समान वायु में फहराती रहती है और दूसरी एक सुनहली नाव के समान पानी में तैरा करती है ।

मुर्ग़ाबी शाहों के पंजे से अपने प्राण बचाने के लिये छिपती फिरती है, और शाहें उनका रक्त बहा कर और उनको खाकर अपनी क्षुधा शान्ति करने के उद्योग में लगी रहती हैं ।

इससे भी अधिक आश्चर्य की एक दूसरी बात है । यह दोनों पक्षी वायु में रहने वाले हैं । परन्तु इस पर भी भिन्न-भिन्न हवाओं में रहते हैं ।

किसी को जंगल की हवा भली मालूम होती है और किसी को जलाशयों के किनारे की वायु लाभदायक है । कोई-कोई क़ाफ पर्वत की चोटियों पर रहना पसन्द करती हैं और कोई नदियों के किनारे ।

एक पक्षी दूसरे का शिकार करने के लिये आकाश में चक्कर लगाया करता है और दूसरा उसके भय से नदी में जाकर छिप रहता है ।

शिकारी पक्षी का कठोर पंजा वायु को थामने में असमर्थ है और जल-पक्षियों का रंग नदी के पानी से नहीं धुलता ।

बताओ किस कारण शिकारी पक्षी का दिल इतना कठोर है और पंजा इतना दृढ़ तथा जल के पक्षी का रंग इतना सुन्दर ?

वगर हमचूँ मने आजिज़ दरीं मानी कि पुरसीदम।
चे गोई दर सबाते तो सराये हब्बे अफ़तीमूँ॥
न माली हर निहाले रा चो मालस्त हस्त ज़ाबो गिल।
ज़े बहरे तफ़्के ख़ुरशीदस्त चूँ लुत्के हवा मक़रूँ॥
चेरा बर यक ज़मीं चंदीं नबाते मुख़तलिफ़ बीनम।
ज़े गुल वज़ नरगिसो वज़ यासमीनो अज़ समन मौज़ूँ॥
हमेदूँ मेख़ुरानद आब लेकेशाँ हमी रोयद।
बरंगे रंगे सिबरो संबुलो बारंगे मा ज़रयूँ॥
अगर इल्लत तबाए शुद बजूदे जुमला पस चूँ शुद।
यके मुमसिक यके मीलो यके आरद यके ताहूँ॥
अज़ अंगूरस्तो ख़शख़ाशस्त अस्ले उनसुरे हरदो।
चेरा दानिश बरद बादा चेरा ख़ाब आवरद अफ़यूँ॥
हमाना ईं कि मन गुफ़तम तबाए कर्द न तवानद।
न अफ़लातूनो न अंबर व ज़रक़ो हीलओ अफ़सूँ॥

अच्छा, यदि इस विषय में तुम भी मेरे ही समान अनजान हो और इन समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ हो तो अपने ही सांसारिक रहन सहन को देखो और समझो।

जब सूर्य तपता है, और हवा गर्म होती है, तो तुम वृक्ष की छाया की शरण क्यों लेते हो? यह इस लिये कि तुम मिट्टी तथा पानी के संयोग से उत्पन्न हुए हो और इसी लिये चित्त को प्रसन्न करने वाली हवा की भी आवश्यकता है।

फिर यह बताओ कि पृथ्वी पर नाना रंग की वस्तुएँ क्यों उत्पन्न की गई हैं? गुलाब, नरगिस, चमेली और बेला इत्यादि के पुष्प क्यों खिलते हैं?

उनको पानी से सींचा जाता है, परन्तु वे उत्पन्न होते हैं पृथ्वी में से। उनमें से किसी का रंग श्वेत होता है, किसी का पीला, किसी का लाल और काला।

यदि यह कहा जाय कि इस कारीगरी में किसी का हाथ नहीं है तो फिर इनके खिलने के ढंग पृथक् पृथक् क्यों हुए? ये भिन्न-भिन्न रूपों में अपनी बहार क्यों दिखलाते हैं? एक सिमटा हुआ है, दूसरा लिपट कर फैलता है, कोई सीधा है तो कोई चपटा।

अंगूर तथा पोस्ता दोनों की असलियत एक ही है। परन्तु फिर शराब नशा क्यों लाती है और अफ़ीम बेसुध क्यों कर देती है?

इससे यह सिद्ध होता है कि अपने आप यह बातें नहीं हो सकती हैं। अफ़लातून अपनी हिकमत से और सामरी अपनी जादू से ऐसा करने में असमर्थ हैं।

मगर बेचूँ ख़ुदावन्दे कि फ़रज़न्दाने आदम रा।
वक़ुदरत दर वजूद आवुर्द बे आलत ब काफ़ो नूँ॥
ख़ुदावन्दे कि दायम हस्त असहाबे मआसीरा।
जनाबे फ़ज़्ले ऊ मामन अज़ाबे अदले ऊ मामूँ॥
हमेशा बूद पेश अज़ या हमेशा बाशद ऊ बेशक।
बक़ाला रवना मीगो व मीदाँ वस्फ़े ऊ बेचूँ॥
कलामश हमचो बादश हक़ वलेकिन गुफ़्ते ऊ मुशकिल।
सिफ़ातश हमचो ज़ातश हक़ वलेकिन सिर्रे ऊ मख़ज़ूँ॥
हमू बख़्शिन्दए दौलत हमू दानिन्दए फ़िकरत।
हमू दारिन्दए गेती हमू दारिन्दए गरदूँ॥
के पिनहाँ कर्द ज़ुज़ एज़िद वसंगे ख़ारा दर आज़र।
कि रोयानद हमीं ज़ुज़ वै ज़े ख़ाके तीरा आज़रगूँ॥
सदफ़ हैराँ ब दरिया दर दवाँ आहू ब सहरा बर।
रमीदो आरमीदा हर दो दर दरिया व दर हामूँ॥
के पुर करदो के आगन्द अज़ गयाहो क़तरए बाराँ।
दहाने ईं व नाफ़े आँ ज़ो मुश्को लूलूए मकनूँ॥

हाँ, यह काम निस्सन्देह उस अनुपम जगत्कर्ता ईश्वर का है, जिसने अपनी इच्छा शक्ति केवल शब्द द्वारा ("सृष्टि हो जा" इस शब्द से) मनुष्य मात्र को बिना किसी प्रकार की सहायता के उत्पन्न किया है।

ईश्वर वह है जो सदैव पापात्माओं पर दया दिखलाता है और उनको शरण देता है। उसके राज्य में रह कर मनुष्य अपने आपको खोटे कर्मों से बचा सकता है।

उसका न आदि है और न अन्त। उसकी उपमा यदि किसी से दी जा सकती है तो केवल उसी से।

वह जो कुछ कहता है वह अवश्य होता है। उसका कथन भी उसी के समान पवित्र है। परन्तु उसका कहना कठिन है। उसके गुण भी उसी के समान हैं, परन्तु उनका भेद पाना कठिन है।

वह हमें धन-सम्पत्ति प्रदान करता है और हमारे हृदय की बातों को जानता है। यह संसार और आकाश सब उसी के अधिकार में हैं।

ईश्वर के अतिरिक्त पत्थर में अग्नि किसने छिपा रक्खी है और उसकी शक्ति के सिवाय काली मिट्टी में से लाल रंग के फूल किसने उत्पन्न किये हैं?

नदी में सीपियाँ और जंगल में हिरन उसी ने उत्पन्न किये हैं। दोनों अपने अपने स्थानों में आराम से रहते और भागते फिरते हैं।

उसी परब्रह्म ने बरसा के पानी के बूँद से सीप का मुँह भरवाया और जंगल की घास से हिरण की नाक में मुश्क उत्पन्न की।

ज़े बहरे आँ कि चूँ सीमीं सिपर गरदद दर अफ़ज़नी ।
कि काहद माहरा हर माह हत्ता आदा कल उरजूँ ॥
कि बनदद चूँ ख़िज़ाँ आयद हज़ाराँ किल्लए अदकन ।
कि पोशद चूँ बहार आमद हज़ाराँ हुल्लए गुलगूँ ॥
कि गरदानद मुलव्वन कोह रा चूँ रौज़ए रिज़वाँ ।
कि गरदानद मुनक़्क़श बाग़ रा चूँ सहने अर किलयूँ ॥
दो आबे मुख़्तलिफ़ रा मुत्तफ़िक़ बाहम कि गरदानद ।
बक़ुदरत दर यके मौज़ा कुनद हर दो बहम माज़ूँ ॥
पसंगह नुतफ़ा गरदानद वज़ू शख़्शे कुनद पैदा ।
मिसालश मोहकमो साबित निहादश मुत्तफ़िक़ मोज़ूँ ॥
यके आलिम यके जाहिल यके ज़ालिम यके आजिज़ ।
यके मुनयम यके मुफ़लिस यके शादाँ यके महज़ूँ ॥
तआला शानहू कि जुमला अज़ आब ऊ पिदीद आवुर्द ।
पसंगह जुमला दर दम वै बख़ाक अन्दर कुनद मदफ़ूँ ॥
अया दिल बस्ता दर दुनिया व गश्ता ग़ाफ़िल अज़ उक़बा ।
चे सूद अज़ सूदे इम रोज़त कि फ़रदा मी शवी मानूँ ॥
चो आलम रा हमी दानी कि फ़ानी गश्त ख़ाहद पस ।
बमेहरे आलमे फ़ानी चरा दिल करदई मरहूँ ॥

वह कौन है जिसने अपनी शक्ति से चन्द्रमा को आकाश में चमकाया है और उसे घटाता तथा बढ़ाता है ?

पर्वत को स्वर्ग के समान नाना रंग के पुष्पों से कौन सजाता है और उपवन विविध प्रकार के पौधों तथा फूलों से कौन सुशोभित करता है ?

फिर कौन अपनी शक्ति से दो वस्तुओं को मिला कर एक कर देता है ? और फिर उसे बिन्दु के रूप में परिणत कर उससे मनुष्य उत्पन्न करता है ?

और ऐसा वैसा मनुष्य भी नहीं वरन् सुन्दर शरीर वाला और आँख-नाक-कान इत्यादि से दुरुस्त ।

विद्वान, मूर्ख, गुणी, दार्शनिक, तत्ववेत्ता और बड़े बड़े ज्ञानी उसी ने अपनी शक्ति से उत्पन्न किये हैं ।

वह इतना बड़ा कारीगर है कि उसने इन सबको केवल जल से उत्पन्न किया और फिर उन्हें मिटा कर मिट्टी में मिला दिया ।

हे संसार के व्यवसायियो और अंत को न सोचने वाले ! आज के लाभ के पीछे तुम इतना क्यों पड़े हुए हो जब कि कल मृत्यु के उपरान्त तुम्हें घाटा उठाना पड़ेगा ?

जब तुझे यह ज्ञान है कि संसार क्षणिक है तो फिर उसमें इस प्रकार तल्लीन क्यों हो रहे हो ?

इलाही बंदए बेचारए मिसकीं "सनाई" रा।
कि ऊ अज़ दीनो ताअतहाय तो दरमाँदओ मदयूँ ॥
अगर चे हस्त ऊ मतऊँ बज़िल्लतहा तमा दारद।
बदी तौहीदे नामतऊँ जज़ाए अज़ तो नामहनूँ ॥

(१५)

ऐ पेश रुखे हरचे निकोईस्त जमालत।
वै दूर शुदा आफ़तो नुक़साँ ज़े कमालत ॥
ऐ मरदुमके दीदए मा बंदए चशमत।
वै जाने पसंदीदए मा हाल ज़े हालत ॥
ग़म खुरदनम इमरोज़ हरामस्त चो बादा।
अज़ बख़्त बमन दादा ज़माना बहलालत ॥
ऐ बुलबुले गोईंदा व ए कब्के ख़िरामाँ।
मै खुर कि ज़े मै बाद हमेशा परो बालत ॥
ज़ोहरा बनिशात आमद चूँ याफ़ समाअत।
खुरशेद बरश्क आमद चूँ दीद जमालत ॥
हर रोज़ दिगर गूना ज़नद शाख़ बरीं दिल।
ईं बुलअजबी बीं कि वर आवुर्द निहालत ॥

हे ईश्वर! "सनाई" तेरा सेवक है। वह दीन है, नाचीज़ है, परन्तु सदैव से तेरा भक्त रहा है।

वह नीच करके प्रसिद्ध हो रहा है। परन्तु उसे पूर्ण आशा है कि सच्ची भक्ति के उपलक्ष में वह तुझसे इनाम पायेगा।

(१५) हे भगवन्! तेरा रूप सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है। वह अनुपमेय है। तेरा कमाल हानि और आपत्ति से परे है।

मेरी आँख की पुतली, तेरी आँखों को प्रतीक्षा में सदैव तन्मय रहती है और मेरे प्रिय तथा रोगी प्राण तेरे प्राणों का एक अंश हैं।

आज मैं अधीर हो रहा हूँ। मुझमें एक नवीन प्रसन्नता समाहित हो रही है। कारण कि भाग्य ने आज मेरे नेत्रों के सम्मुख तेरा जलवा प्रगट कर दिया है।

हे सुन्दर राग अलापने वाली बुलबुल और शीघ्रगामी कबक तू प्रेम में मस्त रह। इस प्रणय रूपी मदिरा से तेरे परों में उड़ने की शक्ति सदैव बनी रहेगी।

तेरा गाना सुन कर ज़ुहरा मोहित हो गया और तेरा रूप देख कर सूर्य भी लज्जित हो गया है।

तेरा बेल-बूटे से सुसज्जित शरीर देखने योग्य है क्योंकि यह तेरा सुसज्जित शरीर मेरे चित्त को प्रतिदिन नये ढंग से लुभाता है।

जाँ नीज़ बशुकराना बनिज़्दे तो फ़रिस्तम ।
ख़ुद कारे दो सद जाँ बे कुनद बूए विसालत ॥

(१६)

राज़े अज़ल अन्दर दिले उश्शाक़ निहाँनस्त ।
ज़ाँ राज़ ख़बर याफ़ कसे रा कि अयानस्त ॥
क़रा जे पसे परदए उश्शाक़ दुई नेस्त ।
ज़ाँ मिस्ल न दारद कि शहंशाहे जहाँनस्त ॥
गोयन्द अज़ाँ मैदाँ ऊरा कि दर आमद ।
कै ख़ाजा दिलो रूह ख़ाना ब ख़ानस्त ॥
गर माहे जलाल आमद दर नात कुसूफ़े तो ।
वर तीरे विसाल आमद दर शिब्हे कमानस्त ॥
ऐ कूए दो सद बार हज़ार अज़ सरे माना ।
कुश्तस्त कज़े शाँ वजुज़ अंकिश्त निशानस्त ॥
आँ कस कि रिदाए ज़रे मा बर कतिफ़ उफ़तद ।
आँ नेस्त रिदा अज़ सिफ़ते तैए लिसानस्त ॥

मैं अपने प्राणों तक को कृतज्ञता से तेरे लिये अर्पण कर सकता हूँ। तेरे मिलने की सुगन्ध ही दो सौ प्राणों के बराबर है।

(१६) सृष्टि के आदि के रहस्य प्रेमियों के हृदय में गुप्त हैं। इस भेद को वही जान सकता है, जिस पर वह प्रकट हो।

वह अपने प्रेमियों से किसी प्रकार का छिपाव नहीं रखता है। और वह अनुपम इसी लिये कहा जाता है कि वह सम्पूर्ण संसार का बादशाह है।

प्रेमियों को इस क्षेत्र में घुसने की (प्रविष्ट होने की) आज्ञा अवश्य दी जाती है परन्तु उनके दिलों और प्राणों की इस प्रणयक्षेत्र में नज़र ली जाती है।

यदि उसका चन्द्रमुख तेरी दृष्टि से ओझल हो गया है, यदि तेरी दृष्टि के सम्मुख एक मोटा आवरण आ गया है, तो इसमें तेरे ही विचारों का अपराध है। और यदि उसके मिलन में किसी प्रकार का सन्देह है तो इसमें भी तेरे गुमानों का ही अपराध है।

इस हृदय में लाखों बार उसके रहस्य प्रकट हुए हैं, परन्तु आकुलता की अग्नि से हृदय ऐसा जल गया है कि अब आगे बढ़ने का साहस भी नहीं होता है।

हमारी ज़री की यह चादर जिसके कन्धों पर डाल दी जाती है, उसका मानों मुँह बन्द कर दिया जाता है। यह चादर नहीं है। इसमें दूसरे का मुँह बन्द करने का गुण है। (इसका आशय यही है कि हमारे दर्जे को पहुँच कर मनुष्य की दशा ऐसी हो जाती है कि वह रहस्य खोल नहीं सकता।)

गोयन्द निकोयस्त दरीँ परदा दिले मा।
मीदाँ ब हक़ीक़त कि जे इक़बाले एहसानस्त ॥
नज़्मे गोहरे मानी दर दीदए दावा।
चूँ मरदुमके दीदा दरीं ग़फ़ल निहानस्त ॥
दर राहे फ़ना नामदई जाय अज़ीज़ाँ।
कीं शेरे "सनाई" सबबे क़ुव्वते जानस्त ॥

(१७)

ख़ेज़ ऐ दिल बर फ़िगन ईं मरकबे तहवील रा।
वक़्फ़ कुन बर ना कसाँ आँ आलमे तातील रा ॥
ना गुज़ारे खत्ते माना हर्फ़े रंगारंग रा।
मह्व कुन अज़ लौहे दावा नक़्शे क़ालो क़ील रा ॥
अंदरीं सफ़हाय मानी दर रहे मानी मज़ू।
आँ कि दर सरना नयादी नफ़हे इसराफ़ील रा ॥
कै कुनद बरदाश्त दरमाँ दर बियाबाने ख़िरद।
नाबदाने बामे गिलख़न सैले रोदे नील रा ॥
दस्ते इब्राहीम बायद बर सरे कोहे फ़िदा।
ता न बुर्रद तेग़े बुर्रा दस्ते इस्माईल रा ॥

लोग कहते हैं कि इस पर्दे के भीतर हमारा दिल बड़े आनन्द में है। यदि ऐसा है तो इसे भी उसकी दया का चिह्न समझना चाहिये।

ऊपरी दृष्टि से यदि उसके रहस्य को देखा जाय तो आँख भुलावे में अवश्य आ जायगी।

प्रिय प्राण ! अभी तक तुम मृत्यु के समक्ष नहीं पड़े हो। यदि ऐसा अवसर आता तो तुम भी समझ जाते कि "सनाई" की यह कविता तुम्हें बल प्रदान करने वाली है।

(१७) ऐ दिल, उठ और अपने उद्यम में लग। बहाना छोड़ दे और बेकारी को निरुद्यमी मनुष्यों के लिये छोड़ दे।

इन तमाम निरर्थक बातों को छोड़ दे। इनसे कोई आशय नहीं निकलता। व्यर्थ किसी बात का दावा करने में समय को बर्बाद न कर और अधिक बातें मत बना।

इन मौखिक बातों के द्वारा आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने का प्रयत्न मत कर। कारण कि "इसराफ़ील" "सरना" में प्रविष्ट नहीं होते।

हमारी बुद्धि इस बात को किस प्रकार मान सकती है कि भाड़े के मकान की छत का नाबदान नील नदी की बाढ़ को सहन कर सकता है।

फ़िदा के पर्वत पर इस्माइल का हाथ न काटने के लिये यदि कोई तलवार चला सकता है तो वह केवल इब्राहीम का हाथ है।

मर्द चूँ ईसीए मरियम बायद अन्दर राहे सिद्क़।
ता बे दानद क़द्रे हर्फ़े आयते इंजील रा॥
दर शबे तारीक कुजा बीनद दहाने पश्शारा।
आँ के ऊ दर रोज़े रौशन मी न बीनद पील रा॥
अज़ बुरूँ सू रौग़ने पुर सूद कै दारद तुरा।
चूँ दरूँ सू नूर न बुवद ज़ुरवए क़ंदील रा॥
ख़ेज़ अकनूँ ख़ेज़ काँ साअत बसे हसरत ख़ुरी।
चूँ बबीनी बर सरे ख़ुद तेग़े इज़राईल रा॥

(१८)

अज़ हवाए फ़क़्दाराँ काख़े फ़ग़फ़ूरी मख़ाह।
दर सराए सूदे सलमाँ तख़्ते अय्यारी मजो॥
ख़ारे पाए राहे दरवेशाने आँ दरगाह रा।
दर कफ़े दस्ते उरूसे अह्दे अम्मारी मजो॥
हर कसे रा नूरे सिद्क़े इश्क़ ईं रह कै देहद।
सूरते ख़ुरशीद रा अन्दर शबे तारी मजो॥
बर सरे तूरे हवा तंबूरे शह्वत मी ज़नी।
इश्क़े मरदे लंतरानी रा बदीं ख़ारी मजो॥

ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिये मरियम के पुत्र ईसा के समान मनुष्य की आवश्यकता है। क्योंकि उसे धर्म्म-ग्रन्थ इंजील के शब्दों का मूल्य मालूम रहता है।

जिस मनुष्य को दिन के उजाले में हाथी न सूझता हो वह रात्रि के अन्धकार में मच्छड़ का मुख किस प्रकार देख सकता है?

यदि क़न्दील के अन्दर वाले दीपक में तेल न हो तो बाहर से उसमें तेल भरा होना तुझे रोशनी कब देगा!

यदि तुझे उठना है तो इसी समय उठ और जो कुछ करना है कर ले, अन्यथा जिस समय यमदूत तेरे सिर पर मृत्यु की तलवार लेकर आ उपस्थित होगा, उस समय शोक के अतिरिक्त कुछ हाथ न आवेगा।

(१८) उदासियों के पास सुन्दर स्वर्ण-मन्दिर कहाँ से आये और सुलेमान के पास ऐयारी (जादू) का तख़्त कहाँ से आ सकता है?

इस मन्दिर में आने वाले प्रेमियों के पैर में जो काँटा चुभता है, उसे दुलहिन के हाथ में खोजने से क्या लाभ होगा?

इस मार्ग में सत्य प्रणय की चमक किसको प्राप्त हो सकती है? अँधेरी रात में सूर्य कैसे प्राप्त हो सकता है?

तू सांसारिक विषयों में पड़ा हुआ जीवन के झूठे सुखों का आनन्द लूट रहा है। फिर बता इस बुरी अवस्था में रह कर तू सच्चा प्रणयी किस प्रकार हो सकता है?

वर तो ख़ाही नफ़्सो शैताँ दर कफ़त ज़ारी कशद ।
नामे इश्क़े दोस्त रा जुज़ अज़ सरे ज़ारी मजो ॥

---

(१९)

कसे कू जे गोशे हक़ीक़त अयाँ शुद ।
मजाज़ी सिफ़ाते वै अन्दर निहाँ शुद ॥
निशाने बुवद अज़ हक़ीक़त मर ऊ रा ।
चे शुद ईं कि अज़ नेस्ती बे निशाँ शुद ॥
कसे कू चुनीं शुद कि मन शरह करदम ।
यक़ीं दाँ कि ऊ बादशाहे जहाँ शुद ॥
मलिक शुद ज़मीनो ज़माँ रा पसंगह ।
चो कररोबियाँ साकिने आसमाँ शुद ॥
रवाँ गश्त फ़रमाने ऊ चूँ सियाही ।
मरूरा कि गुफ़ ईं चुनीं शौ चुनाँ शुद ॥
चो दर नेस्ती जद दमे चंद ईसा ।
तने बेरवाँ अज़ दमश बा रवाँ शुद ॥
न बीनी कि हर कू ज़े ख़ुद गश्त फ़ानी ।
ज़े अह्ले वफ़ा गश्तो साहब क़िराँ शुद ॥

हाँ, यदि तू अपनी शैतान इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो विनय तथा नम्रता के साथ अपने प्यारे से प्रेम-याचना कर। तुझे सफलता प्राप्त होगी।

(१९) जिस पर ईश्वर का रहस्य प्रकट हो जाता है, वह संसार के समस्त बन्धनों से छूट जाता है।

इस वास्तविकता को प्राप्त कर लेने का चिह्न यही होता है कि मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अपने आपको मिटा देता है।

जो मनुष्य ऐसा हो जाता है, जैसा कि मैंने वर्णन किया, वह साधारण मनुष्य से बहुत ऊँचा हो जाता है, और संसार का सम्राट् बन जाता है।

वह पृथ्वी तथा जीवधारियों का बादशाह होकर आकाश पर चढ़ जाता है। वह स्वर्गीय दूत का पद प्राप्त कर लेता है।

उसमें इतनी शक्ति हो जाती है कि उसकी आज्ञा सभी मानते हैं!

उसमें इतनी सामर्थ्य आ जाती है जितनी ईसा में थी। वह भी उन्हीं के समान चार फूँकें मार कर मरे हुए मनुष्य को जीवित कर सकता है।

जो मनुष्य ऐसा होता है वह मृत्यु को प्राप्त होकर अमर हो जाता है और फिर संसार में वह पथ-प्रदर्शक समझा जाता है।

हमज़ नेस्ती बुद कि बा मुश्ते ख़ाके।
मोहम्मद ब जंगे सिपाहे गराँ शुद॥
बसा दर रहे नेस्ती कस्ब करदन।
गुमाहाँ यक़ीं शुद यक़ीं हा गुमाँ शुद॥
कसे कू ज़े हद्दे रमूज़ अस्त आजिज़।
बयाने "सनाई" बरू तरजुमा शुद॥

(२०)

अव्वल खलल ए ख़ाजा अन्दर अमल आयद।
फ़रदा की बनिज़दे तो रसूले अजल आयद॥
ज़ायल शुदा गीर आँ हमाँ मुल्के तो बयक दम।
अंगह की रसूले मलिके लमयज़ल आयद॥
हर साल यके काख़ कुनी दीगर दर वै।
हर रोज़ तुरा आरज़ूए नौ अमल आयद॥
ज़ीं काख़ बर आवरदा ब ओयूफ़े मन इमरोज़।
हक़्क़ा कि हमीं बूए रसूमे तलल आयद॥
शादी व ग़मत अबलहीओ हिर्स बऐबाँ।
दानम ज़े नुजूमे ज़े हिसाबे जुमल आयद॥

यह एक ऐसी शक्ति है कि जिससे शक्तिवान् होकर मुहम्मद साहब एक मुट्ठी धूल लेकर एक वृहत् सेना से भिड़ने के लिये पहुँच गये थे।

इस मृत्यु-मार्ग में बहुधा ऐसा होता है कि सन्देह विश्वास के रूप में और विश्वास सन्देह के रूप में परिणत हो जाता है।

जिसको उस विश्व के रचयिता का भेद नहीं ज्ञात है, उसे यह भेद, "सनाई" का यह वर्णन पूर्णतया समझा सकता है।

(२०) तुम्हारे जीवन में जो सब से पहली रुकावट होती है, जो सब से पहला विघ्न आ उपस्थित होता है, वह उस समय होता है जब मृत्यु का दूत आकर सिर पर सवार होता है।

जिस समय उस अविनाशी ईश्वर का दूत आ जाता है, उस समय तेरी सारी बादशाही समाप्त हो जाती है।

प्रत्येक वर्ष तू उसी संसार में एक नया भवन तैयार करता है और प्रत्येक दिन तेरे हृदय में कोई न कोई नया काम करने की इच्छा होती है।

तेरे इन आकाश-चुम्बी महलों से, यदि वास्तव में देखा जावे तो खँडहरों और जंगलों की बू आती है।

तेरी प्रसन्नता और शोक, तेरी मूर्खता और डाह का सम्बन्ध इस महल से है। यह सम्पूर्ण बातें मेरी समझ में ज्योतिषविद्या की गणना के हिसाब से हुआ करती हैं।

ऐ बस कि न बाशी तू व ऐ बस कि बरीं चर्ख़ ।
बे तो ज़ोहलो ज़ोहराओ हूतो हमल आयद ।।
हरचंद तू तमादरी कायद ज़े कवाकिब ।
वै हक़ हमा अज़ फ़ज़्लो क़ज़ाए अज़ल आयद ।।
रोज़े की बदीवाँ मसलन देर तर आई ।
तरसी की दर असबाबे विज़ारत ख़लल आयद ।।
गुफ़्स्त "सनाई" कि ब दीवाने विज़ारत ।
ऐ बस कि दीवाने विज़ारत बदल आयद ।।

(२१)

ऐ आँ कि तुरा अज़ तूईए तुस्त तसर्रुफ़ ।
आँ बेह कि न गोई सख़ुन अज़ बूए तसव्वुफ़ ।।
दर कूए तसव्वुफ़ ब तकल्लुफ़ मगुज़र हेच ।
ज़ीरा कि हरामस्त दरीं कूए तकल्लुफ़ ।।
दर उशवए ख़ेशी तू व आँ राह न दानी ।
ऐ दोस्त तुरा अज़ तूईए तुस्त तवक्क़ुफ़ ।।

ऐसा बहुधा होगा कि जब तू मिट जायगा तब तेरी अनुपस्थिति में इस आकाश के ऊपर "ज़ोहल" और "ज़ोहरा" नामक सितारे "हूत" और "हमल" के "बुर्ज" में दिखाई देंगे।

तू जिन वस्तुओं के प्राप्त करने की अपने भाग्य से आशा रखता है, वह सभी तुझे तभी प्राप्त होंगी जब ईश्वर की तेरे ऊपर दया होगी तथा उसकी आज्ञा होगी।

उदाहरण के लिये एक बात ले, कि जिस दिन तू कचहरी में देर से पहुँचता है, उस दिन तुझे यह भय लगा रहता है कि कहीं पदाधिकारी क्रोधित न हो जावें।

"सनाई" ने यह बात इस लिये कही है कि बहुधा यह देखने में आता है कि मंत्री के न्याय में भी अन्तर पड़ जाता है।

(२१) हे मनुष्य, तेरी बुद्धि पर अहंकार का पर्दा पड़ गया है। तू अहंकार के अधिकार में आ गया है। तेरे लिये यही अच्छा होगा कि तू सूफ़ियों के रास्ते का वर्णन बिल्कुल छोड़ दे।

सूफ़ियों के मार्ग में कभी बनने का प्रयत्न मत करना। कारण कि इस मार्ग में बनना बहुत ही बुरा है।

तू अपने चोचलों और फ़रेबों को नहीं छोड़ता है। ऐसा ज्ञात होता है कि सिर से पैर तक स्वार्थ में फँसा हुआ पड़ा है।

राहेस्त हक़ीक़त कि वरा नेस्त निहायत ।
ज़िनहार मकुन दर रहे तहक़ीक़ तवक्क़ुफ़ ।।
तो चन्द हमीं ख़ाही मिनहाजुल मेराज ।
एहयाए उल्मे दीं बा शरहे तआरुफ़ ।।
कि नशानवद इमरोज़ "सनाई" बहक़ीक़त ।
बिगिरिफ़्त व इसरार रहे इश्क़ तअन्नुफ़ ।।
गर नेक अज़ो बिशनवी ऐ दोस्त अज़ी पस ।
बर शाहिदे यूसुफ़ न कुनी क़िस्सए यूसुफ़ ।।

(२२)

ऐ ऐने हक़ीक़त अन्दर ऐन ।
बाज़ करदा ज़ बहरे दीदन ऐन ।।
पेशे ऐने तो ऐने दोस्त अयाँ ।
तू रसीदा ब ऐन गोई ऐन ।।
चूँ कि आयद ज़े ऐने तो हमा तो ।
एस्तादा चो सद्दे ज़ुलक़रनैन ।।
ता तू गोई तुई व आँ तू तुई ।
आन अज़ तो दरोग़ बाशद दैन ।।

ईश्वरीय वास्तविकता का मार्ग बहुत ही बड़ा है। यदि इस मार्ग में तुझे आगे बढ़ना है तो सावधान होकर चलना। मार्ग में विश्राम करना उचित नहीं है।

तू कब तक उन्नति के मार्ग का इस प्रकार इच्छुक रहेगा, कि अपने को प्रसिद्ध करने के लिए धार्मिक विद्याओं को जीवित रक्खेगा।

"सनाई" आज तेरी जाँच पड़ताल सुनेगा भी नहीं क्योंकि वह दृढ़ता के साथ अपने को मिटाने का मार्ग ग्रहण कर चुका है।

मित्र, यदि इस बात को तुम इस समय ध्यान से सुन लो तो फिर यूसुफ़ के प्यारे के सामने कभी यूसुफ़ नाम तक न लो।

(२२) तुम उस स्थान तक पहुँच गये हो, जहाँ पर ईश्वरीय वास्तविकता प्रकट हो जाती है, और फिर भी उसे देखने के लिये भरसक प्रयत्न कर रहे हो।

तुम ईश्वर के भेदों को जानते हो। वह तुम्हारी दृष्टि के सम्मुख है। परन्तु इस पर भी यह पूछ रहे हो कि वह क्या है।

जब तुमको अपने ही अन्दर अपना वास्तविक स्वरूप दिखलाई देने लगेगा तो तुम्हारा अभिमान तुम्हारे सामने ऐसा ही खड़ा रहेगा जैसा कि सिकन्दर के सामने दरवाज़े की चौखट।

जिस समय तक तुम्हारे हृदय से 'मैं' और 'तू' का भेद-भाव दूर नहीं

कै मुसल्लम बुवद तुरा तौहीद ।
चूँकि इसनाद मी कुनी इसनैन ।।
पेशे तो ज़ मियाँ व बातिलो हक़ ।
चंद गोई तफ़ाऊते मावैन ।।
दर यके हाल मुसतहील बुवद ।
इजतिमाए वजूदे मुख़्तलिफ़ैन ।।
अव्वल अज़ ख़ेश पेश नेह तो क़दम ।
ता जुदा गरदद अस्ले माँ अज़ दैन ।।
नज़र अज़ ग़ैर मुनक़ते कुन जाँ के ।
शाहिदे ग़ैर गर दिल आरद ग़ैन ।।
चन्द गोई ज़े हाले ख़ेश कि क़ाल ।
क़ाले बेहाल आर बाशद व शैन ।।
चूँ "सनाई" ज़े ख़ुद न मुनक़तई ।
चे हिकायत कुनी ज़े हाले हुसैन ।।

होगा, उस समय तक तुम्हारी स्वार्थ-भावनाएं भी दूर नहीं हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त 'तू' शब्द का मुख से निकालना भी तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा।

जब कि तुम 'मैं' और 'तू' को दो सिद्ध कर रहे हो और उनमें अन्तर समझते हो तो फिर ईश्वरीय मार्ग में आगे बढ़ने के योग्य तुम नहीं हो।

तुम स्वयम् इस बात को समझ सकते हो कि ऐसा विचार रखते हुए ईश्वर तक पहुँचना और उसके भेदों को समझना तुम्हारे लिये कितना कठिन है।

एक ही अवस्था और एक ही समय में दो प्रतिकूल बातों का एकत्रित होना असम्भव है, और बिल्कुल असम्भव है।

दोनों बातें इकट्ठी हो ही नहीं सकतीं, सब से पहले इस बात का प्रयत्न करो कि तुम्हारा सारा अहङ्कार मिट जावे, जिससे कि तुम्हारी वास्तविकता, धर्म्म से पृथक् हो जावे।

दूसरों की तरफ़ से अपनी दृष्टि फेर लो। कारण कि यदि उनकी तरफ़ देखोगे तो तुम्हारे हृदय में बुराई उत्पन्न होगी।

अपना वर्णन कब तक रहेगा। इससे किसी प्रकार के लाभ की सम्भावना नहीं है। इन मौखिक बातों से और दावों से तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा और बदनामी उठानी पड़ेगी।

"सनाई" का कहना है कि यदि तुम अपने अपनत्व का परित्याग नहीं करते हो तो फिर 'हुसैन' का क्या वर्णन करते हो ?

(२३)

कसे कन्दर सफ़े मरदाँ ब मैख़ाना कमर बन्दद।
बराबर कै बुवद बा आँ कि दिल दर ख़ैरो शर बन्दद ॥
ज़े दी हरगिज़ नआरद याद वज़ फ़रदा अंदेशत।
दिल अन्दर दिल फ़रेबे नग़्ज़ो दर्दे मा हज़र बन्दद ॥
बसा पीरे मुनाजाती कि बा मरकब फ़िरो मानद।
बसा रिंदे ख़राबाती कि ज़ीं बर शेरे नर बन्दद ॥
कसे कू बा अयाँ बाशद ख़बर पेशश मुहाल आमद।
चो ख़िलवत बा अयाँ साज़द कुजा दिल दर ख़बर बन्दद ॥
चो दर दावा कमरबन्दी ज़े मानी बेख़बर बाशी।
कुजा दानद कसे मानी कि दर दावा कमर बन्दद ॥
न फ़िरऔने शवद आँ कस कि जा अंदर ज़मीं साज़द।
न याक़ूबे शवद आँ कस कि दिल रा दर पिसर बन्दद ॥
बतख़्तो बख़्त मी नाज़ी गहे तख़्त गहे बख़्त।
बतख़्तो बख़्त कै नाज़द कसे कू रख़्त बर बन्दद ॥

(२३) शराबख़ाने के मनुष्यों की जो मनुष्य सेवा करता है, वह उससे अच्छा है जो सांसारिक झगड़ों में व्यस्त रहता है।

न तो वह बीती हुई बातों का ध्यान करता है और न भविष्य के धन्धों का। न तो उसे अपने काम में आने वाली वस्तुओं का ही विचार है और न शरीर को सुख देने वाली चीज़ों का।

बहुतेरे प्रार्थना करने वाले सवारी पर चलने पर भी थक जाते हैं। और बहुधा ऐसा देखा जाता है कि प्रणय-मार्ग में मस्त शेर पर सवार होकर चले जाते हैं।

जिसके सम्मुख वह प्रकट हो गया तथा जिसने उसके जल्वे को देख पाया उसके हाल-चाल जानने की क्या आवश्यकता है? जो प्रत्येक क्षण उसके समक्ष है, उसको ख़बर की क्या चिन्ता है।

अहङ्कार में आ जाने पर, बढ़ बढ़ कर बातें करने से तू आन्तरिक उन्नति से वंचित रह जायगा। कारण कि मौखिक दावा करने वाले आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं।

ध्यान देकर देखो कि संसार से मोह करने वाला मनुष्य (उस पर अपना घर बनाने वाला) फ़रऊन होकर रह जाता है और पुत्र को प्यार करने वाला याक़ूब हो जाता है।

मुझे अपने वैभव और पद का गर्व है। इन वस्तुओं को प्राप्त करके मैं दूसरों को तुच्छ समझता हूँ। परन्तु यह अहङ्कार व्यर्थ है। यह सब वस्तुएँ क्षणिक हैं।

दरो हमचूँ "सनाई" बाश न दींदारो न दुनिया।
कसे कू चूँ "सनाई" शुद दरे ईं हर दो दर बन्दद॥

(२४)

ऐ गिरिफ़्तारे नियाज़ो आज़ो हिरसो अक़्लो माल।
ज़िमतिहाने नफ़्से हिस्सी चंद बाशी दर वबाल॥
चंद दर मैदाने क़ुद्‌से अज़ खीरा ताज़ी अस्पे लाफ़।
चूँ न दारी दाग़े इश्क़ अज़ हज़रते क़ुद्‌से जलाल॥
बातिन अज़ मानीत पाको ज़ाहिर अज़ दावा पिदीद।
चूँ तिही तबली बरार आवाज अज़ ज़ख़्मे दवाल॥
मर्द बाशो बर गुज़ार अज़ हफ़्त गरदूँ पाए ख़्वेश।
ता शवी रसता अज़ीं अलफ़ाज़हाये क़ील व क़ाल॥
रूह रा दर आलमे रूहानियाँ कुन आब ख़ुर।
नफ़स रा दर सुम्मे अस्पे रूह कुन क़तउलमनाल॥
चूँ मुफ़स्सल गश्ती अज़ औसाफ़े नफ़सानी बइल्म।
अज़ हमा अजसादे नफ़सानी कुनद रूह इनफ़िसाल॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी "सनाई" के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार। क्योंकि "सनाई" के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनों से पृथक् हैं।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे में पड़ा हुआ मनुष्य! तू इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे कब तक पड़ा रहेगा? वह सब क्षणिक हैं।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग में नहीं रँगता तब व्यर्थ में पवितत्रा का दावा करने से क्या लाभ होगा?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी वाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं। तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर बजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातों अकाश-खण्डों से ऊपर पहुँचना है। और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावों से बरी हो सकेगा।

अपनी आत्मा को उस स्थान में पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतों की आत्माएँ निवास करती हैं। अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियों को दमन करके पवित्रता के मार्ग में अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनों से छूट जायगी।

जेहत कुन ता बुर्री मंज़िल अन्दर नूरे रूह।
ता न मानी मुनक़ते दर औसते ज़िल्ल जलाल॥
चूँ मुसफ़्फ़ा गश्ती अज़ औसाफ़े नफ़सानी तुरा।
दस्ते तक़दीर ऊ तआला गोयद ऐ सैयद तआल॥
कै ख़बरदारी रसाने गर दरो वाक़िफ़ शवी।
ता कि ख़ुरसंदी ब मुश्ते इल्महाए बर मुहाल॥
रौ ब ज़ेरे सायए ला ख़ानए इश्क़ बगीर।
ता कि अज़ इल्लात बिनुमायद हमां राहे मुहाल॥
चूँ ब तर्के नफ़्स गुफ़्ती बश शुदी ऊरा यक़ीं।
ईं चुनीं मी बाश अज़ अनफ़ासे नफ़्स अन्दर हलाल॥

(२५)

शिगिफ़ आमद मरा बर दिल अज़ीं सुलताने ज़िन्दानी।
कि दर ज़िन्दाने सुलतानी मनम शैताने रिन्दानी॥
ग़रीबज़ जाहे नूरानी जे नाफ़रमानिए लश्कर।
बदस्ते दुशमनाँ दर माँदा अंदर चाहे ज़ुल्मानी॥

तुझको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जावे।

जिस समय तू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुझे अपने पास बुला लेगा।

जब तक तू इन साधारण विद्याओं पर सब्र रक्खेगा और उन्हीं से उत्पन्न ज्ञान को सब कुछ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी तू उसको समझ नहीं सकेगा।

जा और विराग के अधिकार में अपने आप को रख, और संसार की बहुमूल्य वस्तुओं में अपने को न फँसा, जिससे सारी सच्चाई तुझे संसार के बहुमूल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दे।

जैसे ही तू ने अपने आप को विकारों से पवित्र किया, तुझको उसका विश्वास हो जायगा और फिर तुझे वैसे भी इन्द्रियों के चङ्गुल में न पड़ना चाहिये।

(२५) मुझे दिल के बन्दी सम्राट् पर आश्चर्य होता है कि मैं मस्त होकर भी शैतान के शैतानी पञ्जे में पड़ा हुआ हूँ।

उसकी सेना ने उसकी आज्ञा न मानी। उसके पद ने उसका साथ न दिया, जिसके परिणाम-स्वरूप शत्रु के हाथों बन्दी होकर अँधेरे कुएँ रूपी कारागार में वह अपने दिन व्यतीत कर रहा है।

सिपाहे बेकराँ दारी व लेकिन बेवफ़ा जुमला।
हमा दर अश्वा मग़रूरन्द दर ग़मज़ी व नादानी ॥
ज़े बद रूई व ख़ुदराई हमाँ यकबारगी रफ़ा।
ज़े गुलशनहाय रूहानी बगुलख़नहाय जिस्मानी ॥
तलबगारन्द नुज़हत रा व नशनासन्द ईं माया।
कि गुलशनहाय जिसमानीस्त गिलख़नहाय रूहानी ॥
दराँ दरिया फ़िगन ख़ुद रा कि मौजश बाश्त अज़ हिकमत।
कि जज़ए ऊ बक़ीमत तर बुवद अज़ दुर्रे उम्मानी ॥
अगर गोया व पैदाई यके ख़ामोश पिनहाँ शौ।
ख़ुशा ख़ामोशे गोयाओ ख़ुशा पैदाओ पिन्हानी ॥
फ़िरस्ती गर तुरा बर सिर्रे जाने ख़ुद वक़ूफ़ उफ़तद।
कुजा वाक़िफ़ तवानद शुद कसे बर सिर्रे यज़दानी ॥
अज़ाँ रू दर मकाने जेह्ल हम वारा मक़ीनी तू।
कि अंदर बंदे हफ़ अख़्तर असीरे चार अरकानी ॥
चेरा दर आलमे अक़्ली न पर्री चूँ मलायक तू।
चेरा तू इनसिआ जिन्नी दरन्दो हे तनो जानी ॥

ऐ दिल ! तेरे अधिकार में अगणित सैनिक हैं, परन्तु उनमें स्वामिभक्ति का बिल्कुल अभाव है। सब को मिथ्याभिमान और छल ने धोखे में डाल रक्खा है।

वह सब के स्वार्थ तथा अपकर्म्मों के कारण, यकायक आत्मिक प्रकाश में से निकल कर शारीरिक सुखों में व्यस्त हो रहे हैं।

उनके हृदय में सांसारिक आमोद-प्रमोद और विलास के विचारों ने घर कर लिया है। और उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं है कि शारीरिक सुख आत्मा को निर्बल बना देते हैं।

तुम यदि किसी नदी में तैरना चाहते हो तो ऐसी नदी में तैरो जिसमें हिकमत (वैद्यक) की लहरें उठती हों। कारण, कि ऐसी नदी का एक साधारण पत्थर का टुकड़ा भी मोती से अधिक मूल्य रखता है।

यदि तू वाचाल है और उसके साथ ही साथ सबकी दृष्टि के सम्मुख भी है तो चुप हो जा और तनिक छिप भी जा। क्योंकि जो मनुष्य चुप और गुप्त रह कर अपना कार्य करता है वह अच्छा होता है।

यदि अपने प्राणों का रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे तो तुझे स्वतंत्रता मिल जायगी। इसके उपरान्त ईश्वर का भेद तुझे ज्ञात हो जायगा।

तू सदैव से नादान चला आ रहा है। इसका करण यही है कि तू सात सितारों की शर्तें मानता है और चारों दिशाओं के भीतर बन्द है।

तू इस बुद्धि की दुनिया में स्वर्गीय दूतों के समान क्यों नहीं विचरण करता ? मनुष्यों व जिन्नों के समान शरीर तथा प्राणों की चिन्ता में व्यस्त क्यों हो रहा है ?

चे पेचानी सरज़ ताअ़त चे बाशी रोज़ो शब ग़ाफ़िल।
चे पोशी जामए शह्वत दिलो जाँ रा चे रंजानी॥
कि ता दस्ते जवाँमर्दी ज़े दुनिया बर न अफ़शानी।
चुनाँ दाँ बर ख़ते दीं बर कि दस्ते बा हमर दानी॥
वर्दी हिम्मत कि अन्दर सर हमीं दारी सर अन्दर कश।
सज़ाये पंबवो दू की न मरदे रज़्म मैदानी॥
अगर ख़ाही कि व हशमत ज़े अहलिल बैते दीं बाग़ी।
वे आबी दर रहे ईमाँ यके तस्लीमे सलमानो॥
अया मै ख़ुरदए ग़फ़लत कुनूँ मस्ती व मैहोशी।
ख़ुमार अज़ दीं कुनद फ़रदा कमाले ख़ेश नुक़सानी॥
व पेशे आदमे शरई सुजूदे इनक़ियाद आवर।
गर अज़ शुबहत न चूँ इबलीसो वर पैकारे शैतानी॥

(२६)

शाहरा ख़ाही कि बीनी ख़ाक शौ दरगाह रा।
ज़ाबे रूयत आब ज़न मैदाने शाहंशाह रा॥
हम ब चश्मे शाह रूए शाह ख़ाही दीदो बस।
दीदा अंदर कारे शह कुन कोरिए बदख़ाह रा॥

तू ईश्वर को भुलाकर दिन-रात सांसारिक झंझटों में पड़ा रहता है और इन्द्रियों की तृप्ति में अपने दिल तथा प्राणों को कष्ट देता रहता है।

जब तक तू साहस तथा प्रतिज्ञा के साथ इस संसार को नहीं छोड़ देगा, उस समय तक सच्चे धर्म्म को नहीं जान सकेगा और न उस मार्ग में आगे ही बढ़ सकेगा।

जो कुछ जानता और समझता है उसी पर सब्र करके बैठ रहना स्त्रियों का कार्य है। यह समर-भूमि में वीरों के समान लड़ना नहीं है।

तू इस धर्म्म-मार्ग में यश और पद प्राप्त करने का इच्छुक है तो सलमान की भाँति तेरी प्रतिष्ठा होगी।

इस समय तू आलस्य में पड़ा हुआ है। मदिरा की मस्ती में सब कुछ भूला हुआ है। परन्तु प्रलय के दिन यही भूल तेरे लिये हानिप्रद सिद्ध होगी।

तुझे उस सृष्टिकर्त्ता के सम्मुख भक्ति-भाव से शिर झुकाना उचित है और इबलीस के समान सन्देह में न पड़ कर शैतान के समान कार्य में दत्तचित्त होना चाहिये।

(२६) यदि तू उस राजराजेश्वर के दर्शनों की अभिलाषा रखता है तो उसके मन्दिर की धूल बन जा और उसके आने के मार्ग में अपनी प्रतिष्ठा का छिड़काव कर दे।

उसका मुख केवल उसी के नेत्रों से देखा जाता है, अतएव अपनी आँखों को उसकी नज़र करके उसके शत्रु को अन्धा बना दे।

आह ग़म्माज़ आमद अन्दर राहे इश्क़ो आशिक़ी ।
बन्द बर नेह दर निहाँ ख़ानए ख़मोशी आह रा ॥
दर्दे इश्क़ अज़ मर्दे आशिक़ पुर्स अज़ आक़िल मपुर्स ।
का गही न बुवद ज़े आबे चाह यूसुफ़ जाह रा ॥
अक़्ले वाफ़िदस्त मनिशाँ अक़्ल रा बर तख़्ते इश्क़ ।
आसमाँ उश्शाक़राओ रेसमाँ जोलाँह रा ॥
गर सिपर बिफ़गनद अक़्ल अज़ इश्क़ गो बिफ़गन ख्वास्त ।
रूए ख़ातूँ सुर्ख़ बादा ख़ाक बर सर दाह रा ॥
दर्दे मूसा वार ख़्वाही जामे फ़िरऔनी तलब ।
बा रज़ाओ आफ़ियत रोज़े मलामतगाह रा ॥

(२७)

गाहे रज़्म आमद बेया ता मैल ज़ी मैदाँ कुनेम ।
मर्दे इश्क़ आमद बेया ता गिर्दे ऊ जौलाँ कुनेम ॥
चंग दर फ़ित्राके ईं माशूक़े आशिक़कुश ज़नेम ।
पस लगामे नेस्ती रा बर सरे फ़रमाँ कुनेम ॥

आह भरने से प्रणय प्रकट हो जाता है । सभी लोग ऐसे मनुष्य को समझ जाते हैं । अतएव उसको मुख से निकलने ही न दे ।

प्रेम का मज़ा किसी ज्ञानी को क्या मालूम होगा ? उसे तो वही जान सकता है जिसने प्रेम किया है । अतएव उसके स्वाद के विषय में प्रेमी से ही प्रश्न करना उचित है । कारण कि जिसको यूसुफ़ का ज्ञान प्राप्त है वह कुएँ के पानी के विषय में क्या कह सकता है । प्रेम की पीड़ा का अनुभव प्रेमियों को ही हो सकता है ।

हमारी बुद्धि किसी काम की नहीं है, उसमें कुछ करने की सामर्थ्य नहीं है । वह उस प्रेम को समझ नहीं सकती । प्रेमियों के लिये आकाश बनाया गया है और जुलाहों के लिये सूत ।

यदि बुद्धि प्रणय से पराजित हो जावे तो इसमें कोई हानि की बात नहीं है । दुलहिन यदि स्वयम् अपने आपको सँवार सकती है, तो किसी परिचारिका की क्या आवश्यकता है ?

यदि मूसा के समान प्रणय-पीड़ा का इच्छुक है तो किसी फ़रऊन का सामना कर और सब प्रकार की मलामतों को सहन कर ।

(२७) युद्ध का समय निकट है, चलो समर भूमि को चलें । प्रणय-मार्ग का वीर आ गया है, आओ उससे युद्ध करने चलें ।

चलो, इस प्रेमी को मार डालने वाली प्रेमिका का शिकारबन्द पकड़ लें, और मृत्यु का सुख-पूर्वक आवाहन करें ।

गर बरायद ख़त्ते तौक़ी अश बरीं मसूरे मा।
बाज़ दीदा बर ख़ते मन्सूर दुरअफ़शाँ कुनेम॥
अज़ ख़याले चेहरये ग़म्माज़ो रंग आमेज़े ऊ।
पस बरस्मे हाजियाँ गह तौफ़ गह क़ुरबाँ कुनेम॥
नंगे ईं मसजिद परस्ताँ रा दरे दीगर ज़नेम।
चूँ कि मसजिद लायगह शुद क़िबलारा वीराँ कुनेम॥
ख़ाके पाए मरकबे उश्शाक़ रा अज़ रूए फ़क़्र।
तूतियाए चश्मे शाहाने हमा गेहाँ कुनेम॥
ईं न शर्ते मोमिनी बाशद न रस्मे बेख़ुदी।
ताअ़ते सुलताँ बे माँदम ख़िदमते दरबाँ कुनेम॥
चूँ अरूसाने तबीयत महरमे माँ नेस्तन्द।
बा अज़ीज़ाने तरीक़न्द शायद अर पैमाँ कुनेम॥
हर चे अज़ पेशी व बेशी हस्त दर अतराफ़े मा।
मा बदाँ अज़ दिल सलाये मा अलेहा फ़ाँ कुनेम॥
ऐ "सनाई" ता दरीं दामी मज़न दम जुज़ ब इश्क़।
हात चूँ शमए मुनीरौ रौशनो ताबाँ कुनेम॥

यदि वह हमारी प्रार्थना को किसी प्रकार स्वीकार कर ले तो हम उसके दर्शनों पर अपने नेत्रों के अश्रु-बिन्दुओं को न्योछावर करने के लिये उद्यत हैं।

उसके उस सुन्दर मुख के ध्यान में, प्रेमीजन कभी तो भ्रमर के समान उस पर मडराने के लिये उद्यत होते हैं और कभी अपने प्राणों को उस पर न्योछावर कर देने के लिये कटिबद्ध हो जाते हैं।

तुम्हें उन लोगों का साथ छोड़ देना चाहिये, जो मसजिद और मन्दिर के झगड़ों में पड़े हुए हैं। जब मसजिद में कीचड़ और पानी भर जाये तब क़िबला को जाकर उजाड़ डालें।

प्रेमियों का पद बहुत ही ऊँचा होता है। इस संसार के सम्राटों से भी वह कहीं बढ़े-चढ़े हुए हैं।

यह ईमानदार होने की शर्त्त नहीं है और न इसे बुद्धिमानी ही कह सकते हैं कि हम राजा को छोड़ कर द्वारपाल की सेवा में लगे रहें।

यदि हमारे स्वभाव की ख़ूबियाँ हमारा साथ नहीं देती हैं, तो हमें उचित है कि प्रेम के मार्ग में बढ़ने वाले मनुष्यों का उदाहरण अपने सम्मुख रक्खें।

इसके अतिरिक्त हममें यदि किसी बात की कमी है और कोई वस्तु मात्रा से अधिक वर्तमान है तो उनको दूर कर देना ही उचित है। उन्हें मिटा देना चाहिये।

"सनाई" का कथन है कि मनुष्य को इस ईश्वरीय प्रेम को छोड़ कर और किसी तरफ़ अपने मन को न दौड़ाना चाहिये, जिससे वह भी प्रेम की इस अलौकिक आभा से दीपक के समान उज्वल हो उठे।

५

अंदलीबे ईं नवाही दर क़फ़स औला तरी।
काशकारा अंगहे गरदी कि माँ पिनहाँ कुनेम॥
तात फ़रमाने न आमद जीं क़फ़स बेरूँ मपर।
चूँ शुदी ताऊस जायत मंज़रे ऐवाँ कुनेम॥

(२८)

ता मोतकिफ़े राहे ख़राबात न गर्दी।
शाइस्तए अरबाबे करामात न गर्दी॥
अज़ बन्दे अलायक़ न शवद नफ़्से तो आज़ाद।
ता बन्दए रिंदाने ख़राबात न गर्दी॥
दर राहे हक़ीक़त न शवी क़िब्लए अहरार।
ता क़िदवए असहाबे लिबासात न गर्दी॥
ता ख़िदमते रिंदाँ न गुज़ीनी ब दिलो जाँ।
शायस्तए सुक्काने समावात न गर्दी॥
ता नेस्त न गरदी चो " सनाई " ज़े अलायक़।
निज़्दे उक़ला अहले मुबाहात न गर्दी॥

(२९)

अज़ पए मरदानगी पाइन्दा ज़ात आमद ख़यार।
वज़ पए तर दामनी अंदक हयात आमद समन॥

तू इस उपवन की बुलबुल है। तुझे पिंजरे में ही बन्द रहना उचित है। क्योंकि वास्तव में तू प्रकट तभी होगी जब हम तुझे छिपा देंगे।

जब तक तेरे लिये आज्ञा न हो पिंजड़े में से निकल कर बाहर जाने का प्रयत्न मत करना। हाँ, उस समय, जब तू मयूर बन जायगी हम बड़ी प्रसन्नता के साथ तुझे अपनी अट्टालिका के ऊपर स्थान देंगे।

(२८) जब तक तू प्रणय मार्ग में पाँव तोड़ कर नहीं बैठेगा तब तक करामातियों में तेरी गणना नहीं हो सकती है।

जब तक प्रणय-मार्ग के मस्त लोगों की इज्ज़त न करेगा तब तक तेरी इन्द्रियाँ सांसारिक बन्धनों से बाहर नहीं आ सकती हैं।

जब तक तू मतवाले प्रेमियों के आगे होकर उसी मार्ग पर नहीं चलेगा तब तक ईश्वर को पहचानने में तू समर्थ नहीं हो सकता।

यदि तन और मन से तू इन मस्तों की सेवा न करेगा तो उस लोक में रहने वालों को तुझे अपने बीच में स्थान देना असम्भव है।

जब तक तू " सनाई " के समान संसार के समस्त बन्धनों को तोड़ कर अलग न कर देगा, तेरी गणना ज्ञानियों में नहीं की जा सकती।

(२९) अपने लक्ष्य पर मर मिटने के लिये वह साहसी लोग चुने गये हैं, जिनकी कभी मृत्यु नहीं होती और पाप-कर्म करने के लिये उन मनुष्यों की

राहरौ ता देव बीनी बा फ़रिश्ता दर मसाफ़।
ज़िमतिहाने नफ़्से हिस्सी चंद बाशी मुमतहन ॥
चूँ बुरूँ रफ़ अज़ तो देव ईंनक दर आमद जिबरईल।
चूँ दर आमद जिबरईल ईंनक बुरूँ शुद अहेमन ॥
ईं जहानो आँ जहाँ हर दो बयक दम दर कशद।
चूँ निहंगे दर्दे दीं नागाह बुकशायद दहन ॥
सूए ईं हज़रत न पोयद हेच दिल बा आरज़ू।
बा चुनीं गुलरुख़ न ख़ुसपद हेचकस बा पैरहन ॥
गर हमी ख़ाही कि परहा रोयदत ज़ीं दामगाह।
हम चो किरमे पीला दर गिर्दे निहादे ख़ुद मतन ॥
बारे मानी बन्द अज़ीं जा जाँ के दर सहराए हश्न।
सख़्त क़ासिद बूद ख़ाहद रोज़े बाज़ारे सुख़न ॥
बादो क़िबला दर रहे तौहीद न तवाँ रफ़् रास्त।
या रज़ाए दोस्त बायद या हवाए ख़ेश्तन ॥

सृष्टि की गई है, जिनको बहुत थोड़े दिन जीने के लिये दिये गये हैं (वास्तव में मनुष्य वही है जो इस थोड़े से जीवन को अपकर्म्मों में व्यतीत न करके ईश्वरीय खोज में संलग्न रहता है)।

तू उस परब्रह्म की खोज में आगे बढ़। उस समय तुझे दिखलाई देगा कि शैतान स्वर्गीय दूतों से युद्ध कर रहा है। इन सांसारिक विषय-वासनाओं में कब तक फँसा रहेगा ?

तेरे अन्दर से बुराइयों का भूत भाग गया है और उसमें अब सद्भावनाओं का प्रकाश हो गया है। स्वर्गीय दूत के आ जाने पर शैतान कब रह सकता है ?

धर्म्म का घड़ियाल जब अपना मुख खोलता है तो दोनों लोकों को निगल जाता है।

कोई भी मनुष्य हृदय में किसी अन्य आकांक्षा को लेकर इस दरबार की ओर अग्रसर नहीं हो सकता और ऐसी प्रियतमा के साथ कोई भी किसी प्रकार का वस्त्र पहन कर शयन नहीं कर सकता।

यदि तू इस संसार-रूपी जाल से निकल भागने के लिये पर चाहता है तो रेशम के कीड़े के समान अपने आस-पास जाला मत लगा।

यदि यहाँ से कोई सामान अपने साथ ले जाना चाहता है तो आध्यात्मिक वस्तुओं को अपने साथ ले जा। क्योंकि मृत्यु के उपरान्त तू जिस स्थान पर पहुँचता है वहाँ ख़ाली बातों से काम नहीं चल सकता।

इस प्रणय मार्ग में तू दो लक्ष्य अपने सामने रख कर मत चल। और न इस प्रकार काम ही चल सकता है। या तो तू अपनी ही इच्छाओं के अनुसार काम कर या अपने यार की इच्छाओं पर चल।

यार नामए मा व मन दर आलमे हुस्नस्त तो बस।
चूँ अज़ीं आलम बुरूँ रफ़्ती न मा बीनी न मन॥
चंग दर फ़ित्राके साहब दौलते ज़न ता मगर।
बर तर आई ज़ीं सरिश्ते गौहरे हरफ़े मज़न॥
पोशिश अज़ दीं साज़ ता बाक़ी बेमानी वहे आँके।
गर बरीं पोशिश न मीरी हम तू रेज़ी हम कफ़न॥

(३०)

दर गहे ख़ल्क़ हमा ज़र्क़ो फ़रेबस्तो हवस।
कार दरगाहे ख़ुदावन्दे जहाँ दारदो बस॥
हर कसे नामे कसी याफ़्त अज़ीं दरगह याफ़्त।
ऐ बिरादर कसे ऊ बाश मैं अंदेश ज़े कस॥
बंदए ख़ासे मलिक बाश कि बा दाग़े मलिक।
रोज़हा ऐमनी अज़ शहना व शबहा ज़े असस॥
गर चे दर तायती अज़ हज़रते ऊ ला तामन।
वर चे गर मासियती अज़ दरे ऊ ला तैअस॥

'मेरे' और 'हमारे' का चर्चा केवल इस संसार तक ही है। यहाँ से निकल कर मेरे और 'हमारे' का भाव नितान्त निर्मूल सिद्ध होता है।

किसी बड़े आदमी की शरण ले, जिससे तू इन बुरी बातों से बचा रहे और उनका तुझ पर कोई असर न हो।

यदि अपने आप को किसी रंग में रँगना है तो प्रेम-रंग में रँग। क्योंकि इस रंग में रँगा हुआ मनुष्य मृत्यु के बन्धनों से छूट जाता है।

(३०) यह संसार विभिन्न जीवधारियों का निवास-स्थान, छल-कपट तथा विविध वासनाओं का क्रीड़ा-स्थल है। किसी काम का नहीं है। यदि किसी काम की कोई वस्तु है तो वह केवल ईश्वरीय लोक। एक धार्म्मिक मनुष्य बन जा और ईश्वरीय प्रेम में लवलीन हो जा। अन्यथा जितनी भी वस्तुएँ हैं सब तुझे दुखद प्रतीत होंगी।

यदि किसी को किसी प्रकार का यश प्राप्त हुआ तो वह केवल उसी ईश्वर के सम्बन्ध से। अतएव हे मित्र! तू उसी की सेवा में संलग्न रह और किसी से भय मत कर।

उस बादशाह का तू अनन्य भक्त बन जा। उसकी सेवा के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता मत कर। उसकी सेवा, उसके सेवक का पद, तुझे सदैव सांसारिक जालों से बचाये रहेगा।

तू भक्ति करता है, परन्तु इस पर भी ईश्वर की तरफ़ से निश्चिन्त मत होना और अपकर्म्म करके भी उसकी दयालुता के प्रति निराश न होना।

गर चे ख़ूबी तू सूए जिश्त बख़ारी मनिगर।
कंदरीं मुल्के चो ताऊस निगरस्त मगस ।।
तू फ़रिश्ता शवी अर जेह्द कुनी अज़ पए आँके।
बर्गे तूतस्त कि गश्तस्त बतद्रीज अतलस ।।
आशिक़ी बर ख़ुदो बर शह्वतो बर ख़ाबो ख़ुरिश।
नफ़्से गोयाय तो अज़ हिकमत अज़ाँनस्त अख़रस ।।
चंग दर गुफ़्तए यज़्दानो पैयंबर ज़न अज़ाँ के।
काँ चे क़ुरआनो ख़बर नेस्त फ़िसानस्तो हवस ।।
पोस्त बेगुज़ार कि ता साफ़ शवद ख़ूने तो ज़ाके।
कि चो बे पोस्त बुवद साफ़ शवद ख़ूँ ज़े अदस ।।
नामे बाक़ी तलबी गर्द कमाँ ज़ारी गर्द।
कज़ कमाँ ज़ारी कम उम्र ने आबद करगस ।।
आज़ बगुज़ार कि बा आज़ ब हिकमत न रसी।
वर बयाँ बायदत अज़ हाले "सनाई" बर रस ।।

तू भला है परन्तु इस पर भी बुरे से घृणा मत कर। बुरे से बुरे मनुष्य से भी भलाई की आशा की जा सकती है। (क्योंकि इस संसार में मक्खी के भी मोर के समान नक़्शो निगार होते हैं)।

प्रयत्न करने से तू देवत्व प्राप्त कर सकता है। शहतूत के वृक्ष की पत्तियाँ धीरे-धीरे अतलस के रूप में परिणत हो जाती हैं।

तू सदैव विषय-वासनाओं की पूर्ति में तल्लीन रहता है और आँख मूँद कर खाने और सोने में आनन्द अनुभव करता है। इसी कारण तेरी इन्द्रियाँ इतनी बलवती हो गई हैं।

भगवान और पैग़ंबर के कहने पर चल, क़ुरान और हदीसों को पढ़, उनके सिवा सब बेकार कहानियाँ हैं।

अपनी खाल उतार दे जिससे तेरा रक्त शुद्ध हो जावे। अपने आपको पवित्र करने के लिये वाह्य लालसाओं का त्याग कर दे। तू इस बात को स्वयम् समझता है कि छिलका उतार देने से मसूर का रंग साफ़ निकल आता है।

यदि तुझे अपना नाम शेष रखना है तो किसी को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न मत कर। अपने इसी गुण के कारण गृद्ध ने इतना लम्बा जीवन प्राप्त किया है।

लालच को अपने हृदय में भूल कर भी स्थान न दे। लालच के कारण सत्य-ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। यदि इसका उदाहरण चाहता है तो "सनाई" का हाल देख ले और उससे शिक्षा प्राप्त कर।

उमर ख़य्याम

(मृत्यु ११२३ ई०)



उमर ख़ैय्याम

(कवि की कुछ पंक्तियों का ईरान के एक प्राचीन चित्रकार द्वारा अंकित भाव चित्र)

यह कवि तथा ज्योतिषी थे। ईरान में उनकी ख्याति इस लिये नहीं है कि वह एक ब्रह्मवादी कवि थे वरन् इस लिये है कि वह गणित-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र के ज्ञाता थे। फ़िट्ज़जेराल्ड के अनुवाद द्वारा पाश्चात्य में इनका नाम अमर हो गया है, और पूर्व की अपेक्षा में पच्छिम इनकी ख्याति अधिक है। इनकी कविता एक अनोखे ढंग की है। सूफ़ी लोगों की कविता में आत्मवाद होता है, परन्तु इनकी कविता में निराशावाद की लहर है। इनकी कविता परंपरा से स्वतंत्र है और तत्कालीन रूढ़ियों से मुक्त। यह एक बड़े व्यंग्यात्मक कवि थे और आडम्बर (धार्मिक चिह्नों) की आलोचना बड़े ज़ोरदार शब्दों में किया करते थे। इन्होंने स्थान-स्थान पर अनेक बार इसकी असफलता के विषय में अपनी लेखनी उठाई है। हम लोगों में वह रुबाइयात के लेखक के नाम से प्रसिद्ध हैं। अब बड़े-बड़े विद्वान् इस विषय में सहमत हैं कि उनके नाम से जितनी भी रुबाइयाँ प्रसिद्ध हैं वह वास्तव में बहुत से कवियों की लेखनियों से निकली हुई हैं, जिनमें से इब्नसिना भी एक थे। कुछ रुबाइयाँ वास्तव में इन्हीं की हैं, परन्तु वे गणना में बहुत ही कम हैं। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी ने अपने 'उमर ख़य्याम' नामी निबंध में जिसको उन्होंने 'ओरियेंटल कान्फ्रेंस' के सन्मुख पढ़ा था, इनके ऊपर बहुत ही बढ़िया प्रकाश डाला है। इस बात में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता है कि वह एक उच्च कोटि के कवि थे, और ख़्वाजा इमाम के शब्दों में उनकी यह इच्छा कि मेरी क़ब्र ऐसे स्थान पर बने जहाँ कि वृक्ष वर्ष में दो बार अपने पुष्प बरसाया करें, कीट्स की इच्छा के समान पूर्ण भी हो गयी। उनकी क़ब्र नैशापुर में बनी हुई है, जहाँ पर शफ़ताल्लू और नाशपाती के वृक्ष अपनी पुष्प-वर्षा करते हैं। उनकी चतुष्पदी कवियाओं का प्रचार रूस वालों द्वारा सबसे पहले यूरोप में हुआ था। तब से उनका नाम अधिकाधिक व्यापक होता जा रहा है।

उनकी रचनाएं निम्न हैं:—

रुबाइयात।

ज्योतिष और गणित की पुस्तकें।

---

(१)

आमद सहरे निदा ज़े मैख़ानए मा।
कै रिंद ख़राबातिए दीवानए मा॥
बर ख़ेज़ कि पुर कुनेम पैमाना ज़े मै।
ज़ाँ पेश कि पुर कुनन्द पैमानए मा॥

(२)

मै क़ुव्वते जिस्मो क़ुव्वते जानस्त मरा।
मै काशिफ़े असरारे निहाँनस्त मरा॥
दीगर तलबे दीनवो उक़बा न कुनम।
यक जुरआ पुर अज़ हर दो जहाँनस्त मरा॥

(३)

अज़ बादए नाब लाल शुद गौहरे मा।
आमद बफ़ुग़ाँ ज़े दस्ते मा साग़रे मा॥
अज़ बसकि हमी ख़ुरेम मै बरसरे मै।
मा दर सिरे मै शुदेम व मै दर सरे मा॥

(४)

आशिक़ हमा रोज़ा मस्तो शैदा बादा।
दीवानओ शोरीदओ रुसवा बादा॥
दर हुशयारी ग़ुस्सए हर चीज़ ख़ुरेम।
चूं मस्त शवेम हर चे बादा बादा॥

---

(१) एक प्रभात काल में मेरे मदिरा-गृह से एक आवाज़ मेरे कानों में पड़ी कि 'ऐ मेरे मतवाले, मदिरा प्रेमी! उठ बैठ। आ जीवन के प्याले के भर जाने से पहले ही हम उस ईश्वर के प्रेम रूपी प्याले का पान करें। मृत्यु होने से पहले ही उससे लगन लगा लें।'

(२) प्रणय की मदिरा हमें बहुत लाभ पहुँचाती है। उससे हमारे शरीर तथा प्राणों को शक्ति प्राप्त होती है। उसके पीने से रहस्यों का पता लग जाता है। बस, मैं उस मदिरा का केवल एक घूँट चाहता हूँ। उसके उपरान्त न तो मुझे संसार अथवा जीवन की ही चिन्ता रहेगी और न मृत्यु की।

(३) इस प्रणय-रूपी शुद्ध मदिरा के पान कर लेने से प्रणय-मार्ग में हमारी प्रतिष्ठा और भी अधिक हो गई है। मदिरा का पात्र भी सदैव भरा ही रहता है। इस प्रणय-मदिरा की अधिकता से, हमारे मस्तिष्क तक में धुआं छा गया है, और सच्चे प्रणय को हमने पहचान लिया है।

(४) प्रणयी को समस्त दिन प्रणय में ही मतवाला रहना चाहिये।

(५)

ऐ आँकि गुज़ीदए जहानी तु मरा।
ख़ुश्तर ज़े दिलो दीदओ जानी तु मरा ॥
अज़ जाने सनमा अज़ीज़ तर चीज़े नेस्त।
सद बार अज़ीज़ तर अज़ानी तु मरा ॥

(६)

ख़ाही ज़े फ़िराक़ दर फ़ुग़ाँ दार मरा।
ख़ाही ज़े विसाल शादमाँ दार मरा ॥
मन बा तू न गोयम कि चेसाँ दार मरा।
ज़े इन्साँ कि दिलत ख़ास्त चुनाँ दार मरा ॥

(७)

चंदाँ बख़ुरम शराब कीं बूए शराब।
आयद ज़े तुराब चूँ रवम ज़ेरे तुराब ॥
ता बरसरे ख़ाके मन रसद मख़मूरे।
अज़ बूए तुरा बे मन शवद मस्तो ख़राब ॥

(८)

माओ मैओ माशूक़ दरीं कुंजे ख़राब।
जानो दिलो जामो जामा दर रहने शराब ॥

उसे पागल, व्याकुल होकर भटकते रहना चाहिये। होश में रहने पर प्रत्येक वस्तु की चिन्ता घेरे रहती है, परन्तु मतवाला हो जाने पर सभी वस्तुओं का ध्यान मस्तिष्क से दूर हो जाता है। यदि किसी का ख़याल रहता है तो उसी वस्तु का जिसने मतवाला बना दिया है।

(५) प्यारे! तू मेरे लिए संसार में सब से बढ़ कर है। तू मुझको दिल, आँख और कान इत्यादि सभी से बढ़ कर प्रिय है। प्यारे! प्राण से बढ़ कर कोई वस्तु प्रिय नहीं होती, परन्तु तू मुझको प्राणों से भी सौ गुना अधिक प्रिय है।

(६) मैं तेरी इच्छा पर निर्भर हूँ। यदि तू अपने वियोग में मुझे तड़पाना चाहता है तो तड़पा, और मिलन का सुख देना चाहता है तो सुख दे। तू जिस अवस्था में मुझे रखना चाहता है रख। मैं कभी इसके विरुद्ध अपने मुख से एक शब्द भी नहीं निकालूँगा।

(७) मैं इतनी मदिरा पान करूँगा, कि उसकी महक मेरे फ़र्श के नीचे से निकलती हुई समाधि तक जा पहुँचे, और उसमें से भी निकलने लगे ताकि कोई मतवाला प्रेमी उस तक आ पहुँचे तो उसकी महक से और भी मतवाला तथा बेसुध हो जावे।

(८) इस सुनसान, बीहड़ में, मैं हूँ, मदिरा है और और मेरी प्यारी है। प्राणों को, दिल को, प्याले को तथा वस्त्रों को, मदिरा के लिये गिरवी रख

फ़ारिग़ ज़े उमीदे रह्मतो बीमे अज़ाब।
आज़ाद ज़े ख़ाकओ बादो ज़े आतिशो आब॥

(९)

हर दिल कि दरू मेहो मोहब्बत बसिरिश्त।
गर साकिने मसजिदस्त वर अहले कुनिश्त॥
दर दफ़्तरे इश्क़ नामे हर कस के नविश्त।
आज़ाद ज़े दोज़ख़स्त वो फ़ारिग़ ज़े बहिश्त॥

(१०)

असरारे जहाँ चुनाँके दर दफ़्तरे मास्त।
गुफ़्तन नतवाँ ज़ाँके वबाले सरे मास्त॥
चूँ नेस्त दरीं मरदुमे नादाँ अहले।
गुफ़्तन न तवाँ हर उन्चे दर ख़ातिरे मास्त॥

(११)

बर तर्ज़े सिपहरे ख़ातिरम् रोज़े नख़ुस्त।
लौहो क़लमो बहिश्तो दोज़ख़ मी जुस्त॥
पस गुफ़्त मरा मोअल्लिम अज़ इल्मे दुरुस्त।
लौहो क़लमो बहिश्तो दोज़ख़ बा तुस्त॥

(१२)

ऐ आमदा अज़ आलमे रूहानी तफ़्त।
हैराँ शुदा दर पंजो चहारो शशो हफ़्त॥

दिया है। न तो यही कहता हूँ कि 'हे भगवन्! कृपा कर' और न उसके क्रोध का ही भय है। मैं इस समय जल, वायु, अग्नि और मिट्टी इत्यादि चारों भूतों से पृथक् हूँ।

(९) जिस हृदय में प्रेम की लगन लग गई, वह चाहे मसजिद में निवास करता हो चाहे बुतख़ाने में, जिस किसी का भी नाम प्रेमियों की सूची में आ गया, उसको न तो नरक की ही चिन्ता है और न स्वर्ग की इच्छा।

(१०) संसार की गुप्त बातें, जिन्हें हमारा दिल समझता है, प्रकट नहीं की जा सकती हैं। क्योंकि वह मेरे सर का बाल है। इन नादान मनुष्यों में कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य नहीं है, अतएव अपने हृदय का भेद हम प्रकट कर ही नहीं सकते हैं।

(११) सृष्टि जिस समय उत्पन्न हुई थी, मेरा हृदय भी वासनाओं का केन्द्र था। उसमें भी स्वर्ग-नरक के भेद-भाव वर्त्तमान थे। उस समय सच्ची शिक्षा देने वाले गुरु ने बहुत ठीक कहा था कि तख़्ती और क़लम तथा स्वर्ग और नरक के फेर में क्यों पड़ा हुआ है ? यह सब तो तेरे ही पास हैं।

(१२) ऐ आध्यात्मिकता के फेर में पड़े हुए मानव ! तू मार्ग में चलने से

मै ख़ुर कि नदानी ज़े कुजा आमदई।
ख़ुशबाश नदानी बकुजा ख़ाही रफ़्त॥

(१३)

दिल सिर्रे हयात रा कमाहए दानिस्त।
दर मौत हम असरारे इलाएं दानिस्त॥
इमरोज़ कि बाख़ुदी नदानिस्ती हेच।
फ़र्दा कि ज़े ख़ुद रवी चे ख़ाही दानिस्त॥

(१४)

ता बाज़ शिनाख़म मन ईं पाए ज़े दस्त।
ईं चर्ख़े फ़िरौ माया मरा दस्त बे बस्त॥
अफ़सोस कि दर हिसाब ख़ाहन्द निहाद।
उमरे कि मरा बे मयो माशूक़ो गुज़श्त॥

(१५)

चूँ आमदनम ब मन न बुद रोज़े नख़ुस्त।
वीं रफ़्ने बेमुराद अज़मेस्त दुरुस्त॥
बर ख़ेज़ो मियाँ बे बन्द ऐ साक़ी चुस्त।
तन दोहे जहाँ बमै फ़िरो ख़ाहम शुस्त॥

बहुत थक गया है। इस संसार के प्रपंच ने तुझे और भी व्याकुल बना रक्खा है। तुझको जब यही नहीं ज्ञात है कि तू कहाँ से आया है, तो मदिरा पान करले और सदैव प्रसन्न रहा कर। तुझे यह भी ज्ञान नहीं है कि अन्त में तू कहाँ जायगा।

(१३) दिल को जीवन का भेद पूर्णतया ज्ञात हो गया है। उसने यह भी समझ लिया है कि मृत्यु में भी ईश्वर के कुछ रहस्य गुप्त हैं। तू इस समय अपने आपे में है, परन्तु इस पर भी मृत्यु के रहस्य को नहीं समझता। कल जब तू अपने आपे में नहीं रहेगा, इन बातों को क्या समझ सकेगा ?

(१४) जिस समय से मैं होश में आया हूँ, उसी समय से काल-चक्र में फँस कर विपत्तियाँ उठा रहा हूँ। परन्तु मुझे एक बात का शोक है। मेरे जीवन का कुछ हिस्सा यों ही गुज़र गया था। उस समय न तो मैं यार को ही समझता था, और न उसके प्रणय में मतवाला हो रहा था। वह समय भी जीवन के हिसाब में जोड़ लिया जायगा। गोकि वह व्यर्थ गया।

(१५) मैं जन्म के समय स्वयम् अपने अस्तित्व को पहचान न सका था, और इस संसार से—जिसमें किसी की इच्छाएं पूर्ण नहीं होतीं—चला जाना ही अच्छा है। अतएव साक़ी! उठ, शराब पिलाने के लिये उद्यत होजा। इस जगत की चिन्ताओं व दुखों का अन्त मैं इसी मदिरा की मस्ती से करना चाहता हूँ।

(१६)

साक़ी मै मारेफ़त मरा मकरमतस्त।
दर मशरबे बेमारेफ़ताँ मासियतस्त॥
बेमारेफ़त आदमी चेकार आयद हेच।
मक़सूद जे आदमी हमीं मारेफ़तस्त॥

(१७)

बुतख़ानओ काबा ख़ानए बंदगी अस्त।
नाक़ूस ज़दन तरानए बन्दगी अस्त॥
मेहराबो कलीसाओ तसबीहो सलीब।
हक़्क़ा कि हमा निशानए बन्दगी अस्त॥

(१८)

अज़ मंज़िले कुफ़्र ता बदीं यक नफ़सस्त।
वज़ आलमे शक ताबैसक़ीं यक नफ़सस्त॥
ईं यक नफ़से अज़ीज़ रा ख़ुश मींदार।
कज़ हासिले उम्रे मा हमी यक नफ़सस्त॥

(१९)

हर दफ़्तरे आलीये मआनी इश्क़स्त।
सर बैते क़सीदए जवानी इश्क़स्त॥
ऐ आँके ख़बर नदारी अज़ आलमे इश्क़।
ईं नुक्ता बेदाँके ज़िन्दगानी इश्क़स्त॥

---

(१६) हे साक़ी! मुझको पुरस्कार में मिलन-मदिरा प्राप्त हुई है। जिसको मिलन-सुख का अनुभव नहीं हुआ. उसका अस्तित्व व्यर्थ है। उसको निकम्मा कहना चाहिये। मनुष्य-जीवन का उद्देश्य केवल ईश्वर से साक्षात् ही करना है।

(१७) मन्दिर तथा काबा, दोनों ही ईश्वर की पूजा के स्थान हैं। शंख बजाना उसी को आवाहन करना है। मसजिद की महराब, गिरजा की बेदी, तसबीह और माला सब में सत्य है। यह उसी परमेश्वर की पूजा की स्मृति में हैं।

(१८) धर्म्म तथा उसके प्रतिकूल चलने में तनिक-सा ही अन्तर है और इसी प्रकार सन्देह तथा विश्वास में बहुत कम अन्तर है। अतएव दोनों में यदि किसी प्रकार की विभिन्नता है तो केवल एक दम की। इस बहुमूल्य दम को आनन्द से व्यतीत कर। कारण कि हमारे जीवन का सार केवल यही एक दम है।

(१९) अन्तःकरण की प्रथम तथा सच्ची प्रेरणा प्रेम से ही प्रारम्भ होती है। यह पुस्तक प्रणय से ही प्रारम्भ होती है। युवावस्था के लिये सबसे उत्तम

(२०)

दर मैकदए इश्क़ अजल इस्मे मनस्त ।
रिंदी व परस्तीदने मै क़स्मे मनस्त ॥
मन जाने जहानम् अंदरीं दैरे मुग़ाँ ।
ईं सूरते कौन जुम्लगी जिस्मे मनस्त ॥

(२१)

दर हेच सरे नेस्त कि असरारे नेस्त ।
दिल रा ख़बर अज़ अंदको बिसायारे नेस्त ॥
हर ताएफ़ा रवंद राहे दर पेश ।
इल्ला रहे इश्क़ रा कि सालारे नेस्त ॥

(२२)

साक़ी दिले मन ज़े दस्त गर ख़ाहद रफ़ ।
बहुस्त कुजा ज़े ख़ुद बदर ख़ाहद रफ़ ॥
सूफ़ी कि चु ज़र्फ़ तंग अज़ ख़ेश पुरस्त ।
यक जुरआ अगर देही बसर ख़ाहद रफ़ ॥

(२३)

आँ बादा कि क़ाबिले हयातस्त बज़ात ।
गाहे हैवाँ मी शवद वगाह नबात ॥

वस्तु प्रेम ही है । हे मनुष्य ! तू इस प्रेम-रूपी जगत का कुछ भी ध्यान नहीं रखता है । तू इस रहस्य को समझ ले कि जीवन, प्रणय का ही नाम है ।

(२०) इस प्रणय के मदिरा-गृह की सूची में सब से पहला मेरा ही नाम है । मस्ती और मदिरा-पान मेरे ही हिस्से में आ पड़े हैं । शराब विक्रेताओं के इस घर में जो कुछ हूँ मैं ही हूँ । मैं ही शरीर और मैं ही प्राण हूँ । यह समस्त संसार की सूरतों में केवल मैं ही मैं हूँ ।

(२१) कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो रहस्य से ख़ाली हो, परन्तु दिल को थोड़े और बहुत का कुछ भी ध्यान नहीं है । प्रत्येक झुंड का कुछ न कुछ मार्ग है । ये सब निश्चित मार्गों से आगे बढ़ रहे हैं । परन्तु प्रणय के गरोह का कोई निर्णित मार्ग ही नहीं है ।

(२२) साक़ी यदि मेरा हृदय मेरे हाथ से जाता भी रहेगा तो क्या होगा ? वह स्वयम् एक नदी है और नदी अपने आपे से बाहर कब होती है । यह बात अवश्य है कि यदि किसी अहंकारी तथा ओछे सूफ़ी को यदि एक घूँट भी अधिक दे दी जावे तो वह उबलने लगता है ।

(२३) जिस मदिरा के पान करने से मस्ती आ जाती है, वह कभी बेसुध कर देती है और कभी ध्यान में ला देती है । यह समझना कि गुण अपने आप

ता जान न बरी कि हस्त गरदद हैहात।
मौसूफ़ बज़ाते तुस्त गर हस्त सिफ़ात॥

(२४)

दर सोमओ मदरसओ दैरो कुनिश्त।
तरसिंदए दोज़ख़स्तो जोयाए बहिश्त॥
आँ कस कि ज़े असरारे ख़ुदा बा ख़बरस्त।
ज़ीं तुख़्म दर अंदरूने दिल हेच नकिश्त॥

(२५)

तरसे अजलो बीमे फ़ना हस्तिए तुस्त।
वर्ना ज़े फ़ना शाख़े बक़ा ख़ाहद रुस्त॥
मन अज़ दमे ईसवी शुदम ज़िंदा बजाँ।
मर्ग आमदो अज़ वजूदे मन दस्त बेशुस्त॥

(२६)

दरियाब कि अज़ रूह जुदा ख़ाही रफ़्त।
दर परदए असरारे ख़ुदा ख़ाही रफ़्॥
मै ख़ुर कि न दानी ज़े कुजा आमदई।
ख़ुश ज़ी चो न दानी के कुजा ख़ाही रफ़्॥

वर्त्तमान रहते हैं, उचित नहीं जँचता। उनका अस्तित्व भी तो उसी सर्व-शक्तिमान के साथ लगा हुआ है।

(२४) शिक्षा-मन्दिर, मन्दिर और मस्जिद में, जितने भी मनुष्य हैं, वह दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं। एक तो वह जो नरक से डरते हैं और दूसरे वह जो स्वर्ग के इच्छुक हैं। परन्तु जिसको ईश्वर से लगन लग गई है, वह इन बातों को कभी अपने हृदय में स्थान ही नहीं देता।

(२५) मृत्यु का डर और विनाश का भय केवल तुम्हीं को है, वरन् विनाश वह वस्तु है जिससे अमरत्व का अंकुर फूटता है। ईसा की कृपा से मेरे प्राणों को वह शक्ति प्राप्त हो गई है कि मृत्यु आकर और जीवन से निराश होकर लौट गई। मेरा सांसारिक अस्तित्व मिट गया है और मृत्यु अब मेरे निकट आकर ले ही क्या सकती है?

(२६) अवकाश से कुछ न कुछ लाभ उठाने का प्रयत्न करो। कारण कि तुमको रूह से पृथक् होना आवश्यकीय है और ईश्वर की खोज में निकलना है। शराब पियो। तुमको न तो यही ध्यान है कि कहाँ से आये हो, और न यही विचार है कि कहाँ जाओगे। अतएव जो कुछ भी करना है अपने जीवन में कर लो। पीछे पछताना पड़ेगा।

(२७)

बाहर बदो नेक राज़ न तवानम गुफ़् ।
दायम सख़ुने दराज़ न तवानम गुफ़् ॥
हाले दारम् कि शरह न तवाँ दादन्द ।
राज़े दारम् कि बाज़ न तवानम गुफ़् ॥

(२८)

यारब तू करीमी व करीमी करमस्त ।
आसी ज़े चे रू बरूँ ज़े बाग़े यरमस्त ॥
बाताअतम अरबे बख़्शी आँ नेस्त करम ।
बा मासिएतम अगर बबख़्शी करमस्त ॥

(२९)

ऐ वाए बराँ दिल कि दरूँ सोज़े नेस्त ।
सौदा ज़दए मेहे दर अफ़रोज़े नेस्त ॥
रोज़े कि तू बेबादा बसर ख़ाही बुर्द ।
ज़ाया तर अज़ाँ रोज़ तुरा रोज़े नेस्त ॥

(३०)

मन बन्दए आसीअम रज़ाए तू कुजा अस्त ।
तारीक दिलम् नूरे सफ़ाए तू कुजा अस्त ॥
मारा तू बहिश्त अगर बताअत बख़्शी ।
ईं मुज्द बुवद लुत्फ़ो अताए तू कुजा अस्त ॥

---

(२७) प्रत्येक अच्छे अथवा बुरे से अपना भेद नहीं कह सकता और न सदैव लम्बा चौड़ा वर्णन ही कर सकता हूँ। मेरा ऐसा हाल है कि जिसको खोल कर किसी से कह नहीं सकता और मेरा रहस्य ऐसा है कि जिसका साफ़ शब्दों में वर्णन ही नहीं हो सकता।

(२८) भगवन् ! तू दयालु है और दयालुता से ही तेरी ख्याति है। फिर पापी को स्वर्ग से वंचित क्यों किया गया है ? यदि भक्ति और भजन के कारण तू मुझे क्षमा प्रदान करके अपनाता है, तो इसमें तेरी दयालुता कहाँ रही। हाँ, दुष्ट होने पर भी यदि तू मुझे अपनावे तब तेरी दयालुता अवश्य है।

(२९) जिस हृदय में किसी प्रकार की पीड़ा न हो, वह शोचनीय है। और जो किसी के प्रेम में पागल न हो उस पर धिक्कार है। प्रेम-विहीन जितने भी दिवस तेरे व्यतीत हो रहे हैं, वह सब व्यर्थ हैं, उनमें तनिक भी सार नहीं।

(३०) मैं पापिष्ट हूँ। तेरी वह पापियों को क्षमा प्रदान करने वाली दया कहाँ है, जिससे मुझे भी क्षमा मिले ? मेरे हृदय में अन्धकार हो रहा है, अपने प्रकाश से उसे भी प्रकाशित कर दे। यदि भक्ति के कारण तूने मुझे स्वर्ग प्रदान किया तो इसमें तेरी कृपा कब हुई।

(३१)

हर दिल कि दरू मायए तजरीद कमस्त।
बेचारा हमा उम्र नदीमे नदमस्त ॥
जुज़ ख़ातिरे फ़ारिग़ कि निशादे दारद।
बाक़ी हमा हर चे हस्त असबाबे ग़मस्त ॥

(३२)

पुर ख़ूँ जे फ़िराक़त जिगरे नेस्त कि नेस्त।
शैदाए तू साहब नज़रे नेस्त कि नेस्त ॥
बआँ कि न दारी सरे सौदाए कसे।
सौदाए तू दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥

(३३)

चूँ रिज़्क़े तु ऊँचे अद्ल क़िस्मत फ़रमूद।
यक ज़र्रा न कम शुदो न ख़ाहद अफ़ज़ूद ॥
आसूदा ज़े हर चे हस्त मी बायद शुद।
आज़ादा ज़े हर चे हस्त मी बायद बूद ॥

(३४)

जानम ब फ़िदाए आँ कि ऊ अह्ल बुवद।
सर दर क़दमश अगर नेहम सह्ल बुवद ॥
ख़ाही कि बेदानी बयक़ीं दोज़ख़ बूद।
दोज़ख़ बजहाँ सोहबते नाअह्ल बुवद ॥

---

(३१) जिस हृदय में त्याग की उमंग कम है, वह जीवन भर लज्जित ही बना रहेगा। जिस हृदय में त्याग है, सांसारिक विघ्नों की छाया नहीं है, वही प्रसन्न है। शेष सभी वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं।

(३२) कोई भी हृदय ऐसा नहीं है, जो तेरे विरह से पीड़ित न हो और कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य ऐसा नहीं है जो तेरे लिये व्याकुल न हो। तुझे किसी की भी चिन्ता नहीं है, परन्तु तेरा ध्यान सभी को है।

(३३) ईश्वर के इशारों पर तू नाचता है और वह जो चाहता है तुझे करना ही पड़ेगा। फिर तो तुझे यही उचित है कि संसार में किसी की पर्वाह न कर। क्योंकि बन्धनों से मुक्त रहने ही में भलाई है।

(३४) जो मनुष्य उस पर फ़िदा है, वह इन्सान है। उस पर मैं अपने आपको न्योछावर करने के लिये उद्यत हूँ। और उसके चरणों में पड़ा रहना सरल समझता हूँ। परन्तु यदि तुम नरक की वास्तविकता का ज्ञान करना चाहते हो, तो समझ लो कि ईश-विमुख, अज्ञानी मनुष्य की संगति ही नरक है।

(३५)

बोसीदा मुरक्क़ाअंद ईं ख़ामे चंद ।
ना रफ़्ता रहे सिद्क़ो सफ़ा गामे चंद ॥
बेगिरिफ़्ता ज़े तामात अलिफ़ लामे चंद ।
बदनाम कुनिन्दए निकू नामे चंद ॥

(३६)

दर आलमे जाँ बहोश मी बायद बूद ।
दर कारे जहाँ ख़मोश मी बायद बूद ॥
ता चश्मो ज़बाँ व गोश बर जा बाशद ।
बे चश्मो ज़बानो गोश मी बायद बूद ॥

(३७)

शब नेस्त कि अक़्ल दर तहैयुर न शवद ।
वज़ गिरया कि नारे मन पुर अज़दुर न शवद ॥
पुर मीं न शवद कासए सर अज़ सौदा ।
आँ कासा कि सर निगूँ बुवद पुर न शवद ॥

(३८)

आँहाँ कि मुहीते फ़ज़्लो आदाब शुदन ।
दर कश्फ़े उलूम शमए असहाब शुदन ॥
रह ज़ीं शबे तारीक न बुरदंद बुरूं ।
गुफ़्तंद फ़िसानाओ दर ख़ाब शुदंद ॥

---

(३५) कुछ ऐसे साधु हैं जो फटी हुई गुदड़ी पहने हुए हैं। वे सच्चे तथा पवित्र मार्ग से कहीं दूर हैं। वे पूरे ढोंगिया हैं। उन्होंने केवल कुछ शब्द ईश्वर के विषय में रट लिये हैं, और बहुत से अच्छे तथा सच्चे मनुष्यों को व्यर्थ में बदनाम करने का ठेका ले रक्खा है।

(३६) प्राणों के सम्बन्ध में सतर्क रहना आवश्यकीय है, और सांसारिक कामों में शान्ति से काम लेना उचित है। जिह्वा, कान, नेत्र इत्यादि को उचित शिक्षा देने के लिये, उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना आवश्यकीय है, जब उनकी न सुनोगे तो वह सभी ठीक मार्ग पर आ जायेंगे।

(३७) प्रत्येक रात को मैं उसका ध्यान करके रोता हूँ। परन्तु इस पर भी उसकी लगन में पागल नहीं होता हूँ। सत्य बात तो यह है कि ईश्वर के प्रति जो प्रेम उत्पन्न होता है वह रोने अथवा चिन्ता करने से उत्पन्न नहीं होता है, परन्तु अन्तःकरण तथा हृदय से उत्पन्न होता है।

(३८) संसार में एक से एक बढ़ कर ज्ञानी मनुष्य हो चुके हैं। उन्होंने योग तथा ज्ञान के मार्ग में बहुत सी नवीन खोजें की हैं, परन्तु वह लोग भी इस मायामय संसार का पार नहीं पा सके। केवल एक कहानी कह कर सो रहे।

(३९)

ता बूद दिलम् ज़े इश्क़ महरूम न शुद।
कम बूद ज़े असरार कि मफ़हूम न शुद ॥
अकनूँ कि हमीं बिनगरम् अज़ रूए ख़िरद।
माल्लूमम् शुद कि हेच माल्लूम न शुद ॥

(४०)

दर दह हराँ के नीम नाने दारद।
अज़ बहे निशस्त आस्ताने दारद ॥
नै ख़ादिमे कस बुवद नै मख़दूमे कसे।
गो शाद बेज़ी कि ख़ुश जहाने दारद ॥

(४१)

क़ौमे ज़े गुज़ाफ़ दर ग़ारूर उफ़तादंद।
क़ौमे ज़े पए हूरो क़सूर उफ़तादंद ॥
माल्लूम शवद चु पर्दहा बर दारंद।
कज़ कूए तु दूर दूर दूर उफ़तादंद ॥

(४२)

उमरत ताकै बख़ुद परस्ती गुज़रद।
या दरपए नेस्तीओ हस्ती गुज़रद ॥
मै ख़ुर कि चुनीं उम्र कि ग़म दरपए ओस्त।
आँ बेह कि बख़ाब या ब मस्ती गुज़रद ॥

---

(३९) जिन दिनों मैं प्रेम में पागल था, लगभग सभी रहस्य मुझ पर प्रगट थे। परन्तु जब ज्ञान से काम लेकर देखता हूँ, तो माल्लूम होता है कि मैंने अब तक कुछ भी नहीं समझा था।

(४०) संसार में वही मनुष्य सुखी है, जिसे खाने के लिए आधी रोटी मिलती है, और बैठने के लिये थोड़ी सी जगह, जो न तो किसी का चाकर है, और न किसी का स्वामी। उससे कह दो, मग्न रहे उसका संसार सब से अच्छा है।

(४१) कुछ मनुष्य व्यर्थ की बातें बना कर अहंकारी हो गये हैं। कुछ लोगों ने स्वर्ग की सुन्दरियों तथा सौन्दर्य का अखाड़ा ही बना डाला है। परन्तु जब बीच का पर्दा उठा दिया जायगा, उस समय सब को ज्ञात हो जायगा कि वह तेरी गली से कहीं दूर जा पड़े हैं।

(४२) तेरी उम्र, अपने स्वार्थ में मस्त रह कर कब तक व्यतीत होती रहेगी और कब तक तू इस जीवन तथा मृत्यु की खोज में व्यस्त रहेगा? आ और मदिरा-पान करके नशे में सब कुछ भुला दे। उस जीवन से, जिसमें दुःख तथा क्लेश हो, सोना अथवा मस्त रहना कहीं उत्तम है।

(४३)

इश्क़े कि मजाज़ी बुवद् आबश न बुवद् ।
चूँ आतशे नीम मुर्दा ताबश न बुवद् ।।
आशिक़ बायद् कि सालो माहो शबो रोज़ ।
आरामो क़रारो ख़ुरो ख़ाबश न बुवद् ।।

(४४)

दर राह चुनाँ रौ कि सलामत न कुनन्द् ।
बा ख़ल्क़ चुनाँ ज़ी कि क़यामत न कुनन्द् ।।
दर मसजिद् अगर रवी चुनाँ रौ कि तुरा ।
दर पेश न ख़ाहंदो इमामत न कुनन्द् ।।

(४५)

दर राहे ख़िरद् बजुज़ ख़िरद् रा मपसन्द् ।
चूँ हस्त रफ़ीक़े नेको बद् रा मपसन्द् ।।
ख़ाही कि हमाँ जहाँ तुरा बेपसन्दन्द् ।
मी बाश बख़ुशदिली व ख़ुदरा मपसन्द् ।।

(४६)

ख़ाही कि तुरा रुतबते असरार रसद् ।
मपसंद कि कस राज़े तू आज़ार रसद् ।।
अज़ मर्ग मै अन्देश बग़मे रिज़्क़ मख़ुर्द् ।
कीं हर दो बवक़्त ख़ेश नाचार रसद् ।।

---

(४३) सांसारिक प्रेम में वह प्रभा अथवा वह उज्ज्वलता नहीं होती जो ईश्वरीय प्रेम में होती है। वह अधजली अग्नि के समान शोभाहीन होता है। प्रेमी तो ऐसा होना चाहिये जो वर्षों और महीनों क्या प्रत्येक क्षण बेकल और बेचैन रहे।

(४४) मार्ग में चलते हुए इस प्रकार चल कि लोग तुझे सलाम न कर सकें, और उनसे ऐसा बर्ताव कर कि वह तुझे देख कर उठ न खड़े हों। मसजिद में यदि जाता है तो इस प्रकार जा कि लोग तुझे इमाम न बना लें। नम्र बन और अपने को चतुर प्रकट मत कर।

(४५) बुद्धि के मार्ग में बुद्धि के अतिरिक्त किसी और को न मान। जब तुझे साथी अच्छा मिल गया है तो बुरे को पसन्द मत कर। यदि तू यह चाहता है कि सभी लोग तुझसे प्रसन्न रहें तो सदैव प्रसन्न-चित्त रह और अपनी पसन्दी पर मत चल।

(४६) यदि तू संसार में धर्मात्मा तथा पुण्यवान् बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिससे किसी को कष्ट न पहुँचे। मृत्यु का कभी भय मत कर और रोटियों की चिन्ता छोड़ दे। क्योंकि यह दोनों वस्तुएँ समय पर स्वयम् ही आ उपस्थित होती हैं।

(४७)

मौजूदे हक़ीक़ी बजुज़ इंसाँ न बुवद ।
बर फ़ह्मे कसे ईं सख़ुन आसाँ न बुवद ।।
एक जुर्रा अज़ी शराबे बेग़श मी कश ।
ता ख़ल्क़े ख़ुदा पेशे तू यकसाँ न बुवद ।।

(४८)

चंदाँ मर्दे ईं रह के दुई बरख़ेज़द ।
गर नेस्त दुई जे रहरवी बरख़ेज़द ।।
तु ऊ न शवी ऊ लेक गर जेहद्कुनी ।
जाए बेरसे कज़ तु तुई वरख़ेज़द ।।

(४९)

बदख़ाहे कसाँ हेच बमक़सद न रसद ।
यक बद न कुनद ता बख़ुदश सद न रसद ।।
मन नेके तू ख़ाहम व तू ख़ाही बदेमन ।
तू नेक न बीनी व बमन बद न रसद ।।

(५०)

ख़ुर्रम दिले आँ कसे कि मारूफ़ न शुद ।
दर जुब्बओ दर्राओ दर सूफ़ न शुद ।।
सीमुर्ग़ सिफ़त बअर्श परवाज़ी कर्द ।
दर कुंजे ख़राबए जहाँ बूफ़ न शुद ।।

---

(४७) इस संसार में मनुष्य ही एक ख़ास चीज़ है, परन्तु प्रत्येक के लिये यह समझना कठिन है। तू इस बेमेल मदिरा का एक घूँट पीले जिसके प्रभाव से ईश्वर के समस्त जीवधारी तुझे समान दृष्टि आवेंगे।

(४८) ईश्वर की खोज में, उसके पाने की इच्छा में, इतना आगे मत बढ़ जा कि भगवान् और भक्त के बीच का अन्तर ही जाता रहे। यदि यह भेदभाव ही नहीं रहेगा तो फिर उसके प्राप्त करने के लिये आगे किस प्रकार बढ़ा जावेगा। तू स्वयम् कभी ब्रह्म नहीं हो सकता परन्तु भक्ति और साधना से इस पद तक पहुँच सकता है कि तेरा अहम् भाव तुझसे पृथक् हो जावे।

(४९) दूसरों का बुरा चाहने वाला कभी अपने अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता। वह किसी से एक बुराई करता है कि इतने ही में स्वयम् उसकी सौ बुराइयाँ इधर-उधर फैल जाती हैं। मैं तेरी भलाई चाहता हूँ और तू मेरी बुराई, तो इसका फल यही होगा कि तुझे भलाई नहीं प्राप्त होगी और मैं बुराई से अलग रहूँगा।

(५०) जो मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं है, उसका जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत होता है। वह बढ़िया कुर्ता और कम्बल नहीं पहनता तो अच्छा करता है।

(५१)

अन्दर रहे इश्क़ जुमला साफ़ाँ दुर्दन्द ।
वन्दर तलबश जुमला बुज़ुर्गां ख़ुर्दन्द ॥
इमरोज़ शबोरोज़ ज़े फ़रदा ईनस्त ।
फ़रदा तलबाँ दर ग़मे फ़रदा मुर्दन्द ॥

(५२)

गर बादा बकोह दर्देही रक़्स कुनद ।
बुवद आँ कि बादा रा नक़्स कुनद ॥
अज़ बादा मरा तौबा चे मीं फ़रमाई ।
रूहेस्त कि ऊ तरबियते शख़स कुनद ॥

(५३)

आँ क़ौम कि सज्जादा परस्तंद ख़रन्द ।
ज़ीराके बज़ेरे बारे सालूस दरन्द ॥
वीं अज़ हमा तुर्फ़ोतर कि दर्दीदये ज़ोहद ।
इस्लाम फ़रोशन्दो ज़े काफ़िर बतरन्द ॥

(५४)

असरारे अज़ल बादा परस्तां दानन्द ।
क़द्रे मै व जाम तंगदस्ताँ दानन्द ॥

ऐसा मनुष्य ही पक्षी के समान ऊपर आकाश में उड़ जाता है, और इस संसार के उजाड़-खण्ड का उल्लू नहीं बनता ।

(५१) प्रणय-मार्ग में, बहुत ही स्वच्छ और पवित्र मनुष्य भी गन्दे हैं, और ईश्वर की खोज में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य भी हेय तथा तुच्छ हो रहे हैं। जिस प्रकार आज दिन है और फिर रात होगी, उसी प्रकार कल भी दिन और रात का चक्कर आवेगा । यह कल के इच्छुक उसी की चिन्ता में मर गये हैं ।

(५२) यदि किसी पहाड़ को मदिरा पिला दो तो वह भी हिलने लगे, इस लिये जो उसे बुरा बतलाता है वह स्वयम् बुरा है । मुझे मदिरा न पीने की शिक्षा क्यों देते हो ? यह तो ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा ईश्वर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है ।

(५३) मृगछाला धारण करने वाले त्यागियों पर जो विश्वास करके उनकी अभ्यर्थना करते हैं, वह मूर्ख हैं । ऐसे साधु कपट के बोझ से दबे हुए हैं । यदि उन्हें धार्म्मिक दृष्टि से देखें तो वह और भी बुरे सिद्ध होते हैं । उन्हें तो विधर्म्मियों से भी बुरा कहा जा सकता है ।

(५४) मदिरा के ग्राहकों पर ही जन्म के दिन के रहस्य प्रगट हुआ करते हैं, और शराब तथा प्यालों की इच्छा निर्धनों ही को हुआ करती है । यदि तू

गर चश्मे तो हाले मन वेदानद ना अजब ।
शक नेस्त कि हाले मस्त मस्ताँ दानन्द ॥

(५५)

सुस्ती मकुनो फ़रीज़िए हक़ बगुज़ार ।
दर ओहदए आँ जहाँ मनम बादा बयार ॥
दर ख़ून कसे व माले कसे क़स्द मकुन ।
वाँ लुक़्मा कि दारी ज़े कसाँ बाज़ मदार ॥

(५६)

दी कूज़ा गरे बदीदम अन्दर बाज़ार ।
बर पारए गिले हमी लकद ज़द बिस्यार ॥
वाँ गिल बज़बाने हाल बा ऊ मी गुफ़् ।
मन हमचो तू बूदा अम मरा गर्मेदार ॥

(५७)

गर गौहरे ताअतत न सुफ़्तम हरगिज़ ।
वर गिर्दे रहत ज़े रुख़ न रफ़्तम हरगिज़ ॥
नौमीद नेअम ज़े बारगाहे करमत ।
ज़ीराके यकेरा दो न गुफ़्तम हरगिज़ ॥

(५८)

बाज़े बूदम परीदा अज़ आलमे राज़ ।
बू ता कि परम दमे नशीनी बफ़राज़ ॥

मेरे हाल को जानता है, तो इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है ? मस्त लोगों की बातें मस्त ही जाना करते हैं ।

(५५) आलस में मत पड़ा रह और ईश्वर के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन कर । उस लोक का बोझ मैं अपने सिर पर लेता हूँ । बस मदिरा ला ; और कुछ न चाहिये । किसी के प्राणों तथा धन को लेने का कुत्सित विचार मत कर और जो कुछ भी तुझे प्राप्त है, उसमें से दूसरों को भी दे ।

(५६) कल मुझको हाट में एक कुम्हार दिखलाई दिया था जो थोड़ी-सी गीली मिट्टी को अपने पैरों से रौंद रहा था । वह मिट्टी उससे यह शब्द कह रही थी कि मैं भी तेरे ही समान किसी समय मनुष्य के रूप में थी और मुझ में भी यह सब बातें वर्त्तमान थीं ।

(५७) भगवन् ! मैंने कभी तेरी पूजा नहीं की और न तुझ तक पहुँचने का प्रयत्न ही किया है, परन्तु इस पर भी मैं निराश नहीं हूँ । मुझे तेरी कृपा का भरोसा है । कारण कि मैंने कभी भी अपने मुख से एक को दो नहीं कहा । सदैव मुझे तेरा ध्यान रहा है ।

(५८) मैं एक बाज़ था और उस रहस्यमय लोक से इस आशा को

ई ँ जा के न याफ़तम् कसे महरमे राज़।
जाँ दर के दरामदम् बुरूँ रफ़्तम बाज़॥

(५९)

मा आशिक़े आशुफ़्ओ मस्तेम इमरोज़।
दर कूए बुताने बादा परस्तेम इमरोज़॥
अज़ हस्तिए ख़ेश्तन बगुले रूस्ता।
पैवस्ता व मेहराबे अलस्तेम इमरोज़॥

(६०)

रफ़्न्द ज़े रफ़्गाँ यके न आमद बाज़।
ता बा तू बगोयद अज़ पसे पर्दए राज़॥
कारत ज़े नियाज़ मी कुशायत न निमाज़।
बाज़ीचा बुवद निमाज़ बे सिद्क़ो नियाज़॥

(६१)

मी पुरसीदी कि चीस्त ई ँ नक़्शे मजाज़।
गर बर गोयम हक़ीक़तश हस्त दराज़॥
नक़्शेस्त पिदीद आमदा अज़ दरियाए।
वाँगाह शुदा बक़ेरे आँ दरिया बाज़॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो। परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया।

(५९) हम आज प्रेमी हैं। लगन लग रही है। हालत ख़राब है और मतवाले हो रहे हैं। हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं। हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया। अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है। तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से। जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है।

(६१) तू मुझसे इस वाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा। वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है।

(६२)

ऐ वाक़िफ़े असरारे ज़मीरे हमाकस।
दर हालते इज्ज़ दस्तगीरे हमाकस॥
यारब तो मरा तौबा देहो उज्रपेज़ीर।
ऐ तौबा देहो उज्रपेज़ीरे हमा कस॥

(६३)

पंदे देहमत अगर बमनदारी गोश।
अज़ बहे खुदा जामए तज़वीर मपोश॥
उक़बा हमा रोज़स्त दुनिया यकदम।
अज़ बहे दमे मुल्के अबद मफ़रोश॥

(६४)

बगुज़ार दिला वसवसए फ़िक्रे मोहाल।
दर कश क़दहे बादओ बुगुज़र जो मलाल॥
आज़ाद शओ मुजर्रदो बादा परस्त।
ता मर्द शवी रसी बसर हद्दे कमाल॥

(६५)

मै ख़ुर कि न इल्म दस्तगीरद न अमल।
इल्ला करमो रहमते हक़्क़े इज्जो जल॥
आँ तायफ़ए कि अज़ ख़िरे मै न ख़ुरन।
अज़ जुम्लए अनआम शुमाराए अहवल॥

---

(६२) हे ईश! तू प्रत्येक मनुष्य के गुप्त से गुप्त भेदों से परिचित है और लाचारी तथा दुखद अवस्था में सब की सहायता करता है। भगवन्! मुझे पापों से बचने की शक्ति प्रदान कर। तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूँ। परमेश्वर के लिये कपटी मत बनो। छल-छद्म का जामा मत पहनो। सचाई एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है। तनिक सी बात के लिये अपना परलोक मत बिगाड़ो।

(६४) ऐ हृदय! व्यर्थ की चिन्ताओं के झमेले में अपने आपको मत डाल। मदिरा का एक प्याला पीले और शोक को अपने हृदय में स्थान मत दे। स्वतंत्र, बन्धन-हीन और मदिरा-सेवी बन जा, जिससे मनुष्य के समान अपने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके।

(६५) मदिरा पान कर मतवाला बन जा। यह ज्ञान न तो तेरी किसी प्रकार की सहायता हो करेगा और न उसके उपयोग से कोई लाभ ही

(६६)

असरारे हक़ीक़त न शवद हल बसवाल ।
न नीज़ बदरबाख़तने नैमतो माल ॥
ता जाँ न कनी ख़ूँ न ख़ुरी पंजह साल ।
अज़ क़ाल तुरा रह न नुमायन्द बहाल ॥

(६७)

बानफ़्स हमेशा दर नबर्दम चे कुनम ।
वज़ कर्दए ख़ेश्तन ब दर्दम चे कुनम ॥
गीरम के ज़ेमन दर्गुज़रानी ब करम ।
आं शर्म के दीदी के चे कर्दम चे कुनम ॥

(६८)

अज़ ख़ालिक़े किर्दगार वज़ रब्बे रहीम ।
नौमीद मशौ बजुर्मो इसयाने अज़ीम ॥
गर मस्तो ख़राब बूदा बाशी इमरोज़ ।
फ़रदा बख़शद बरउस्तोख़ानहाए रमीम ॥

(६९)

गोयन्द मरा कि मै परस्तम हस्तम ।
गोयन्द मरा आरिफ़ो मस्तम हस्तम ॥

पहुँचेगा । ईश्वर तथा गुरुजनों की अनुकम्पा ही तेरी सहायक हो सकती है । अतएव जो लोग मूर्खता से प्रणय-मदिरा का सेवन नहीं करते उन्हें बिल्कुल जानवर ही समझना चाहिये ।

(६६) ईश्वर के रहस्य पूछने से नहीं मालूम होते और न धन-दौलत ख़र्च करने से ही उनका पता लग सकता है । उसके लिये पचास वर्ष की कठोर तपस्या की आवश्यकता है । पचास वर्ष तक ध्यान करो और अपने हृदय के रक्त को सुखा डालो, तब कहीं इस नाशवान् शरीर को वहाँ तक पहुँचने की सामर्थ्य हो सकती है ।

(६७) मैं सदैव अपनी वासनाओं को वश में करने का प्रयत्न किया करता हूँ । अपने पाप कर्मों से दुखी रहता हूँ, और क्या करूँ ? मुझे वह क्षमा प्रदान कर देगा, परन्तु इस बात की लज्जा मेरे हृदय में सदैव रहेगी कि तूने मेरे बुरे कर्म्मों को देख लिया ।

(६८) बड़े से बड़ा पाप कर्म करके भी उस जगत्पिता की तरफ़ से निराश मत हो । यदि तू आज मस्त तथा मतवाला हो रहा है तो स्मरण रख कि मृत्यु के उपरान्त ईश्वर तुझ पर अपनी दया-दृष्टि अवश्य डालेगा और क्षमा प्रदान करेगा ।

(६९) लोग मुझे शराबी कहते हैं; निस्सन्देह मैं ऐसा ही हूँ । सब के

दर ज़ाहिरे मन निगाहे बिसयार मकुन।
कन्दर बातिन चुनाँ के हस्तम हस्तम ॥

(७०)

ता ज़न न बरी कि मन बख़ुद मौजूदम।
या ईं रहे ख़ूँख़ार बख़ुद पैमूदम ॥
चूँ बूद हक़ीक़ते मरा अज़ वै बूद।
मन ख़ुद कि बुदम कुजा बुदम कै बूदम ॥

(७१)

मक़सूद ज़े जुमला आफ़रीनिश मायेम।
दर जिस्मे ख़िरद जौहरे बीनिश मायेम ॥
ईं दायरए जहाँ चु अंगुश्तरीस्त।
बे हेच शके नक़्शे नगीनिश मायेम ॥

(७२)

मन ज़ाहिरे नेस्ती व हस्ती दानम।
मन बातिने हर फ़राज़ो पस्ती दानम ॥
बाईं हमा अज़ दानिशे ख़ुद बेज़ारम।
गर मरतबए वराय मस्ती दानम ॥

सब मुझे मस्त और मतवाला बताते हैं। उनकी बात भी ठीक है। परन्तु मेरी वाह्य दशा पर अधिक ध्यान न दो और न उस पर किसी प्रकार का आक्षेप ही करो। कारण कि भीतर तो मैं जैसा हूँ वैसा ही हूँ। उस पर किसी की भी दृष्टि नहीं पड़ती।

(७०) यह मत समझ लेना कि इस संसार में मैं स्वयम् ही आ उपस्थित हुआ हूँ, और इन विपत्तियों से परिपूर्ण मार्ग पर चल रहा हूँ। मेरी आत्मा को उसी ईश्वर ने इस रूप में भेजा है। अन्यथा मैं स्वयम् क्या था, कहाँ था और किस समय था ? अर्थात् मैं स्वयम् कुछ भी नहीं था।

(७१) इस सृष्टि के सर्व-श्रेष्ठ जीव हमी हैं और इस शरीर के अन्दर बुद्धि नामक जो पदार्थ है वह हमारे ही सम्बन्ध से सार्थक है। संसार इस सृष्टि का एक अँगूठी के समान अंश मात्र है और निस्सन्देह हम ही इस संसार रूपी अँगूठी के नगीने हैं।

(७२) मैं मृत्यु तथा जीवन के वाह्य-रूप से भली-भाँति परिचित हूँ और प्रत्येक ऊँचाई तथा निचाई के भेद को भी ख़ूब समझता हूँ। परन्तु यदि मैं मस्ती से भी बढ़ कर किसी पद को समझने लगूँ तो मेरा सारा ज्ञान व्यर्थ जायगा।

(७३)

मन बादा ख़ुरम वलेक मस्ती न कुनम।
अला बक़दए दराज़ दस्ती न कुनम॥
दानी ग़रज़म ज़े मै परस्ती चे बुवद।
ता हमचो तू ख़ेशतन परस्ती न कुनम॥

(७४)

मा ख़िर्क़ए ज़ोहद दर सरे ख़ुम करदेम।
वज़ ख़ाके ख़राबात तयम्मुम करदेम॥
बाशद कि दरूने मैकदा दरयाबेम।
उम्रे कि दरूने मदरसा गुम करदेम।

(७५)

यारब मन अगर गुनाह बेहद करदम।
बर जानो जवानीओ तने ख़ुद करदम॥
चूँ बर करमत वसूक़े कुल्ली दारम।
बरगश्तमो तौबा करदमो बद करदम॥

(७६)

चंदाँके ज़ेख़ुद नेस्त तरम हस्त तरम।
हरचंद बलंद पायातर पस्त तरम॥
ज़ीं तुर्फ़ा तर आँके अज़ शराबे हस्ती।
हर लहज़ा तू हुशियार तरम मस्त तरम॥

---

(७३) मैं मदिरा अवश्य पीता हूँ परन्तु मस्ती नहीं दिखलाता, और सागर को छोड़ किसी दूसरी वस्तु की तरफ़ हाथ भी नहीं बढ़ाता। तुम बता सकते हो कि शराब पीने से मेरा क्या आशय है? यह कि तुम्हारे समान अपने आपे को न समझूँ।

(७४) मदिरा के लिये मैंने परहेज़गारी से हाथ खींच लिया और शराब-ख़ाने की धूल से वज़ू कर लिया। ऐसा मैंने इस लिये किया कि शिक्षालय में अपनी उम्र का जितना भाग व्यतीत किया है, उसे पुनः प्राप्त करलूं।

(७५) हे भगवन्! अपनी युवावस्था में, अपने इस शरीर तथा प्राणों से मैंने इतने अपकर्म किये हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। परन्तु मुझे तेरी कृपा का पूरा विश्वास है इसी लिये मैं ने अपकर्म्मों से हाथ खींच लिया है और बुराई को त्याग दिया है।

(७६) मैं जितना ही अपने आपे को मिटाता जाता हूँ, उतना ही मेरा जीवन बढ़ता जा रहा है और जितना ही अधिक अपने ऊँचे होने का घमंड करता हूँ, उतना ही अधिक पतन की तरफ़ जा रहा हूँ। इससे भी विलक्षण एक और बात है। इस जीवन की तरफ़ से जितना ही सतर्क हो रहा हूँ, उतना ही उसमें और फँसता जा रहा हूँ।

(७७)

गर दर गीरी चे गूना परवाज़ कुनम।
बा इश्क़ तूए चे गूना आग़ाज़ कुनम॥
यक लह्ज़ा सरिश्क़े दीदा मी न गुज़ारद।
ता चश्मे बरूए दीगरे बाज़ कुनम॥

(७८)

असरारे अज़ल रा न तू दानी व न मन।
वीं हर्फ़े मोअम्मा न तू ख़ानी व न मन॥
हस्त अज़ पसे पर्दा गुफ़्तगूए मनो तू।
चँ पर्दा बरउफ़्तद न तू मानी व न मन॥

(७९)

हक़ जाने जहानस्तो जहाँ जुमला बदन।
वसनाफ़े मलाएका हवासे ईं तन॥
अफ़लाक अनासिरो मवालीद आज़ा।
तौहीद हमीनस्त दिगरहा हमा फ़न॥

(८०)

ऐ आँके तुई ख़ुलासए कौनो मकाँ।
बगुज़ार दमे वसवसए सूदो ज़ियाँ॥
यक जामे मै अज़ साक़ीए बाक़ी बिस्ताँ।
ता बाज़ रही तू अज़ ग़मे हर दो जहाँ॥

---

(७७) जब तू मुझे पकड़े हुये है, तब मैं भला किस प्रकार उड़ सकता हूँ? और फिर तेरे प्रेम का आरम्भ किस प्रकार कर सकता हूँ? आँखों से आँसू अविरल रूप से गिर रहे हैं, फिर दूसरी तरफ़ देखना भी चाहूँ तो किस प्रकार देख सकता हूँ?

(७८) सृष्टि के आरंभ के रहस्यों का न तुझे पता है और न मुझे। यह ऐसी प्रहेलिका है जिसके विषय में न तू सोच सकता है और न मैं। यह जितनी भी बातें हो रही हैं, यह जितने भी "मैं" और "तू" के भेद-भाव हैं वह केवल एक पर्दे के कारण हैं। यदि यह पर्दा हमारे बीच से उठ जावे तो फिर न "तू" रहे और न "मैं"—दोनों ही एक हो जावें।

(७९) यह संसार शरीर है और ईश्वर प्राणों के समान है। समस्त स्वर्गीय दूत विचारों के समान हैं। यह जितनी भी वस्तुएँ हैं सब उसी के शरीर के भागों के समान हैं। वास्तव में देखा जाय तो उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। जो अन्य वस्तुएँ हैं उनका होना और न होना समान है।

(८०) ऐ इन्सान! कि तू ही अस्तित्व के संसार का निचोड़ है। थोड़ी देर के लिए अपने लाभ और हानि को न सोच। हमेशा के रहने वाले साक़ी से एक शराब का प्याला ले ले, जिससे तुझे दोनों लोकों की चिंता न रह जाय।

(८१)

ताबे तवानी ख़िद्मते रिंदाँ मी कुन।
बुनियादें निमाज़ो रोज़ा वीराँ मी कुन॥
बशिनो सख़ुने रास्त ज़े "ख़य्याम उमर"।
मै मी ख़ुरो रह मी ज़नो यहसाँ मी कुन॥

(८२)

शुद अज़ हमा नाकसाँ निहाँदारी तू।
राज़ अज़ हमा अबलहाँ निहाँदारी तू॥
बिनिगर कि मियाने मर्दुमा कारे तू चीस्त।
चश्म अज़ हमा मर्दुमा निहाँदारी तू॥

(८३)

ऐ ज़िन्दगिए तनो तवानम हमा तू।
जाने व दिले ऐ दिलो जानम हमा तू॥
तू हस्तिए मन शुदी अज़ आनम हमा तन।
मन नेस्त शुदम दर तू अज़ानम हमा तू॥

(८४)

गर अस्पो यराक़स्तो गर फ़ीरोज़ा।
मग़रूर मशौ ब दौलते दह रोज़ा॥
अज़ क़हे फ़लक हेच कसे जाँ न बरद।
इमरोज़ सुबू शिकस्तो क़रदा कोज़ा॥

---

(८१) जब तक हो सके और जितना भी हो सके मतवालों की सेवा में लगा रह, और इन व्यर्थ के व्रतों तथा उपवासों की जड़ काटता रह। "उमर ख़य्याम" की सच्ची बात सुन। मदिरा पान कर, सदैव निडर रह, और दूसरों की भलाई करता रह।

(८२) जो लोग पृथक् रहने वाले हैं, उन पर तू अपने गुप्त भेदों को प्रकट नहीं करता है, और न मूर्खों से ही अपने हृदय की बात कहता है। तनिक ध्यान तो दे कि तूने अभी तक क्या किया? अब तक तू सभी से आँख चुराता रहा।

(८३) मेरे शरीर तथा स्वास्थ्य का तू ही सब कुछ है। तू ही प्राण, तू ही हृदय, यहाँ तक कि जो कुछ भी है तू ही है। मैं शरीर इस लिये बना हुआ हूँ कि तू ही मेरा जीवन है। मैं तुझ में मिट कर मिल गया हूँ। अतएव जो कुछ भी है तू ही तू है। मैं कुछ भी नहीं हूँ।

(८४) अगर तेरे पास घोड़े और लड़ाई के सामान हैं और तुझे सांसारिक विजय और सफलता प्राप्त है, तो अहंकार मत कर। यह सब कुछ केवल दस दिन के हैं। समय के चक्कर से अपने आपको कोई भी नहीं बचा सकता।

(८५)

मायेम वलुत्फ़े हक़ तवल्ला करदा।
वज़ ताअतो मासियत तबर्रा करदा॥
आँजा कि इनायते तू बाशद बाशद।
ना करदा चुँ करदा करदा चुँ न करदा॥

(८६)

ऐ नेक न करदा बदीहा करदा।
अंगाह बलुत्फ़े हक़ तवल्ला करदा॥
बर अफ़्‌ मकुन तकिया कि हरगिज़ न बुवद।
ना करदा चुँ करदा करदा चुँ ना करदा॥

(८७)

ऐ दर रहे बंदगियत यकसाँ कहो मेह।
दर हर दो जहाँ ख़िदमते दरगाहे तू बेह॥
नकबत तू सितानीओ सआदत तू देही।
यारब तू बफ़ज़्ले ख़ेश बिसतानों बदेह॥

(८८)

अज़ आतशो बादो आब ख़ाकेम हमा।
दर आलमे कौन दर हलाकेम हमा॥
ता तन बा मास्त दर जफ़ाएम हमा।
चूँ तन बरवद रवाने पाकेम हमा॥

यदि आज घड़ा फूटता है तो कल कूज़ा भी टूट जायगा। यदि आज विजय है तो कल पराजय भी अवश्यम्भावी है।

(८५) मैं अब ईश्वर की दया का भिखारी बन गया हूँ। पूजा-पाठ इत्यादि सभी का परित्याग कर चुका हूँ। कारण कि जहाँ उसकी कृपा होगी वहाँ बदी भी नेकी में परिणत हो जायगी।

(८६) हे मनुष्य ! तूने शुभ कर्म तो एक भी नहीं किया है, हाँ अपकर्म अवश्य बहुत किये हैं। परन्तु इस पर भी तू ईश्वर की दया पर भरोसा रखता है। क्षमा तुझे प्राप्त नहीं हो सकती। जो कुछ हो चुका है वह मिट नहीं सकता और जो कुछ हुआ नहीं है वह हो नहीं सकता।

(८७) हे भगवन् ! तेरी भक्ति के मार्ग में सब समान हैं। किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं है। और दोनों लोकों में तेरी ही सेवा सर्वश्रेष्ठ है। तू मनुष्य की दुर्बुद्धि को लौटा कर सुबुद्धि उसे प्रदान करता है। हे परमात्मन् ! दया कर और यह लेन-देन कर ले।

(८८) हम सब मनुष्य अग्नि, पवन और वायु से मिल कर बने हैं। और इस जीवन के बन्धनों में पड़ कर जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़े हुए हैं।

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू बकस ननुमाई ।
गह दर सोवे कौनों मकाँ पैदाई ।।
वीं जलवागरी बख़ेश्तन बनुमाई ।
.खुद ऐन अयानी व .खुदी बीनाई ।।

(९०)

ऐ दिल अगर अज़ ग़ुबार तन पाक शवी ।
तू रूहे मुजस्समी बर अफ़लाक शवी ।।
अर्शस्त नशीमनें तू शरमत बादा ।
काई व मुक़ीम ख़ित्तए ख़ाक शवी ।।

(९१)

चूँ मी न रवद ब इख़्तियारत कारे ।
.खुश बाश दरीं नफ़स कि हस्ती बारे ।।
चूँ वाक़फ़ीए ऐ पिसर ज़े हर असरारे ।
चन्दीं चे बरी बेहूदा हर तीमारे ।।

(९२)

बर गीर ज़े .खुद हिसाब अगर बा ख़बरी ।
कव्वल तू चे आवर्दी व आख़िर चे बरी ।।

जब तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तब तक हमें बहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सब कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे ।

(८९) उसके रंग निराले हैं । कभी तो पर्दे के अन्दर छुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत में अपना जलवा दिखलाता है । तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है । कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि बन जाता है ।

(९०) हे हृदय ! यदि शरीर के साथ तेरा सम्बन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा । बस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा । तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नहीं । अतएव तुझे इस बात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है ।

(९१) जब कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकते हो उसी पर प्रसन्न रहो । अरे भाई ! जब तुम सभी भेदों को जानते हो तो व्यर्थ में, इन बन्धनों में पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो ?

(९२) यदि तुममें कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्म्मों का, अपनी ही

गोई न .खुरम बादा कि मी बायद मुर्द।
मी बायद मुर्द गर .खुरी वरना .खुरी॥

(९३)

रौ बेख़बरी गुज़ीं अगर बाख़बरी।
ता अज़ कफ़े मस्ताने अज़ल बादा .खुरी॥
तू बेख़बरी बेख़बरी कारे तू नेस्त।
हर बेख़बरे रा न रसद बेख़बरी॥

(९४)

गर आमदनम बख़ुद बुदे नाम दमे।
वर नीज़ शुदने बमन बुदे कै शुदमे॥
बे ज़ाँ न बुदे कि अंदरीं दैरे ख़राब।
न आमदमे न शुदमे न बुदमे॥

(९५)

ख़ाही कि पसंदीदए अनाम शवी।
मक़बूले क़बूले ख़ासओ आम शवी॥
अन्दर पए मौमिनो जहूदो तरसा।
बदगू मबाश ता निको नाम शवी॥

वासनाओं की पूर्ति के लिये किये हुए कार्यों का हिसाब कर लो। देखो, जब तुम इस संसार में आए थे तो साथ में क्या लाए थे, और यहाँ से जाते समय क्या ले जाओगे। तुम यह कहते हो कि मरना ज़रूरी है मैं शराब न पिऊँगा। मरना तो है ही, पियो या न पियो।

(९३) यदि तुम बाख़बर हो तो बेख़बर बन जाओ। जिससे प्रणय में पागल, मृत्यु के बन्धनों से रहित, मतवालों के हाथ की मदिरा का स्वाद ले सको। तुम बेख़बर हो और सुस्ती करना तुम्हारा काम नहीं है। प्रत्येक बेख़बर और मतवाले को यह अधिकार नहीं है कि वह वास्तविक रूप में ऐसा हो जावे।

(९४) यदि इस संसार में आना मेरे अधिकार में होता तो मैं यहाँ कभी भी न आता, और यदि जाना मेरे हाथ में होता तो मैं क्यों जाता? इससे बढ़ कर कोई भी बात न होती कि मैं इस ऊजड़ स्थान में न आता, न जाता और न रहता।

(९५) तुम में सर्वप्रिय बनने की इच्छा होनी चाहिये। ऐसा करो जिससे सब लोग तुम्हें पसन्द करें और अपने सम्बन्धी तथा अन्य लोग भी तुम्हें अच्छा समझें। तू मोमिन, यहूदी तथा गब्र की बुराई उनकी अनुपस्थिति में मत कर, जिससे लोग तुझे अच्छा समझें।

(९६)

बामन तो हर उश्वे गोई अज़ कीं गोई।
पैवस्ता मरा मुलह्दि बेदीं गोई ।।
मन ख़ुद मुक़द्दम हर उश्वे गोई हस्तम ।
इन्साफ़ बेदेह तुरा रसद कीं गोई ।।

(९७)

बा दर्द क़नाअत कुनो आज़ाद बज़ी ।
दर बन्दे फ़ज़्नी मशो आज़ाद बज़ी ।।
मुनिगर बफ़ज़्नी ज़े ख़ुदी ग़ुस्सा मख़ुर ।
दर कम ज़े ख़ुदी निगह कुनो शाद बज़ी ।।

(९८)

ता दर हविसे लालो लबो जामे मै ।
ता दरपए आवाज़े दफ़ो चंगो नै ।।
ईंहा हमा हशवस्त ख़ुदा मीदानद ।
ता तर्के तअल्लुक़ न कुनी हेचे नै ।।

(९९)

हरचन्द ज़े दस्ते दह ग़मकश बाशी ।
दर जौरो जफ़ाए चर्ख़ ता ख़ुश बाशी ।।
ज़िनहार ज़े दस्ते ना कसाँ आबे ज़ुलाल ।
बर लब मचकाँ अगर दर आतश बाशी ।।

---

(९६) तू मुझे बुरा समझता है । जो कुछ भी कहता है, वह शत्रुता से । इसी लिये तू मुझे सदैव अहंकारी तथा विधर्म्मी कहा करता है । मैं स्वयम् इस बात को मानता हूँ कि तू मुझे जैसा कहता है, वास्तव में मैं वैसा ही हूँ । परन्तु तनिक न्याय की दृष्टि से देख कि तुझे यह कहना उचित है अथवा नहीं ।

(९७) आपत्तियों को धैर्य के साथ सहन कर और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर । अधिक लाभ करने की इच्छा मत कर और निश्चिन्त होकर रह । जो तुझसे बढ़ कर है उससे ईर्ष्या मत कर और न वैसा बनने की चिन्ता कर । जो तुझसे कम है, उसकी तरफ़ देख और सदैव आनन्दित रह ।

(९८) सांसारिक प्रलोभनों में व्यस्त रहना, नाच-रंग का इच्छुक होना, उचित नहीं है । ईश्वर खूब जानता है कि इन बातों में कोई सार नहीं है । यदि कुछ करना चाहते हो तो संसार के प्रति अपने बन्धनों को तोड़ दो । त्याग ही सब कुछ है ।

(९९) समय के चक्कर में पड़ कर तुम विपत्तियाँ उठा रहे हो । भाग्य

(१००)

बादर्द बेसाज़ ता दवाए याबी।
अज़ दर्द मनाल ता शेफ़ाए याबी॥
मी बाश बवक्ते बेनवाई शाकिर।
ता आक़बतुल अम्र नवाए याबी॥

(१०१)

गर शादीए ख़ेशतन दराँ मीदानी।
का सूदा दिले रा बग़मे बेनिशानी॥
दर मातमे अक़्ले ख़ेश बेनशीं हमाँ उम्र।
मीदार मुसीबत कि अजब नादानी॥

(१०२)

हंगामे सुफ़ेदा दमे .ख़ुरोसे सहरी।
दानी कि चरा हमी कुनद नौहागरी॥
यानी कि नमूदन्द दर आईनए सुब्ह।
कज़ उम्र शबे गुज़श्तो तू बेख़बरी॥

(१०३)

ऐ सोख़्तए सोख़्तए सोख़्तनी।
वै आतिशे दोज़ख़ अज़ तू अफ़रोख़्तनी॥

तुम्हें रुला रहा है। पर इस पर भी सावधान रहो। आग में पड़े हुए होने पर भी ईश्वर-विमुख मनुष्यों के हाथों का ठण्डा पानी होठों से न लगाना।

(१००) आपत्तियों को झेलते रहो, जिससे तुम्हें उनसे बचने की कोई औषधि मिल जावे। पीड़ा के विरुद्ध आवाज मत उठाओ ताकि उसके लिये कोई दवा मिल जावे। आश्रय हीन होने पर भी कृतज्ञता का भाव हृदय से दूर मत करो, ताकि तुम्हें कुछ प्राप्त हो जावे।

(१०१) यदि तुम किसी चिन्ता रहित व्यक्ति को विपत्तियों में फँसा देने से ही प्रसन्न हो सकते हो तो अपनी बुद्धि पर खेद प्रकट करो। अपनी नादानी पर शोक करो और अपना समस्त जीवन इसी पश्चात्ताप में व्यतीत कर दो।

(१०२) प्रभात काल के धुँधले प्रकाश में—बहुत तड़के ही, मुर्ग़ क्यों बाँग दिया करता है? उसके चिल्लाने का आशय तुमको सचेत करना है। वह कहता है कि तुम्हारे जीवन की एक रात व्यर्थ में व्यतीत हो गई है। अब उठो और सावधानी से अपना कार्य करो।

(१०३) हे जले-भुने हुए और जला डालने योग्य मनुष्य! तू इतना

ता कै गोई कि बर "उमर" रह्मत कुन।
हक़ रा तो कुजा बरहमत आमोख़्तनी ॥

नीच है कि नरक की अग्नि भी तुझी से जलानी चाहिये। तू यह कब तक कहता रहेगा कि "उमर" पर दया दिखला। तू ईश्वर को भी दया का पाठ पढ़ाने कहाँ से आगया है ?

निज़ामी

(जन्म ११४१ ईस्वी, मृत्यु १२०३ ईस्वी)

इनका नाम था इलियास अबू मुहम्मद। इनकी रचनाएँ अधिकतर आत्म-संबंधी न होकर शिक्षाप्रद कहानियों के रूप में हैं। उनमें वही भाव हैं जो "फ़िर्दौसी" की रचनाओं में। परन्तु अन्तर भी है। जैसा कि लिवी ने लिखा है, "इनके विषयों का संबंध स्वयं अपने आप से है। उनमें श्रृंगार रस की प्रधानता है। "फ़िर्दौसी" ने अपनी कविता में अधिकतर प्राचीन वीरों के वीरोचित कृत्यों का निरूपण किया है। परन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया है। हालांकि इन विषयों की कमी नहीं थी। इनकी रचनाओं को हम 'रोमान्स' के नाम से पुकार सकते हैं। इन्हें काव्य कहना उपयुक्त न होगा। यह ईरान के प्राचीन और बड़े बड़े कवियों में हैं। इनमें अपने विषय को वर्णन करने की शक्ति समुन्नत अवस्था में वर्तमान थी और उपयुक्त शब्दों और भाषा पर भी इनका पूर्ण अधिकार था। इनकी कल्पना ऊँची उड़ान उड़ने वाली थी। उसमें माधुर्य्य के अतिरिक्त करुण रस का भी अच्छा समावेश रहता था। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने एक स्थान पर लिखा है, "इस देश (ईरान) के बड़े बड़े कवियों में आपका नम्बर तीसरा है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोमान्टिक मसनवी के लिखने में इन्हों ने कमाल दिखलाया है। ईरान और टर्की दोनों में इनकी ख्याति अभी तक बनी हुई है।" इनकी रचनाओं में भावों की गम्भीरता के अतिरिक्त आकर्षण भी है। " मख़ज़नुल असरार ' जिसमें से कई एक पद मैंने दिये हैं, एक रहस्यवाद से सम्बन्ध रखने वाली रचना है और "सनाई" के "हदीक़ा" तथा "रूमी" की मसनवी के ढंग में लिखी गई है। मैंने कुछ पद इनके खुसरो-शीरीं से भी उद्धृत किये हैं, जो कि एक प्रकार से आत्मचरित ही के समान हैं। इससे विदित होता है कि इनमें रहस्यवाद भी था।

मुख्य मुख्य रचनाएँ :—

मख़ज़नुल असरार।

ख़ुसरो-शीरीं।

लैला मजनूँ।

हफ़्त पैकर।

स्कन्दनामा।

गुफ़्तार दर बाज़ जुसतने दिल

हातिफ़े ख़िलवत बमन आवाज़ दाद ।
दाम चुना कुन कि तवाँ बाज़ दाद ।।
आब दरीं आतशे पाकत चरास्त ।
बाद जुनेबत कशे ख़ाकत तुरास्त ।।
ख़ाके तबारिन्दह बताबूत बख़्श ।
आतशे ताबिदा बयाक़ूत बख़्श ।।
ग़ाफ़िल अज़ीं बेश न बायद नशस्त ।
बर दरे दिल रेज़ गर आबेत हस्त ।।
दर ख़मे ईं ख़म कि कबूदे ख़शस्त ।
क़िस्सए दिल गो कि सेरादे ख़शस्त ।।
दूर शौ अज़ राहे ज़नाने हवास्त ।
राहे तौ दिल दाँ दो दिल रा शनास्त ।।
अर्श पराने कि ज़े तन रस्ता अन्द ।
शहपरे जिबरील बरो बस्ता अन्द ।।

हृदय की खोज का ज़िक्र

एकान्त में, भविष्य के पुकारने वाले ने मुझे आवाज़ लगाई कि इतना ही ऋण ले जितना चुका सके ।

तेरी इस पवित्र अग्नि में जल क्यों सम्मिलित है ? और वायु तेरी मिट्टी को ऊपर क्यों उड़ाता है ?

इस ताप को बढ़ाने वाली मिट्टी को अपनी समाधि के प्रति अर्पण कर दे और चमकती हुई अग्नि अपनी आत्मा के हाथ में सौंप दे ।

इससे अधिक सुस्त बैठे रहना उचित नहीं है । यदि तुझ में किसी प्रकार सज धज शेष है तो हृदय-मन्दिर के द्वार पर चल ।

इसी नीले रूप के मटके (आकाश) के अन्दर अपने हृदय के उस राग का वर्णन कर जो बहुत ही उत्तम कहा जाता है ।

वासनाओं से रहित हो जा । तेरा मार्ग यदि किसी को ज्ञात है तो दिल को । अतएव उसी से मित्रता कर ।

जो लोग अपने शरीरों को छोड़कर ऊपर उठ गये हैं—जिन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है—उन्होंने हृदय को स्वर्गीय दूत जिब्रील की बादशाही हासिल कर ली है ।

वाँके अना अज़्दो जहाँ ताक़तन्द ।
क़ूत ज़े दरयूज़ए दिल याफ़तन्द ।।
दीदओ गोशपुरअज़ ग़रज़ अफ़ज़ूनी अन्द ।
कारगरे परदए बेरूनी अन्द ।।
पुंबा दर आगनदा चोगुल गोशे तो ।
नरगिसे चश्म आबलए होशे तो ।।
नरगिसो गुल रा चे परस्ती बबाग़ ।
ए ज़े तो हम नरगिसो हम गुल बदाग़ ।।
दीदा कि आईना हर नाकस अस्त ।
आतशे ऊ आबे जवानी बसस्त ।।
तबा कि बा अक़्ल बदल्लाल गीस्त ।
मुन्तज़िरे नक़दे चेहल साल गीस्त ।।
ता ब चेहल साल के बालिग़ शवद ।
ख़र्जे सफ़र हाश मबालिग़ शवद ।।
बार कनूँ बाएदत अफ़सूँ मरब्बा ।
दर्सें चेहल सालगी अकनूँ बेरब्बा ।।

जिन लोगों ने संसार से मुख मोड़ लिया है, उन्होंने भीख माँगने की शक्ति हृदय से ही प्राप्त की है ।

आँख और कान इच्छाओं के कारण प्रदान किये गये है । इनका सम्बन्ध केवल स्थूल शरीर तथा संसार के वाह्य सौन्दर्य से है ।

तेरे कानों में गुलाब के पुष्प के समान रुई भरी हुई है और तेरे नेत्रों का नरगिस तेरी बुद्धि का छाला है ।

तू उपवन में जाकर नरगिस और गुलाब के पुष्पों पर क्यों मोहित हो रहा है ? यह दोनों स्वयम् तेरे प्रेम में मतवाले हो रहे हैं ।

तेरे नेत्र भली और बुरी, दोनों प्रकार की वस्तुओं को देखते हैं । जब तक युवावस्था की चमक है उनमें भी शोभा है ।

इच्छा, जो कि बुद्धि को दलाल बनाए हुए है उस समय की प्रतीक्षा में है, जब तू चालीस वर्ष का हो जावेगा ।

जिस समय तू चालीस वर्ष का होगा उस समय इच्छा की भी उछल-कूद समाप्त हो जायगी । उसमें शान्ति तथा गम्भीरता आ जायगी । परन्तु उस समय तक उसके मार्ग-व्यय का लेखा-जोखा बहुत बढ़ जायगा । उसके कार्यों की सूची बहुत लम्बी हो जायगी ।

अब तुझे कोई सहायक मंत्र मिलना चाहिये । व्यर्थ की बातों से कोई लाभ नहीं है । चालीस वर्ष व्यतीत हो जाने की प्रतीक्षा कर ।

दस्त बर आवर ज़े मियाँ चारा जूए।
ईं ग़मे दिल दिले ग़मख़ार जूए।।
ग़म मख़ुर अलबत्ता चो ग़मख़ार हस्त।
गरदने ग़म बिशकन अगर यार हस्त।।
हर नफ़से रा कि ज़बूने ग़मस्त।
यारीए याराँ मददे मोह्कमस्त।।
चूँ नफ़से ताज़ा शवद बादो कस।
नेस्त शवद सद ग़म अज़ाँ यक नफ़स।।
सुब्हे नख़ुस्पी चो नफ़स बर ज़नद।
सुब्हे दोवम बाँग बर अख़तर ज़नद।।
बेशतरीं सुब्ह बख़ारी रसद।
गर नपर्सी सुब्ह बयारी रसद।।
अज़ तो नआयद बतो बर हेच कार।
यार तलब कुन कि बर आयद ज़े कार।।
गरचे हमाँ ममलुकते ख़्वार नेस्त।
चूँ निगरम हेच बेहज़ यार नेस्त।।
हस्त ज़ियारी हमारा न गुज़ीर।
ख़ासा ज़े यारे कि बुवद दस्तगीर।।

प्रयत्न करने के लिये हाथ फैला और हृदय के शोक को कम करने के लिये, अपने साथ समवेदना प्रगट करने वाले किसी अन्य हृदय को खोज निकाल।

जब तेरे प्रति सहानुभूति प्रगट करने वाला कोई है, तो किसी प्रकार की चिन्ता न कर। मित्र की उपस्थिति में दुख को अलग भगा दे।

जो हृदय दुख के भार से दबा हुआ है, उसके लिये मित्रों का होना बहुत ही उत्तम है।

दो आदमियों के साथ कुछ समय के लिये मन-बहलाव होता है और उसी कुछ समय में सैकड़ों दुख दूर हो जाते हैं।

जब पहला प्रभात अपनी उज्जवलता लेकर प्रकट होता तब वह आकर तारों को डाँट बताता है।

यदि यह दूसरा प्रभात सहायता न दे तो पहले प्रभात को लज्जित होना पड़े।

तू स्वयम् अपने कार्य को पूर्ण करने में असमर्थ है। अतएव किसी ऐसे मित्र की खोज कर जो तेरे कार्य को पूर्णता तक पहुँचा सके।

सारा देश इतना हेय तथा तुच्छ नहीं है, परन्तु जब मैं ध्यान से देखता हूँ तो मित्र से बढ़ कर कोई अन्य ज्ञात नहीं होता।

सभी को एक मित्र की आवश्यकता होती है और विशेषकर ऐसे मित्र की जो सहायता कर सके।

ईं दो से यारे कि तू दारी तरन्द।
खुश्कतर अज़ हल्क़ए दर बर दरन्द॥

दस्त दरआवेज़ बफ़ित्राके दिल।
आबे तो बाशद कि शवी खाके दिल॥

चूँ मलिकुलअर्श जहाँ आफ़रीद।
ममलुकते सूरते जाँ आफ़रीद॥

दाद बतरतीबे करम रेज़िशी।
सूरतो जाँरा बहम आमेज़िशी॥

ज़ीं दो हम आग़ोश दिल आमद पिदीद।
आँ ख़लफ़े कू बाख़िलाफ़त रसीद॥

दिल कि बदो ख़ुतबए सुलतानिअस्त।
अक़दशे रूहानीओ जिसमानिअस्त॥

नूरे अदीमत ज़े सुहैले वैअस्त।
सूरतो जाँ हर दो तुफ़ैले वैअस्त॥

चूँ सख़ुने दिल बदिमाग़म रसीद।
रौग़ने मग़ज़े बचिराग़म रसीद॥

गोश दराँ हलक़ा ज़बाँ साख़तम।
जान हदफ़ हातिफ़े जाँ साख़तम॥

तेरे दो-तीन मित्र हैं। तू उन्हें बहुत ही अच्छा समझता है। परन्तु वे तुझे किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते।

अतएव तू हृदय के पल्ले को ख़ूब सँभाल कर थाम ले। यदि तू हृदय का सहारा पकड़ लेगा तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी।

स्वर्ग के स्वामी ने सृष्टि की रचना की, और उन देशों को बनाया जहाँ मनुष्य रहते हैं, जिनके शरीर तथा प्राण प्रधान अंग हैं।

अपनी कृपा से उसने शरीर और प्राणों को एक किया।

उस समय इन दोनों के संसर्ग से मन उत्पन्न हुआ। यह वही बालक था जो आगे चलकर विरोधी के रूप में पाया जाता है।

मन वही वस्तु है जो शरीर तथा आत्मा का सार समझा जाता है। इसी के कारण मनुष्य की बादशाही भी है।

तुझ में उसी का प्रकाश है और शरीर तथा प्राण उसी के साथी हैं।

मन की आवाज़ जैसे ही मेरे मस्तिष्क में पहुँची, वैसे ही उसमें ज्ञान का प्रकाश होगया।

अन्तरात्मा में जो पुकार रहा था, अब मैं उसी के ध्यान में मग्न हो गया।

चर्ब ज़बाँ गशतम अज़ाँ फ़रबिही।
तबाज़े शादी पुरो अज़ ग़म तेही॥
रेख़तम अज़ चशमए गर्म आबे सर्द।
कातशे दिल देगे मरा गर्म कर्द॥
दस्त बर आवुरदम अज़ाँ दस्त बन्द।
राहज़नाँ आजिज़ो मन ज़ोर मन्द॥
यक तग अज़ाँ राह दो मंज़िल शुदम्।
ता बयके तग बदरे दिल शुदम्॥
मन सूए दिल रफ़तमो जाँ सूए लब।
नीमए उमरम शुदा दर नीम शब॥
बर दरे मक़सूरए रूहानीयम।
गूए शुदा क़ामते चौगानियम॥
गूए परस्त आमदा चौगाने मन।
दामने दिल गश्त गिरीबाने मन॥
पाए ज़े सर साख़तओ सर ज़े पा।
गूए सिफ़त गशतमो चौगाँ नुमा॥
कारे मन अज़ दस्त मन अज़ ख़ुद शुदा।
सद ज़े यके दीदा यके सद शुदा॥

इस साहस के कारण मेरी मूक वाणी में वाक्-शक्ति आगई, चित्त प्रसन्न हो गया और दुख दूर हो गये।

भारी तथा जलती हुई आँखों से मैंने आँसुओं के रूप में ठण्डे पानी को बहा दिया। कारण कि उसके कारण शरीर में भी तपन थी।

अपने हाथों को भी मैंने बन्धनमुक्त कर लिया और मुझमें इतना बल आगया कि इन्द्रियाँ अब मेरे वश में आ गईं।

दो दिन के मार्ग को मैंने अपनी शक्ति के कारण केवल एक ही दौड़ में पूरा कर लिया और एक ही झपट में दिल के कपाटों तक पहुँच गया।

मन की तरफ़ जाने के प्रयत्न में ही मैं अधमरा सा हो गया और आधी ही रात में मेरी अवस्था भी आधी रह गई।

आत्मिक द्वार के सम्मुख पहुँच कर मेरा समस्त शरीर मुलायम हो गया। जो शरीर डन्डे के समान कड़ा था वही गेंद के समान बन गया।

मैं उस गेंद के प्रेम में मस्त हूँ और मेरा गुलूबंद मन की चादर का अंचल बना हुआ है।

मैं शिर को पैर और पैर को शिर बना कर गेंद के समान लुढ़कता हुआ आगे बढ़ा। कभी कभी डन्डे के समान सीधा भी खड़ा हो जाता था।

इस समय मैं अपने आपे में नहीं था। मेरी चेष्टाएँ भी एक प्रकार

मन बक़िनाअत शुदा मेहमाने दिल।
जाँ बनवा दादा बसुलताने दिल॥
चूँ अलमे लशकरे दिल याफ़तम।
रूए ख़ुद अज़ आलमियाँ ताफ़तम॥
दिल ब ज़बाँ गुफ़् कि ऐ बे ज़बाँ।
मुर्ग़ तलब बगुज़र अज़ीं आशियाँ॥
आतशे मन महरमे ईं दूद नेस्त।
ईं जिगरे ताज़ा नमक सूद नेस्त॥
बे नमकाँरा तू जिगर मीदेही।
गंज ज़े दुर ज़र ज़े गोहर मीदेही॥
साया अम अज़ सर्व तवानातरअस्त।
पायम अज़ाँ पाया बबालातर अस्त॥
गंजमो दर कीसए क़ारूँ नियम।
बा तो मस्तम ज़े तो बेरूँ नियम॥
मुर्ग़ लबम बा नफ़से गरमे ऊ।
पर्रे ज़बाँ रेख़ता अज़ शरमे ऊ॥
साख़्तम अज़ शर्मे सर अफ़गन्दगी।
गोशे अदब हलक़ा कशे बन्दगी॥

मैं बड़े ही धैर्य्य के साथ मन का अतिथि हुआ। और उस सम्राट् के सम्मुख अपने प्राणों की भेंट लेजाकर रक्खी।

जब मन की सेना का झन्डा मुझे मिल गया, उस समय मैंने सम्पूर्ण संसार से अपना सम्बन्ध छुड़ा लिया।

मन ने ज़ुबान से कहा कि ओ मूक इच्छुक पत्ती! उस घोंसले का परित्याग कर दे। उस सांसारिक घोंसले से कोई सम्बन्ध न रख।

मैं अपने लिये ख्याति नहीं चाहता और तेरी इन हाल ही में लिखी हुई कविताओं में भी कुछ आनन्द नहीं है।

जिनको अंतरात्मा का आनन्द प्राप्त नहीं है, तू उन्हें नीरस बना देता है और रुपये तथा मोतियों के ढेर के ढेर उन्हें दे डालता है।

मेरी छाया सरो के वृक्ष से भी कहीं बड़ी तथा ऊँची है और मेरा पद उस पद से भी कहीं बढ़कर है।

मैं एक कोष अवश्य हूँ, परन्तु वह कोष नहीं जो क़ारूँ की थैली में बन्द है।

मैं तेरे साथ हूँ, तुझ में व्याप्त हूँ, परन्तु तुझ से बाहर नहीं हूँ। मन की इन सारपूर्ण बातों को सुन कर मेरी जिह्वा ने लज्जा का जामा पहन लिया।

और मैंने अपना शिर झुका लिया। मैंने अपने कानों को बड़े अदब के साथ मन की इन बातों को सुनने के लिये उधर ही लगा दिया।

चूँके नदीदम ज़े रियाज़त गुज़ीर।
गश्तम अर्ज़ी ख़ाजा रियाज़त पेज़ीर॥
ख़ाजये दिल अह्दे मरा ताज़ा कर्द।
नामे 'निज़ामी'' फ़लक आवाज़ा कर्द॥

हिकायत ईसा पैग़म्बर अलेहिस्सलाम

पाए मसीहा कि जहाँ मी नवश्त।
बर सरे बाज़ारचए मी गुज़श्त॥
गुर्ग सगे दर गुज़र उफ़तादा दीद।
यूसुफ़श अज़ चह् बदर उफ़्तादा दीद॥
बरसरे आँ ज़ीफ़ा गरोहे क़तार।
बर सिफ़ते करगसे मुर्दार ख़ार॥
गुफ़् यके वहशते ई^ँ^ दर दिमाग़।
तीरगी आरद चु नफ़स दर चिराग़॥
वाँ दिगरे गुफ़् अगर हासिलस्त।
कोरिए चश्मस्तो बलाए दिलस्त॥

मैंने समझ लिया कि प्रार्थना तथा भक्ति बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ हैं। अतएव अपने स्वामी से इसके लिये आज्ञा ले ली।

मन ने मेरी प्रतिज्ञा में सहायता पहुँचाई और "निज़ामी" के नाम को आकाश तक पहुँचा दिया।

पैग़म्बर ईसा की कहानी

हज़रत ईसा संसार में बहुत भ्रमण किया करते थे। एक दिन वह एक छोटे से बाज़ार में घूम रहे थे।

मार्ग में एक शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ था। उसके शरीर से प्राण निकल चुके थे।

उसके आस पास एक भीड़ लग रही थी और वह लोग मरे हुए जानवर के मांस को खाने वाले गृद्धों के समान उसकी बुराइयाँ बतला रहे थे।

एक ने कहा कि इसका डर मस्तिष्क को ऐसा गन्दा कर देता है, जैसे दीपक को मुख की भाप।

दूसरे ने कहा कि यह तो बड़ा ही भयानक है। इसको देखने से भय के मारे हृदय धड़कने लगता है।

मन बक़िनाअत शुदा मेहमाने दिल।
जाँ बनवा दादा बसुलताने दिल॥
चूँ अलमे लशकरे दिल याफ़तम।
रूए ख़ुद अज़ आलमियाँ ताफ़तम॥
दिल ब ज़बाँ गुफ़ कि ऐ बे ज़बाँ।
मुर्ग़ तलब बगुज़र अज़ीं आशियाँ॥
आतशे मन महरमे ईं दूद नेस्त।
ईं जिगरे ताज़ा नमक सूद नेस्त॥
बे नमकाँरा तू जिगर मीदेही।
गंज ज़े दुर ज़र ज़े गोहर मीदेही॥
साया अम अज़ सर्व तवानातरअस्त।
पायम अज़ाँ पाया वबालातर अस्त॥
गंजमो दर कीसए क़ारूँ नियम।
बा तो मस्तम ज़े तो बेरूँ नियम॥
मुर्ग़ लबम बा नफ़से गरमे ऊ।
पर्रे ज़बाँ रेख़ता अज़ शरमे ऊ॥
साख़्तम अज़ शर्मे सर अफ़गन्दगी।
गोशे अदब हलक़ा कशे बन्दगी॥

मैं बड़े ही धैर्य्य के साथ मन का अतिथि हुआ। और उस सम्राट् के सम्मुख अपने प्राणों की भेंट लेजाकर रक्खी।

जब मन की सेना का झन्डा मुझे मिल गया, उस समय मैंने सम्पूर्ण संसार से अपना सम्बन्ध छुड़ा लिया।

मन ने ज़ुबान से कहा कि ओ मूक इच्छुक पक्षी! उस घोंसले का परित्याग कर दे। उस सांसारिक घोंसले से कोई सम्बन्ध न रख।

मैं अपने लिये ख्याति नहीं चाहता और तेरी इन हाल ही में लिखी हुई कविताओं में भी कुछ आनन्द नहीं है।

जिनको अंतरात्मा का आनन्द प्राप्त नहीं है, तू उन्हें नीरस बना देता है और रुपये तथा मोतियों के ढेर के ढेर उन्हें दे डालता है।

मेरी छाया सरो के वृक्ष से भी कहीं बड़ी तथा ऊँची है और मेरा पद उस पद से भी कहीं बढ़कर है।

मैं एक कोष अवश्य हूँ, परन्तु वह कोष नहीं जो क़ारूँ की थैली में बन्द है।

मैं तेरे साथ हूँ, तुझ में व्याप्त हूँ, परन्तु तुझ से बाहर नहीं हूँ। मन की इन सारपूर्ण बातों को सुन कर मेरी जिह्वा ने लज्जा का जामा पहन लिया।

और मैंने अपना शिर झुका लिया। मैंने अपने कानों को बड़े अदब के साथ मन की इन बातों को सुनने के लिये उधर ही लगा दिया।

चूँके नदीदम जे़ रियाज़त गुज़ीर ।
गश्तम अज़ीं ख़ाजा रियाज़त पेज़ीर ॥
ख़ाजये दिल अहदे मरा ताज़ा कर्द ।
नामे 'निज़ामी" फ़लक आवाज़ा कर्द ॥

हिकायत ईसा पैग़म्बर अलेहिस्सलाम

पाए मसीहा कि जहाँ मी नवश्त ।
बर सरे बाज़ारचए मी गुज़श्त ॥
गुर्ग सगे दर गुज़र उफ़तादा दीद ।
यूसुफ़श अज़ चह् बदर उफ़ादा दीद ॥
बरसरे आँ ज़ीफ़ा गरोहे क़तार ।
बर सिफ़ते करगसे मुर्दार ख़ार ॥
गुफ़्त यके वहशते ईं दर दिमाग़ ।
तीरगी आरद चु नफ़स दर चिराग़ ॥
वाँ दिगरे गुफ़्त अगर हासिलस्त ।
कोरिए चश्मस्तो बलाए दिलस्त ॥

मैंने समझ लिया कि प्रार्थना तथा भक्ति बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ हैं । अतएव अपने स्वामी से इसके लिये आज्ञा ले ली ।

मन ने मेरी प्रतिज्ञा में सहायता पहुँचाई और "निज़ामी" के नाम को आकाश तक पहुँचा दिया ।

पैग़म्बर ईसा की कहानी

हज़रत ईसा संसार में बहुत भ्रमण किया करते थे । एक दिन वह एक छोटे से बाजार में घूम रहे थे ।

मार्ग में एक शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ था । उसके शरीर से प्राण निकल चुके थे ।

उसके आस पास एक भीड़ लग रही थी और वह लोग मरे हुए जानवर के मांस को खाने वाले गृद्धों के समान उसकी बुराइयाँ बतला रहे थे ।

एक ने कहा कि इसका डर मस्तिष्क को ऐसा गन्दा कर देता है, जैसे दीपक को मुख की भाप ।

दूसरे ने कहा कि यह तो बड़ा ही भयानक है । इसको देखने से भय के मारे हृदय धड़कने लगता है ।

हर कस अज़ाँ परदा नवाए सरूद ।
बर सरे आँ जीफ़ा जफ़ाए नमूद ॥
चूँ बसख़ुन नौबते ईसा रसीद ।
ऐब रिहा कर्द बेमाना रसीद ॥

गुफ़ ज़े नक़शे कि दर ऐवाने ऊस्त ।
दुर बसुफ़ैदी न चो दन्दाने ऊस्त ॥

ऐब कसाँ मनिगरो यहसाने ख़ेश ।
दीदा फ़ेरोबर वगरीबाने ख़ेश ॥

आईना रोज़े कि विगीरी बदस्त ।
ख़ुद शिकन आँ रोज़ मशो ख़ुद परस्त ॥

ख़ेशतन आरा मशौ चूँ वहार ।
ता नकुनद दर तो तम रोज़गार ॥

जामए ऐबे तो तुनक रिशता अन्द ।
ज़ाँ बतो नौ परदा फ़ेरो हिशता अन्द ॥

चीस्त दरीं हलक़ए अंगुश्तरी ।
काँ न बुवद तौक़े तो चूँ बिनगरी ॥

प्रत्येक मनुष्य ऐसे वचन कह कर कुत्ते के मृत शरीर को बुरा कह रहा था ।

जब हज़रत ईसा की बारी आई तो उन्होंने बुराइयों को छोड़ कर उसकी अच्छाइयों का वर्णन करना प्रारम्भ किया ।

उन्होंने कहा कि उसके शरीर की अच्छाइयों को देखने से मालूम होता है कि उसके दाँत मोती से भी अधिक स्वच्छ हैं ।

वह मनुष्य जो उसकी बुराई कर रहे थे, यह सुन कर हँसने लगे ।

दूसरे मनुष्यों के दोषों और अपने गुणों को मत देखो । जब दूसरों के दोषों की तरफ़ दृष्टि जाय, अपने को देखो ।

अपने आप को दूसरों से बढ़ कर लगाने का प्रयत्न मत करो । ऐसा करना स्वार्थपरता से ख़ाली नहीं है ।

यदि तुम दूसरों में दोष निकालोगे, संसार तुम्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखेगा ।

तुम्हारे दोषों का आवरण बहुत हलका है और इसीलिये नौ आकाश के नौ पर्दे तुम्हारे ऊपर डाले गये हैं ।

इस आकाशी घेरे में, वह क्या वस्तु है, जो तुम्हारे गले में तौक़ के समान पड़ी हुई है ?

गर न सगी तौक़े सुरइया मकश ।
गर न ख़री बारे मसीहा मकश ॥
कीस्त फ़लक पीर शुदा बेवए ।
चीस्त जहाँ दुज़्द ज़दा बेवए ॥
जुमलए दुनिया ज़े कोहन ता बनौ ।
चूँ गुज़रिन्दस्त नयरज़द बजौ ॥
अंदोहे दुनिया मख़ूर ए ख़्वाजा ख़ेज़ ।
गर तो ख़ुरी बख़्शे "निज़ामी" बरेज़ ॥

हिकायत मोबिदे हिन्दू कि मारिफ़त याफ़्त

मोबिदे अज़ किशवरे हिन्दोस्ताँ ।
रहगुज़रे बर्द सूए बोस्ताँ ॥
मरहलए दीर मुनक़्क़श रुबात ।
ममलुकते याफ़ मुज़व्वर बिसात ॥
ग़ुनचा वख़ूँ बसता चो गर्दूं कमर ।
लालए कम उम्र ज़े ख़ुद बे ख़बर ॥
मोहलते शाँ ता नफ़से बेश नह ।
हेच कसे आक़बत अन्देश नह ॥

सुरय्या का तौक़ उठाने का प्रयत्न मत करो यदि तुम कुत्ते नहीं हो। यदि गधे नहीं हो तो मसीह को अपने ऊपर सवार मत कराओ।

आकाश क्या है ? एक वृद्ध विधवा। संसार क्या है ? एक चोर की लूटी हुई विधवा।

नई और पुरानी इनके चक्करों में मत पड़ो। संसार के बदलने पर एक कौड़ी के भी नहीं रहोगे।

कमर बाँध कर उठ खड़े हो और इस संसार की चिन्ता मत करो। यदि तुम खाओ भी तो "निज़ामी" का भाग अलग निकाल दो।

एक ब्राह्मण की कहानी जिसने ईश्वर को प्राप्त कर लिया

भारतवर्ष में, एक दिन एक पारसा मनुष्य बाग़ की तरफ़ घूमने निकल गया।

उसे वहाँ बहुत ही सुन्दर स्थान दिखलाई दिया। उसमें घास का सुन्दर फ़र्श बिछा हुआ था।

और मनोहर कलियाँ चित्त को आकर्षित कर रही थीं। लाला के पुष्प मस्ती में झूम रहे थे।

परन्तु उसका जीवन कुछ ही दिनों का था। इस तरफ़ किसी का भी ध्यान नहीं जाता था।

पीर चो जाँ रौज़ए मीनू गुज़श्त ।
बादे महे चन्द बदाँसू गुज़श्त ॥
जाँ गुलो बुलबुल कि दराँ बाग़ दीद ।
नालए मुश्ते ज़ग़नो ज़ाग़ दीद ॥
दोज़खे उफ़्ताद बजाने बहिश्त ।
क़ैसरे आँ क़स्र शुदा दर कुनिश्त ॥
सबज़ा बतहलील ख़ारे शुदा ।
दस्तए गुल पुशतए ख़ारे शुदा ॥
पीर दराँ तेज़ रवाँ बिनगरीस्त ।
बर हमा ख़नदीद बखुद बरगिरीस्त ॥
गुफ़्त कि हंगामे नुमाइन्दगी ।
हेच नदारद सरे पाबन्दगी ॥
हर चे सर अज़ ख़ाक व आबा कशद ।
आक़बतश सर बख़राबी कशद ॥
बेह ज़े ख़राबी चो दिगर कूए नेस्त ।
जुज़ बख़राबी शुदनम रूए नेस्त ॥
चूं नज़र अज़ बीनिशे तौफ़ीक़ साख़्त ।
आरिफ़े ख़ुद गश्तो ख़ुदा रा शिनाख़्त ॥

वृद्ध भक्त उस स्थान से अपने घर को लौट गया और उसके कुछ ही महीने बाद पुनः उधर ही आ निकला ।

उसने उस उपवन में पुष्प खिले हुए देखे थे और बुलबुलों का राग सुना था । अब वहाँ पर चील-कौओं का जमघट देखा ।

स्वर्ग, नर्क में परिणत हो गया था । उस सुन्दर उपवन की शोभा अर्थात् पुष्प किनारा कर गया था ।

और घास जल कर पीली पड़ गई थी । पुष्पों के गुच्छों के स्थान पर अब कंटक ही कंटक दिखलाई पड़ते थे ।

वृद्ध शीघ्रता से इन सब वस्तुओं को देख गया । फिर वह इन सब पर हँसा और अपने ऊपर आँसू गिराए ।

उसने अपने मनमें सोचा कि आख़िर, दिखावे का कोई मूल्य नहीं होता है ।

मिट्टी और पानी के संयोग से जो वस्तु उत्पन्न हुई है, वह नाश होकर ही रहती है ।

जब विनाश का मार्ग ही सर्वोत्तम है फिर उसे छोड़ कर मुझे और किस तरफ़ जाना चाहिये ।

जब उसमें ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने अपने स्वरूप को समझ और ईश्वर को पहचान लिया ।

सैरफ़ये गोहरे आँ राज़ शुद।
ता बश्रदम सूए गोहर बाज़ शुद ।।

ए के मुसलमानीवो गब्ररीत नेस्त।
चश्मे तोरा क़तरए अबरीत नेस्त ।।

कमतर अज़ाँ मोबिदे हिन्दू मबाश।
तर्के जहाँ गीरो जहाँ जू मबाश ।।

खेज़ रिहा कुन कमरे कुल ज़े दस्त।
कू कमरे खेश बखूने तो बस्त ।।

चन्द चो गुल ख़ीरासरी साख़तन।
सर बकुलाहो कमर अफ़राख़तन ।।

हस्त कुलाहो कमर आफ़ाते इश्क़।
हर दो रिहा कुन बखराबाते इश्क़ ।।

गह कुलहत ख़ाजगिए गिल देहद।
गह कमरत बन्दगिए दिल देहद ।।

कोश कज़ीं ख़ाजा ग़ुलामी रेही।
ता चो "निज़ामी" ज़े निज़ामी रेही ।।

अब वह इस रहस्य को पहचानने वाला हो गया और ईश्वर के मूल्य को समझ कर उसी तरफ़ बढ़ गया।

मूर्ख! न तो तू धर्म का ही कुछ ज्ञान रखता है और न ईश्वर को समझने की शक्ति। तू तो नितान्त निर्लज्ज है।

उस हिन्दू ब्राह्मण से पीछे मत रह जा। इस संसार की खोज मत कर, इसका त्याग कर देना ही उत्तम है।

इन सांसारिक प्रलोभनों में मत पड़, वह तुझे मिटा डालने पर तैयार हैं।

एक पुष्प के समान अपने रंग और रूप पर कब तक गर्व करता रहेगा। टोपी और पटके पर ग़रूर करता रहेगा।

टोपी और पटका प्रेम के लिये आफ़तें हैं। प्रेम के मार्ग में इनका त्याग अवश्य है।

कभी यह ताज तुझे पुष्प के समान इस उपवन का सम्राट् बना देता है और कभी यह पटका तुझे इच्छाओं का दास बना देता है।

प्रयत्न कर कि दास के स्थान पर स्वामी होकर रहे और फिर "निज़ामी" के समान अपनत्व को मिटा कर स्वतंत्र होजावे।

खुसरो व शीरीं

ज़माना ख़ुद जुज़ीं कारे नदानद।
कि अन्दोहे देहद जाने सितानद॥
चो कार उफ़तादा गरदद बेनवाए।
दरश दरगीरद अज़ हर सू बलाए॥
वहर शाख़े गुले कू दर ज़नद चंग।
बजाए गुल बेबारद बर सरश संग॥
चुनाँ अज़ ख़ुशदिली बे वह गरदद।
कि दर कारश तबरज़द ज़ह गरदद॥
चुनाँ तँग आयद अज़ शोरीदने सख़्त।
कि बर बायद गिरिफ़्तश ज़ीं जहाँ रख़्त॥
इनाने उम्र अज़ीं साँ दर नशेबस्त।
जवानी रा चुनीं पा दर रकेबस्त॥
कसे याबद ज़े दौराँ रस्तगारी।
कि बर दारद इमारत ज़ीं इमारी॥
मसीहावार दर वै बर नशीनद।
कि बा चंदीं चिराग़श कस नबीनद॥

खुसरू और शीरीं

समय एक विचित्र वस्तु है। उसे दूसरों को नष्ट करने में आनन्द आता है।

जब कोई विपत्तियों का मारा असहाय हो जाता है, तब उसके चारों तरफ़ अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है।

यदि किसी पुष्पकी डाल को हिलाता है तो पुष्प न गिरकर उसके शिर पर पत्थर गिरते हैं।

ख़ुशी से वह इतना महरूम हो जाता है कि उसके लिए तिर्याक़ भी ज़हर हो जाता है।

उसकी अवस्था इतनी हीन हो जाती है कि वह इस संसार को छोड़ देने पर उतारू हो जाता है।

अवस्था ढलती जा रही है और युवावस्था भी किनारा करने के लिये उत्सुक हो रही है।

काल के चक्कर में वही मनुष्य नहीं पड़ता है जो इस स्थान को प्यार नहीं करता, यहाँ अपना घर नहीं बनाता।

ईसा के समान ऐसे मंडप में बैठा रहता है जहाँ सहस्रों दीपकों के प्रकाश से भी वह दिखलाई नहीं पड़ता है।

जहाँ देवस्तो वक्ते, देव बस्तन।
बख़ुश ख़ूई तवाँ अज़ देव रस्तन॥
मकुन दोज़ख़ बख़ुद बर ख़ूए बद रा।
बहिश्ते दीगराँ कुन ख़ूए ख़द रा॥
चु दारद ख़ूए तो मरदुम सरिश्ती।
हमीं जाओ हमाँ जा दर बहिश्ती॥
मख़ुस्प ए दीदा चंदाँ ग़ाफ़िलो मस्त।
चो हुशयाराँ बर आवर ज़ीं जहाँ दस्त॥
कि चंदाँ ख़ुफ़ ख़ाही दर दिले ख़ाक।
कि फ़रमोशत कुनद दौराने अफ़लाक॥
बदीं पंजाह साला हुक़्क़ा बाज़ी।
बदीं यक मोहरा गिल ता चन्द बाज़ी॥
ज़े पंजह साल अगर पंजह हज़ारस्त।
क़लम दरकश कि हम नापायदारस्त॥
नशायद आहनीं तर बूदन अज़ संग।
बेबीं ता रेग चूँ रेज़द बफ़रसंग॥

संसार एक प्रेत के समान है और अच्छे स्वभाव तथा गुणों के द्वारा ही उससे छुटकारा मिल सकता है।

तू बुरा स्वभाव छोड़, अपने लिये नर्क न बना। अपने स्वभाव को ऐसा बना कि दूसरे लोग भी तुझे स्नेह की दृष्टि से देखें।

ऐसा न बन कि और तुझसे दूर भागने का प्रयत्न करें। यदि तेरा स्वभाव मनुष्यता से परिपूर्ण होगा तो तू यहाँ भी स्वर्ग में रहेगा और वहाँ भी।

हे नयन! इतने मतवाले मत बनो। सतर्कता से काम लो और निद्रा को दूर करो।

समाधि में सोने के लिये इतना अवकाश मिलेगा कि सांसारिक विपत्तियाँ भी तुझे भूल जायँगी।

अतएव इन प्रलोभनों पर इस समय आसक्ति मत दिखला। तूने पचास वर्ष तमाशा किया और वह भी केवल एक गोले से (मुहरे से)। अब कब तक इसी खेल में व्यस्त रहेगा?

यदि पचास हज़ार वर्ष भी तुझे मिलें तो उन्हें अस्वीकार करदे। उनमें किसी प्रकार का स्वाद नहीं है।

पत्थर सबसे कठोर वस्तु है, परन्तु वह भी रेत के रूप में कोसों तक उड़ता है।

ज़मीं नुतयेस्त रंगश चूँ नरेज़द ।
कि बर नुतए चुनीं जुज़ ख़ूँ न ख़ेज़द ॥
बसा ख़ूने के शुद दर ख़ाके ईं दश्त ।
सियहबख़्ते नरस्त अज़ ज़ेरे ईं तश्त ॥
हराँ ज़र्रा कि आरद तुंद बादे ।
फ़रीदूने बुवद या कैक़ुबादे ॥
कफ़े गिल दर हमा रूए ज़मीं नेस्त ।
कि बर वै ख़ूने चंदीं आदमी नेस्त ॥
कि मीदानद कि ईं दैरे कोहन साल ।
चे मुद्दत दारदो चूँनस्त अहवाल ॥
नमानद कस कि बीनद दौरे ऊ रा ।
बदाँ ता दर नयाबद ग़ौरे ऊ रा ॥
बहर सद साल दौरे गीरद अज़ सर ।
चे आँ दौराँ शुद आयद दौरे दीगर ॥
बरोज़े चन्द बा दौराँ दवीदन ।
चे शायद दीदनो चे तवाँ शुनीदन ॥
ज़े जौरो अद्ल दर हर दौर साज़ेस्त ।
दरू दानिंदा रा पोशीदा राज़ेस्त ॥

पृथ्वी एक फ़र्श है। उसका रंग क्यों नहीं उड़ता ? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त बहा है, और कोई भी अब तक साफ़ बच कर नहीं निकल सका है। संसार में सभी फँस जाते हैं।

आँधी चलती है और कणों को उड़ा कर लाती है। वह कण फ़रीदूं या कैक़ुबाद की राख के बने हुए होते हैं।

समस्त पृथ्वी में केवल एक हथेली भर गीली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यों का रक्त पड़ा हुआ है।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था ? उसके विगत इतिहास का किसे पता है ?

कौन उसको देखने के लिये शेष रहेगा ? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा।

कुछ दिनों में अथवा दो एक दौर देखने में क्या समझ में आ सकता है ?

प्रत्येक दौर में न्याय तथा अत्याचार दोनों ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर में कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है।

नमीख़ाही कि बीनी जौर बर जौर।
नयायद गुफ़ राज़े दौर बा दौर ॥
शबो रोज़ अबलक़े शुद तुन्द रफ़तार।
बई अबलक़ इनाने ख़ेश मसपार ॥
बसद फ़न गर नुमाई जू फ़नूनी।
नशायद बुर्द अज़ीं अबलक़ हरूनी ॥
फ़लक चन्दाँ कि देगे ख़ाक रा पुख़्त।
नरफ़ अज़ ख़ूए ऊ ख़ामी चू की मुख़्त ॥
कुमारिस्ताने चर्खे नीम ख़ाया।
बसे पुर माया रा बुर्दस्त माया ॥
अरूसे ख़ाक अगर बदरे मुनीरस्त।
बदस्तो याद कुन असरश कि पीरस्त ॥
मगर हक़्क़े कि ख़ाहद बूदन अज़ याद।
तिलाक़े अम्र ख़ाहद ख़ाक रा दाद ॥
अगर बाद आयदो गर न आयद इमरोज़।
तू बरबादे चुनीं मशअल मै अफ़रोज़ ॥
दरीं यक़मुश्ते ख़ाक ए ख़ाक दर मुश्त।
गर अफ़रोज़ी चिरागे अज़ देहमगुश्त ॥

तुमको अत्याचार पर अत्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का रहस्य दूसरे दौर से प्रकट नहीं किया जा सकता।

रात और दिन एक शीघ्रगामी कोतल घोड़े के समान हैं। इस घोड़े के सुपुर्द अपनी बाग मत कर देना।

यदि तुम सैकड़ों विद्याओं में निपुण हो जाओ, तब भी इस कोतल घोड़े की शरारतों को दूर करने में समर्थ न हो सकोगे।

आकाश ने मिट्टी की हाँड़ी को बहुत ही पकाया परन्तु इस पर भी उसका कच्चापन दूर नहीं हुआ।

आकाश का जुआख़ाना बहुत से धनवानों का धन छीन कर ले गया है।

संसार प्रलोभनों से परिपूर्ण है और यद्यपि एक चन्द्रमुखी रमणी के समान है, परन्तु वह बूढ़ी है और उसमें कोई सार नहीं है।

ख़ुदा को अगर याद रखना चाहता है तो दुनिया को त्याग देने में ही भलाई है।

हवा की तरफ़ से जो न्याय होगा वह संसार से बिलकुल ही पृथक कर देगा उसकी धूल को सदैव के लिये झाड़कर फेंक देगा।

यदि तू अपनी दस उँगलियों से भी इस दीपक को जलाने का प्रयत्न करेगा तब भी यह मिट्टी किसी प्रकार से तेरी सहायता न करेगी।

नशुद मुमकिन कि ईं ख़ाकें ख़तरनाक।
बअंगुश्ते बुरीदा बर कुनद ख़ाक॥

चु यूसुफ़ ज़ीं तुरंज अर सर बेतावी।
चु नारंजे जुलेख़ा ज़ख़्म यावी॥

सहरगह मस्त शौ संगे वरन्दाज़।
ज़े नारंजो तोरंज ईं ख़ाँ बेपरदाज़॥

बुरूँ अफ़गन बतह ज़ीं दारे नोहदर।
मकुन कैमन शवी ज़ीं मारे नोहसर॥

नफ़स कू ख़ाजा ताशे ज़िन्दगानीस्त।
बया परवरदए बादे ख़िज़ानीस्त॥

अगर यकदम ज़नो बेइश्क़ मुर्दस्त।
कि बरमा यकबयक दमहा शुमुर दस्त॥

बबायद इश्क़ रा फ़रहाद बूदन।
पसंगाहे बमुर्दन शाद बूदन॥

मोहन्दिश दस्तये पौलाद तेशा।
ज़े चोबे नार बुन करदे हमेशा॥

यह मुमकिन नहीं कि इस संसार में कटी उँगलियों वाला मिट्टी खोद सके।

यदि यूसुफ़ के समान तू इस नींबू से पृथक् हो जायगा तो जुलेख़ा की नारंगी के समान तुझ में भी घाव हो जायँगे।

प्रभात होते ही मतवाला बन जा और एक ढेला फेंक कर मार तथा नारंगी और नींबू से यह भोजनालय भर दे।

इस शरीर रूपी गृह से जिसमें नौ इन्द्रियों के रूप में नौ द्वार हैं अपना सब सामान बाहर निकाल ले चल। देखना, इस नौ फन वाले सर्प की तरफ़ से सतर्क रहना।

वह स्वाँस, जिससे हमारा जीवन क़ायम है विनाश-रूपी वायु की उत्पन्न की हुई है।

प्रेम-विहीन एक भी साँस निकालना व्यर्थ है। कारण कि हमारे जीवन की साँसें गिनती की हैं।

प्रणय के लिये "फ़रहाद" का होना आवश्यक है और उसी अवस्था में मृत्यु के समय हर्ष होगा।

"फ़रहाद" सदैव फ़ौलाद के बसूले का बेंट अनार की लकड़ी काट कर बनाया करता था,

ज़े बहरे आँके बाशद दस्तगीरश।
बदस्त अंदर बुवद फ़रमाँ पिज़ीरश॥

चु बिशुनीद ईं सख़ुनहाए जिगर ताब।
फ़राज़े कोह कर्द आँ तेशा पुरताब॥

चुनीं गोयँद ख़ाके बूद नमनाक।
सिना दर संग रफ़्तो चोब दर ख़ाक॥

अज़ाँ दस्ता बर आमद शोशए नार।
दरख़्ते गश्तो नार आवुर्द बिसयार॥

अज़ाँ शोशा कनूँ गर नारयाबी।
दवाए दर्दे हर बीमार याबी॥

"निज़ामी" गर नदीद आँ नार बुन रा।
बदफ़तर दर चुनीं ख़ाँद ईं सख़ुनहा॥

हिकायत बुलबुल वा बाज़

दर चमने बाग़ चो गुलबुन शिगुफ़्।
बुलबुल बा बाज़ दर आमद बगुफ़्त॥

ताकि वह उसके हाथ से फिसल न जावे और हाथ ही में ठीक ठीक बना रहे।

जब फ़रहाद ने हृदय को बेधने वाली बातें सुनीं तो पर्वत की चोटी पर से उस बसूले को फेंक मारा।

लोग कहते हैं कि वहाँ पर कुछ गीली मिट्टी थी। बसूले का फल पत्थर में घुस गया और दस्ता मिट्टी में।

उसी दस्ते की लकड़ी में कल्ले फूटे और धीरे धीरे एक बड़ा भारी वृक्ष उत्पन्न हो गया और उसमें अनार के सहस्रों फल उत्पन्न हुए।

यदि उस अनार का तुझे एक भी फल मिल जावे तो सभी रोग दूर हो सकते हैं।

"निज़ामी" ने उस अनार के वृक्ष को नहीं देखा है, परन्तु पुस्तकों में उस कहानी को पढ़ा है।

बुलबुल और बाज़ का वार्तालाप

जिस समय उपवन में गुलाब के पुष्प खिल रहे थे, बुलबुल और बाज़ में इस प्रकार बातचीत हुई।

कज़ हमह मुर्ग़ाँ तुई ख़ामोश सार।
गोय चेरा बुरदई आख़िर बेयार॥
ता तु लबे बसता कुशादी नफ़स।
यक सख़ुने नग़ज़ नगुफ़्ती बकस॥
मंज़िले तो दस्त गहे सनजरी।
तोमए तो सीनए कबके दरी॥
मनके बयकदम ज़दन अज़ काने ग़ैब।
सद गोहरे सुफ़्ता बर आरम ज़े जैब॥
तोमए मन किर्म शिकारी चेरास्त।
ख़ानए मन बर सरे ख़ार चेरास्त॥
बाज़ बदो गुफ़्त हमा गोश बाश।
ख़ामुशियम बिनगरो ख़ामोश बाश॥
मनके शुदम कारशिनास अन्दके।
सद कुनमो बाज़ नगोयम यके॥
रौ कि तुई शेफ़तए रोज़गार।
जाँके यके न कुनीओ गोई हज़ार॥
मनके हमा मानीयम ईं सैद गाह।
सीनए कबके देहद अज़ दस्ते शाह॥

बुलबुल ने बाज़ से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख से नहीं निकाली।

संजर बादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलने वाली हूँ। एक साँस में सैकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

बाज़ ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बखान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बातें बनाने में एक ही है।

मैं बिल्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

चूँ तो हमह ज़ख़्म ज़बानी तमाम।
किर्म ख़ुरीओख़ार नशींनी वस्सलाम॥
ख़ुतबा चो बर नामे फरेदूँ कुनन्द।
हुक्म बर आवाज़े दुहुल चूँ कुनन्द॥
सुबह चो बा बाँगे ख़रूसस्तो बस।
खंदा ज़न अज़ राहे फ़सूलो बस।
चर्ख़ कि दर मारज़ैर फ़रयाद नेस्त।
हेच सरज़ तिर्कश आज़ाद नेस्त॥
बर मकश आवाज़ए नज़्मे बलन्द।
ता चो "निज़ामी" नशवी शह बन्द॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ से चकोर का सीना खिलवाता है।

तू केवल बातें ही करना जानती है और इसी लिये तुझे खाने के लिये कीड़े मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का ख़ुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि डंके की चोट का।

प्रभात के पास केवल एक आवाज़ है और वह है मुर्ग़ की। इसीलिये वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है।

आकाश के पास एक भी आवाज़ नहीं है। इसीलिये कोई भी उसके फन्दे से बाहर नहीं है।

ऊँचे दर्जे की कविता करने में ख्याति न प्राप्त कर। कहीं "निज़ामी" के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नज़रबन्द न कर दिया जावे।

फ़रीदुद्दीन अत्तार

(जन्म सन् ११५७ ई० , मृत्यु सन् १२३० ई०)



फ़रीदुद्दीन अत्तार
(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

रूमी कहा करते थे कि डेढ़ सौ वर्ष उपरान्त मन्सूर का आत्मिक प्रकाश अत्तार की आत्मा में प्रकाशित हुआ है। सनाई के समान अत्तार का प्रारम्भिक जीवन भी गुणों और उत्तम व्यवहारों से पूर्ण न था। यह औषधि बेचा करते थे। एक दिन जब यह दूकान पर बैठे हुए थे एक साधु आया और बोला कि अल्लाह के नाम पर कुछ दे दे। अत्तार किसी कार्य में व्यस्त थे। अतएव साधु के कई बार माँगने पर भी इनका ध्यान उधर न गया। अन्त में उसने कहा, "ख़्वाजा! आपकी जान कैसे निकलेगी"! अत्तार ने उत्तर दिया, "जिस प्रकार तुम्हारी"। साधु ने कहा, "तुम भी मेरी तरह मर सकते हो?" इसका भी उत्तर इन्होंने हाँ में दिया। इस पर साधु अपने लकड़ी के प्याले को सर के नीचे रखकर लेट गया और ज़ोर से अल्लाह की आवाज़ लगाई। उसकी आत्मा शरीर को त्यागकर उड़ गई। अत्तार को बहुत ही आश्चर्य और दुःख हुआ। फल स्वरूप इन्होंने दूकान उठा दी और संन्यास ग्रहण कर लिया।

बलख़ जाते समय रूमी से इनकी भेंट हुई थी, यह बहुत वृद्ध हो चुके थे। शेख़ ने इनके लिये एक पत्र भी लिखा था जिसे मौलाना रूमी सदैव अपने पास रखते थे। जामी का कथन है,

"अत्तार की, कृत्तियों में सूफ़ियों के भावों की स्थान स्थान पर झलक दिखलाई पड़ती है।"

अत्तार की ख्याति उनकी रचनाओं की बाहुल्यता के कारण और भी अधिक है। उन्होंने ११४ पुस्तकें लिखी थीं, जिनमें से ३० पाई जाती हैं। ब्राउन का कथन है, "यदि वह और भी कम लिखते तो उनका और भी अधिक नाम होता और लोग उनकी कृत्तियों को अधिक चाव से पढ़ते। इनकी पन्द-नामा, मन्तक़ुलतीर और तज़करत्तउल औलिया नामक रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं और उनका कई एक भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। मन्तक़ुलतीर के कारण—जिसमें से कई एक पंक्तियाँ मैंने इस पुस्तक में भी उद्धृत की हैं—उनके नाम ने लोगों के दिलों में और भी अधिक घर कर लिया है। इस रचना में लेखक ने आत्मा को परमेश्वर की खोज में व्यस्त दिखलाया है। सूफ़ी यात्री की उपमा एक पक्षी से देकर ईश्वर को सीमुर्ग माना है। पक्षीगण एकत्रित होकर अपने पथ-प्रदर्शक हुमा की अध्यक्षता में ईश्वरीय खोज का विचार करते हैं। प्रत्येक अपनी इन्द्रिय जनित कठिनाइयों और बन्धनों को उसके सामने रखता है और हुमा उनका समाधान करता है। हुमा इस स्थान पर उनके सम्मुख शेख़ सनाआँ की घटना रखता है, जो कि एक बड़े भक्त थे और एक लड़की के ऊपर आसक्त होने के कारण जिन्होंने, उसे सन्तुष्ट करने के लिये उसके शूकरों तक को चराना स्वीकार किया था। शेख़ ने, हृदय में ज्ञान

उत्पन्न होने पर उस लड़की को त्याग दिया। लड़की भी उनके विरह में पागल होकर वहीं पहुँची और उनके जीवन में भक्ति का मिश्रण करके संसार से चल बसी।

"मोक्ष-मार्ग की कठिनाइयाँ और उसके सातों भाग—प्रेम, ज्ञान स्वतंत्रता, सम्मिलन, आश्चर्य, निराशा और मृत्यु के रूप में—प्रगट किये गये हैं। मानव हृदय की मलिनताओं से पृथक होकर आत्मा अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेती है।"

(लि० हि० आ० पर जिल्द २, पृष्ठ ५१२)

" पक्षियों की कठिनाइयाँ तथा उनके भिन्न २ भाग्य, मोक्ष तथा सत्य पथ को ग्रहण करने वालों की विपत्तियों को प्रदर्शित करते हैं और इन बातों का वर्णन, पुस्तक को, जार्ज बनियन की लिखी हुई पुस्तक पिलग्रिम्स प्राग्रेस, के समान बनाता है।"

(लीवी—परशियन लिट्रेचर—पृष्ठ ४७)

अत्तार का जन्म नीशाँपुर में ११५७ ई० में हुआ था। यह अबू तालिब मुहम्मद के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके पिता का नाम था अबूबक्र इब्राहीम। इन्होंने बहुत से नगरों तथा देशों में भ्रमण किया था। जैसे रे, क्यूफ़, मिश्र, दमिश्क, मक्का, भारतवर्ष, तुर्किस्तान इत्यादि, परन्तु अन्त में यह अपने जन्मस्थान में ही जाकर रहे। यह रहस्यवाद की पुस्तकों को बहुत अधिक पढ़ा करते थे और लगभग ३९ वर्ष तक उन्होंने अपने इस अध्ययन को जारी रक्खा। रहस्यवाद के साहित्य में इनकी कुछ रचनाएँ बहुमूल्य प्रतीत होती हैं। उन्होंने सूफ़ियों के सातों स्टेजेज़ का बहुत ही उत्तम भाषा में वर्णन किया है।

अपने उद्दण्ड विचारों के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मकान लूट कर उनको अन्त में निकाल दिया गया। सुना जाता है कि इसके उपरान्त वह मक्का को चले गये और वहाँ पर उन्होंने इसानुलईनब नामक पुस्तक लिखी।

उनकी मृत्यु का समय निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। विशेषज्ञों में, इस विषय पर मतभेद है। कई एक कारणों से ब्राउन ने उनकी मृत्यु का होना सन् १२३० ई० में लिखा है। लेवी भी इससे सहमत है। प्राचीन कहानी के अनुसार यह कहा जाता है कि उनको चंगेज़ ख़ाँ ने मार डाला।

प्रमुख रचनाएँ :—

पन्द नामा,
तज़किरातुल औलिया,
मन्तक़ुत्तीर,
क़सीदा,
मुसीबत नामा,
बुलबुल नामा,
शुतुर नामा।

जवाब दादने हुदहुद

हुदहुदे रहबर चुनीं गुफ़्ताँ जमाँ ।
काँ के शुद आशिक़ नयंदेशद जे जाँ ॥
चूँ बतर्के जाँ बगोयद आशिक़े ।
ख़ाह ज़ाहिद बाश ख़ाही फ़ासिक़े ॥
चूँ दिले तू दुश्मने जाँ आमदस्त ।
जाँ बर अफ़शाँ रह ब पायाँ आमदस्त ॥
सद्देरह जानस्त जाँ ईसार कुन् ।
पस बरफ़गन परदओ दीदार कुन् ॥
गर तुरा गोयंद अज़ ईमाँ बराय ।
बर ख़िताब आयद तुरा कज़ जाँ बराय ॥
तू कमे ईं गीरो आँ रा बर फ़िशाँ ।
तर्के ईमाँ गीरो जाँरा बर फ़िशाँ ॥

हुदहुद का उत्तर देना

उस समय पथ प्रदर्शक हुदहुद ने कहा कि जो सच्चा प्रेमी होता है उसे अपने प्राणों की चिन्ता नहीं रहती है।

प्रेमियों में उन्हीं लोगों की गणना होती है जो अपने प्राणों का मोह छोड़ देते हैं। प्राणों का मोह छोड़ देने पर जीव प्रणय का अधिकारी हो जाता है फिर वह चाहे पाप करे या उपासना।

तेरा यह दिल ही तेरे प्राण का बैरी है। बस तू अपने प्राणों को दे दे, तेरा मार्ग साफ़ हो जायगा।

यही प्राण तेरे मार्ग की रुकावटें है। इसको न्यौछावर कर दे और फिर पर्दा उठाकर उसका दर्शन कर।

यदि तुझसे कहा जावे कि तू अपना धर्म्म न्यौछावर कर दे, अथवा अपने प्राण दे डाल,

तो तू इसे बहुत ही तुच्छ समझ और इस माँग को पूरा कर दे। अर्थात धर्म्म भी छोड़ दे और प्राण भी जाने दे।

मुनकिरे गर गोयदीं बस मुनकरस्त ।
इश्क़ कू कज़ कुफ़्रो ईमाँ बरतरस्त ।।
इश्क़ रा बा कुफ़्रो बा ईमाँ चे कार ।
आशिक़े रा लहज़ए बा जाँ चे कार ।।
आशिक़ आतश बर हमाँ ख़िर्मन ज़नद ।
अर्रा बर फ़र्क़श ज़न्द अर्दम ज़नद ।।
दर्दो ख़ूने दिल बे बायद इश्क़ रा ।
क़िस्सए मुशकिल बे बायद इश्क़ रा ।।
साक़िया ख़ूने जिगर दर जाम कुन ।
गर नदारी दुर्दे अज़ मा वाम कुन ।।
इश्क़ रा दर्दे बेबायद पर्दा सोज़ ।
गाह जाँ रा परदा दर गह परदा दोज़ ।।
ज़र्रये इश्क़ अज़ हमा आफ़ाक़ बेह ।
ज़र्रये दर्द अज़ हमा उश्शाक़ बेह ।।
इश्क़ मग़ज़े कायनात आमद मुदाम ।
लेक इश्क़ आमद ज़े बेदर्दी तमाम ।।

यदि इस मत को न मानने वाला कोई कह बैठे कि यह तो बिल्कुल ही मूर्खता है। भला ऐसी भी कोई लगन है जो नास्तिकता तथा धर्म्म से बढ़कर है !

तो उससे कह दे कि प्रेम को धर्म्म और नास्तिकता से क्या सम्बन्ध है ! प्रेमियों को तो एक क्षण भर के लिये भी प्राणों का मोह नहीं होता है।

यदि क्षण भर के लिये भी उसके दिल में प्राणों की ममता जागृत हो उठे तो उसके शिर पर आरा चला देते हैं। प्रेमी अपना सम्पूर्ण खलिहान स्वयम् जलाकर भस्म कर डालता है।

प्रणय के लिये दर्द और हृदय का रक्त दोनों को न्यौछावर कर देना चाहिए। प्रणय के लिये सबसे कठिन बात सदैव अनुरक्त रहना है।

ऐ साक़ी ! अब प्याले में हृदय का रक्त भर दे। यदि तेरे पास तलछट नहीं है तो हम से उधार ले ले।

प्रेम के लिये, लगन के लिये ऐसा तलछट होना चाहिये जो पर्दे को ही जला डाले (अर्थात् कभी प्राणों को खो बैठे और कभी उसे फिर लौटा ले) कभी प्राण के पर्दे को फाड़ डाले और कभी उसे फिर सींदे।

प्रेम का एक कण भी सारे संसार से बढ़कर मूल्य रखता है और तनिक सी पीड़ा सम्पूर्ण संसार के प्रेमियों से बढ़कर है।

प्रणय इस सारे जगत का सार है; परन्तु इसमें दया का लेशमात्र भी नहीं है।

कुदसियाँ रा इश्क़ हस्तो दर्द नेस्त।
दर्द रा जुज़ आदमी दर खुर्द नेस्त॥
हर के रा दर इश्क़ मोहकम शुद क़दम।
दर गुज़श्त अज़ कुफ़्र ओ अज़ इस्लाम हम॥
इश्क़ सूये फ़क़्र दर बोकुशायदत।
फ़क़्र सूये कुफ़्र रह बे नुमायदत॥
इश्क़ रा बा काफ़िरी ख़ेशी बुवद।
काफ़िरी ख़ुद ऐने दरवेशी बुवद॥
चूँ तुरा ईं कुफ़्र ओ ईं ईमाँ न माँद।
ईं तने तू गुम शुदो ईं जाँ न माँद॥
बाद अज़ीं मर्दे शवी ईं कार रा।
मर्द बायद ईं चुनीं असरार रा॥
पाए दर नेह हम चो मरदानो मतर्स।
दर गुज़र अज़ कुफ़्रो ईमानो मतर्स॥
चन्द तरसी दस्त अज़ तिफ़ली बेदार।
बाज़ शौ चूँ शेर मरदाँ दर शिकार॥
गर तुरा सद उक़बा नागह ओफ़तद।
बाक न बुवद चूँ दरीं रह ओफ़तद॥

स्वर्गीय दूत प्रेमी हैं, परन्तु उनमें प्रणय पीड़ा नहीं है। पीड़ा के योग्य मनुष्य के अतिरिक्त और कोई नहीं है।

जो प्रेम में संलग्न है, उसको धर्म्म पालन और नास्तिकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।

प्रणय तेरे सम्मुख फ़क़ीरी का द्वार खोल देता है और तेरा यही पद तुझे वहाँ पहुँचा देता है जहाँ ईश्वर को नहीं माना जाता है।

प्रणय और नास्तिकता में प्रगाढ़ सम्बन्ध है। वास्तविक प्रेमी वही है जो नास्तिक है।

जब तेरे पास तेरा धर्म्म और तेरी नास्तिकता कुछ भी नहीं रह जायगा तो यह तेरा शरीर और तेरा प्राण कुछ भी नहीं रह जायगा।

इसके उपरान्त तू इसके योग्य होगा। ऐसे कार्यों के लिये मनुष्य का पराक्रमी होना आवश्यक है।

वीर मनुष्य के समान अपने मार्ग में आगे बढ़ और किसी प्रकार का भय मत कर। नास्तिकता और धर्म दोनों का त्याग कर दे और डर मत।

तू कब तक भय खाता रहेगा, इस बालकपन के स्वभाव को छोड़ दे। वीरों के समान आखेट करने में अपनी धुन में मस्त हो जा।

यदि तेरे मार्ग में यकायक कठिनाइयाँ आ पड़ें तो भी उनका भय मत कर।

हिकायत शेख़ सनआँ

शेख़ सनआँ पीर अह्दे ख़ेश बूद ।
दर कमालश उञ्चे गोयम बेश बूद ॥
शेख़ बूद अंदर हरम पंजाह साल ।
बा मुरीदाँ चार सद साहब कमाल ॥
हर मुरीदे कानेऊ बूदे अजब ।
मी नआसूद अज़ रयाज़त रोज़ो शब ॥
हम अमल हम इल्म बा हम यार दाश्त ।
हम अयाँ हम कश्फ़ हम असरार दाश्त ॥
क़ुर्ब पंजह हज बजा आउरदा बूद ।
उमरा उमरे बूद ता में करदा बूद ॥
हम सलातो सौम बेहद दाश्त ऊ ।
हेच सुन्नत रा फ़रो न गुज़ाश्त ऊ ॥
पेशवायाने कि दर पेश आमदन ।
पेशे ऊ अज़ ख़ेश बे ख़ेश आमदन ॥

शेख़ सनआँ की कहानी और उनका एक स्वप्न देखना

शेख़ सनआँ अपने समय के एक बहुत बड़े साधु थे । उनके चमत्कार के विषय में जितना भी कहा जाय थोड़ा है ।

काबे की मस्जिद में पचास वर्षों तक उन्होंने फेरी लगाई और चार सौ पहुँचे हुए साधु शिष्य उनके साथ थे ।

आश्चर्य यह है कि जो कोई भी साधु उनके दर्शन करता था उनसे मिलता था वह फिर अहर्निश ध्यान-मग्न और ईश्वरीय भेद को जानने में व्यस्त रहता था ।

ज्ञान और विद्या के अतिरिक्त उनकी अन्तर्दृष्टि बहुत ही पैनी थी और सब बातें उनपर प्रकट थीं । ठीक ठीक सभी भेदों का उन्हें ज्ञान था ।

पचास हज भी उन्होंने की थीं । और छोटे हज में तो उन्होंने अपनी सारी अवस्था ही व्यतीत कर दी थी ।

व्रत और उपवास भी वह बहुत अधिक रखते थे और किसी भी व्रत को योंही खाली नहीं जाने देते थे ।

बड़े बड़े सन्यासी और त्यागी जो उनके पास आते थे वह अपने आपे को भूल जाते थे ।

मूए मी बेशिगाफ़ मर्दे मानवी।
दर करामातो मुक़ामात आमदो॥

हर के बीमारी व सुस्ती याफ़्ते।
अज़ दमे ऊ तंदुरुस्ती याफ़्ते॥

ख़ल्क़ रा फ़िलजुमला दर शादी व ग़म।
मुक़्तदाए बूद दर आलम अलम॥

गर चे ख़ुद रा क़िद्वए असहाब दीद।
चंद शब ऊ हम चुनाँ दर ख़्वाब दीद॥

कज़ हरम दर राहश उफ़तादा मुक़ाम।
सिजदा मी करदे बुते रा बर दवाम॥

चूँ बेदीदआँ ख़ाब बेदार अज़ जहाँ।
गुफ़्त दर्दा ओ दरेग़ा कीं ज़माँ॥

यूसुफ़े सिद्दीक़ दर चाह ओफ़्ताद।
उक़बए बस सअब दर राह ओफ़्ताद॥

मी नदानम ता अज़ीं ग़म जाँ बरम।
तर्के जाँ गुफ़तम अगर ईमाँ बरम॥

वह सैकड़ों प्रकार के चमत्कार भी दिखला सकते थे। योग विद्याके पूर्ण ज्ञाता थे।

उनमें वह शक्ति विद्यमान् थी कि रोगी मनुष्य उनकी फूँक से स्वस्थ हो जाता था।

संसार के दुःख और शोक उनके लिये समान थे। वह संसार में एक प्रसिद्ध गुरु थे।

जब उन्होंने अपने आपको साधुओं में एक श्रेष्ठ साधु के रूप में देखा तो कई दिनों तक लगातार एक स्वप्न देखा,

कि काबे की मसजिद से आते हुए मार्ग में वह एक स्थान पर पड़े हुए हैं और वहाँ एक मूर्त्ति की पूजा कर रहे हैं।

जब संसार के रहस्यों से परिचित मनुष्य ने यह स्वप्न देखा तो वह दुःख से बोले शोक! हाय शोक!

इस समय सच्चे यूसुफ़ कुए में गिर पड़े, और एक बहुत भयंकर घाटी मार्ग में आगई।

मुझे यह ज्ञात नहीं है कि मैं इस शोक से अपने आपको कैसे बचा सकूँगा। और यदि किसी प्रकार धर्म्म को बचा भी लिया तो प्राण अवश्य ही देना पड़ेगा।

नेस्त यकतन दर हमा रूए ज़मीं।
कू नदारद उक़बए दर रह चुनीं॥
गर कुनद आँ उक़बा क़तआँ जाएगाह।
राह रौशन गर्द्‌दश ता पेशगाह॥
वर बेमानद दर पसे आँ उक़बा बाज़।
दर उक़्बत रह शवद बर वै दराज़॥
आख़िरुलअम्र आँ बदानिश ओस्ताद।
बामुरीदाँ गुफ़ कारेम ओफ़ाद॥
मी बेबायद रफ़ सूए रूम ज़ूद।
ता शवद ताबीरे ईं मालूम ज़ूद॥
चार सद मर्दे मुरीदे मोतबर।
हमरही करदन्द बा ऊ दर सफ़र॥
मी शुदंद अज़ काबा ता अक़साए रूम।
तौफ़ मी करदंद सर ता पाए रूम॥
अज़ क़ज़ा रा बूद आलो मंज़रे।
बर सरे मंज़र निशस्ता दुख़तरे॥
दुख़तरे तरसाए रूहानी सिफ़त।
दर रहे रूहुल्अश सद मारेफ़त॥

समस्त संसार में, कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसे मार्ग में ऐसी घाटी न मिलती हो।

यदि इस घाटी को वह पार कर जाता है तो अपने अभीष्ट तक पहुँचने का सीधा मार्ग उसे प्राप्त हो जाता है।

यदि उस घाटी में वह भटक जाता है तो मुसीबत के कारण उसका रास्ता लम्बा हो जाता है।

उन्होंने अपने आस पास बैठे हुए साधुओं से कहा कि मुझे एक बड़ा काम पड़ गया है।

उसके भेद को समझने के लिये मुझे शीघ्र ही रूम की ओर जाना है।

शेख़ के साथ चार सौ बड़े बड़े साधु हो लिये।

वह काबे से लेकर रूम की अन्तिम सीमाओं तक और समस्त रूम में भ्रमण करते हुए गये।

संयोग से एक दिन उन्होंने एक बहुत ऊँची अट्टालिका देखी, जिसमें एक लड़की बैठी थी।

वह लड़की (गुबरा) ईसाई थी। पवित्रता की उज्ज्वलता उसके मुख से प्रकट हो रही थी और वह अपने धर्म्म तथा आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली सैकड़ों बातों से भली भाँति परिचित थी।

दर सिपहरे हुस्न दर बुर्जे जमाल।
आफ़ताबे बूद इल्ला बेज़वाल॥
आफ़ताब अज़ रश्के अक्से रूए ऊ।
ज़र्दतर अज़ आशिकाने कूए ऊ॥
हर कि दिल दर ज़ुल्फ़े आँ दिलदार बस्त।
अज़ ख़याले ज़ुल्फ ऊ ज़ुन्नार बस्त॥
हर कि जाँ दर लाले आँ दिलबर निहाद।
पाए दर रह ना निहादा सर निहाद॥
चूँ सबा अज़ ज़ुल्फ़े आँ मुशकीं शुदे।
रूम अज़ हिंदू सिफ़त पुरचीं शुदे॥
हर दो चशमश फ़ितनए उश्शाक़ बूद।
हर दो अबरूयश बख़ूबी ताक़ बूद॥
चूँ नज़र बर रूए उश्शाक़ ऊ फ़िगन्द।
जाँ बदस्ते ग़मज़ा बर ताक़ ऊ फ़िगन्द॥
अबरुयश बर माह ताक़े बस्ता बूद।
मरदुमे बर ताक़े ऊ बनिशिस्ता बूद॥

वह बड़ी ही रूपवती और लावण्यमयी थी। उसका सौंदर्य घटने बढ़ने वाले सूर्य के समान प्रकाशमान था।

सूर्य, उसके सौन्दर्य के आगे लज्जित होकर फीका पड़ रहा था और उसकी प्रभा, बाला के उन प्रेमियों के रंग से भी अधिक ज़र्द हो रही थी जो उसकी गली में पड़े हुए थे।

जिस किसी ने भी उस प्रियतमा को प्रेम की दृष्टि से देखा वह फिर उसी के ख़्याल में डूबा रह गया।

जिस मनुष्य ने अपने प्राण उसके ओठों से लगा दिये, उसने प्रेम मार्ग में क़दम रखने से पहले ही अपना शिर दे डाला।

जब शीतल पवन उसकी ज़ुल्फ़ों से कस्तूरी की सुगन्ध लेकर उड़ती तो सारे देश में एक प्रकार की आनन्द दायक मस्ती की लहर सी दौड़ जाती।

उस प्रियतमा के वे दोनों नेत्र प्रेमियों को आकुल बनाने वाले थे और उसके मुख पर की बिखरी हुई अलकें उन्हें और भी बेचैन कर रही थीं। उसकी दोनों भँवों की शोभा लासानी थी।

जब वह अपने प्रेमियों की तरफ़ दृष्टि संचालन करती थी तो उनके प्राण व्याकुल होकर निकलने के लिये फड़फड़ाने लगते थे।

उसकी भँवों ने चंद्रमा के ऊपर एक ताक़ सा बना दिया था और उसमें एक मनुष्य बैठा हुआ था।

मरदुमे चशमश चो कर्दे मरदुमी।
सैद कर्दे जाने सद सद आदमी॥
रूए ऊ दर ज़ेरे ज़ुल्फ़े ताबदार।
बूद आतिश पारए बस आबदार॥
लाले सैराबश जहाने तिश्ना दाश्त।
नरगिसे मस्तश हज़ाराँ दश्ना दाश्त॥
हर कि सूए चश्मए ऊ तिश्ना शुद।
दर दिले ऊ हर मेज़ह सद दश्ना शुद॥
गुफ़्त रा चूँ बर दहानश रह नबूद।
वज़ दहानश हर कि गुफ़्त आगह नबूद॥
हमचु शक्ले सोज़नी शक्ले दहाँश।
बसता ज़ुन्नारे चु ज़ुल्फ़श बर मियाँश॥
चाहे सीमीं दर ज़नख़दाँ दाश्त ऊ।
हमचु ईसा दर सख़ुन जाँ दाश्त ऊ॥
सद हज़ाराँ दिल चुँ यूसुफ़ ग़र्क़े ख़ूँ।
ओफ़तादा दर चहे ऊ सर निगूँ॥

उसके नेत्र की पुतली जब अपनी वीरता प्रदर्शित करती थी तो सौ सौ आदमियों के प्राणों का आखेट करती थी।

उसका मुख उसकी काली काली अलकों के नीचे अत्यन्त प्रकाशित हो रहा था।

उसके सुन्दर ओंठ एक संसार को प्रेम से परिपूर्ण कर देने वाले थे और उसकी मतवाली आँखों में सहस्रों ख़ंजरों की काट छिपी हुई थी।

जो मनुष्य उसके सौन्दर्य रूपी चश्मे के जल को पीना चाहता था उसके हृदय के अन्दर प्रतिपल सौ ख़ंजरों के चोट की पीड़ा होती थी।

जब वह बोलती नहीं थी तो उस समय उसके मुख का पता भी नहीं चलता था।

उसका मुख एक सुई की नोक के समान था। वह अपनी कमर में अपनी अलकों के रंग का काला डुपट्टा बाँधे हुए थी।

और उसकी ठुड्डी में सफ़ेद चाँदी का सा गड्ढा था। वह ईसा के समान मृतकों को भी जीवन प्रदान करने वाली मीठी बातें किया करती थी।

सैकड़ों मनुष्य उसके प्रणय में मतवाले होकर यूसुफ़ के समान कुए में गिर पड़े थे।

गौहरे खुर्शीदवश दर मूए दाश्त।
बुरक़ए शैरे सियाबर रूए दाश्त॥
दुख़तरे तरसा चु बुर्क़ा बरगिरिफ़्त।
वंद बन्दे शैख़ आतश दर गिरिफ़्त॥
चूँ नमूद अज़ ज़ेरे बुरक़ा रूए ख़ेश।
बस्त सद ज़ुन्नार अज़ यक मूए ख़ेश॥
गरचे शेख़ आँजा नज़र दर पेश कर्द।
इश्क़े तरसाज़ादा कारे ख़ेश कर्द॥
शुद दिलश अज़ दस्तो दर पा ओफ़ाद।
जाए आतश बूदो बर जा ओफ़ाद॥
हरचि बूदश सर बसर नाबूद शुद।
ज़ातशे सौदा दिलश पुर दूद शुद॥
इश्क़े दुख़तर कर्द ग़ारत जाने ऊ।
कुफ़्र रेख़्त अज़ ज़ुल्फ दर ईमाने ऊ॥
शेख़ ईमाँ दाद तरसाई ख़रीद।
आफियत बफ़रोख़्त रुस्वाई ख़रीद॥
इश्क़ बर जानो दिले ऊ चीर शुद।
ता ज़े दिल नौमीद अज़ जाँ सीर शुद॥

उसके काले केशों में सूर्य के समान चमकदार एक मोती लगा हुआ था और वह अपने मुख पर काले बालों का घूँघट डाले हुए थी।

उस ईसाई बाला ने जब अपने मुख से घूँघट हटा दिया तो शेख़ के शरीर के प्रत्येक जोड़ में आग लग गई।

घूँघट उसके मुख से जैसे ही दूर हुआ वैसे ही शेख़ उसके प्रणय-पाश में बँध गया। उसने अपने एक ही बाल से सहस्रों जनेऊ पहिना दिये।

शेख़ ने यद्यपि अपनी दृष्टि वहाँ से हटाने का प्रयत्न किया परन्तु उस ईसाई बाला का प्रेम अपना काम कर गया।

शेख़ का हृदय उसके वश में नहीं रहा और फिर वह उस बाला के पैरों पर गिर गया। उसका हृदय जल रहा था वह ठीक समय पर उचित स्थान पर जा गिरा।

जो कुछ भी उसके पास था यह सब नष्ट होगया और प्रणय की अग्नि से उसका हृदय जलने लगा।

उस लड़की के प्रेम ने उसके प्राण लूट लिये और उसकी काली अलकों ने उसका धर्म्म देकर उसका धर्म्म छीन लिया।

शेख़ ने बेचैनी लेली और अपने सुख को बेचकर अप्रतिष्ठा मोल ले ली। उसने ईमान बेच बुतपरस्ती ख़रीद ली।

प्रणय का अधिकार उसके प्राणों और हृदय पर हो गया। यहाँ तक कि वह अपने दिल से निराश और जान से तंग आ गया।

गुफ़ चूं दीं रफ़ चे जाये दिलस्त।
इश्क़े तरसा ज़ादा कारे मुश्किलस्त॥
चूँ मूरीदानश चुनाँ दीदन्द ज़ार।
जुमला दानिस्तन्द कुफ़तादस्त कार॥
सर बसर दरकारे ऊ हैराँ शुदन्द।
सर नगूं गश्तन्द व सर गरदाँ शुदन्द॥
पन्द दादन्दश बसे सूदे न दाश्त।
बूदनी चूं बूद बेहबूदे नदाश्त॥
हर के पंदश दाद फ़रमाँ मी नबुर्द।
जाँ के दुर्दश हेच दरमाँ मी न बुर्द॥
आशिक़े आशुफ़ा फ़रमाँ चूं बरद।
दर्दे दरमाँ सोज़ दरमाँ चूं बरद॥
बूद ता शब हम चुनाँ रोज़े दराज़।
चश्मा बर मंज़र दहानश माँदा बाज़॥
हरचिराग़े काँ शब अज़ अख़तर गिरिफ़्।
अज़ दिले आँ पीरेग़मख़र गिरिफ़्॥

उसने कहा कि जब धर्म्म ही चला गया तो फिर दिलकी क्या चिन्ता है। ईसाई बाला का प्रेम बड़ी कठिन समस्या है।

जब उसके चेलों ने उसे इस प्रकार व्याकुल देखा तो सबने समझ लिया कि कोई बड़ी जटिल समस्या आ उपस्थित हुई है।

सबके सब उसके विषय में सोच करने लगे और सिर झुकाकर बैठ गये।

सबने शेख़ से बहुत कुछ कहा, शिक्षाएँ दीं, पर उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ। जो होनी थी वह हो चुकी थी, अब उसके लिये कुछ किया नहीं जा सकता था।

किसी की भी शिक्षा का असर उसके ऊपर नहीं हुआ। न वह किसी का कहना ही मानता था। उसे ऐसा रोग हो गया था जिसकी कोई औषधि नहीं थी।

आकुल हृदय प्रणयी किसी से आज्ञा किस प्रकार ले और उस रोग पर, जो सभी औषधियों को व्यर्थ प्रमाणित कर चुका हो, कोई औषधि अपना असर किस प्रकार दिखलावे!

बहुत दिनों तक शेख़ इसी अवस्था में रहा। उसकी आँख उस कोठे पर लगी रहती और मुख आश्चर्य से खुला रहता।

रात्रि अपने वक्षःस्थल पर सहस्रों तारा रूपी दीपकों को धारण करके आती पर ऐसा ज्ञान होता था मानों वह उसी दुखितहृदय वृद्ध के हृदय की अग्नि से जलाए गए हों।

यकदमश नै ख़्वाब बूदो नै क़रार।
मी तपीद अज़ इश्क़ो मी नालीद ज़ार ॥
चूं शबे तारीक दर क़ारे सियाह।
शुद निहाँ चूं कुफ़्र दर ज़ेरे गुनाह ॥
इश्क़े ऊ आँ शब यके सद बेश शुद।
लाजरम यकबारगी अज़ ख़ेश शुद ॥
हम दिलज़ ख़ुद हम ज़े आलम बर गिरिफ़्त।
ख़ाक बरसर कर्दो मातम दर गिरिफ़्त ॥
गुफ़्त यारब इम शबम रा रोज़ नेस्त।
या मगर शमए जहाँ रा सोज़ नेस्त ॥
दर रियाज़त माँदाअम शबहा बसे।
ख़ुद निशाँ न देहद चुनीं शब रा कसे ॥
हम चो शमा अज़ सोख़तन ताबम नमाँद।
बर जिगर जुज़ ख़ूने दिल आबम नमाँद ॥
हम चो शमा अज़ सोज़ तुफ़म मी कुशन्द।
शब हमी सोज़न्दो रोज़म मी कुशन्द ॥

क्षण भरके लिये भी उसकी आँख नहीं लगती थी और न कभी उसे चैन ही मिलता था। प्रेम व्यथा से तड़पता और खूब रोता था।

जब रात्रि, काले आवरण में इस प्रकार छिप गई जिस प्रकार धर्म्म पापों के अन्दर छिप जाता है,

तब शेख़ की पीड़ा सौ गुनी और बढ़ गई और इसीलिये वह यकायक मूर्च्छित हो गया।

उसने भगवान तथा इस संसार दोनों से अपने दिल को हटा लिया। सिर पर धूल डाल ली और विलाप करना प्रारम्भ कर दिया।

"ऐ ख़ुदा! क्या इस रात के बाद दिन नहीं होगा अथवा दुनिया का दीपक अब जलता नहीं है।

मैने बहुत सी रातें जागकर प्रार्थना करने में व्यतीत कर दीं, परन्तु इतनी भयानक और लम्बी रात मैंने अभी तक नहीं देखी। और न इस जीवन में सुनी ही है।

दीपक के समान जलते हुए मुझे बहुत समय हो चुका है और अब अधिक जलने की सामर्थ्य नहीं रही है। कलेजे पर दिल के रक्त के अतिरिक्त अब और कोई पानी नहीं रहा है।

दिये के समान जलने की गर्मी मुझे मारे डालती है। रात शमा की तरह मुझको जलाती है और दिन मुझे मारे डालता है।

जुमलए शब दर शबे ख़ूं माँदा अम।
पाए ता सर ग़र्क़ दर ख़ूं माँदा अम॥

हर दमज़ शब सद शबे ख़ूं बुगज़रद।
मी न दानम रोज़े मन चूं बुगज़रद॥

हर कि रा यक शब चुनीं रोज़ी बुवद।
रोज़ो शब कारश जिगर सोज़ी बुवद॥

रोज़ो शब बिसयार दर तब बूदा अम।
मन बज़ोरे ख़ेश इम शब बूदा अम॥

कारे मन रोज़े कि मी परदाख़तंद।
अज़ बराए इम शबम मी साख़तंद॥

यारब इम शब रा न ख़ाहद बूद रोज़।
या मगर शमए फ़लक रा नेस्त सोज़॥

यारबीं चंदीं अलामत इमशबस्त।
या मगर रोज़े क़यामत इमशबस्त॥

या ज़े आहम शमा गरदूँ मुर्दा शुद।
या ज़े शर्मे दिलबरम दर पर्दा शुद॥

सारी रात मैं अफ़सोस में डूबा हुआ पड़ा रहा हूँ। सर से पैर तक उस में सना रहा हूँ।

रात का प्रत्येक क्षण मुझ पर ग़म की वर्षा करता है। न मालूम दिन कैसे कटेगा।

यदि किसी मनुष्य को ऐसी एक रात भी व्यतीत करनी पड़े तो वह रात-दिन अपने कलेजे को जलाता ही रहे।

अहर्निश मैं एक प्रकार की भयंकर जलन में जलता रहा हूँ और आज की रात को मैं केवल अपने बल के कारण बच गया हूँ।

ऐसा मालूम होता है कि जन्म के दिन मेरे भाग्य में इसी रात का मरण लिख दिया गया।

इस रात को भी, ए ख़ुदा, मालूम होता है दिन न चाहिये। अथवा आकाशी दीप भी इस समय जल नहीं रहा है।

ऐ ख़ुदा! इस रात में इतनी निशानियाँ (लक्षण) मौजूद हैं कि उनके देखने से यह क़यामत (प्रलय) का दिन ज्ञात होता है।

यह भी हो सकता है कि आकाशी दीप मेरी आह की हवा लगने से बुझ गया हो अथवा मेरी प्रियतमा के मुख को देख कर लज्जित होकर पर्दे के अन्दर छिप गया हो।

शब दराज़स्तो सियह् चूं मूए ऊ।
वरना सद रह् मदुमे बे रूए ऊ॥

मी बसोज़म इम शबज़ सौदाए इश्क़।
मी नदारम ताक़ते ग़ोग़ाए इश्क़॥

अक़्ल कू ता इल्म दर पेश आवरम।
या ब हीलत अक़्ल बा खेश आवरम॥

दस्त कू ता ख़ाके रह् बर सर कुनम।
या ज़े ज़ेरे ख़ाको ख़ूं सर बर कुनम॥

पाए कू ता बाज़ जोयम कूए यार।
चश्म कू ता बाज़ बीनम रूए यार॥

यार कू ता दिल देहद दरयक ग़मम।
अक़्ल कू ता दस्त गीरद यक दमम॥

ज़ोर कू ता नालओ ज़ारी कुनम।
होश कू ता साज़े हुशयारी कुनम॥

रफ़ सब्रो रफ़ अक़्लो रफ़ यार।
ईं चे दर्दस्त ईं चे इश्क़स्त ईं चे कार॥

उसके बाल के समान कालो रात लम्बी है। यदि यह् बात न होती तो मैं अभी तक उसका मुख बिना देखे हुए सौ बार मर चुका होता।

आज की रात मैं प्रणय की जलन में जल रहा हूँ और अब इस शरीर में प्रेम का आक्रमण सहन करने की शक्ति नहीं है।

वह् ज्ञान कहाँ है ताकि उसकी सहायता से विद्या अथवा किसी यत्न से बुद्धि को अपने पास लाऊँ!

वह् हाथ कहाँ है कि जिससे गली की मिट्टी सर पर डाल लूँ अथवा मिट्टी और रक्त के नीचे से शिर निकाल लूँ!

वह् पैर कहाँ कि जो यार की गली खोज ले। वह् नेत्र कहाँ जो उसके चेहरे को देख ले!

इस समय ग़म में (शोक में) घुल रहा हूँ। ऐसा कोई भी दोस्त नहीं दीखता जो मेरी दिलजोई करे। बुद्धि कहां है जो आकर मेरी सहायता करे।

वह् सामर्थ कहाँ है कि जिससे रोऊँ और चिल्लाऊँ! होशियार करने वाला होश कहाँ है!

सब्र चला गया, बुद्धि भी विलुप्त होगई, और दोस्त भी चला गया। यह् कैसा प्रेम है, यह् कैसा अन्धेर है और यह् कैसा दुख है!"

जमा शुदने मुरीदान बगिर्द शेख़ व नसीहत करदन ऊ रा

जुमलए यारॉं बदिलदारीए ऊ ।
जमा गशतंद आँ शबज़ ज़ारीए ऊ ॥
हमनशीने गुफ़्तश ए शेख़े केबार ।
ख़ेज़ो ईं वसवास रा ग़ुस्ल बेआर ॥
शेख़ गुफ़्तश इमशबज़ ख़ूने जिगर ।
करदा अम सद बार ग़ुस्ल ऐ बेख़बर ॥
वाँ दिगर गुफ़्ता कि तसबीहत कुजास्त ।
कै शवद कारे तो बेतसबीह रास्त ॥
गुफ़्त तसबीहम बेयफ़गंदम ज़ेदस्त ।
ता तवानम बर मियाँ ज़ुन्नार बस्त ॥
वाँ दिगर यक गुफ़्तश ऐ पीरे कुहन ।
ख़ेज़ो दर ख़िलवत ख़ुदारा सिजदा कुन ॥
गुफ़्त अगर महरूए मन ईंजासते ।
सिजदा पेशे रूए ऊ ज़ेबासते ॥
आँ दिगर गुफ़्ता कि ऐ दानाए राज़ ।
ख़ेज़ो ख़ुद रा जमा कुन अन्दर नमाज़ ॥

चेलों का शेख़ को घेर कर शिक्षा देना

शेख़ के जितने भी मित्र थे वह सभी उसे सान्त्वना देने लगे और उसे आँसू बहाते देख कर सब उसके पास आकर इकट्ठे होगये ।

एक सखा ने उससे कहा कि ऐ बड़े साधु ! उठ बैठ और (नहा ले) इस वसवसे को हृदय से निकाल दे ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैंने आज की रात अपने कलेजे के ख़ून से सौ बार स्नान किया है ।

एक दूसरे ने कहा कि आपकी माला कहाँ है । बिना उसके सब काम ठीक कैसे चलेंगे ?

उसने कहा मैंने फेंक दी है, ताकि कमर में जनेऊ पहन सकूँ ।

उनमें से एक फिर बोल उठा कि हे वृद्ध फ़क़ीर ! उठ, और ख़ुदा के सामने सर झुका ।

उसने उत्तर दिया कि यदि वह सुन्दरी मेरी प्रियतमा यहाँ मौजूद होती तो उसके सामने सर झुकाते हुए मुझे अच्छा मालूम होता ।

तब तक किसी और ने कहा कि ऐ भेदों के ज्ञाता ! उठो और दिल लगाकर नमाज़ पढ़ो ।

गुफ़्त कू मेहराबे अबरूए निगार ।
ता न बाशद जुज़ नमाज़म हेच कार ।।
वाँ दिगर गुफ़्तश पशेमानीत नेस्त ।
ज़र्रए दर्दे मुसलमानीत नेस्त ।।
गुफ़्त कस न बुवद पशीमाँ बेश अज़ीं ।
ता चेरा आशिक़ न बूदम पेश अज़ीं ।।
वाँ दिगर गुफ़्तश कि देवत राह ज़द ।
तीरे ख़ज़लाँ बर दिलत नागाह ज़द ।।
गुफ़्त देवे कू रहे मा मी ज़नद ।
गो बेज़न अलहक़ कि ज़ेबा मी ज़नद ।।
वाँ दिगर गुफ़्ता कि हर कि आगाह शुद ।
काँ चुनाँ शेख़े चुनीं गुमराह शुद ।।
गुफ़्त मन बस फ़ारिग़म अज़ नामो नंग ।
शीशए सालूस बिशिकस्तम बसंग ।।
आँ दिगर गुफ़्तश कि याराने क़दीम ।
अज़ तो रंजूरन्दो माँदादिल दो नीम ।।
गुफ़्त चूं तरसा बचा ख़ुशदिल बुवद ।
दिल ज़े रंजे ईनो आँ ग़ाफ़िल बुवद ।।

उसने कहा कि प्रियतमा के भवन की महराब कहाँ है ताकि उसमें नमाज़ पढ़ने के अतिरिक्त और मेरा कोई काम ही न रहे।

किसी और ने कहा कि तुझे ऐसा करते हुए लज्जा भी नहीं आती। मुसल्मान होने की तुझे अणुमात्र भी चिन्ता नहीं है।

शेख़ ने कहा कि उससे अधिक और किसका हाल बदतर होगा जो उसका आशिक़ न हो।

इसके उपरान्त किसी और ने कहा कि शैतान ने तेरा रास्ता रोक दिया है और तेरे हृदय पर यकायक बर्बादी का तीर मार दिया है।

उसने उत्तर दिया कि वह शैतान जो हमेशा लूटता है बहुत ठीक करता है। उससे कह दो कि लूटे।

किसी दूसरे ने कहा कि यदि किसी को यह ख़बर मिल गई कि इतना बड़ा पीर इस प्रकार पथ-भ्रष्ट हो गया है तब क्या होगा।

उसने जवाब दिया कि इज्ज़त और नाम से मैं रहित हो गया हूँ और मैंने शीशे " सालूस " को पत्थर से तोड़ दिया है।

किसी और ने कहा कि पुराने मित्र तुझसे नाराज़ हैं। उनके दिल टूट गये हैं।

शेख़ ने उत्तर दिया कि जब ईसाई की लड़की राजी हो जायगी तब दिल में किसी के भी नाराज़ होने का ख़्याल न रह जायगा।

आँ दिगर गुफ़्ता कि बा याराँ बेसाज़ ।
ता रवेम इमरोज़ सूए काबा बाज़ ॥
गुफ़् अगर काबा न बाशद दैर हस्त ।
होशियारे काबा अम दर दैर मस्त ॥
आँ दिगर गुफ़्त ईं ज़माँ कुन अज़्म राह ।
दर हरम बेनशीनो उज़्रे ख़ुद बेख़ाह ॥
गुफ़् सर बर आसताने आँ निगार ।
उज़्र ख़ाहम ख़ास्त दस्तज़ मन बेदार ॥
आँ दिगर गुफ़्ता कि दोज़ख़ दूर हस्त ।
मर्दे दोज़ख़ नेस्त हर कू आगाहस्त ॥
गुफ़् अगर दोज़ख़ बुवद हमराहे मन ।
हफ़ दोज़ख़ सोज़द अज़ यक आहे मन ॥
आँ दिगर गुफ़्ता बउम्मीदे बहिश्त ।
बाज़ गरदो तौबा कुन ज़ींकारे ज़िश्त ॥
गुफ़् चूँ यारे बहिश्ती रूए हस्त ।
गर बहिश्ते बाएदम आँ कूए हस्त ॥

दूसरा बोला कि अब आकर साथियों से मिल जा ताकि हम सब फिर काबे को चलें ।

पीर ने उत्तर दिया काबा न सही मन्दिर तो मौजूद है । मैं मन्दिर में मस्त होकर काबे से भी अधिक बुद्धिमान हो गया हूँ ।

तब किसी दूसरे ने कहा कि उठिये और चल कर मस्जिद में बैठकर क्षमा प्रार्थना कीजिये ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि यदि ऐसा ही करना होगा तो उस प्रियतमा की चौखट पर शिर रखकर करूँगा ।

किसी दूसरे ने कहा कि सब कामों से जानकारी रखते हुये इस नर्क में क्यों आ पड़े हो ।

शेख़ ने जवाब दिया कि यदि नर्क मेरे पास आ जावे तो मेरी एक ही आह से जल कर भस्म हो जावे ।

किसी ने कहा कि स्वर्ग की आशा में इस बुरे काम से हाथ खींच ले और अपने को सुधार ।

उत्तर मिला कि मेरे लिये स्वर्ग के समान सुन्दर मुख वाली प्रियतमा मौजूद है और अगर उससे भी ज्यादा किसी वस्तु की आवश्यकता होगी तो उसकी गली उपस्थित है ।

आँ दिगर गुफ़्तश कि अज़ हक़ शर्मदार।
हक़ तआला रा बख़ुद आज़र्मदार॥
गुफ़् ईं आतश चु हक़ दर मन फ़िगंद।
मन बख़ुद न तवानम अज़ गरदन फ़िगंद॥
आँ दिगर गुफ़्तश बेरौ ऐ मन बेबाश।
बाज़ ईमाँ आबरो मोमिन बेबाश॥
गुफ़् जुज़ कुफ़्र अज़ मन हैराँ मख़ाह।
हर कि काफ़िर शुद अज़ो ईमाँ मख़ाह॥
चूँ सख़ुन दर वै नआमद कारगर।
तन ज़र्दंद आख़िर बदाँ तीमारदर॥
मौजज़न शुद परदए दिल शाँ ज़े ख़ूँ।
ता चे आयद अज़ पसे पर्दा बुरूँ॥
तुर्के रोज़ आमद चु बाज़र्री सिपर।
हिंदुवे शब रा ब तेग़ अफ़गंद सर॥
रोज़े दीगर कीं ज़हाने पुर ग़ुरूर।
शुद ज़े बहरे चश्मए ख़ुर ग़र्क़े नूर॥
शेख़ ख़िलवतसाज़ कूए यार शुद।
बा सगाने कूए ऊ दरकार शुद॥

कोई फिर कहने लगा ख़ुदा का लिहाज़ रख और उसको अपने ऊपर दयालु रखने का प्रयत्न कर।

शेख़ ने उत्तर दिया कि जब ख़ुदा ही ने मेरे दिल में यह आग पैदा कर दी है फिर धर्म और ईमान के पीछे क्यों पड़ूँ।

दूसरे ने कहा कि इस से बाज़ आ और धार्मिक बन जा।

उसने कहा मुझे कुफ़्र के सिवा कुछ न चाहिये। ऐसा जो काफ़िर हो उस से धर्म की उम्मीद न कर।

जब किसी की बात ने उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं किया तो उसके साथ दया दिखलाने वाले उसके साथी सब चुप होकर बैठ रहे।

उनके दिलों में रक्त का प्रवाह जोरों से हो रहा था और प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें भविष्य क्या रँग लाता है।

दिवस रूपी यवन सोने की ढाल लिये हुये आया और उसने रजनी रूपी हिन्दू का शिर अपनी तलवार से काट डाला।

दर्प पूर्ण जगत पुनः भगवान भास्कर की उज्ज्वलता में मौजें मारने लगा।

शेख़ ने अपना आसन उसी प्रियतमा की गली में जमा दिया और उसको गली के कूकरों के साथ निवास करने लगा।

मोतकिफ़ बेनशिस्त दर ख़ाके रहश ।
हमचु मूए गश्त रूए चूं महश ॥
क़ुर्बे माहे रोज़ो शब दर कूए ऊ ।
सब्र कर्द ज़ आफ़ताबे रूए ऊ ॥
आक़बत बीमार शुद बेदिल सिताँश ।
हेच बर नरफ़ सरअज़ आसताँश ॥
बूद ख़ाके कूए आँ बुत बिस्तरश ।
बूद बालीं आसताने आँ दरश ॥
चूँ न बूद अज़ कूए ऊ बुगुज़श्तनश ।
दुख़तरा आगह शुद जे आशिक़ गश्तनश ॥
ख़ेशतन रा आंज़मी कर्द आँ निगार ।
गुफ़ शेख़ा अज़ चे गश्ती बेक़रार ॥
कै कुनंद ए अज़ शराबे इश्क़ मस्त ।
ज़ाहिदाँ दर कूए तरसायाँ नेशस्त ॥
गर बज़ुल्फ़म शेख़ इक़रार आवरद ।
हर दमश दीवानगी बार आवरद ॥
शेख़ गुफ़श चूँ ज़बूनम दीदई ।
लाज़रम दुज़दीदा दिल दुज़दीदई ॥

उसका चन्द्रमा के समान श्वेत और चमकदार मुख बालों के समान काला पड़ गया। वह रास्ते में मिट्टी पर बैठ गया।

लगभग एक मास वह उस गली में उसी प्रियतमा के पुनः दर्शन की प्रतीक्षा में पड़ा रहा।

अन्त में बीमार हो गया। परन्तु उसकी चौखट से अपना सर न उठाया।

यार की गली की धूल उसका बिस्तर थी। उसके द्वार की चौखट उसके लिये तकिया के समान थी।

वह उस गली से कहीं जाता ही न था। अन्त में वह ईसाई बाला उसके पास पहुँची,

और उस पर दया भाव प्रदर्शित करते हुये पूछा ऐ शेख़ तू किस लिये बेचैन हो रहा है ?

ऐ प्रणय की मदिरा में मस्त साधु, पाक मुसलमान कभी ईसाइयों की गली में भी बैठा करते हैं !

हाँ, यदि मेरी काली अलकों पर, तेरा दिल आगया है तो सदैव के लिये वह पागल बना रहेगा।

शेख़ ने कहा कि तूने मुझको दुर्बल देख लिया है। मैं वृद्ध आशिक़ हूँ और कमज़ोर हूँ।

या दिलम देह् बाज़ या बा मन बेसाज़।
दर नियाज़े मन निगर चंदीं मनाज़॥

जाँ फ़िशानम बर तो गर फ़रमाँ दिही।
वर तो ख़ाही बाज़म अज़ लब जाँ दिही॥

ऐ लबो ज़ुलफ़त जियानो सूदे मन।
रूये क़ूयत मक़सदो मक़सूदे मन॥

गह ज़े ताबे ज़ुल्फ़ दर ताबम मकुन।
गह ज़े चश्मे मस्त दर ख़्ाबम मकुन॥

दिल चु आतश दीदा चूं अब्र अज़ तूअम।
बेकसो बेयारो बेसब्र अज़ तूअम॥

बेतो बर जानम जहाँ बिफ़रोख़्तम।
को सबीं कज़ इश्क़े तो बरदोख़्तम॥

हमचो बाराँ अश्क मी बारम ज़े चश्म।
ज़ाँ के बेतो चश्म ईं दारम ज़े चश्म॥

दिल ज़े दस्तो दीदा दर मातम बेमाँद।
दीदा रूयत दीदा दिल दर ग़म बेमाँद॥

या तो दिल वापिस करदे या मेरी हो जा। मेरी मोहब्बत को देख और इतना नाज़ न कर।

अगर तू आज्ञा दे तो मैं अपनी जान को न्योछावर कर दूँ और अगर तू चाहे तो मुझे अपने ओठों से फिर नई जान बख़्श दे।

ऐ प्रियतमा तेरे होठ और तेरी काली अलकें ही मेरी हानि और लाभ के कारण हैं। और तेरा मुख ओर गली मेरा अभीष्ट है।

कभी तू अपनी घुंघराली ज़ुल्फ़ों से मुझे बेचैन कर देती है और कभी अपनी मदमाती आँखों से मुझे बेहोश कर देती है।

तेरी वजह से मेरे दिल में धक् धक् करके आग जल रही है। तूने ही मुझे बेख़बर बना दिया है।

तेरी जुदाई में मैंने अपनी जान की भी सुधि भुला दी है। और देख तेरे प्रेम में मैंने कौन सी दौलत हासिल की है।

मैं बादल की तरह अपनी आँखों से आँसू बरसाता हूँ, क्योंकि जब तू नहीं है तब उन आँखों से यही उम्मीद करता हूँ।

मेरा दिल मुझसे किनारा कर गया और आँख उसके दुख में बेचैन हो गई। आँख ने तेरा मुख क्या देखा कि वह सदैव के लिये मेरे दिल को दुख में फँसा गई।

उंचे मनज़ दीदा दीदम कस नदीद।
उंचे मनज़ दिल कशोदम की कशीद॥
अज़ दिलम जुज़ ख़ूने दिल हासिल न मुंद।
ख़ूने दिल ताके ख़ुरम चूं दिल न मुंद॥
बेश अज़ीं बर जाने ईं मिसकीं मज़न।
दर फ़ुतूदे ऊ लकद चंदीं मज़न॥
रोज़गारे मन बशुद दर इंतज़ार।
गर बुवद वस्ले बेआयद रोज़गार॥
हर शबे बर जाँ कमीं साज़ो कुनम।
बर सरे कूये तो जाँ बाज़ो कुनम॥
रूये बर ख़ाके दरत जां मीदेहम।
जाँ ब निर्खे ख़ाक अरजाँ मीदेहम॥
चन्द नालम बर दरत दर बाज़ कुन।
यक दमम बा ख़ेशतन दम साज़ कुन॥
आफ़ताबी अज़ तो दूरी चूं कुनम।
ज़र्रा अम बे तो सबूरी चूं कुनम॥

जो कुछ मैंने अपनी इन आँखों से देखा है वह किसी को भी दिखलाई नहीं दिया और जो बोझ मैंने अपने दिल की वजह से उठाया है वह किसी ने भी नहीं उठाया है।

मेरे दिल में अब ख़ून के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रहा है। मैं किस दिल का ख़ून पान करूँ जब कि मेरे पास दिल ही नहीं है।

इससे भी बढ़ कर अब इस दीन की जान के ऊपर हमला न कर और इसको भी जीतने का यत्न न कर।

मेरी सारी उम्र इन्तिज़ारी में बीत गई अब यदि मिलन हो जाये तो फिर दिन निकल आयेगा।

प्रत्येक रात को मैं अपनी जान दे देने की तय्यारी करता हूँ और तेरी गली में जान पर खेलना चाहता हूँ।

तेरे दर्वाज़े के सामने ही पड़ा रहकर मैं अपने प्राणों को गँवा देना चाहता हूँ और मिट्टी के मोल अपनी जान को बेच रहा हूँ।

भला, कब तक मैं इस प्रकार तेरे द्वार पर बैठा हुआ आँसू बहाता रहूँ? थोड़ी देर के लिये ही इस दर्वाज़े को खोल दे और क्षण भर के लिये मुझसे दो बोल बोल दे।

तू सूरज है, मैं तुझसे कुछ अधिक दूरी पर नहीं हूँ। मैं तेरे लिये ज़र्रे के समान हूँ, फिर तेरे पास बिना आये हुए कैसे रह सकता हूँ।

गरचे हम चं साया अम दर इज़्तराब।
बरजे हम अज़ रौज़नत चूं आफ़ताब॥
हफ़्त गरदूं रा बर आरम ज़ेरे पर।
गर फ़ेरोद आरी बरीं सर गश्ता सर॥
मी रवम दर ख़ाक जाने सोख़ता।
ज़ातशे आहम जहानें सोख़ता॥
पायम अज़ इश्क़े तू दर गिल माँदा अस्त।
दस्त अज़ शौक़े तू बरे दिल माँदा अस्त॥
मी बर आयद ज़े अबरे रूयत जाँ ज़े तन।
चन्द बाशी बा मनो पिन्हाँ ज़े मन॥
दुख़तरश गुफ़्त ऐ ख़ज़फ़ अज़ रोज़गार।
साज़े काफ़ूरो कफ़न कुन शर्मसार॥
चूँ दमत सर्दअस्त दमसाज़ी मकुन।
पीर गश्ती क़स्दे दिल बाज़ी मकुन॥
ईं ज़माँ अज़मे कफ़न करदन तुरा।
बेहतर आयद जाँके अज़मे मन तुरा॥
चूं तो दर पीरी बयक नानेगिरौ।
इश्क़ वरज़ीदन न बितवानी बेरौ॥

मैं छाया हूँ। मेरी कोई निजी हस्ती नहीं है, लेकिन फिर भी मैं तेरे झरोके से होकर सूरज की रोशनी की तरह अन्दर पहुँच जाऊँगा।

अगर तू मुझ बेचैन के ऊपर तनिक सी भी दया दिखलायगी तो मैं इतना ऊँचा चढ़ जाऊँगा कि सातों आसमान मेरे नीचे हो जायँगे।

मैं अपने प्राण को जलाकर मिट्टी में मिला जा रहा हूँ और मेरी आह की आग में दुनियाँ भस्म हो चुकी है।

तेरे प्रेम के कारण मेरी जान पर आ बनी है और तुझसे मिलने के लिये अपना दिल थामे हुए बैठा हूँ।

जब तेरा मुँह पर्दे के अन्दर हो जाता है तो मेरी जान निकल जाती है। मेरे दिल की साथिन ! तू कब तक मुझसे पृथक रहेगी।

लड़की ने उससे कहा कि ऐ दुनियाँ भर के मूर्ख ! तुझे शर्म्म नहीं लगती। तुझे तो अब क़ब्र में जाने का सामान करना चाहिये।

तेरी साँस ठंढी हो चली है तू अब गर्मी न दिखा। अब बुड्ढा होकर प्रेम करने के लिये उतावला न बन।

इस समय तू अपने कफ़न का इन्तज़ाम कर। अब यही तेरे लिए अच्छा होगा। मुझसे मिलने की इच्छा को अपने दिल से दूर कर दे।

तू बुढ़ापे में एक रोटी के लिये मारा मारा फिर रहा है। तू प्रेमी कैसे हो सकता है, जा यहाँ से दूर भी हो।

चूं ब पीरी नाँ न ख़्वाही याफ़तन।
कै तवानी बादशाही याफ़तन॥
शेख़ गुफ़तश गर बेगोई सद हज़ार।
मन नदारम जुज़ गुमे इश्क़े तो कार॥
आशिक़ाँरा चे जवाँ चे पीर मर्द।
इश्क़ बर हर दिल के ज़द तासीर कर्द॥
गुफ़ दुख़्तर गर दरीं कारी दुरुस्त।
दस्त बायद पाक अज़ इस्लाम शुस्त॥
हर के ऊ हमरंगे यारे ख़ेश नेस्त।
इश्क़े ऊ जुज़ रंगो बूए बेश नेस्त॥
शेख़ गुफ़्श हर चे गोई आँ कुनम।
उंचे फ़रमाई बजाँ फ़रमा कुनम॥
गुफ़ दुख़्तर गर तु हसती मर्दे कार।
कर्द बायद चार चीज़त इख़्तियार॥
सिज्दा कुन पेशे बुतो क़ुरआँ बेसोज़।
ख़ुम्र नोशो दीदा अज़ ईमाँ बेदोज़॥

जब कि तू एक रोटी नहीं बना सकता तो फिर बादशाही के लिये क्यों प्रयत्न कर रहा है?

शेख़ ने उत्तर दिया कि तू चाहे जितनी सख़ बात कर मैं तेरे प्रेम के अतिरिक्त कोई काम नहीं कर सकता।

प्रेमियों को बूढ़े और जवान होने से क्या मतलब है। वह हर एक अवस्था में समान है।

प्रणय जिस दिल पर हमला करता है उस पर अपना रोब जमा लेता है।

लड़की ने कहा कि अगर तू इस काम में पक्का है तो अपने धर्म इसलाम को छोड़ दे।

जो आदमी अपने प्यारे के धर्म का नहीं होता है उसका प्रेम रंग और बू से बढ़ कर नहीं होता है।

शेख़ ने कहा तू जो कुछ कहेगी उसे मैं ज़रूर ही करूँगा, और जो आज्ञा देगी उसे भरसक पूरा करने का प्रयत्न करूँगा।

लड़की ने कहा कि अगर तू मेरा सब काम करने के लिये तय्यार है तो तुझको चार बातें माननी पड़ेंगीं।

तू मूर्ति पूजा कर, क़ुरान को जलादे, शराब पी और धर्म छोड़ दे।

शेख़ गुफ़्तश ख़म्र करदम इख़्तियार।
बा से आं दीगर नदारम हेच कार॥
बा जमालत ख़म्र तानम ख़र्द मन।
वां से दीगर रा नतानम कर्द मन॥
गुफ़्त बर ख़ेज़े बेआओ ख़म्र नोश।
ख़श बेनोशी ख़म्र आई दर ख़रोश॥

रफ़्तने शेख़ बा दुख़्तर बै दैरे मुग़ाँ व मस्त गरदीदन व ख़बर शुदने तुरसायाँ अज़ अहवाले ख़ेश

शेख़ रा बुरदंद ता दैरे मुग़ाँ।
आमदंद आँ जा मुरीदाँ दर फ़ुग़ाँ॥
आतिशे इश्क़ आबेकारे ऊ बबुर्द।
ज़ुल्फ़े तरसा रोज़गारे ऊ बबुर्द॥
शेख़ अलहक़ मजलिसे बस ताज़ा दीद।
मेज़बाँरा हुस्ने बे अंदाज़ा दीद॥
ज़र्रए अक़्लश न माँदो होश हम।
दर कशीदा जाएगाह ख़ामोश हम॥

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैं शराब इख़्तियार करता हूँ और बाक़ी की तीन चीज़ों की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है।

मुझे सिर्फ़ इतना अधिकार दे दे कि मैं तेरी सूरत देखता रहूँ। बस मैं शराब पी सकता हूँ। और शेष की तीन बातों को मैं छोड़ता हूँ।

उस लड़की ने कहा कि उठ कर आ और शराब पी। शराब पीने पर तुझे वह नशा आयेगा कि तू मतवाला हो जायगा।

शेख़ का सुन्दरी बाला के साथ मदिरा गृह में जाना और मतवाला हो जाना तथा ईसाइयों का उसका समाचार जानना

शेख़ को शराबख़ाने में लिवा ले गये। उसके चेले उसकी दशा पर खेद करते हुए और अन्य तर्क-वितर्क करते हुए रह गये।

प्रेमाग्नि ने उसकी प्रतिष्ठा को भस्म कर दिया और ईसाई बाला ने उसका हाल ख़राब कर दिया।

सत्य यह है कि शेख़ ने उस मदिरा गृह में एक बहुत ही आनन्द दायक मजलिस देखी और उसके सौन्दर्य को बहुत ही बढ़ा चढ़ा देखा।

यह देखते ही शेख़ बेसुध हो गया और एक स्थान पर चुप होकर बैठ गया।

जाम बिसतद ऊ ज़े दस्ते यारे ख़ेश।
नोश करदो दिल बुरीद अज़ कारे ख़ेश॥
चूँ बयक जा शुद शराबो इश्क़े यार।
इश्क़े आँ माहश यके शुद सद हज़ार॥
चूँ हरीफ़े आबो दंदाँ दीद शेख़।
लाले ऊ दर हुक्क़ा पिनहाँ दीद शेख़॥
आतिश अज़ शौक़ दर जानश फ़िताद।
सैले ख़ूनीं सूए मिज़गानश फ़िताद॥
बादए दीगर गिरिफ़्तो नोश कर्द।
हलक़ए अज़ ज़ुल्फ़े ऊ दर गोश कर्द॥
बूबे सद तसनीफ़ दरदीं याददाश्त।
हिफ़्ज़े कुरआँ अज़ बसे उस्ताद दाश्त॥
चूँ मै अज़ साग़र बनाफ़े ऊ रसीद।
दावए ऊ रफ़्तो लाफ़े ऊ रमीद॥
हरचे यादश बूद अज़ यादश बेरफ़्त।
बादा आमद अक़्ल चूँ बादश बेरफ़्त॥
ख़ुम्र माना कि बूदश अज़ नख़ुस्त।
पाकुअज़ लौहे ज़मीरे ऊ बशुस्त॥

उसने अपनी प्रियतमा के हाथ से मदिरा से भरा हुआ प्याला ले लिया और उसे पीकर अपने काम से हाथ खींच लिया।

मदिरा और प्रेम दोनों इकट्ठे हो गये और उनके सम्पर्क से शेख़ के हृदय में प्रणय पहले से लाख गुना बढ़ गया।

इसके अतिरिक्त शेख़ ने अपने यार के अधरों को निकट से देखा और डिब्बे में छिपे हुए उसके लाल पर दृष्टि डाली।

शौक़ से उसका प्राण फड़फड़ाने लगा और रक्त के बिन्दु उसके नेत्रों से ज़ोरों के साथ टपकने लगे।

उसने एक और प्याला लेकर पी लिया और अपनी प्रियतमा के केशों की घुँघराली लट को कान में पहन लिया।

शेख़ को लगभग सौ पुस्तकें ज़बानी याद थीं। क़ुरान का भी पाठ उसने बहुत से गुरुओं से किया था और वह भी उसे कण्ठस्थ था।

जैसे ही मदिरा उसके कण्ठ से नीचे उतरी उसकी स्मरण शक्ति जाती रही और अहंकार चूर्ण हो गया।

मदिरा के असर से उसकी बुद्धि और विवेचन शक्ति विलीन हो गई और जो कुछ भी उसे याद था, सब उसके ध्यान से जाता रहा।

उसके पास जितने भी गुण थे उसमें जितनी भी विशेषताएँ थीं वह सब मदिरा के असर से जाती रहीं।

इश्क़े आँ दिलबर बेमाँदश साबनाक।
हर चे दीगर बूद कुल्ली रफ़ पाक॥
शेख़ चूँ शुद मस्त इश्क़श ज़ोर कर्द।
हमचु दरिया जाने ऊ पुर शोर कर्द॥
आँ सनम रा दीदमै दर दस्तो मस्त।
शेख़ शुद यकबारगी आँजा ज़े दस्त॥
दिल बेदाद अज़ दस्तो अज़ मै ख़ुरदनश।
ख़ास्त ता दस्ते कुनद दर गरदनश॥
दुख़्तरश गुफ़्तए तू मर्दे कार ना।
मुद्दई दर इश्क़ो मानी दार ना॥
गर क़दम दर इश्क़ मोहकम दारिए।
मज़हबे ईं ज़ुल्फ़े पुरख़म दारिए॥
इक़्तिदा गर तू बज़ुल्फ़े मन कुनी।
बा मन ईं दम दस्त दर गरदन कुनी॥
गर नख़ाही कर्द ईंजा इक़्तिदा।
ख़ेज़ो मरौ ईनक आसा ईनक रिदा॥

यदि कुछ रह गया उसके पास तो वह विपत्ति ढाने वाला उसकी प्रियतमा का प्रणय। इसके अतिरिक्त उसका सर्वस्व जाता रहा।

शेख़ जिस समय मतवाला हो गया, उस समय उसके प्रेम ने और भी ज़ोर बाँधा और नदी की बाढ़ के समान उसने उसके हृदय को जोश और शोर से परिपूर्ण कर दिया।

एक और बात ने उसे और भी मतवाला बना दिया। उसने अपनी प्रणयिनी को हाथ में मदिरा का प्याला लिये हुए देखा।

बस फिर क्या था, उसके दिल में वह भयंकर तूफ़ान उठा कि उसका दिल बिल्कुल हाथ से जाता रहा और उसने चाहा कि अपनी प्रियतमा के गले में बाहें डाल दे।

यह देखकर उसकी प्रेमिका ने कहा कि तू अच्छा आदमी नहीं है। तू केवल अपनी ज़बान से तो कह सकता है परन्तु कार्यों में उन वचनों को परिणत नहीं कर सकता।

अगर तू प्रेम में संलग्न रहना चाहता है तो मेरी घुँघराली अलकों के समान ही विधर्मी बन जा।

यदि तू मेरी अलकों की समानता कर लेगा तो उसी समय मेरे गले से लग जायगा।

लेकिन यदि तू मेरी आज्ञा नहीं मानता तो यहाँ से चला जा। यह तेरी लाठी है और यह चादर।

शेख़ आशिक़ गश्ता कार उफ़तादा बूद।
दिल ज़े ग़फ़लत बर क़ज़ा बिनिहादा बूद॥
आँज़माँ क़द्र सरश मस्ती न बूद।
यक नफ़स ऊ रा सरे हस्ती न बूद॥
आँ ज़माँ चूँ शेख़ आशिक़ गश्त मस्त।
मस्त आशिक़ चूँ बुवद रफ़ता ज़े दस्त॥
बर नआमद बा ख़ुदी रुसवा शुद ऊ।
मी न तरसीदअज़ कसो तरसा शुद ऊ॥
बूद मै बस कोहना दर वै कार कर्द।
शेख़ रा सरगशता चूँ परकार कर्द॥
पीर रा मै कोहनओ इश्क़े जवाँ।
दिलबरश हाज़िर सबूरी कै तवाँ॥
शुद ख़राबाँ पीरो शुद अज़दस्त मस्त।
मस्त आशिक़ चूँ बुवद रफ़ता ज़े दस्त॥
गुफ़्त बे ताक़त शुदम ऐ माहरू।
अज़ मने बेदिल चे मीख़ाही बेगू॥

शेख़ को लगन लग रही थी और वह अपना अभीष्ट भी सिद्ध करना चाहता था। वह बेहोशी में अपने दिल को भाग्य के हाथ में दे चुका था।

मदिरा पान से पहले ही उसे अपनी प्रेमिका के अतिरिक्त किसी का ध्यान नहीं था। अब तो बात ही दूसरी हो गई।

अब वह मस्त हो रहा था और उस मतवाली अवस्था में अपने आप को खो चुका था।

प्रणय में अब वह बदनाम हो चुका था। उसे किसी का भय नहीं रहा और वह ईसाई हो गया।

मदिरा बहुत दिनों की रक्खी हुई थी। उसने वह रंग दिखलाया कि शेख़ का सर चक्कर खाने लगा।

एक तो वह वृद्ध था और उस पर ताजा प्रेम और पुरानी मदिरा। उसकी प्रेमिका उसके सम्मुख उपस्थित ही थी। बस धैर्य धारण करना असम्भव था।

अन्त में शेख़ को मदिरा ने अपने रंग में रंग दिया। और जिस प्रकार कि मतवाला प्रेमी मस्ती में पड़ कर अपने आप को भूल जाता है उसी प्रकार वह भी निज को भुला बैठा।

तब उसने कहा कि ऐ चन्द्रमुखी अब मैं बहुत ही बेचैन हूँ। बता तू मुझ से क्या चाहती है?

गर बहुशयारी नगश्तम बुत परस्त।
पेशे बुत मुसहफ़ बेसोज़म मस्त मस्त॥

दुख़्तरश गुफ़्त ईं ज़माँ मर्देमनी।
ख़ाबे ख़ुश बादत कि दर ख़दमनी॥

पेश अज़ीं दर इश्क़ बूदी ख़ाम ख़ाम।
ख़ुश बेज़ी चूँ पुख़्ता गश्ती वस्सलाम॥

चूँ ख़बर नज़दीके तरसायाँ रसीद।
काँचुनाँ शेख़े रहे ईशाँ ग़ुज़ीद॥

शेख़ रा बुर्दंद सूए दैर मस्त।
बाद अज़ाँ गुफ़्तंद ता ज़ुन्नार बस्त॥

शेख़ चूँ दर हल्क़ए ज़ुन्नार शुद।
ख़िर्क़ा रा आतशज़दो दरकार शुद॥

दिल ज़े दीने ख़ेशतन आज़ाद कर्द।
ना ज़े काबा ना ज़े शेख़ी याद कर्द॥

बादे चंदीं सालआं ईमाँ दुरुस्त।
ईं चुनीं यक बारा दस्त अज़ वै बशुस्त॥

जब मैं अपने होश में था मैंने कभी मूर्ति के सामने शिर नहीं झुकाया अब मतवाली अवस्था में मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा करके क़ुरान को अग्नि के हवाले कर दूँगा।

ईसाई बाला ने कहा कि हाँ अब तू मेरे योग्य हो गया है और काम का आदमी बन गया है।

अब जाकर सुख की नींद सो। इससे पहिले तू कच्चा था। अब पक्का हो गया है इसलिये ख़ूब मज़े में रहेगा।

ईसाइयों को यह समाचार मिला कि इस प्रकार के एक शेख़ ने उनका धर्म ग्रहण कर लिया है।

वे सब आये और शेख़ को उसी अवस्था में अपने गिरजे में ले गये। और उससे कहा कि अब अपने धर्म को छोड़ कर हमारे धर्म की दीक्षा ग्रहण कर।

शेख़ ने दीक्षा ले ली और अपनी गुदड़ी को आग में जला दिया।

वह अपने धर्म से पृथक हो गया। अब न उसे काबे का ही ध्यान था और न अपने शेख़ होने की सुध।

बहुत बरसों तक अपने धर्म पर दृढ़ रह कर अब उसने एकाएक उसे तिलांजलि दे डाली।

गुफ़्त ख़ल्क़ाँ क़स्दे ईं दरवेश कर्द।
इश्क़ तरसा ज़ादा कारे ख़ेश कर्द॥

हरचे गोई बाद अज़ीं फ़रमाँ कुनम।
ज़ीं बतर चे बुवद कि करदम आँ कुनम॥

रोज़े हुशियारी नबूदम बुत परस्त।
बुत परस्तीदम चो गश्तम मस्त मस्त॥

बस कसाँ कज़ ख़म्र तरके दीं कुनम।
बेशक केअम्मुऊल ख़बायस ईं कुनम॥

शेख़ गुफ़्त ऐ दुख़्तरे दिलबर चे माँद।
हर चे गुफ़्ती करदा शुद दीगर चे माँद॥

ख़म्र ख़ुरदम बुत परस्तीदम ज़े इश्क़।
कस न बीनद उंचे मन दीदम ज़े इश्क़॥

कस चो मन दर आशिक़ी शैदा न शुद।
आँ चुनाँ शेख़े चुनीं रुस्वा न शुद॥

कुर्बे पंजह साल राहम बूद बाज़।
मौज मी ज़द दर दिलम दरयाये राज़॥

वह कहने लगा कि हाय यह फ़क़ीर बरबाद हो गया। ईसाई बाला का प्रेम अपना काम कर गया।

ऐ प्रियतमा! अब मैं हमेशा तेरा कहना मानूँगा क्योंकि जो कुछ मैं कर चुका हूँ उससे बुरा अब हो ही क्या सकता है!

जब मैं अपनी सुध में था तो मैंने कभी भी मूर्ति की पूजा नहीं की थी। प्रेम में मतवाला होकर अब वह भी कर लिया।

बहुत से लोग शराब की वजह से अपना धर्म छोड़ बैठते हैं और वास्तव में पापों का परिणाम यही होता है।

फिर शेख़ ने अपनी प्रियतमा से कहा कि जो कुछ भी तूने कहा था वह मैंने सब पूरा कर दिखाया।

तेरे प्रेम में पड़कर मैंने शराब भी पी और मूर्ति पूजा भी की। बता अब भी कोई तेरी माँग बाक़ी है।

अफ़सोस इस प्रेम ने मुझे बरबाद कर दिया। जो कुछ मुझ पर बीती है वह किसी पर भी न बीतेगी। मेरे समान प्रेम में कोई पागल नहीं होगा और न बुढ़ापे में आकर इस प्रकार कोई बदनाम ही होगा।

पचास वर्षों तक मैं अपने धर्म में दृढ़ रहा। इस दुनियाँ के और ख़ुदा के भेदों को समझने में व्यस्त रहा।

ज़र्रये इश्क़ अज़ कमी बर जस्त चुस्त ।
बुर्द मारा बर सरे लौहे न ख़ुस्त ॥
इश्क़ अज़ीं बिस्यार करदस्तो कुनद ।
सुबह रा ज़ुन्नार कर दस्तो कुनद ॥
पुख़तये अक़्ल अस्त अबजद ख़्वाने इश्क़ ।
सिर शिनासे ग़ैब सर गरदाने इश्क़ ॥
ईं हमा ख़ुद रफ़ बर गो अन्दके ।
ता तू कै ख़्वाही शुदन बा मा यके ॥
चूँ बिनाये वस्ले तो बर अस्त बूद ।
उँचे करदम बर उमीदे वस्ल बूद ॥
वस्ल ख़्वाही व आश्नाई याफ़तन ।
चन्द सोजम दर जुदाई याफ़तन ॥
बाज़ दुख़्तर गुफ़ कै पीरे असीर ।
मन गराँ काबीनमो तू बस फ़क़ीर ॥
सीमे ज़र बायद मरा ऐ बेख़बर ।
कै शव बे सीम कारे तो चोज़र ॥
चूँ नदारी ज़र सरे ख़ुद गीरो रौ ।
नफ़क़्क़ये बेसिताँ ज़े मन ए पीरो रौ ॥

एकायक तेरे इश्क़ ने निकल कर मुझ पर हमला कर दिया और मैं फिर वहीं पहुँच गया जहाँ से चलना आरम्भ किया था।

इस प्रेम ने ऐसे अनूठे काम किये हैं और करता रहता है। इसने शेख़ को दूसरे धर्म का अवलम्बी बना दिया और बनाएगा।

प्रेम के प्रारम्भिक अक्षर पढ़ने वाला चेला भी ज्ञान का पक्का होता है और प्रणय की लगन में भटकने वाला मनुष्य ईश्वरीय रहस्यों में जानकारी रखता है।

शेख़ ने फिर अपनी प्रेमिका से कहा कि यह सब हो चुका अब यह बतलाओ कि वस्ल कब होगा ?

उसके लिये जो कुछ शर्तें थीं वह पूरी भी हो चुकीं। मैंने जो कुछ किया वह भी तुम्हारे मिलने की उम्मीद पर।

अब तुम मुझे किस दिन अपना दोस्त समझ कर मिलने की राह बताओगी और मैं कब तक तुमसे अलग रहकर इस जुदाई की आग में जलता रहूँगा ?

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ नये बने हुए बूढ़े ! मुझे अपने लिये दौलत की आवश्यकता है और तू बिलकुल भिखारी है।

नादान ! ज़रा सोच तो सही रुपये और अशर्फ़ी की माँग तू किस प्रकार पूरी करेगा ? बिना चाँदी के तेरा कार्य किस प्रकार सोना बनेगा ?

तेरे पास अगर रुपया नहीं है तो अपना रास्ता नाप और यहाँ से चला

हम चो ख़ुर्शीदे सुबुक रौ फ़र्द बाश ।
सब्र कुन मरदानावारो मर्द बाश ।।
पीर गुफ़ ऐ सर्व क़द्दे सीमबर ।
अहदे नेको मी बरी अलहक़ बसर ।।
कस नदानम जुज़ तो ए ज़ेबा निगार ।
दस्त अज़ीं शेवा सुख़न आख़िर बेदार ।।
दर रहे इश्क़े तो हर चम बूद शुद ।
कुफ़्रो इस्लामो ज़ियानो सूद शुद ।।
चंद दारी बेक़ररारम ज़िन्तज़ार ।
तू न दारी ईं चुनीं बामन क़रार ।।
जुमलए याराँ ज़ेमन बर गश्ता अंद ।
दुश्मने जाने मने सर गश्ता अंद ।।
तू चुनीं ईशाँ चुनाँ मन चूं कुनम ।
नै दिलम माँदा न जाँ मन चूं कुनम ।।
दोस्तर दारम मन ए ईसा सरिश्त ।
बा तो दर दोज़ख़ कि बे तो दर बहिश्त ।।

जा। सफ़र के लिये यदि ख़र्च की ज़रूरत हो तो मैं तुझे अपने पास से कुछ दे सकती हूँ।

तेज़ चलने वाले सूरज की तरह अपने रास्ते पर आगे बढ़ और मर्दों को तरह साहस व धैर्य्य से काम ले।

बूढ़े ने कहा कि ऐ कठोर हृदय, परन्तु ख़ूबसूरत माशूक़! सच बात तो यह है कि तू बड़ी .ख़ूबी के साथ अपने वादे को पूरा कर रही है!

मैं तो तेरे सिवाय किसी दूसरे यार को जानता भी नहीं हूँ। फिर ऐसी बातें करने से क्या लाभ!

मेरे पास जो कुछ भी था वह सब तेरे प्रेम में पड़कर गँवा चुका हूँ। अब न धर्म्म है और न ख़ुदा।

नफ़ा और नुक़सान सभी कुछ जाता रहा। तू मुझे अपने लिये कब तक बेचैन रक्खेगी? तूने तो मुझसे मिलने का वादा किया था।

मेरे जितने भी दोस्त थे वह सब मुझसे बिछुड़ गए हैं। और यही नहीं बल्कि मुझ दुखिया की जान के गाहक बन गए हैं!

तू इस प्रकार बदल गई और उन लोगों ने भी मुँह फेर लिया! अब मैं क्या करूँ? अफ़सोस न तो अब मेरा दिल ही रह गया है और न जान ही।

ऐ ईसा के समान दयालु प्रियतमे! मुझे तो तेरे साथ नर्क में रहना अच्छा लगता है और बिना तेरे स्वर्ग भी मुझे बहुत बुरा मालूम देगा।

आक़बत चूं शेख़ आमद मर्दे ऊ ।
दिल बसोख़्त आँ माह रा बर दर्दे ऊ ॥

गुफ़्त का बीनम कनूं ऐ नातमाम ।
ख़ूक बानी कुन मरा साले मुदाम ॥

ता चु साले बुगुज़रद हर दो बहम ।
उम्र बुगुज़ारेम दर शादी व ग़म ॥

शेख़ अज़ फ़रमाने जानाँ सर न ताफ़्त ।
काँ कि सर ताबद ज़े जानाँ सर न याफ़्त ॥

रफ़्त शेख़े काबओ पीरे के बार ।
ख़ूक बानी कर्द साले इख़तियार ॥

दर निहादे हर कसे सद ख़ूक हस्त ।
ख़ूक बायद कुश्त या ज़ुन्नार बस्त ॥

तू चुना ज़न्न मी बरी ऐ हेच कस ।
काँ ख़तर आँ पीर रा उफ़्तादो बस ॥

दरदरूने हर कसे हस्त ईं ख़तर ।
सर बुरूँ आरद चो आयद दर सफ़र ॥

अन्त में जब शेख़ बिल्कुल उसके काम का होगया तो उस चन्द्रवदनी के हृदय में भी उसके प्रति दया उत्पन्न हुई ।

उसने कहा कि पूरे एक वर्ष तक रोज़ाना मेरे सुअर चराया कर ।

जब एक वर्ष पूरा हो जायगा तब हम दोनों मिलेंगे और साथ साथ रहकर समय बितावेंगे । और दुःख तथा आराम में एक दूसरे के साथी रहेंगे ।

शेख़ ने अपनी प्रेमिका के कहने को शिरोधार्य कर लिया । जो मनुष्य अपनी प्रणयिनी के वचनों को नहीं मानता वह रहस्य को नहीं समझ सकता है ।

काबे का शेख़ और इतना बड़ा साधु एक सुअर चराने वाले के रूप में परिणत हो गया और उसने एक वर्ष तक यह कार्य करना स्वीकार कर लिया ।

प्रत्येक मनुष्य के पास स्वभावतः इच्छाओं रूपी सहस्रों सुअर होते हैं । फिर या तो उनको समाप्त ही कर डाला जावे अथवा उनको चराया जावे ।

ओ दीन-हीन मानव ! तू कदाचित् यह सोचता होगा कि यह आपत्ति केवल उस शेख़ के ही ऊपर पड़ी ।

नहीं, बात दूसरी है । प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यह विघ्न उपस्थित है और जब वह ज्ञान के मार्ग में अग्रसर होता है तब उसे इसका ज्ञान आता है ।

तू ज़े ख़ूके ख़ेश अगर आगह नई ।
सख़्त माज़ूरी कि मर्दे रहनई ॥
चूं क़दम दर रहनई मरदानावार ।
हम बुतो हम ख़ूक बीनी सद हज़ार ॥
ख़ूक कुश बुत सोज़ दर सहराए इश्क़ ।
वरना हमचू शेख़ शौ रुस्वाए इश्क़ ॥
आक़बत चूँ शेख़े दीं रुसवा न बूद ।
दरमियाने रूम सर गोग़ा न बूद ॥

दर माँदने मुरीदान बकारे शेख़ व मुराजअत करदन ब काबा

हमनशींनानश चुनाँ दरमानदंद ।
कज़ फ़रोमाँदन बजाँ दरमानदंद ॥
जुमला अज़ यारीए ऊ बगुरेख़तन्द ।
अज़ ग़मे ऊ ख़ाक बर सर रेख़तन्द ॥
बूद यारे दरमियाने जमआ चुस्त ।
पेश शेख़ आमद कि ए दरकार सुस्त ॥
मी रवम इमरोज़ सूए काबा बाज़ ।
चीस्त फ़रमाँ बाज़ बायद गुफ़्त राज़ ॥

यदि तू अपने सुअर को नहीं जानता है तो तू क्षमा के योग्य है, क्योंकि तू इस योग्य नहीं है ।

जब तू इस रास्ते में चलता है लाखों मूर्त्तियाँ और सुअर तेरे सम्मुख आते हैं ।

प्रेम के नाम पर सुअर को मार डाल और मूर्त्ति को तोड़ दे । यदि ऐसा नहीं करेगा तो शेख़ के समान प्रेम में पड़कर बदनामी का कारण बनेगा ।

यदि वह इस्लाम का सन्त इस प्रकार कलंकित न होता तो रूम के देश में सब लोग उसकी इस प्रकार कहानी न कहते ।

शेख़ के विषय में निराश होकर चेलों का काबे को वापस लौटना

शेख़ के साथी उसकी अवस्था देखकर निराश होगये । उनसे कुछ करते-धरते न बन पड़ा और ख़ुद उनकी जान पर आ बनी ।

फिर वे सब उसका साथ छोड़कर पृथक होगये । शेख़ के शोक में वे सब सर धुनने लगे ।

उनमें से एक को शेख़ से अधिक स्नेह था । वह जाकर शेख़ से कहने लगा कि अब तो तुम्हारा कार्य चौपट हो गया !

मैं आज काबे को लौटा जा रहा हूँ । यदि तुम्हें कुछ कहना है तो कह दो ।

या दिगर हमचो तू तरसाई कुनेम ।
ख़ेश रा मेहराबे रुसवाई कुनेम ।।
ईं चुनीं तनहात मपसनदेम मा ।
हमचु तो ज़ुन्नार बर बनदेम मा ।।
मा चे नतवानेम दीदन ईं चुनीं ।
ज़ूद बेगुरेज़ेम अज़ तो जीं ज़मीं ।।
मोतकिफ़ दर काबा बेनशीनेम मा ।
ता न बीनेम उंचे मी बीनेम मा ।।
शेख़ गुफ़्ता जाने मन बर तफ़ बूद ।
हर कुजा ख़्वाहेद बायद रफ़्त ज़ूद ।।
ता मरा जानस्ता दैरम जाए बस ।
दुख़्तरे तरसाए रूह अफ़ज़ाए बस ।।
मी न दानम अज़ चे रू आज़ादायेद ।
ज़ाँ कि ईंजा कार ना उफ़तादायेद ।।
गर शुमा रा कार उफ़तादे दमे ।
हमदमे बूदे मरा दर हर ग़मे ।।

क्या हम भी तुम्हारी तरह ईसाई बनकर अपने सर पर बदनामी का टीका लगवा लें ?

हम यह नहीं चाहते कि तू अकेला रहे और इसलिये हम भी अब ईसाई हो जायँगे ।

तुम्हारी यह हालत हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते और उससे बचने के लिये हम बहुत जल्द यहाँ से भाग जायेंगे ।

हम काबे में पहुँचकर किसी कोने में छिप रहेंगे । ताकि जो हम देख रहे हैं न देखें ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि मेरी जान में आग लग रही है । मैं तुम्हें क्या बतला सकता हूँ । जहाँ जाना हो जल्द जाओ ।

जब तक ज़िन्दगी है तब तक मेरे रहने के लिये यही मन्दिर काफ़ी है और वह आत्मा प्रसन्न करने वाली ईसाई की लड़की मेरी ज़िन्दगी का सहारा है ।

मुझे नहीं मालूम तुम इतने बेफ़िक्र क्यों हो । कदाचित् इस वजह से कि तुम्हारे ऊपर यहाँ किसी प्रकार का काम नहीं पड़ा है ।

अगर तुममें से कोई भी इस काम में फंस जाता तो मुझे हर बात में कोई न कोई नया साथी मिल जाता ।

बाज़ गरदेद ऐ रफ़ीक़ाने अज़ीज़ ।
मी नदानम ता चे ख़्वाहद बूद नीज़ ॥

गर ज़े मा पुर्सन्द बर गोयेद रास्त ।
काँ ज़े पा उफ़्तादा सर गरदाँ चेरास्त ॥

चश्म पुरख़ूनो दहन पुर ज़हर माँद ।
दर दहाने अज़दहाए क़हर माँद ॥

हेच काफ़िर दर जहाँ नदेहद रज़ा ।
उंचे कर्द आँ पीरे इसलाम अज़ क़ज़ा ॥

रूए तरसाए नमूदन्दश ज़े दूर ।
शुद ज़े दीनो अक़्लो शेख़ी ना सबूर ॥

ज़ुल्फ़ हमचूं हल्क़ा दर हल्क़श फ़िगंद ।
दर ज़बाने जुम्लए ख़ल्क़श फ़िगंद ॥

गर मरा दर सर ज़निश गीरद कसे ।
गो दरीं रह ईं चुनीं उफ़्तद बसे ॥

दर चुनीं रह कस न सर गीरद न बुन ।
हेच कस रा नेस्त रूए यक सख़ुन ॥

मेरे प्यारे साथियो तुम लोग अब यहाँ से रवाना हो जाओ। मैं नहीं कह सकता कि आगे चलकर क्या होगा।

अगर लोग मेरा हाल पूछें तो सब बातें ज्यों की त्यों बयान कर देना। ताकि वह लोग भी समझ जावें कि शेख़ क्यों वापस लौटने से लाचार है।

लोग पूछें तो कह देना कि शेख़ की आँखें ख़ून से भरी हुई हैं, उसका मुख ज़हर से कड़वा हो गया है और वह क़हर-रूपी अज़दहे के मुख में जा पड़ा है।

किसी विधर्म्मी के द्वारा भी ऐसा काम न होगा जैसा कि उस इस्लाम के पक्के मानने वाले से हो गया है।

एक ईसाई लड़की की शक्ल उसे दूर से दिखला दी गई जिसे देखते ही उसका धर्म्म और ज्ञान सब कुछ जाता रहा।

जंजीर के समान ज़ुल्फ़ ने उसके गले में फन्दा डाल दिया और यह बात सारी दुनिया जान गई।

अगर कोई आदमी मेरी कहानी सुनकर मुझे बुरा भला कहना शुरू करे तो उससे कह देना कि इश्क़ की राह में ऐसी बहुत सी बातें हुआ करती हैं।

इस रास्ते में किसी भी आदमी को अपने सर और पैर का ख़याल नहीं रहता है और न किसी को कोई बात ही कहने की सामर्थ्य होती है।

बसके यारा° दर ग़मश बेगिरीस्तन्द ।
गाह मी मुर्दन्दो गह मी ज़ीस्तंद ।।
शेख़ शाँ दर रूम तनहा माँदए ।
दाद दीं बरबाद तनहा माँदए ।।
आक़बत रफ़तंद सूए काबा बाज़ ।
माँदा जाँ दर सोख़्तन तन दर गुदाज़ ।।
चूँ रसीदंद आँ अज़ीज़ाँ दर हरम ।
लब फ़ेरो बसततंदो न कुशादंद दम ।।
अज़ हयाये शेख़ ख़ुद हैराँ शुदंद ।
हर यके दर गोशए पिनहाँ शुदंद ।।
शेख़ रा दर काबा यारे रस्ता बूद ।
दर इरादत दस्त अज़ कुल शुस्ता बूद ।।
बुद बस बीनिन्दश्रो बस राह बर ।
ज़ूरो न बूदे शेख़ रा आगाह तर ।।
शेख़ चूँ अज़ काबा शुद सूए सफ़र ।
आँ नबूदाँ जाएगा हाज़िर मगर ।।
चूँ मुरीदे शेख़ बाज़ आमद बजाय ।
बूद अज़ शेख़श तिही ख़िलवत सराय ।।

साथी लोग उसके शोक में बहुत रोये और अपने प्राणों को पीड़ित करने लगे ।

उनका शेख़ और गुरु विधर्म्मी होकर रूम में अकेला रह गया था और उनसे पृथक हो गया था ।

अन्त में वह सब काबे को लौट गये, परन्तु उनके प्राण पीड़ा से आकुल हो रहे थे ।

जब वह काबा पहुँचे, अफ़सोस के मारे ज़बान बन्द किये थे, और तकलीफ़ में घुल रहे थे ।

अपने गुरु की अप्रतिष्ठा से लज्जित होकर वह इधर-उधर छिपते फिरते थे ।

काबे में शेख़ का एक ऐसा मित्र भी था जो उसके स्नेह में अपना सब कुछ छोड़ बैठा था ।

वह बड़ी गम्भीर दृष्टि वाला और विद्वान था और शेख़ के भेदों को उससे अधिक और कोई नहीं जानता था ।

शेख़ जब काबे से रूम को गया था उस समय वह मित्र घर पर नहीं था । कहीं बाहर गया हुआ था ।

जब वह बाहर से घर लौटकर आया उसने पूजा-गृह को शेख़ विहीन पाया ।

बाज़ पुरसीद अज़ मूरीदाँ हाले शेख़।
बाज़ गुफ़न्दश हमा अहवाले शेख़॥
कज़ क़ज़ा ऊ रा चे कार आमद बसर।
वज़ क़दर ऊ रा चे बाज़ आमद बवर॥
रूये तरसाए ब यक मूयश बे बस्त।
राह बर ईमां ज़े हर सूयश बे बस्त॥
इश्क़ मी बाज़द कनूँ बा ज़ुल्फ़ो ख़ाल।
ख़िर्क़ा गश्ता मोहक़ा हालश बहाल॥
दस्त कुल्ली बाज़ दाश्त अज़ ताअतऊ।
ख़ूकबानी मीकुनद ईं साअतऊ॥
ईं ज़माँ आँ ख़्वाजये बिस्यार दर्द।
बर मियाँ ज़ुन्नार दारद चारकर्द॥
शेख़ना गर चे बसे दरदीं बे ताख़्त।
अज़ कोहन गबरेश मी न तवाँ शनाख़्त॥
चूँ मुरीद आँ क़िस्सा बिशुनूद अज़ शिगिफ़्।
रूये ख़ुद ज़र कर्द मातम दर गिरिफ़्॥
बामुरीदाँ गुफ़्त ऐ तरदामनाँ।
दर वफ़ादारी न मरदाँ न ज़नाँ॥

दूसरे चेलों से उसने शेख़ का हाल पूछा; उन्हों ने सब शेख़ का हाल कह दिया।

दूसरे चेलों से सब समाचार सुनकर उसकी समझ में आगया कि शेख़ को भाग्य ने कहाँ ले जाकर पटका था।

उसकी समझ में आ गया कि वह अब एक ईसाई-बाला के प्रणय में फंसकर अपने धर्म्म को खो बैठा है।

उसकी काली अलकों के जाल में पड़कर, उसने अपनी गुदड़ी को त्याग दिया है और अपनी हालत ख़राब कर ली है।

ख़ुदा की अभ्यर्थना से उसने बिल्कुल हाथ खींच लिया है और अब सुअर चराया करता है।

उस मित्र को ज्ञात हो गया कि ख़ुदा से प्रेम रखने वाला वह वृद्ध अब अपनी कमर में चार फेरों वाला जनेऊ बाँधे हुए है।

हमारा शेख़ यद्यपि अपने धर्म्म में उन्नति कर चुका था परन्तु अब प्राचीनता का स्मरण दिलवाकर उसे पुनः उचित मार्ग पर लाना कठिन था।

शेख़ के मित्र ने जब यह कहानी सुनी तो आश्चर्य और खेद से उसका मुख पीला पड़ गया।

तब उसने अन्यान्य चेलों से कहा कि ऐ पापियो, तुम वफ़ादारी में न तो स्त्रियों के ही समान हो और न मर्दों के।

यारे कार उफ़तादा बायद सद हज़ार।
यार नायद जुज़ चुनीं रोज़े बकार॥
गर शुमा बूदेत यारे शेख़ो ख़्वेश।
यारीए ऊ अज़ चे न गिरिफ़्तेद पेश॥
शर्म साँ बाद आख़िर ईं यारी बुवद।
हक़ गुज़ारी ओ वफ़ादारी बुवद॥
चूँ निहाद आँ शेख़ बर ज़ुन्नार दस्त।
जुम्लगी ज़ुन्नार मो बायस्त बस्त॥
अज़ बरश अमदन नमी बायस्त शुद।
जुम्लगी तरसा हमी बाशस्त शुद॥
ईं न यारीओ मुवाफ़िक़ बूदनस्त।
उंचे करदेद अज़ मुनाफ़िक़ बूदनस्त॥
हरकि यारे ख़्वेश रा यावर शवद।
यार बायद बूद अगर काफ़िर शवद॥
वक्ते नाकामी तवाँ दानिस्त यार।
ख़ूद बुवद दर कामरानी सद हज़ार॥
शेख़ चूँ उफ़ाद दर कामे निहंग।
जुम्ला ज़ू बुगुरेख़्तंद अज़ नामो नंग॥

लानत है तुम्हारी दोस्ती पर। मतलब के तो सैकड़ों यार हुआ करते हैं, लेकिन सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत के समय में काम आवे।

अगर तुम शेख़ के दोस्त थे तो उसके साथ दोस्ती का हक़ क्यों नहीं अदा करते रहे?

तुम्हें हया लगनी चाहिये। क्या दोस्ती ऐसी ही होती है और शुक्र गुज़ारी और वफ़ादारी इसी का नाम है?

जब तुम्हारे शेख़ ने दूसरे धर्म्म की दीक्षा ली थी तब तुम्हें भी ऐसा ही करना था।

जानबूझ कर उसका साथ छोड़ देना ठीक नहीं था बल्कि उसी के समान सब को ईसाई हो जाना था।

तुम लोगों ने जो कुछ किया है वह दोस्ती नहीं कही जा सकती है। यह तो बहुत बुरे आदमियों का काम है।

अपने दोस्त का जो सच्चा साथी होता है वह हमेशा उसके तईं सच्चा ही बना रहता है। चाहे वह विधर्म्मी ही क्यों न हो जावे।

जब आदमी के दिन बुरे होते हैं उसी वक्त दोस्त की पहचान होती है। अच्छे दिनों में ऐश के जलसों में तो सैकड़ों साथी हो जाते हैं।

शेख़ जिस समय मुसीबत में पड़ गया, उस समय उसके सब साथी बदनामी के डर से उसको छोड़ कर भाग गये।

इश्क़ रा बुनियाद बर बदनामी अस्त।
हर के ज़ीं दर सर कशद अज़ ख़ामी अस्त ॥
जुम्ला गुफ़तन्द उंचे गुफ़्ती पेश अज़ीं।
बारहा गुफ़्तेम बा ऊ बेश अज़ीं ॥
अज़्मे आँ करदेम ता ब ऊ वहम।
हम नफ़स बाशेम बा शादी बा ग़म ॥
ज़ोह्द बेफ़रोशेम रुसवाई ख़रेम।
दीं बरंदाज़ेमो तरसाई ख़रेम ॥
लेके राये दीद शेख़े कारसाज़।
कज़ बरू यक बयक गरदेम बाज़ ॥
चूँ नदीदज़ यारीए मा हेच सूद।
बाज़ गर दानीद मारा शेख़ ज़ूद ॥
बाद अज़ाँ असहाब रा गुफ़्त आँ मुरीद।
गर शुमारा कार बूदे बर मज़ीद ॥
जुज़ दरे हक़ नेसते जाये शुमा।
दर हुज़ूर हस्ते सरो पाए शुमा ॥
दर तेज़ुल्लुम दाश्तन दर पेशे हक़।
आँ यके बुर्दे अज़ाँ दीगर सबक़ ॥

प्रेम की नींव बदनामी होती है और इस द्वार से होकर निकलने वाला बदनाम हो जाता है।

यह सुनकर सब चेलों ने दूर ही से कहा कि जो कुछ तू कहता है उससे कहीं ज़्यादा हम लोगों ने किया।

शेख़ को हमने हर तरह समझाया था और इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि दुख और आराम में उसके साथी रहें।

हमने यहाँ तक कहा था कि हम भी उसी की तरह बदनामी मोल लेकर ईसाई हो जावें।

लेकिन शेख़ ने हमारी एक भी न सुनी। उसकी यही राय हुई कि हम सब उसके पास से चले जावें।

हम लोगों को साथ रखने में उसे कोई नफ़ा नहीं दिखलाई दिया और हम को बहुत जल्द वहाँ से रवाना कर दिया।

यह बातें सुनकर शेख़ के उस ख़ास चेले ने कहा कि अगर तुम अच्छे काम करने वालों और समझदारों में होते,

तो शेख़ का हाल देखकर ख़ुदा के दर्वाज़े पर अपना डेरा जमा देते। वहीं उसकी मिन्नत करते और गिड़-गिड़ाकर शेख़ के लिये कहते।

तब उसके दर्बार में तुम्हारी सुनवाई होती जब वह तुमको इस बात में एक दूसरे से बढ़ा-चढ़ा हुआ देखता और समझता कि तुम अपनी आन पर मर मिटने वाले हो,

ता चो हक़ दीदे शुमारा बर क़रार।
बाज़ दारे शेख़ रा बे इन्तज़ार॥
गर ज़े शेख़े ख़ेश करदेत यहतराज़।
अज़ दरे हक़ अज़ चे मी गशतेद बाज़॥
चूँ शुनीदंद ईं सख़ुन अज़ इज्ज़े .ख़ेश।
बर नयावरदंद यक तन सर ज़े पेश॥
आँ मुरीदश गुफ़्त आँ ख़िजलत चे सूद।
कार चूँ उफ़्ताद बर ख़ेज़ेद ज़ूद॥
लाज़िमे दरगाहे हक़ बाशेम मा।
वज़ तज़ल्लुम ख़ाक मी बाशेम मा॥
पैरहन पोशेम अज़ काग़ज़ हमा।
दर रसेम आख़िर ब शेख़े ख़ुदहमा॥

बाज़ गरदीदने मुरीदाँ अज़ काबा बरूम अज़ पए शेख़

जुम्ला सूए रूम रफ़्तंद अज़ अरब।
मोतकिफ़ गश्तंद पिनहाँ रोज़ो शब॥
बर दरे हक़ हर यके रा सद हज़ार।
गह ज़ारी गह शफ़ाअत बूद कार॥

तो वह फ़ौरन ही शेख़ को वापस लौटा देता।

मानलिया कि तुमने शेख़ का साथ छोड़ दिया, लेकिन ख़ुदा के दर्वाज़े पर क्यों नहीं गये।

दूसरे शिष्यों ने जब यह बातें सुनी तो लज्जा से उनके सिर झुक गये। उनका अपराध प्रमाणित हो चुका था।

इस पर उसी ख़ास शिष्य ने कहा कि इस ताने से कुछ नहीं होता है। काम आ पड़ा है। आओ, उठो।

जल्दी हम सब इकट्ठे होकर मस्जिद में जमकर बैठ जावें। ख़ुदा से फ़रियाद करें,

और फटे-पुराने कपड़े पहन लें। उम्मीद है कि उसकी दुआ से हम अपने शेख़ से फिर मिलेंगे।

चेलों का शेख़ से मिलने के लिये काबे से रूम को फिर से यात्रा करना

सब शिष्य गण अरब देश से रूम को चल दिये। वहाँ पहुँचकर वे अन्य लोगों की दृष्टि से छिपकर एकान्त स्थान में रहने लगे।

उन लोगों ने ईश्वर के द्वार पर आसन जमा दिया। उनमें से प्रत्येक विनती करके अपने गुरु को पुनः प्राप्त करने के लिये कहता।

हमचुनाँ ता चिल शबाँ रोज़े तमाम ।
सर न पेचीदंद हर यक अज़ मुक़ाम ॥
जुम्ला रा चिल शब न ख़ुर बूदो न ख़्वाब ।
हमचुनाँ चिलदर ननाँ बूदो न आब ॥
अज़ तज़र्रो करदने आँ क़ौमे पाक ।
दर फ़लक उफ़्ताद जोशे साबनाक ॥
सब्ज़ पोशाँ दर फ़राज़ो दर फ़रूद ।
जुम्ला पोशीदंद अज़ मातम कबूद ॥
आख़िरुलअम्र आँ के बूदज़ पेशे सफ़ ।
आमदश तीरे दुआए बर हदफ़ ॥
बादे चिल रोज़ आँ मुरीदे पाक बाज़ ।
बूद अंदर ख़िलवते ,ख़ुद दर नमाज़ ॥
सुब्हदम बादे बर आमद मुश्कबार ।
शुद जहाने कश्फ़ बर वै आशकार ॥
मुस्तफ़ारा दीदमीं आमद चो माह ।
दर बरफ़गन्दा दो गेसूए सियाह ॥
सायए हक़ आफ़ताबे रूए ऊ ।
शुद जहाने जान वक़्फ़े मूए ऊ ॥

इस प्रकार चालीस दिन तक वह लोग लगातार ईश अभ्यर्थना में निमग्न रहे ।

चालीस दिन तक न तो उन्होंने भोजन ही किया और न शयन। और चालीस रातें भी उन्होंने इसी प्रकार जागकर प्रार्थना में व्यतीत कीं ।

इस पवित्र ज़ात की इस टेक से आकाश हिल उठा और शोर होने लगा ।

सब्ज़ वस्त्र धारण करने वाले देवताओं ने शोक में काले वस्त्र धारण कर लिये ।

अन्त में उन सब चेलों के मुखिया की प्रार्थना से तीर लक्ष्य पर जा लगा ।

चालीसवें दिन समाप्त होने पर जब वह पवित्र चेला अपने आसन पर प्रातः काल बैठा हुआ था,

सुगन्धित वायु चलने लगी और वह मस्त होकर झूमने लगा ।

उसने देखा कि चाँदी के समान उज्ज्वल पैग़म्बरसलम दो काली लटें अपनी गर्दन में डाले हुए उसकी तरफ़ चले आ रहे हैं ।

उनका मुख सूर्य्य के समान ईश्वरीय प्रभा से प्रकाशित हो रहा है और सारे संसार की जानें उनके एक बाल पर न्यौछावर थीं ।

मी ख़िरामीदो तबस्सुम मी नमूद ।
हर के मी दीदश दरो गुम मी नमूद ॥
आँ मुरीद ऊ रा चो दीद अज़ जायेजस्त ।
के नबी अल्लाह दस्तम गीर दस्त ॥
रहनुमाए खल्क़अज़ बहरे .ख़ुदा ।
शेख़ मा गुमरह शुदा राहश नुमा ॥
मुसतफ़ा गुफ़्त ऐ बहिम्मत बस बलंद ।
रौ कि शेख़त रा बरूँ करदम ज़े बंद ॥
हिम्मते आलीत कारे .ख़ेश कर्द ।
दम नज़द ता शेख़ रा दर पेश कर्द ॥
दरमियाने शेख़ो हक़ ता देर गाह ।
बूद गरदे व ग़ुबारे बस सियाह ॥
आँ ग़ुबारज़ राहे ऊ बरदाश्तम ।
दरमियाने ज़ुल्मतश नगुज़ाश्तम ॥
करदमज़ बहरे शफ़ाअत शबनमे ।
मुंतशर बर रोज़गारे ऊ हमे ॥
आँ ग़ुबार अकनू ज़े रह बरख़ास्तस्त ।
तौबा बेनशिस्तो गुनाह बरख़ास्तस्त ॥

वह धीरे धीरे टहल रहे थे और मुस्कुरा रहे थे । उनको जो कोई भी देखता था वह उनकी शोभा पर मोहित हो जाता था ।

उस चेले ने जब पैग़म्बर को देखा तब उठकर खड़ा हो गया और विनीत भाव से बोला कि ऐ ख़ुदा के नबी, मेरी सहायता कीजिये ।

आप सारी दुनिया को ख़ुदा का रास्ता दिखलाते हैं, हमारे पीर को भी, जो अपने रास्ते को भूल गया है, ठीक रास्ते पर लाइये ।

पैग़म्बर साहब ने कहा कि ऐ ऊँचे हौसले वाले मर्द, जा, मैंने तेरे पीर को क़ैद से छुड़ा दिया ।

तेरी ऊँची हिम्मत अपना काम कर गई । तूने जबतक शेख़ को आगे नहीं बढ़ा लिया दम भी न लिया ।

तेरे शेख़ और ख़ुदा के बीच में बहुत दिनों से एक काला पर्दा आ गया था और वह भी गर्द-ग़ुबार का ।

मैंने वह गर्द उसके सामने से हटा दी है और अब वह अँधेरे में नहीं रह गया है ।

मैंने उसके हाल पर एक फुआर छिड़क दी है, जिसकी वजह से वह सारी गर्द साफ़ हो गई है ।

अब उसने ख़राब काम करने से हाथ खींच लिया है और बुराई उससे दूर भाग गई है ।

तू यक़ीं मीदाँ कि सद आलम गुनाह ।
अज़ तर्फ़े यक तौबा बर खेज़द ज़े राह ॥
बहरे एहसाँ चूँ दर आयद मौजज़न ।
मह्व गरदानद गुनाहे मर्दो ज़न ॥
ईं दो से हरफ़े बगुफ़्त अज़ यारे ऊ ।
दर ज़माँ ग़ायब शुद अज़ दीदारे ऊ ॥
मर्द अज़ शादीए ऊ मदहोश शुद ।
नारए ज़द कासमाँ पुर जोश शुद ॥
हम चुनाँ नारा ज़नाँ बेरूँ फ़िताद ।
ज़ाबे दीदा दरमियाने ख़ूँ फ़िताद ॥
जुम्लए असहाब रा आगाह कर्द ।
मुज़्दगाने दाद अज़मे राह कर्द ॥
रफ़ बा असहाबे गिरयानों दवाँ ।
ता रसीद आँ जा कि शेख़े ख़ूकबाँ ॥
शेख़ रा दीदन्द चूँ आतश शुदा ।
दरमियाने बेक़रारी ख़श शुदा ॥
दीदाआँ दरवेश रा बाज़ आमदा ।
बा ख़ुदाए ख़ेश दर राज़ आमदा ।

तू इस बात पर यक़ीन रख कि सारी दुनियाँ के बुरे काम केवल उनपर एक बार अफ़सोस करने से ही दूर हो जाते हैं ।

जब ख़ुदा के अहसान का दरिया बाढ़ पर आ जाता है तब मर्दों और औरतों सभी की बुराइयों को धो देता है ।

यह दो-तीन बातें शेख़ के प्रधान चेले से कहकर पैग़म्बर साहब तत्क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो गये ।

वह मनुष्य आनन्द में आकर झूमने लगा और मतवाला हो गया । और उसी अवस्था में इतने ज़ोर से यकायक चिल्लाया कि आकाश में एक प्रकार का हुल्लड़-सा मच गया ।

इसी प्रकार चिल्लाता हुआ वह बाहर निकला और उसने रोना प्रारम्भ किया । यहाँ तक रोया कि आँसुओं के कीचड़ में लोटने लगा ।

अपने सारे साथियों को उसने यह आनन्द दायक समाचार कह सुनाया और यात्रा करने के लिये प्रबन्ध करने लगा ।

इसके उपरान्त अपने सब साथियों के साथ रोता विलखता और दौड़ता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ शेख़ सुअर चरा रहा था ।

इन सबों ने जाकर देखा कि शेख़ अग्नि के समान भड़क रहा है और बहुत ही व्याकुल हो रहा है ।

उस प्रधान शिष्य ने देखा कि वह साधु पहले ही से बुरे कामों से हाथ खींच चुका है और ख़ुदा से दिल लगा चुका है ।

हम फ़िगंदां बूद नाक़ूस अज़ दहाँ।
हम गुसिस्ता बूद ज़ुन्नार अज़ मियाँ॥
हम कुलाहे गुब्र की अंदाख़ता।
हम ज़े तरसाई दिलश परदाख़ता॥
शेख़ चूँ असहाब रा अज़ दूर दीद।
.ख़ेशतन रा दरमियाने नूर दीद॥
हम ज़े ख़िजलत जामा बर तन चाक कर्द।
हम बदस्ते इज्ज़ बर सर ख़ाक कर्द॥
गाह चूँ अब्र अश्के .ख़ूनी मीफ़िशाँद।
गाह दस्तज़ जाने शीरीं मीफ़िशाँद॥
गह .ज़े आहश परदए गरदूँ बेसोख़्त।
गह .ज़े हसरत बर तनेऊ ख़ूँ बेसोख़्त॥
हिक्मते क़ुरानी असरारो ख़बर।
शुस्ता बूद अन्दर ज़मीरश सर बसर॥
जुमला बा याद आमदश यकबारगी।
बाज़ रस्त अज़ जेह्लो अज़ बेचारगी॥
चूँ बहाले ख़ुद फ़ेरो निगुरीस्ते।
दर सजूद उफ़तादयो बेगुरीस्ते॥

उसने अपने मुख से शंख को पृथक कर दिया है और जनेऊ को तोड़ डाला है।

उसने ईसाइयों की टोपी को भी उतार कर फेंक दिया था और ईसाई होने का ख़्याल भी हृदय से अलग कर दिया था।

जैसे ही उसने इन सब चेलों को अपनी तरफ़ आते देखा उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि वह उजाले में आगया है।

मारे शर्म के उसने अपने वस्त्र फाड़कर फेंक दिये और ख़ुदा के सम्मुख विनीत भाव से बैठकर सर पर धूल डालने लगा।

कभी तो वर्षा की झड़ी के समान अपने नेत्रों से शोक के आँसू बरसाता था और कभी अपने प्राण खो देने की इच्छा करता था।

कभी उसकी गर्म साँसों से आकाश का पर्दा जलने लगता था और कभी शोक और दुख से उसका रक्त जलने लगता था।

क़ुरान और हदीस के सारे रहस्य जो उसके मस्तिष्क से धुल चुके थे,

अब सब उसपर प्रकट हो गये और उसकी सुस्ती तथा काहली दूर हो गई।

जब वह अपनी अवस्था पर विचार करता तो ख़ुदा के सामने सर पटक कर रोने लगता था।

हम चो गिल दर .खूने दिल आग़श्ता बूद।
वज़ खिजालत दर अरक़ गुमगश्ता बूद॥
चूँ चुनाँ दीदंद आँ असहाबे ला।
माँदा दर अंदोहो शादी मुबतिला॥
पेशे ऊ रफ़तंद सरगरदाँ हमा।
अज़ पए शुकराना जाँ अफ़शाँ हमाँ॥
शेख़ रा गुफ़ंद ए बेपरदा राज़।
मना शुद अज़ पेशे .खुरशीदे तो बाज़॥
कुफ़्र बरख़ास्त अज़ रहो ईमाँ नशस्त।
बुतपरस्ते रूम शुद यज़दाँ परस्त॥
मौजज़द नागाह दरियाये क़बूल।
शुद शफ़ाअत ख़ाहे कारे तो रसूल॥
ईं ज़मा शुकराना आलम आलमस्त।
शुक्र कुन हक़ रा चे जाए मालमस्त॥
मिन्नत ऐज़िद रा कि दर दरियाय तार।
कर्द राहे हमचु .खुर्शीद आशकार॥
आँ कि तानद कर्द रौशन रा सियाह।
तौबा तानद दाद बा चंदीं गुनाह॥

वह पुष्प के समान अपने हृदय के रक्त में रंग गया था और शर्म के पसीने से तरबतर हो रहा था।

जब उसके साथियों ने अपने गुरु को आनन्द और शोक दोनों अवस्थाओं में मस्त देखा तो दौड़कर सब उसके पास पहुँच गये।

और धन्यवाद दे दे अपने आपको उस पर न्यौछावर करने लगे।

शेख़ से उन्होंने कहा कि हे वृद्ध गुरु, तेरे सूरज के सामने से रुकावट का पर्दा दूर हो गया है।

कुफ़्र (नास्तिकता) रास्ते से हट गया है मूर्त्ति का पूजक ख़ुदा को मानने लगा है।

यकायक ख़ुदा की मुहब्बत ने ज़ोर मारा और ख़ुदा के दूत ने तेरी सिफ़ारिश की।

अब यह मौक़ा ऐसा आ गया है कि ख़ुदा का शुक्र किया जावे। रंज के दिन दूर हो गये हैं।

उस ख़ुदा का शुक्र (धन्यवाद) है जिसने अन्धकार से भरे हुए दरिया में सूरज के समान एक साफ़ रास्ता तेरे लिये निकाल दिया है।

जो चमकदार चीज़ को भी काला बना सकता है उसमें बुरे कामों को भी नीचा दिखाने की ताक़त है।

आतिशे अज़ तौबा चूँ बेफ़रोज़द ऊ।
हरचे याबद जुमला दरहम सोज़द ऊ॥
क़िस्सा कोताह मी कुनम ईं जाएगाह।
बूद शाँ अलबत्ता हाले अज़्मे राह॥
शेख़ गुस्ले करदा शुद दर हलक़ा बाज़।
रफ़ बा असहाब ता सूए हिजाज़॥

ख़्वाब दीदन दुख़्तर तरसा व अज़ अक़ब शेख़ रफ़्तन

दीद अज़ाँ पस दुख़्तरे तरसा बख़्वाब।
कोफ़ताद दर किनारश आफ़ताब॥
आफ़ताब आँगाह बकुशादे ज़बाँ।
कज़ पए शेख़त रवाँ शो ईं ज़माँ॥
मज़हबे ऊ गीरो ख़ाके ऊ बेबाश।
ऐ पिलीदश कर्दा पाके ऊ बबाश॥
ऊ चे आमद दर रहे तो अज़ मजाज़।
दर हक़ीक़त तू रहे ऊ गीर बाज़॥

जब वह किसी दिल में पश्चाताप की आग भड़का देता है तो उसके द्वारा गुनाहों को भी जला डालता है।

मैं इस अवसर पर इस कथानक का थोड़े ही शब्दों में वर्णन करना उचित समझता हूँ। सारांश यह कि उन लोगों ने उसी समय यात्रा करने की ठान ली।

शेख़ ने स्नान किया और पुनः अपने साथियों के बीच में बैठा और फिर उनके साथ अरब देश को चल दिया।

ईसाई बाला का स्वप्न देखना और शेख़ के पीछे जाना

शेख़ के चले जाने के उपरान्त ईसाई की लड़की ने यह स्वप्न देखा कि उसके अंक में एक सूर्य आकर गिर पड़ा है,

और वह उससे कह रहा है कि इसी क्षण अपने प्रेमी शेख़ के पीछे रवाना हो जा।

उसका धर्म स्वीकार करले और उसी की शिक्षाओं पर चल। तूने ही उसे अपवित्र किया था अब स्वयं उसके हाथों से पवित्र बन जा।

वह सांसारिक प्रणय-जाल में फँसकर तेरे धर्म में आया था परन्तु तू वास्तव में उसके धर्म को स्वीकार कर।

अज़ रहश बुर्दी बराहे ऊ दर आ।
चूँ बराह आमद तो हमराही नुमा॥
रहज़नश बूदी तो पस हमरह बेबाश।
चंद अज़ीं बे आगही आगह बेबाश॥
चूँ दर आमद दुख़्तरे तरसा ज़े ख़्वाब।
नूर मीदादे दिलश चूँ आफ़ताब॥
दर दिलश दरदे पिदीद आमद अजब।
बेक़रारश कर्द आँ दर्द अज़ तलब॥
आतिशे दर जाने सरमस्तश फ़िताद।
दस्त दर दिल अज़ दिलो दस्तश फ़िताद॥
मी नदानिस्त ऊ कि जाने बेक़रार।
दर दरूँने ऊ चे तुख़्म आवुर्द बार॥
कारश उफ़्तादो नबूदश हमदमे।
दीद ख़ुद रा दर अजायब आलमे॥
आलमे काँजा मजाले राह नेस्त।
गुंग बायद शुद ज़बाँ आगाह नेस्त॥

तूने उसको सीधे मार्ग से हटाया था। अब जा और उसके धर्म में परिवर्तित हो जा।

तूने उसको पथ—भ्रष्ट किया था अब जाकर उसकी सहायक बन और उसके साथ रह। वह अब अपने उचित मार्ग पर आ गया है। तू कब तक इस प्रकार सुस्ती में पड़ी रहेगी! अब ख़ुदा को समझ ले।

ईसाई बाला यह स्वप्न देखकर चौंक पड़ी। उसका हृदय सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा था।

उसके दिल में एक विलक्षण पीड़ा उत्पन्न हो गई जिसने उसे एक आकुल जिज्ञासु बना दिया।

उसके मतवाले प्राण में एक जलन सी पैदा हो गई और दिल पीड़ित होने के कारण उसका हाथ दिल पर जा पड़ा। उसका हाथ भी व्यर्थ हो गया।

उसको यह भी ज्ञात न रहा कि उसके व्याकुल प्राणों ने उसके अन्दर कैसा बीज उगा दिया है।

उसके प्रति स्नेह दिखाने वाला कोई न था। वह बड़ी कठिनाई में पड़ गई।

उसने अपने आप को एक अनूठे जगत में देखा जहाँ पहुँचने का कोई मार्ग ही नहीं दिखलाई पड़ता था।

चूँ नज़र बर शेख़ अफ़गंद आँ निगार।
अश्क मी बारीद चूँ अब्रे बहार॥
दीदा बर अहदो वफ़ाए ऊ फ़िगन्द।
ख़ेश रा बर दस्तो पाए ऊ फ़िगन्द॥
गुफ़ अज़ तशवीरे तू जानम बेसोख़।
बेश अज़ीं दर पर्दा नतवानम बेसोख़॥
बर फ़िगन ईं परदा ता आगह शवम।
अरज़ा कुन इसलाम ता बारह शवम॥
शेख़ बर वै अरज़ए इस्लाम दाद।
गुलग़ुला दर जुम्लए याराँ फ़िताद॥
चूँ शुदाँ महरूए अज़ अह्ले ऊयाँ।
अश्के बाराँ मौजज़न शुद दर ज़माँ॥
आख़िरुलअम्र आँ सनम चूँ राहे याफ़्।
ज़ौक़े ईमाँ दर दिलश नागाह याफ़्॥
शुद दिलश अज़ ज़ौक़े ईमाँ बेक़रार।
ग़म दर आमद गिर्दे आँ बे ग़मगुसार॥

उसने अपने नेत्र खोल कर शेख़ को देखा और उसे बादल के समान आँसू गिराते हुए पाया।

उस समय उसने शेख़ के सच्चे प्रेम और प्रतिज्ञा पर विचार किया। और जोश में आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी।

फिर वह कहने लगी कि तुम्हारे शोक में मेरे प्राण जल गये हैं और अब अधिक समय तक पर्दे के भीतर छिपकर जलने को शक्ति मुझमें शेष नहीं रह गई है।

आप इस पर्दे को दूर कर दीजिये ताकि मैं ख़ुदा तक पहुँच सकूँ। मुझे अपने धर्म इस्लाम को दीक्षा दीजिये जिससे कि मैं उचित मार्ग पर आ जाऊँ।

शेख़ ने उसे इस्लाम की दीक्षा दी और उसके मित्र आनन्द के मारे चिल्लाने लगे।

वह सुन्दरी ख़ुदा को चाहने वालों में से बन गई और उसके नेत्रों से आसुओं की नदी बह चली।

शेख़ की शिक्षा पाते ही उस प्रेमिका के हृदय में धर्म्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होगई।

धर्म्म की श्रद्धा से उसका दिल बेचैन होगया। उस निरीह अबला को परमात्मा के प्रेम ने चारों तरफ़ से घेर लिया!

गुफ़्त शेख़ा ताक़ते मन गश्त ताक़ ।
मी नदारम हेच ताक़त दर फ़िराक़ ।।

मी रवम ज़ीं ख़ाकदाने पुर सदा ।
अलविदा ऐ शेख़े आलम अलविदा ।।

चूँ मरा कोताह ख़्वाहद शुद सख़ुन ।
आजिज़म अफ़ुअम कुनो ख़स्मी मकुन ।।

ईं बगुफ़्त आँ माहो दस्त अज़ जाँ फ़िशाँद ।
नीम जाने बूद बर जानाँ फ़िशाँद ।।

जाने शीरीं ज़ो जुदाई ए दरेग़ ।
गश्त पिनहाँ आफ़ताबश ज़ेरे मेग़ ।।

क़त्रए बूद अंदरीं बहरे मजाज़ ।
सूए दरयाए हक़ीक़त रफ़्त बाज़ ।।

जुम्ला चूँ बादे ज़े दुनिया मी रवेम ।
रफ़्त ऊ वो मा हमा हम मी रवेम ।।

ईं चुनीं उफ़्तद बसे दर राहे इश्क़ ।
ईं कसे दानद कि हस्त आगाहे इश्क़ ।।

और उसने शेख़ से कहा कि ऐ शेख़ मुझमें अब जुदाई बर्दाश्त करने की ताब नहीं है ।

मेरी ताक़त जाती रही, मैं इस दुःखभरी दुनियाँ से कूच कर रही हूँ । शेख़ बस अब रुख़सत होती हूँ ।

मैं मजबूर हूँ, मेरा झगड़ा ही ख़तम हो रहा है । इसलिये अब मुझे मुआफ़ करो ।

उस सुन्दरी ने यह कह कर अपना हाथ प्राण पर से खींच लिया । एक तो पहले ही से उसमें आधी जान शेष थी और अब वह भी उसने अपने प्रियतम पर न्यौछावर कर दी ।

प्राणों का त्याग करना कितने शोक की बात है और साथ ही कठिन भी । उसका सूर्य्य घन-घटाओं में विलीन हो गया ।

वह इस प्रकट जगत-रूपी सागर में एक बुलबुले के समान थी और अब वास्तविकता की तरफ़ चली गई ।

हम सभी वायु के समान इस संसार को छोड़कर चले जाते हैं । वह तो चली गई, परन्तु हम सभी किसी न किसी दिन इसी प्रकार चले जायँगे ।

प्रणय-मार्ग में ऐसी बहुत सी बातें होती हैं, परन्तु उनके रहस्यों को वही समझ सकता है जो प्रणय के पेचों को समझता है ।

हर चे मी गोई चु दर रह मुमकिनस्त ।
रहमतो नौमीद गिर्दे ऐमनस्त ॥
नफ़्स ईं असरार न तवानद शुनूद ।
बे नसीबा गूए न तवानद रबूद ॥
ईं बगोशे जाँ ज़े दिल बायद शुनीद ।
न ज़े नक़्वे आबो गिल बायद शुनीद ॥
जंग दिल बा नफ़्स हरदम सख़्त शुद ।
नौहए दर्देह कि मातम सख़्त शुद ॥
दर चुनीं रह चाबुके बायद शिगर्फ़ ।
बू कि बेतवाँ रफ़ अज़ीं दरियाय शर्फ़ ॥
शेख़ रा अज़ रफ़्तने ऊ जाँ बसोख़्त ।
दीदा अज़ बेरूए ऊ आलम बदोख़्त ॥
बा रफ़ीक़ाँ गुफ़ शेख़े ग़मज़दा ।
ख़स्तओ सरगश्तओ मातम ज़दा ॥
कै रफ़ीक़ाँ हाले मारा बिनिगरेद ।
ईं चुनीं अहवाल मारा बिनिगरेद ॥

जो कुछ भी तू कह रहा है वह इस मार्ग में सम्भव है । दया करना और निराश करना दोनों में किसी प्रकार का भय नहीं है ।

नफ़्स इन बातों को नहीं सुन सकता है और भाग्य की सहायता के बिना सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है ।

यह बात प्राणों पर भली प्रकार विदित होनी चाहिये । पानी और मिट्टी के इस प्रकट शरीर की इच्छाओं का इसके साथ सम्बन्ध न होना चाहिये ।

मानवी इन्द्रियों और हृदय के साथ सदैव तुमुल युद्ध होता रहता है । इस शोक के विषय पर दुःख प्रकट कर ।

इस मार्ग पर चलने के लिये एक बहुत चालाक और चुस्त मनुष्य होना चाहिये । तब आशा की जा सकती है कि वह इस अथाह नदी के पार जा सकता है ।

शेख़ के प्राणों में उस प्रेमिका की मृत्यु से धकधक कर के अग्नि जलने लगी और उस चन्द्रवदनी के न रहने से उसने भी संसार की तरफ़ से अपनी आँखें फेर लीं ।

शेख़ बहुत ही उदासीन और दुःखी था । वह परेशान, दुखी और दुर्बल हो गया था ।

उसने अपने साथियों से कहा कि मेरी इस अवस्था को देखो और विचार करो कि मुझ पर क्या बीती है ।

बाशद ईं आग़ाज़ ईं अंजामे इश्क़।
हरकि ख़ाहद कू बरद दर दामे इश्क़॥
मुर्ग़ दाम आमद गिरिफ़्तम ज़ेरे बाल।
मन नख़्वाहम माँद बे ऊ देरे साल॥
अज़ जहाँ सूए जिनाँ ख़्वाहम शुदन।
वज़ पए जानाँ रवाँ ख़ाहम शुदन॥
बामदादाँ दिलवर अज़ आलम बेरफ़्।
शेख़ अज़ पै नीमरोज़े हम बेरफ़्॥
क़ब्र शेख़ो क़ब्रे दुख़्तर साख़्तन्द।
हर दो रा पहलूए हम परदाख़्तन्द॥
पेशवाए इश्क़े जानाँ ख़ुतबा ख़्वाँद।
आशिक़े माशूक़ रा बाहम निशाँद॥
चूँ दो आशिक़ दायमा मदहोश हम।
चूँ दो मौज़ूँ दस्त दर आग़ोश हम॥
जाँ दो क़ब्रे आँ दो यारे दर्दमंद।
दस्त अज़ाँ हसरत ज़दा सरवे बुलंद॥
बाँके आँजा ऐज़िद अज़ लुत्फ़ो कमाल।
कर्द पैदा चशमए आबे ज़ुलाल॥

प्रेम की शुरुआत और ख़ात्मा इसी प्रकार होता है। इश्क़ को क़ाबू में लाना बहुत ही मुश्किल बात है।

चिड़िया जाल में फँस गई थी और मैंने उसे गोद में भी छिपा लिया। अब उसके बिना बहुत दिनों ज़िन्दा नहीं रह सकता।

मैं इस दुनियाँ से बहिश्त को चला जाऊँगा और अपनी प्रेमिका के पीछे रवाना हो जाऊँगा।

प्रातःकाल उस प्रेमिका के प्राण निकले थे और दोपहर के समय शेख़ भी इस संसार को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये।

लोगों ने शेख़ और उस लड़की की समाधियाँ एक ही जगह बनाई और उन दोनों को एक दूसरे की बग़ल में समाधिस्थ कर दिया।

प्रेमिका के प्रेम रूपी क़ाज़ी ने विवाह का मन्त्रोच्चारण किया और प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे से मिला दिया।

यह दो प्रेमी थे जो सदैव आनन्द में रहेंगे। दो मित्रों के समान एक दूसरे के गले मिलते रहेंगे।

उन दोनों की समाधियों से दो ऊँचे- ऊँचे सरो के वृक्ष उत्पन्न हुये।

और इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने प्रभाव से एक मीठे जल का स्रोत भी पैदा कर दिया।

चंद फ़रसंग आँ चुनाँ ख़ुर्रम बुवद ।
हम चुनाँ जाए बेगीती कम बुवद ॥

गर दराँ मंज़िल तुरा बाशद क़रार ।
चार फ़स्ल आँजा न बीनी जुज़ बहार ॥

हेच फ़स्लज़ मेवा ख़ाली नेस्तन्द ।
ता न पिंदारी कि आली नेस्तन्द ॥

हर दो मी आरन्द बारे आशिक़ी ।
बुलअजब कारेस्त कारे आशिक़ी ॥

दरमियाने काबाओ रूम आँ मुक़ाम ।
शुद जियारतगाहे ख़ल्क़ अज़ ख़ासो आम ॥

क़िस्सए "अत्तार" बर ईं माह नेस्त ।
सिर्रे साहब नज़्द कस आगाह नेस्त ॥

उन समाधियों के आस पास थोड़ी दूर तक इतना हरा भरा और रमणीक स्थान है कि जैसा इस दुनियाँ में बहुत कम होगा।

तुम अगर वहाँ जाओ तो वहाँ चारों ऋतुओं में मेवे फलते फूलते पाओगे।

कोई ऋतु ऐसी नहीं कि जिसमें मेवा न होता हो। परन्तु यह न समझो कि वह मेवा स्वादिष्ट नहीं होता है।

बात इसके विपरीत है। वही दोनों प्रेमी प्रेम के फल उत्पन्न करते हैं। यह प्रेम का कारख़ाना है।

प्रणय का रहस्य भी निराला है। काबे और रूम के बीच में यह स्थान जन-साधारण के लिये तीर्थ-स्थान होगया है।

"अत्तार" ने उस प्रेमिका की कहानी नहीं लिखी है। ईश्वर का भेद किसी ज्ञानी को भी विदित नहीं होता है।

जवाब दादन हुदहुद ऊ रा

गुफ़्तए दर बन्द सूरत माँदा तू ।
पाए ता सर दर कुदूरत माँदा तू ॥

इश्क़े सूरत नेस्त इश्क़े मारफ़त ।
इश्क़े शहवत बाज़िए हैवाँ सिफ़त ॥

हर जमाले रा कि नुक़साने बुवद ।
मर्द रा अज़ इश्क़ तावाने बुवद ॥

हर जमाले रा कि बाशद बा ज़वाल ।
कुफ़्र बाशद मस्त गश्तन ज़ाँ जमाल ॥

सूरते अज़ ख़ल्तो ख़ूँ आरास्ता ।
करदा नामे ऊ महे ना कासता ॥

गर शवद आँ ख़ल्तो आँ ख़ूँ कम अज़ो ।
ज़िश्त तर न बुवद दरीं आलम अज़ो ॥

आँ कि हुस्ने ऊ ज़े ख़ल्तो ख़ूं बुवद ।
दानी आख़िर काँ नकूई चूँ बुवद ॥

हुद हुद का सांसारिक प्रेमी को समझाना

हुद हुद ने कहा कि तू इस संसार का सेवक होगया है । सांसारिक वस्तुओं के प्रति तेरे हृदय में मोह उत्पन्न हो गया है । इसलिये अब तू सिर से पैर तक अपवित्र होगया है ।

सांसारिक सौंदर्य पर मुग्ध हो जाना ईश्वर के प्रति प्रेम करना नहीं है वरन् जानवरों से सम्पर्क रखने के समान है । वासनामय प्रेम मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करने से रोक देता है ।

नाशवान् सौन्दर्य पर मुग्ध होना ईश्वर को न मानने के समान है ।

जो वस्तु स्थायी नहीं है उस पर मर मिटना ठीक नहीं है ।

रक्त और माँस से बने हुए मुख को प्रियतमा की उपाधि से भूषित किया जाता है ।

उस रक्त और माँस के दूर होजाने पर तो संसार में उससे अधिक कुरूप वस्तु ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगो ।

फिर विचार करो, वह रूप कैसा है, जिसका बनना और बिगड़ना केवल रक्त और माँस के ऊपर निर्भर है ।

चन्द गरदी गिर्दे सूरत ऐब जो।
हुस्न दर ग़ैबस्तो मन अज़ ऐब जो॥

गर बर उफ़्तद परदा अज़ पेशानेकार।
नै हमी दयार मानद नै देयार॥

मह्व गर्दद सूरते आफ़ाक़ कुल।
इज़्ज़हा कुल्ली बदल गरदद बज़ुल॥

दोस्तीए सूरती ऐ मुख़्तसर।
दुश्मनी गरदद हमा बा यक दिगर॥

आँ कि ऊरा दोस्तीए ग़ैबीअस्त।
दोस्ती ईनस्त कज़ बे ऐबीअस्त॥

हरचे जुज़ ईं दोस्ती रहगीरदत।
बस पशेमानी कि नागह गीरदत॥

हिकायत बर दार शुदन मनसूर हल्लाज

चूँ शुदाँ हल्लाज बरदार आँ ज़माँ।
जुज़ अनलहक़ मी न रफ़्श बर ज़बाँ॥

इस प्रकट रूप के चक्कर में पड़कर तू कब तक उसमें बुराइयाँ और भलाइयाँ निकालता रहेगा। वास्तविक रूप तो गुप्त है और मैं बुराइयाँ निकालने में व्यस्त हो रहा हूँ।

यदि प्रेम के सामने से पर्दा हटा दिया जाय तो न तो वह संसार ही रहेगा और न उसमें रहने वाले सब के सब नाश को प्राप्त हो जायँगे।

इस पृथ्वी और आकाश का रूप ही नष्ट हो जायगा और समस्त आदरमयी भावनाएँ बदनामी के रूप में परिणत हो जावेंगी।

सूरत पर आशिक़ होने को अपने आप से दुश्मनी करना समझ। प्रकट मैत्री पारस्परिक वैरभाव की पोषक है। अदृश्य से मित्रता करना ही सच्ची मित्रता है।

इस मैत्री के अतिरिक्त यदि कोई मनुष्य दूसरा मार्ग ग्रहण करेगा तो वह एकायक आपत्तियों में पड़ जायगा।

मन्सूर के शूली पर चढ़ने की कहानी

मन्सूर जिस समय शूली पर चढ़े उस समय उनके मुख से "अनलहक़" के अतिरिक्त और कोई शब्द नहीं निकलता था।

चूँ ज़बाने ऊ हमी न शिनाख़्तन्द ।
चार दस्तो पाए ऊ अन्दाख़्तन्द ।।
ज़र्द शुद चूँ ख़ूँ बेरफ़्त अज़ वै बसे ।
सुर्ख़ चूँ मानद दराँ हालत कसे ।।
ज़ूद दर मालीद आँ ख़ुरशीद राह ।
दस्त बबुरीदा बरूए हमचो माह ।।
गुफ़्त चूँ गुलगूनए मर्दस्त ख़ूँ ।
रूए रा गुलगूना जाँ करदम कुनूँ ।।
ता नबाशम ज़र्द दर चश्मे कसे ।
सुर्ख़रूई बाशदम आँजा बसे ।।
हर किरामन ज़र्द आयम दर नज़र ।
ज़न बरद काँजा बेतरसीदम मगर ।।
चूँ मरा अज़ तन सरे यकमूए नेस्त ।
जुज़ चुनीँ गुलगूना आँजा रूए नेस्त ।।
मर्दे ख़ूनी सर नेहद चू ज़ेरे दार ।
शेरे मरदश आँ ज़माँ आयद बकार ।।

लोग उनकी बातों को समझने में असमर्थ थे, इसलिये उनके हाथ-पाँव काट डाले ।

जब उनके शरीर का समस्त रक्त बह गया तब वह ज़र्द रंग के होगये । इस अवस्था में किसी के मुख पर लाली कैसे रह सकती है !

और तब वह सूर्य्य बहुत शीघ्र छिप गया (मरगये) । उनके हाथ पैर कटे हुए थे परन्तु मुख चन्द्रमा के समान चमक रहा था ।

उन्होंने कहा कि मनुष्य के लिए रक्त ही उबटन है और इसीलिए मैंने अपने मुख पर उबटन लगा लिया है,

कि किसी को मैं ज़र्द न जचूँ और उस दूसरे स्थान में मुझे बहुत प्रतिष्ठा मिले ।

जिस किसी को मैं ज़र्द दिखलाई पडूँगा वह कदाचित् यह अनुमान करेगा कि मैं वहाँ जाने से भय खा रहा हूँ ।

मेरे शरीर पर एक रोआं भी शेष नहीं रह गया है अतएव उक्त स्थान के लिए मेरे मुख पर ऐसा ही उबटन होना चाहिये ।

जब रक्त में डूबा हुआ मनुष्य शूली के सम्मुख सिर झुकाता है तो वह उस समय बहुत ही बहादुर हो जाता है ।

चूँ जहानम हल्क़ए मीमे बुवद ।
कै चुनीं जाए मरा बीमे बुवद ॥
हरकि रा बा अज़दहाए हफ़्त सर ।
दर तमूज़ उफ़्ताद दायम ख़ाबो ख़र ॥
ज़ीं चुनीं बाज़ीश बिसयार ओफ़्तद ।
कमतरीं चीज़श सरे दार ओफ़्तद ॥

हिकायत मन्सूर

गुफ़्त चूँ दर आतशे अफ़रोख़्ता ।
गश्त आँ हल्लाज कुल्ली सोख़्ता ॥
आशिक़े आमद मगर चोबे बदस्त ।
बर सरे आँ मुश्ते ख़ाकिस्तर नशस्त ॥
पस ज़बाँ बकुशाद हमचूँ आतशे ।
बाज़ मी शोरीद ख़ाकस्तर ख़ुशे ॥
वंगहे मी गुफ़्त बर गोएद रास्त ।
काँ के मी ज़द ऊ अनलहक़ ऊ कुजास्त ॥
उंचे गुफ़्तम उंचे बिशनीदी हमह ।
उंचे दानिस्ती तूवो दीदी हमह ॥
आँ हमह जुज़ अव्वले अफ़साना नेस्त ।
मह्व शुद जानत दरीं वीराना नेस्त ॥

मेरे प्रति तो सम्पूर्ण संसार ही संकीर्ण हो रहा है फिर ऐसी जगह मुझे भय क्यों मालूम होने लगा !

जिस मनुष्य का साथी गर्मी के मौसम और सोते जागते हर वक्त सात सिर वाला अजदहा हो,

और सर उठाता रहता हो उसे इस प्रकार के बहुत से खेल खिलाने पड़ते हैं और उसके लिये शूली की नोंक बहुत छोटी-सी वस्तु है ।

मन्सूर की कहानी

जब धधकती हुई अग्नि में मन्सूर जलकर भस्म हो गया, एक प्रेमी आया, और उस राख के ढेर पर आकर बैठ गया । उसके हाथ में एक डंडा था ।

उस भस्म को डंडे से कुरेदता हुआ वह बड़े क्रोध के साथ बोला, कि अब तो तनिक सत्य बोलो, वह अनलहक़ (अहं ब्रह्मास्मि) की पुकार मचाने वाला इस समय कहाँ है ?

मैंने जो कुछ कहा और तेरे कान में जो कुछ पड़ा वह सब और जो कुछ तूने जाना व देखा,

यह सब भी अभी कथानक के प्रारम्भिक शब्द से बढ़कर नहीं हैं। इसी में तेरा प्राण विलीन हो गया और इस ऊजड़ शरीर को छोड़ गया ।

चूँ ज़बाने ऊ हमी न शिनाख़्तन्द ।
चार दस्तो पाए ऊ अन्दाख़्तन्द ॥

ज़र्द शुद चूँ ख़ूँ बेरफ़ अज़ वै बसे ।
सुर्ख़ चूँ मानद दराँ हालत कसे ॥

ज़ूद दर मालीद आँ ख़ुरशीद राह ।
दस्त बबुरीदा बरूए हमचो माह ॥

गुफ़ चूँ गुलगूनए मर्दस्त ख़ूँ ।
रूए रा गुलगूना जाँ करदम कुनूँ ॥

ता नबाशम ज़र्द दर चश्मे कसे ।
सुर्ख़रूई बाशदम आँजा बसे ॥

हर किरामन ज़र्द आयम दर नज़र ।
ज़न बरद काँजा बेतरसीदम मगर ॥

चूँ मरा अज़ तन सरे यकमूए नेस्त ।
जुज़ चुनीँ गुलगूना आँजा रूए नेस्त ॥

मर्दे ख़ूनी सर नेहद चू ज़ेरे दार ।
शेरे मरदश आँ ज़माँ आयद बकार ॥

लोग उनकी बातों को समझने में असमर्थ थे, इसलिये उनके हाँथ-पाँव काट डाले ।

जब उनके शरीर का समस्त रक्त बह गया तब वह ज़र्द रंग के होगये । इस अवस्था में किसी के मुख पर लाली कैसे रह सकती है !

और तब वह सूर्य्य बहुत शीघ्र छिप गया (मरगये) । उनके हाथ पैर कटे हुए थे परन्तु मुख चन्द्रमा के समान चमक रहा था ।

उन्होंने कहा कि मनुष्य के लिए रक्त ही उबटन है और इसीलिए मैंने अपने मुख पर उबटन लगा लिया है,

कि किसी को मैं ज़र्द न जचूँ और उस दूसरे स्थान में मुझे बहुत प्रतिष्ठा मिले ।

जिस किसी को मैं ज़र्द दिखलाई पड़ूँगा वह कदाचित् यह अनुमान करेगा कि मैं वहाँ जाने से भय खा रहा हूँ ।

मेरे शरीर पर एक रोआं भी शेष नहीं रह गया है अतएव उक्त स्थान के लिए मेरे मुख पर ऐसा ही उबटन होना चाहिये ।

जब रक्त में डूबा हुआ मनुष्य शूली के सम्मुख सिर झुकाता है तो वह उस समय बहुत ही बहादुर हो जाता है ।

चूँ जहानम हल्क़ए मीमे बुवद ।
कै चुनीं जाए मरा बीमे बुवद ॥
हरकि रा बा अज़दहाए हफ़्त सर ।
दर तमूज़ उफ़्ताद दायम ख़ाबो ख़र ॥
ज़ीं चुनीं बाज़ीश बिसयार ओफ़्तद ।
कमतरीं चीज़श सरे दार ओफ़्तद ॥

हिकायत मन्सूर

गुफ़्त चूँ दर आतशे अफ़रोख़्ता ।
गश्त आँ हल्लाज कुल्ली सोख़्ता ॥
आशिक़े आमद मगर चोबे बदस्त ।
बर सरे आँ मुश्ते ख़ाकिस्तर नशस्त ॥
पस ज़बाँ बकुशाद हमचूँ आतशे ।
बाज़ मी शोरीद ख़ाकस्तर ख़शे ॥
वंगहे मी गुफ़्त बर गोएद रास्त ।
काँ के मी ज़द ऊ अनलहक़ ऊ कुजास्त ॥
उंचे गुफ़्तम उंचे बिशनीदी हमह ।
उंचे दानिस्ती तूवो दीदी हमह ॥
आँ हमह जुज़ अव्वले अफ़साना नेस्त ।
महू शुद जानत दरीं वीराना नेस्त ॥

मेरे प्रति तो सम्पूर्ण संसार ही संकीर्ण हो रहा है फिर ऐसी जगह मुझे भय क्यों मालूम होने लगा !

जिस मनुष्य का साथी गर्मी के मौसम और सोते जागते हर वक्त सात सिर वाला अजदहा हो,

और सर उठाता रहता हो उसे इस प्रकार के बहुत से खेल खिलाने पड़ते हैं और उसके लिये शूली की नोंक बहुत छोटी-सी वस्तु है।

मन्सूर की कहानी

जब धधकती हुई अग्नि में मन्सूर जलकर भस्म हो गया, एक प्रेमी आया, और उस राख के ढेर पर आकर बैठ गया। उसके हाथ में एक डंडा था।

उस भस्म को डंडे से कुरेदता हुआ वह बड़े क्रोध के साथ बोला, कि अब तो तनिक सत्य बोलो, वह अनलहक़ (अहं ब्रह्मास्मि) की पुकार मचाने वाला इस समय कहाँ है ?

मैंने जो कुछ कहा और तेरे कान में जो कुछ पड़ा वह सब और जो कुछ तूने जाना व देखा,

यह सब भी अभी कथानक के प्रारम्भिक शब्द से बढ़कर नहीं हैं। इसी में तेरा प्राण विलीन हो गया और इस ऊजड़ शरीर को छोड़ गया।

अस्ल बायद् अस्ल मुसतग़नी व पाक ।
गर बुवद् फ़रों अगर न बुवद् चे बाक ॥
हस्त ख़ुर्शीदे हक़ीक़ी बर दवाम ।
गो नै जर्रा माँ न साया वस्सलाम ॥

हिकायत शेख़ बसरा बर सरे गोर मुर्दा

दफ़्न मी कर्दन्द मरदे रा बख़ाक ।
शेख़े बसरी शुद् व पेशे आँ मग़ाक ॥
सूए आँ गोरो लहद् मी विनगरीस्त ।
बर सरे आँ गोर वर ख़ुद मी गिरीस्त ॥
पस चुनीं गुफ़्ता कि कारे मुशकिलस्त ।
कीं जहाँ रा गोर आख़िर मंज़िलस्त ॥
वाँ जहाँ रा अव्वलीं मंज़िल हमींनस्त ।
अव्वलीनो आख़रीं ज़ेरे ज़मींनस्त ॥
दिल चो बन्दी बर जहाने जुम्ला रंग ।
काख़िरश ईनस्त यानी गोरे तंग ॥
चूँ न तरसी अज़ जहाने साबनाक ।
कव्वलश ईनस्त यानी ज़ेरे ख़ाक ॥

ठीक भी है, उस मस्त तथा पवित्र सत्यता ही का होना आवश्यकीय है । अब डालियाँ हों चाहे न हों, इस मूल की भी कोई चिन्ता नहीं है ।

वास्तविक सूर्य्य उज्ज्वलता तो सदैव उपस्थित है । यदि कण और छाया नहीं रहते तो जाने दो ।

शेख़ बसरा का मुर्दे को गड़ते हुए देखना

शेख़ हसीन बसरा कहीं जा रहे थे । मार्ग में उन्होंने देखा कि लोग एक मृतक को गाड़ रहे हैं ।

समाधि को देखकर वह वहीं बैठ गये और स्वयम् रोने लगे ।

उन्होंने अपने हृदय में सोचा कि यह तो बड़ी जटिल समस्या है । संसार का अन्त समाधि ही है ।

और फिर उस दूसरे संसार में पहुँचने की पहली सीढ़ी भी यही है । अर्थात पहली और अन्तिम दोनों मंज़िलें इसी नाशवान् जगत में हैं ।

इस बहुरंगिनी दुनिया में क्यों लगन लगाता है, जिसका अन्त एक संकीर्ण समाधि है ?

और उस संसार में जाने से भय क्यों नहीं खाता जिसका सफ़र समाधिस्थ होजाने के उपरान्त प्रारम्भ होता है ?

चंद अज़ीं चूं आख़रीं ख़ाहद बुदन।
वाये काँ अव्वल चुनीं ख़ाहद बुदन॥
हेच कसरा दर पसे ईं पर्दा नेस्त।
वा कसे ऊ रा बजारी मुर्दा नेस्त॥
हर चिराग़े रा कि बाशद बाद पेश।
चूं तवानी राह बुर्द आज़ाद बेश॥
कर्द मी ख़ाही ज़दन दर पर्दए।
बा कसे ज़न कू न दारम मुर्दए॥
चूँ तो सौदाई वदाग़े मी बरी।
सर सरे मारा चिराग़े मी बरी॥
मी नतरसी चूँ चिराग़े ज़ूद मीर।
ज़ूद मीरो गर तवानी ज़ूद मीर॥
गर बेमीरद ईं चिराग़त नागहे।
रह बसर ना बुर्दा उफ़्ती दर चहे॥
गर चिराग़े मुर्दा रा जोई वसे।
दर हमा आलम ख़बर नदेहद कसे॥

इस संसार से कब तक सम्बन्ध रक्खेगा जिसका अन्त इस प्रकार है और जिसका प्रारम्भ समाधिस्थ होने के उपरान्त होता है। इसके विषय में हम कह ही क्या सकते हैं?

बड़ी कठिनता है। यह भेद किसी पर भी प्रकट नहीं है और न इसके प्रेम में किसी की मृत्यु होती है।

जिस दीपक के सामने से होकर वायु चल रही हो उसे तू स्वतंत्रता के साथ लेकर कैसे चल सकता है।

यदि तू पर्दे के अन्दर प्रवेश करना चाहता है तो किसी ऐसे मनुष्य से सम्बन्ध उत्पन्न कर जिसके यहाँ कोई मृतक नहीं है।

जब तू पागल है और संसार की विलक्षणता पर प्राण देता है तब तो तू एक आँधी हुआ जो हमारे दीपक को बुझा देती है।

अत्यन्त शीघ्र समाप्त हो जाने वाले दीपक को इस बात का डर लगना चाहिये कि वायु उसे शीघ्र ही बुझा देती है।

तू भी उसी दीपक के समान है। फिर तुझे भय क्यों नहीं मालूम होता? तूने अपना मार्ग अभी समाप्त नहीं किया है।

यदि तेरे जीवन का यह दीप एकाएक बुझ जाय तो तू अवश्य ही किसी गड्ढे में गिर पड़ेगा।

हर चिराग़े रा कि बादे दर ख़ूद ।
गर बसे बर सर ज़नी अज़ वै चे सूद ॥
चूँ चिराग़ज़ जाए बेजाए रसीद ।
चूँ बदाँजा बाज़ शुद शुद ना पेदीद ॥
राहे बीना ज़ीं जहाँ ता आँ जहाँ ।
बेश यकदम नेस्त जायज़ दरमियाँ ॥
अज़ जहाँनत चूँ बर आयद जाँ दमे ।
ईं जहाँनत आँ जहाँ गरदद हमे ॥
ईं जहाँ ता आँ जहाँ बिसयार नेस्त ।
जुज़ दमे अन्दर मियाँ दीवार नेस्त ॥
चूँ बर आयद आँ दमत अज़ जाने पाक ।
पस निगूँ सारत बेयनदाज़त बख़ाक ॥
मर्ग रा बर ख़ल्क़ अज़मे जाज़िमस्त ।
जुम्ला रा बर ख़ाक ख़ुफ़्तन लाज़िमस्त ॥
मर्ग न अहमक़ न बुख़रद रा गुज़ाश्त ।
न यके नेको न यक बद रा गुज़ाश्त ॥

फिर उस बुझे हुए दीपक का पता तुझे संसार में कोई भी नहीं दे सकेगा । वह तुझे कहीं भी नहीं मिलेगा ।

जिस दीप को वायु का झोका उड़ा ले गया, उसके पाने के लिये लाख प्रयत्न कर तब भी न मिलेगा ।

जब वह अपने स्थान से हट गया तो तुझे समझ लेना चाहिये कि वह नष्ट-भ्रष्ट हो गया ।

इस संसार से वह संसार बुद्धिमान् मनुष्य के लिये बहुत दूर नहीं है । इस जग से जैसे ही तेरी साँस निकली वैसे ही यह जगत दूसरे जगत के रूप में परिणत हो जाता है ।

यह संसार उस दूसरे से अधिक दूर नहीं है । बस एक सांस रूपी दीवाल बीच में स्थित है ।

जब तेरी मृत्यु आती है, तुझे औंधे मुख पृथ्वी पर गिरा देती है ।

सांसारिक मनुष्यों पर मृत्यु अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है और प्रत्येक को किसी न किसी दिन पृथ्वी पर सोना अवश्य ही होगा ।

मृत्यु ने न मूर्ख को छोड़ा और न बुद्धिमान् को । उसके लिये भले और बुरे समान हैं ।

गर तु ज़ीं क़ौमी वगर ज़ाँ दीगरी ।
हमचो ईशाँ बुगुज़री ता बिनगरी ॥
हर कि मुर्दो गश्त ज़ेरे ख़ाक पस्त ।
हर कसश गोयद बेया सूदो बेरस्त ॥
हर किरा अरज़ीं तेह्मतन हस्त मर्ग ।
देग रा सर बर गिरफ्तन नेस्त बर्ग ॥
अलहक़्क़त दुनिया चु पुर बर्ग ओफ़ताद ।
कव्वलीं आसाइशे मर्ग ओफ़ताद ॥
ख़ेज़ ता गामे बगरदूँ दर नेहेम ।
पस सरे ईं मर्गे पुर ख़ूँ बर नेहेम ॥
मीं रवम गिरयाँ चो मेग अज़ आमदन ।
आह अज़ रफ़्तन दरेग़ अज़ आमदन ॥

हिकायत गिरीसतन दीवाना दर दमे नज़ा

आँ यके दीवानए अज़ पहले राज़ ।
गश्त वक़्ते नज़ा जाँकन्दन दराज़ ॥
अज़ सरे बेक़ूव्वतीयो इज़्तेरार ।
हमचो अब्रे ख़ँ फ़िशाँ बेगिरीस्त ज़ार ॥

तू चाहे मूर्ख हो अथवा ज्ञानी, जिस प्रकार और सब यहाँ से चले गये, तुझे भी जाना है ।

परन्तु जो मनुष्य पृथ्वी के अन्दर विलीन हो जाता है, लोग उसके विषय में कहते हैं कि चलो अब वह संसारिक झंझटों से छूटकर सुखी हो गया ।

जब रुस्तम ऐसे पहलवान की मृत्यु आ जाती है तो वह हाँडी का ढक्कन खोलने तक का अवकाश नहीं पाता है ।

सत्य तो यह है कि यदि इस संसार में तेरा घर पूरा भरा है तो मृत्यु तेरे आनन्द की प्रथम सीढ़ी है ।

उठ, आकाश के ऊपर अपना क़दम रख । इस रक्त से परिपूर्ण संसार का विचार ही मस्तिष्क से निकाल बाहर कर ।

जब हम इस संसार में उत्पन्न होते हैं तो खूब रोते हैं । (जाने का हाल पहले ही कह चुके) दोनों ही अवस्थाएँ खेद जनक हैं ।

एक पागल का दुःखित अवस्था में रोना

एक पागल जिसके हृदय में पीड़ा थी, जब मरने लगा तो प्राण निकलने का उसे बहुत कष्ट हुआ ।

व्याकुल होकर और कमज़ोरी से तड़प कर अश्रुपात करने लगा,

गुफ़्‌ चूँ जाँ ऐ ख़ुदा आवरदई ।
चूँ हमी बुर्दी चिरा आवरदई ॥
गर नबूदे जाने मन आसूदमे ।
ज़ीं हमा जाँकन्दन ऐ मन बूदमे ॥
नै मराअज़ ज़ीस्तन मुरदन बुदे ।
नै तुरा आवुर्दनो बुरदन बुदे ॥
काश कै रंजे शुद आमद नेस्ते ।
गर शदायद नेस्ते बद नेस्ते ॥
गर चे फ़र्ज़ उफ़ाद मुर्दन पेशा कर्द ।
मन नदारम ज़ोहरा ईं अंदेशा कर्द ॥
ईसिए मरियम कि बूदे शाद ऊ ।
चूँ ज़े मर्गे ख़ेश कर्दे याद ऊ ॥
बा चुनाँ बख़्ते कि बूदा हासिलश ।
आँ चुनाँ बीमे फ़िताद‍े दर दिलश ॥
कज़ अरक़ आग़श्ता गश्ते जाए ऊ ।
वाँ अरक़ ख़ूँ बूद सर ता पाए ऊ ॥

और इस प्रकार कहने लगा कि हे ईश्वर तूने ही मुझे इस संसार में प्राण देकर उत्पन्न किया था। यदि इस प्राण को फिर ले जाना था तो इसे लाया ही क्यों था ?

यदि मेरे प्राण न होते तो मैं बड़े आनन्द से अपने दिन व्यतीत करता और फिर इस समय उनके निकलने के कष्ट से बचता।

न मैं उत्पन्न ही होता और न मुझे मृत्यु के मुख में ही जाना पड़ता। तुझे भी मुझे यहाँ भेजकर फिर ले जाने की आवश्यकता न होती।

सारांश यह कि यह कोई भी कष्ट उठाने न पड़ते। कष्ट न होने में किसी प्रकार की बुराई भी न थी।

यद्यपि मरना अवश्यम्भावी है, परन्तु मैं इसका विचार भी नहीं कर सकता।

महात्मा ईसा सदैव प्रसन्न रहा करते थे। परन्तु वह भी जब अपनी आनेवाली मृत्यु की सुध किया करते थे,

तो उन्हें उतना ही भय होता था और दिल उनका घबराता था।

और इसके कारण उनके शरीर से पसीना निकलने लगता था और यह पसीना क्या था ? उनके बदन का सम्पूर्ण रक्त।

दर सिफ़त वादिए इश्क़ गोयद

कस दरीं वादी बजुज़ आतश मबाद।
जाँ के आतश नेस्त इश्क़श ख़ुश मबाद॥

इश्क़ आँ बाशद कि चूँ आतश बुवद।
गर्म रौ सोज़िंदओ सरकश बुवद॥

आक़बत अंदेश नबुवद यक ज़माँ।
बर कुशद .ख़ूनश बआतश सद जहाँ॥

लह्ज़ए न काफ़िरी दानद न दीं।
लह्ज़ए न शक शिनासद न यक़ीं॥

नेको बद दर राहे ऊ यकसाँ बुवद।
.ख़ुद चो इश्क़ आमद न ईंनो आँ बुवद॥

ऐ मुबाही ईं सख़ुन आँने तो नीस्त।
मुरतदी दीं शौक़ दर जाने तो नीस्त॥

हरचे दारद जुमला दर बाज़द ब नक़्द।
वज़ विसाले दोस्त मी नाज़द ब नक़्द॥

प्रेम की विशेषताएँ

इस घाटी में बिना अग्नि के कोई प्रवेश न करे और जो आग के समान जलता न हो उससे उसका प्रेम ही प्रसन्न न हो।

जिस मनुष्य में प्रणय की अग्नि दहकती हो वह कभी प्रसन्न चित्त न रहे। प्रेमी वही होता है जिसमें अग्नि की जलन हो और वह भी इतनी तीव्र कि दूसरों को जलादे।

वह मस्त रहे। उसे अपना भी ज्ञान न रहे और क्षण भर के लिये भी फलाफल का विचार न करे।

उसका रक्त सैकड़ों सांसारिक मानवों को अग्नि में डाल दे। उसको एक क्षण भर के लिये भी अपना अथवा अपने धर्म का ध्यान न आवे।

अर्थात् उसके रक्त की गर्मी उन सब में आग लगा दे। इसी प्रकार विश्वास और सन्देह का भी उसे विचार न होना चाहिये और भलाई-बुराई उसकी दृष्टि में समान जचें।

क्योंकि जब प्रणय का भूत उसके शिर पर सवार होता है तब उसे इन बातों की भिन्नता का ज्ञान ही नहीं रहता है।

ऐ प्रत्येक वस्तु को उचित समझने वाले! तब तू इन वस्तुओं के विषय में कुछ भी नहीं कह सकता है।

दीगराँ रा वादा दर फ़रदा बुवद ।
आरिफ़ाँ रा नक़्द हम ईंजा बुवद ॥
ता नसोज़ी .खेश रा एक बारगी ।
कै तवानी रस्त अज़ ग़मख़ारगी ॥
ता बेरेशम दर दरूने .खुद न सोख़्त ।
दर मुफ़र्रेह कै तवानी .खुद फ़रोख़्त ॥
माही अज़ दरिया चु दर सेहरा फ़ितद ।
मी तपद ता बाज़ दर दरिया फ़ितद ॥
दिल तपद पैवस्ता दर सोज़ो गुदाज़ ।
ता बजाए .खुद रसद नागाह बाज़ ॥
इश्क़े जानाँ आतशस्तो अक़्ल दूद ।
इश्क़ कामद दर गुरेज़द अक़्ल .ज़ूद ॥
अक़्ल दर सौदाए इश्क़ उस्ताद नेस्त ।
इश्क़ कारे अक़्ले मादरज़ाद नेस्त ॥
गर ज़े ग़ैबत दीदए बख़्शंद रास्त ।
अस्ले इश्क़ आँजा बे बीनी कज़ कुजास्त ॥

अब तू धर्म्म से पृथक हो गया है। तेरे प्राणों का किसी से भी सम्बन्ध नहीं है। प्रेमी वही है जो अपने सर्वस्व को खो दे और केवल यार के मिलाप की लगन में मग्न रहे।

जब तक तू अपने आपको बिल्कुल ही न जला डालेगा तब तक तू दुखों से नहीं बच सकता।

जब तक रेशम का कोया अपने दिल को नहीं जला डालता तब तक उसके हृदय को शक्ति प्रदान करने वाले घेरे में नहीं लाया जा सकता है।

जब मछली पानी में से किसी प्रकार निकल कर ज़मीन पर आ पड़ती है तब तड़पने और उछलने-कूदने लगती है ताकि पुनः पानी में पहुँच जावे। इसी प्रकार दिल सदैव छटपटाया करता है, ताकि फिर से किसी प्रकार अपने ठिकाने पर पहुँच जावे।

प्रेमिका का प्रेम अग्नि है और बुद्धि केवल धुआँ है। जैसे ही प्रेम प्रज्वलित हो उठता है, धुआँ विलीन हो जाता है।

प्रेम और ज्ञान में स्वभा वतः किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। अतएव ज्ञान प्रेम का पथ-प्रदर्शक नहीं हो सकता।

यदि तुझे एक आँख उस महान शक्ति की तरफ़ से प्रदान कर दी जावे तब तू समझ जावे कि प्रेम की जड़ कहाँ है।

मस्त यक यक ज़र्रा अज़ मस्तीए इश्क़।
सर बुरूँ आवुर्द अज़ हस्तीए इश्क़॥
गर तुरा आँ चश्मे ग़ैबी बाज़ शुद।
बा तो ज़र्राते जहाँ हमराज़ शुद॥
वर बचश्मे अक़्ल बुकुशाई नज़र।
इश्क़ रा हरगिज़ न बीनी पा ब सर॥
मरदेकार उस्ताद बायद इश्क़ रा।
मरदुमे आज़ाद बायद इश्क़ रा॥
न तू कार उफ़्तादई न आशिक़ी।
मुर्दई तू इश्क़ रा नालाइक़ी॥
ज़िंदा दिल बायद दरीं रह सद हज़ार।
ता कुनद दर हर नफ़स सद जाँ निसार॥

प्रेम की मस्ती में प्रत्येक परमाणु मतवाला हो रहा है और इन सबकी उत्पत्ति भी प्रेम से है।

यदि तेरी वह दैवी आँख खुल जायगी तो संसार के समस्त परमाणु तुझसे रहस्य की बातें करेंगे।

और यदि ज्ञान-चक्षु से तू देखेगा तो प्रणय का आदि और अन्त कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं होगा।

प्रणय के लिये एक अनुभवी मनुष्य की आवश्यकता है। उसको अत्यन्त साहसी होना भी आवश्यकीय है।

तुझे न तो प्रणय से ही काम पड़ा है और न प्रणयी से। तू एक प्रकार से मृतक है। प्रेम करने योग्य नहीं है।

इस मार्ग में सहस्रों साहसी पुरुषों की आवश्यकता है, जो हर घड़ी सैकड़ों जानें प्रेमिका पर न्योछावर करते रहें।

रूमी

(जन्म सन् १२०७ ई०, मृत्यु सन् १२७३ ई०)

यह एशिया माइनर में रूम के निवासी थे और इसी कारण इनका पूरा नाम जलालुद्दीन रूमी था। यह मौल्वी पन्थ के साधुओं में से थे, जो नाचा भी करते थे। इस पन्थ को इन्होंने अपने गुरु शम्शतबरेज़ की मृत्यु के उपरान्त चलाया था। वास्तव में ईरान के सूफ़ी कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। बहुधा लोग इन्हें सर्वश्रेष्ठ भी कहते हैं। इनकी मसनवी में जो क़ुरानी पहलवी भी कहलाती है, २६६०० दो पदी छंद हैं। यह पुस्तक संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में गिनी जाने योग्य है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता के द्वारा हुई थी। इनके पिता तथा बादशाह का कुछ सम्बन्ध था। बादशाह के अत्याचारों के कारण उन्हें दूर दूर के सफ़र करने पड़े थे। इस कारण जलालुद्दीन का बचपन इधर उधर घूमने ही में व्यतीत हुआ। बग़दाद, मक्का, मलाविया लारिन्दा, क़ुनिया इत्यादि का भ्रमण इन्होंने किया था। किम्वदन्ती प्रचलित है कि नीशाँपुर में इनकी भेंट अत्तार से हुई, जिन्होंने बताया कि बच्चे का भविष्य बहुत ही अच्छा होगा और इलाहीनामा की एक प्रति भी दी।

रूमी ने दो विवाह किये थे, जिनसे उसके दो लड़के और एक लड़की हुई थी। इन लड़कों में से एक के कारण रूमी के गुरु की मृत्यु हुई। जो निकल्सन का कहना है, "एक बहुत ही दुर्बल मनुष्य था। काले कपड़े से वह अपने शरीर को ढका रखता था। संसार के रगमंच पर आकर उसने कुछ दिनों तक दर्शकों को अपनी झलक दिखलाई और फिर सबके हृदयों में करुण रस भरकर अन्तर्धान हो गया। उस समय उसका प्रभाव लोगों पर बहुत ही अधिक था। जिस प्रकार प्लेटो का अपने गुरु सोक्रेटीज़ के साथ शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध था, उसी प्रकार जलालुद्दीन रूमी का शम्शतबरेज़ के साथ, जिनके नाम पर उन्होंने अपनी पुस्तक की रचना की थी। शम्शतबरेज़ की मृत्यु के उपरान्त भी, मेरी समझ में, उन्हें मृत कहना भूल थी।"

विज्ञान के रूखेपन के कारण रूमी का चित्त रहस्यवाद की तरफ़ गया और इस विषय में उन्होंने आशातीत उन्नति की।

विनफ़ील्ड के कथनानुसार रूमी की समानता रहस्यवाद में कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी मनुष्य का इस विषय में सन्देह, केवल उनकी मसनवी, दीवान शम्शतबरेज़ के पढ़ने ही से, विश्वास में परिणत हो सकता है।

इन दोनों में कौनसी रचना अच्छी है, यह निश्चय करना कठिन है। इस विषय में निकल्सन के शब्दों को उद्धृत करता हूँ :—

"मसनवी में धार्म्मिक गीतों के सभी गुण वर्त्तमान हैं। पर्वत के गान गुलाब पुष्प के रंग तथा सुगन्ध, जंगल की हलचल इत्यादि से पद ओत

प्रोत हो रहे हैं। ईश्वर की व्यापकता सभी में दिखलाई गई है। यही नहीं, वरन् इसमें और भी अनेक विशेषताएँ हैं। रंग, रूप और गन्ध प्रियतम के दर्पण के समान हैं। सांसारिक प्रेम, और उस स्थान की यात्रा जहाँ उपवन में खिले हुए गुलाब पुष्प कभी मुर्झाते नहीं है, केवल उसी प्रियतम के लिये लिखे गये हैं।"

इसके उपरान्त :—

"एक बहुत बड़ी नदी है, जिसकी धार प्रशान्त है और जो बहुत ही गहरी है। भिन्न भिन्न और अनोखे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिवेष्ठित स्थानों से बहती हुई, यह अनन्त सागर की ओर अग्रसर होती है। दूसरी गम्भीर गर्जन के साथ फेन उगलती हुई और अठखेलियाँ करती हुई पहाड़ियों में विलीन होजाती है।"

रूमी की कविता के विषय में वह लिखते हैं, "उनकी कविता को पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो हम किसी स्वर्गीय वेगवती सरिता का गान सुन रहे हैं। शब्द योजना, हृदय को हिलानेवाली और आनन्द प्रदायिनी है।"

उनकी प्रमुख रचनाएँ यह हैं :—

मसनवी,

दीवान शम्शतबरेज़।

सवाल करदने ख़लीफ़ा अज़ लैला व जवाबे ऊ

गुफ़ लैला रा ख़लीफ़ा काँ तुई।
क़ज़ तो मजनूँ शुद परीशानो ग़वी॥
अज़ दिगर ख़ूबाँ तो अफ़ज़ूँ नेस्ती।
गुफ़ ख़ामुश चूँ तो मजनूँ नेस्ती॥
दीदए मजनूँ अगर बूदे तुरा।
हर दो आलम बेख़तर बूदे तुरा॥
बाख़ुदी तू लेक मजनूँ बेख़ुदस्त।
दर तरीक़े इश्क़ बेदारी बदस्त।

सबब तर्क करदन इबराहीम अद्हम तख़्तो ताज रा

ख़ुफ़्ता बूद आँशह शबाना बर सरीर।
हारिसाँ बर बाम अन्दर दारो गीर॥
क़स्दे शह अज़ हारिसाँ आँहम नबूद।
कि कुनद जाँ दफ़ए दुज़दानों रनूद॥

ख़लीफ़ा का लैला से प्रश्न करना और उसका उत्तर

ख़लीफ़ा ने लैला से प्रश्न किया, क्या तू ही वह स्त्री है जिसके कारण मजनूँ हैरान और मारा मारा फिरता है ?

दूसरी सुन्दर युवा स्त्रियों से तो तू बढ़कर (श्रेष्ठ) नहीं है। लैला ने उत्तर दिया बस आप शान्त रहिये।

आप मजनूँ तो हैं नहीं; यदि आप को मजनूँ की आँख मिलती तो दोनों लोकों की प्रतिष्ठा आपकी दृष्टि में न रहती।

आप होश में हैं और मजनूँ बेहोश है। प्रेम के मार्ग में चतुरता बहुत बुरी वस्तु है।

इबराहीम अद्धम का अकारण राज्य-सिंहासन व मुकुट का त्याग करना

रात्रि में वह बादशाह सिंहासन पर सो रहा था और रक्षक सिपाही कोठे पर पहरा दे रहे थे।

बादशाह का यह मन्तव्य न था कि वह रक्षकों को नियुक्त कर चोरों और दुष्ट पुरुषों को दूर रक्खे।

ऊ हमी दानिस्त काँ कू आदिलस्त ।
फ़ारिग़स्त अज़ वाक़ेया ऐमन दिलस्त ॥
बर सरे तख़्ते शुनीद आँ नेकनाम ।
तक़्तक़ेयो हाए हूए शब ज़े बाम ॥
गामहाए तुन्द बर बामे सरा ।
गुफ़ बाखुद ई चुनीं ज़हरा केरा ॥
बाँग ज़द बर रौज़ने क़स्र ऊ के कीस्त ।
ईं नबाशद आदमी माना परीस्त ॥
सरफ़ेरो करदन्द क़ौमे बुलअजब ।
मा हमी गरदेम शब बहरे तलब ॥
हैं चे मी जोयेद गुफ़न्द उशतुराँ ।
गुफ़ उशतर बाम बर के जुस्त हाँ ॥
पस बगुफ़्तन्ददश कि तू बर तख़्ते जा ।
चूं हमी जोई मुलाक़ाते इला ॥
ख़ुद हमाँ बद दीगर ऊ रा कस नदीद ।
चूँ परी अज़ आदमी शुद ना पदीद ॥

क्योंकि उसको यह भले प्रकार से ज्ञात था कि जो बादशाह न्यायप्रिय है उसपर कोई भी कष्ट नहीं आता ।

परन्तु उस श्रेष्ठ पुरुष ने सिंहासन पर किसी के कुछ शब्द और ऊधम होने की आहट सुनी,

वह अपने दिल में विचारने लगा कि यह किसका साहस है कि इस प्रकार महल के कोठे पर धमाके से पैर रक्खे ।

उसने कोठे के झरोखे से डाँट कर कहा, कौन है ? यह तो पुरुष नहीं शायद परी है ।

कोठे पर से कुछ अचम्भित लोगों ने सिर झुकाकर कहा, रात्रि में हम ढूँढने निकले हैं ।

बादशाह ने पूछा, क्या ढूँढने निकले हो ? लोगों ने उत्तर दिया, ऊँटों को । बादशाह ने पुनः प्रश्न किया, क्या ऊँट उचक कर कोठे पर पहुँच गया ?

उन लोगों ने बादशाह को उत्तर दिया, फिर तू इस प्रतिष्ठित सिंहासन पर ईश्वर से मिलाप करने की इच्छा क्यों रखता है ?

बस यही हुआ कि इसके पश्चात् उस बादशाह को किसी ने नहीं देखा और परी के समान वह लोगों की दृष्टि से ओझल होगया ।

मानी अश पिनहाँ व ऊ दर पेशे ख़ल्क़।
ख़ल्क़ कै बीनन्द ग़ैरे रीशो दल्क़॥
चूँ जे चश्मे ख़ेश ख़लक़ाँ दूर शुद।
हमचु अनक़ा दर जहाँ मशहूर शुद॥

इनकार मजनूँ अज़ फ़स्द

जिस्मे मजनूँ रा ज़े रंजे दूरये।
अन्दर आमद नागहाँ रंजूरये॥
ख़ूँ बजोश आमद ज़े शोले इशतियाक़।
ता पदीद आमद बराँ मजनूँ फ़नाक़॥
पस तबीब आमद बदारू कर्दनश।
गुफ़्त चारा नेस्त गैरज़ रग ज़नश॥
रग ज़दन बायद बराए दफ़ए ख़ूँ।
रग ज़ने आमद बद आँजा ज़ू फ़नूँ।
बाज़ुवश बस्तो कुशादाँ नेशे ऊ।
बाँग बर ज़द बरवे आँ माशूक़ जू॥
मुज्दे ख़ुद बिसतांनो तर्के फ़ँस्द कुन।
गर बेमीरम गो बेरो जिस्मे कोहुन।

उसका आन्तरिक गुण गुप्त था और उसकी सूरत लोगों के समक्ष थी। लोग दाढ़ी और गुदड़ी के अतिरिक्त और क्या देखते हैं!

परन्तु जब वह अपनी प्रजा की आँखों से परे होगया तो इस संसार में उन्क़ा (एक विशेष पक्षी) की भाँति प्रसिद्ध होगया।

मजनूँ का फ़स्द खुलवाने (रग से ख़ून निकलवाने) से मना करना

मजनूँ को वियोग के कष्ट से सहसा एक शारीरिक बीमारी उत्पन्न होगई, शोक की जलन से उसके ख़ून में उबाल आगया जिसके कारण मजनूँ के बदन पर दाने पड़ गये।

वैद्य उसका इलाज करने को आया और कहा कि रग से ख़ून निकालने के अतिरिक्त इसका अन्य इलाज नहीं।

ख़ून को निकालने के लिये इसकी रग फाड़ देना चाहिये। इसको सुनने के पश्चात् एक चतुर फ़स्द खोलने वाला आया।

फ़स्द खोलने वाले ने मजनूँ के हाथ बाँध दिये और अपना नश्तर (एक यन्त्र) निकाल लिया। मजनूँ ने उसको डाँट कर पूछा, यह क्या है?

तू अपना वेतन ले ले और मेरी फ़स्द न खोल। अगर मैं इस बीमारी में मृत्यु को प्राप्त भी हो जाऊंगा तो क्या होगा पुराना शरीर न रहेगा।

गुफ़्त आख़िर तू चे मी तरसी अज़ाँ।
चूँ नमो तरसी तो अज़ शेरे अरीं॥

शेरो गुर्गो ख़िर्सो बूज़ो हरददा।
गिर्द बर गिर्द तो शब्र गिर्द आमदा॥

गुफ़्त मजनूँ मन नमी तरसम ज़े नेश।
सब्रे मन अज़ कोहे संगीं हस्त बेश॥

मुनबिलम बे ज़ख़्म ना सायद तनम।
आशिक़म बर ज़ख़्महा बर मे तनम॥

लेक अज़ लैला वजूदे मन पुरस्त।
ईं सदफ़ पुर अज़ सिफ़ाते आँ दुरस्त॥

तरसम ए फ़स्साद अगर फ़स्दम कुनी।
नेश रा नागाह बर लैला ज़नी॥

दानद आँ अक़्ले कि ऊ दिल रौशनीस्त।
दरमियाने लैलए मन फ़र्क़ नीस्त॥

मन केअम लैला व लैला कीस्त मन।
मा यके रूहेम अन्दर दो बदन॥

फ़स्द खोलने वाले ने कहा, भला तुम इस फ़स्द से क्यों डरते हो ? तुम तो वन के शेर से भी नहीं डरते।

तुम्हें तो हर समय शेर, भेड़िये, रीछ, चीते, फाड़ खाने वाले जानवर हर तरफ़ से रातदिन घेरे रहते हैं।

मजनूँ ने कहा, मैं नश्तर से नहीं डरता; मैं तो पहाड़ से भी अधिक धैर्य में अटल हूँ।

मैं वह तीर खाने वाला हूँ कि बेतीर लगे मेरे शरीर को चैन नहीं मिलता, मैं तो प्रेमी हूँ और ज़ख़्म (घाव) खा खा कर अकड़ा करता हूँ।

परन्तु मेरे सम्पूर्ण शरीर में तो लैला ही व्याप्त है और इस शरीर रूपी सीपी में उसी मोती की झलक भरी है।

इसलिये ऐ फ़स्साद मुझे डर है कि यदि तू मेरी फ़स्द खोलेगा तो यह नश्तर कहीं लैला के न लग जाय !

जिस पुरुष का हृदय शुद्ध है उसकी बुद्धि यह समझेगी कि मुझमें और लैला में कुछ अन्तर नहीं।

"मैं" लैला हूँ और लैला "मैं" है। प्रत्यक्ष में दो शरीर दृष्टिगोचर है। परन्तु वास्तव में दोनों में प्राण एक ही है।

हिकायत मजनूँ

दीद मजनूँ रा यके सहरा नवर्द ।
दर बियाबाने ख़मुश बेनशिश्ता फ़र्द ॥
रेग काग़ज़ करदा वंगुश्ताँ क़लम ।
मी नवीसद नामा बहरे कस रक़म ॥
गुफ़्तश ए मजनूने शैदा कीस्त ईं ।
मी नवीसी नामा बहरे कीस्त ईं ॥
गुफ़्त मश्क़े नामे लैली मी कुनम ।
ख़ातिरे ख़ुद रा तसल्ली मी देहम ॥

इश्क़ मजाज़ी

हीं रिहा कुन इश्क़हाये सूरती ।
यश्क़ बर सूरत न रूहाएसती ॥
आँचे माशूक़स्त सूरत नेस्ताँ ।
ख़ाह इश्क़े ईं जहाँ ख़ाह आँ जहाँ ॥
आँचे बर सूरत तो आशिक़ गश्तई ।
चूँ बरूँ शुद जाँ चेरायश हश्तई ॥

मजनूँ की एक कहानी

मरुभूमि के एक रास्तागीर ने मजनूँ को एक मैदान में चुपचाप (शान्त) और अकेला बैठा हुआ देखा।

रेत को कागज़ और अपनी उँगलियों को लेखनी बनाकर किसी के लिये पत्र लिख रहा है।

उसने मजनूँ से पूछा, ऐ प्रेमी मजनूँ ! यह क्या बात है ? तू पत्र लिखता है। यह किसके नाम लिखता है ?

मजनूँ ने उत्तर दिया कि मैं लैला के नाम की मश्क़ (अभ्यास) कर रहा हूँ; अपने हृदय को इसी प्रकार से धैर्य देता हूँ।

संसारी प्रेम

तू इन ऊपरी (बनावटी) प्रेमों को त्याग दे। रंगरूप और मुखों के ऊपर प्रेम नहीं होता।

प्रेमिका सूरत (शरीर) नहीं है चाहे इस संसार का प्रेम हो या उस संसार का।

तू जिस वस्तु की सूरत का प्रेमी है जब उसकी जान निकल जाती है तो उसको तू क्यों त्याग देता है ?

आँचे महसूसत अगर माशूक़ा अस्त।
आशिक़स्ते हर के ऊ रा हिस हस्त ॥
चूँ वफ़ा आँ इश्क़ अफ़ज़ूँ मी कुनद ।
कै वफ़ा सूरत दिगरगूँ मी कुनद ॥
सूरतश हर जास्त ईं सेरी ज़े चीस्त।
आशिक़ा वा बीं कि माशूक़े तु कीस्त ॥
परतवे ख़ुर्शीद बर दीवार ताफ़्त ।
ताबिशे आरियती दीवार याफ़्त ॥
बर कलूख़े दिल चे बन्दी ऐ सलीम ।
वा तलब अस्ले कि पायद ऊ मुक़ीम ॥
चूँ ज़रन्दूदस्त ख़ूबीए बशर ।
वरना चूँ शुद शाहिदे तू पीर ख़र ॥

तालिब व मतलूब

हर्फ़ चे बूवद ता तू अन्देशी अज़ाँ ।
सौत चे बूवद ख़ारे दीवारे रज़ाँ ॥
हर्फ़ो सौतो गुफ़्त रा बरहम ज़नम ।
ता के बे ईं हर से बा तो दम ज़नम ॥

अगर स्पर्श मात्र से ज्ञात होने वाली वस्तु तेरी प्रेमिका है तो हर एक मनुष्य जो छूने की ताक़त रखता है, प्रेमी कहला सकता है। (यानी हर एक प्रेमी कहलाने योग्य नहीं)।

जब प्रेम से वफ़ा बढ़ती है तो वफ़ा सूरत नहीं बदलती है !

प्रेमिका की सूरत तो प्रत्येक स्थान पर उपस्थित है फिर यह हृदय किस वस्तु से परिपूर्ण हो गया (मृतक शरीर को क्यों त्याग दिया)। ऐ प्रेमी ! ध्यान से देख कि तेरी प्रेमिका अब कौन हुई।

सूरत की चमक (प्रकाश) दीवार पर पड़ी और वह दीवार क्षणमात्र के लिये बनावटी ढंग पर चमक पड़ी।

ऐ भोले पुरुष तू एक मिट्टी के ढेले से क्यों दिल लगाता है ? उस वास्तविक वस्तु की खोज कर जो सदैव स्थिर रहने वाली है।

मनुष्य की सुन्दरता सोने का मुलम्मा है। ऐसा न होता तो बुड्ढा गदहा तेरा माशूक़ (प्रेमी) कैसे होता।

इच्छुक और इच्छित

अक्षर क्या वस्तु है जिसको तू सोचे, और स्वर क्या है ! यह दोनों अंगूर की बेल की दीवार में लगी हुई कीलें हैं।

हम अक्षर, स्वर और बोलने को बिलकुल चूर चूर कर डालें। इन तीनों के रहित तुझसे वार्तालाप करें।

आँ दमे कज़ आदमश करदम निहाँ ।
बा तो गोयम ऐ तू असरारे जहाँ ॥
आँ दमे रा के न गुफ़्तम बा ख़लील ।
वाँ दमे रा के नदानद जब्रईल ॥
आँ दमे कज़ वै मसीहा दम न ज़द ।
हक़ ज़ो ग़ैरत नीज़ बे मादम न ज़द ॥
मा चे बाशद दर लुग़त इसबाते नफ़ी ।
मन न इसबातम मनम बे ज़ाते नफ़ी ॥
मन कसे दर ना कसी दरयाफ़्तम ।
वस कसे दर ना कसी दर बाख़्तम ॥
जुम्ला शाहाँ पस्त पस्ते ख़ेश रा ।
जुम्ला मस्ताँ मस्त मस्ते ख़ेश रा ॥
जुम्ला शाहाँ बरदए बरदै ख़ुदन्द ।
जुम्ला ख़लक़ाँ मुर्दए मुर्दै ख़ुदन्द ॥
मी शवद सैयाद मुर्ग़ाँ रा शिकार ।
ता कुनद नागाह ऐशाँ रा शिकार ॥

वह बात जिसको मैंने आदम से भी गुप्त कर रक्खा था उसको (समस्त संसार के भेद) मैं तुझसे बतलाता हूँ ।

उस बात को मैंने ख़लील से नहीं कहा, उस बात को जबरईल भी नहीं जानता ।

वह बात जिसको मसीह ने भी नहीं कहा और ईश्वर ने भी संकोच से बिना हमारे उस बात को और किसी से नहीं कहा ।

'मैं' (अहम्) शब्द का क्या अर्थ है? 'मैं' का अर्थ कोष में अस्तित्व का न रहना है ।

मैं संसारी पदार्थ नहीं हूँ बल्कि शरीर से परे अस्तित्व से शून्य हूँ । मैंने अहम् मिटा देने में कोई बहुत बड़ी वस्तु प्राप्त की है और बहुत सी वस्तुओं को अवास्तविक होने में नष्ट कर दिया है ।

अपने सेवक के लिये समस्त राजाओं को आज्ञाकारी बना दिया और अपने मतवाले पर सब मतवालों को मतवाला कर दिया ।

जितने राजा हैं सब मेरे सेवक के भी सेवक हैं और सब लोग मरे हुये से भी ज़्यादा मरे हैं ।

बहेलिया शिकारी जब चिड़ियों का शिकार बन जाता है तब सहसा उनका आखेट करता है ।

दिलबराँ बर बेदिलाँ फ़ितना बजाँ ।
जुमला माशूक़ाँ शिकारे आशिक़ाँ ॥
हरकि आशिक़ दीदयश माशूक़ दाँ ।
गो बनिस्बत हस्त हम ईनो हमां ॥
तिश्नगाँ गर आब जोयन्द अज़ जहाँ ।
आब हम जोयद ब आलम तिशनगाँ ॥
गर मुरादत रा मज़ाक़े शक्करस्त ।
बेमुरादी नै मुरादे दिल बरस्त ॥

असराते मोहब्बत

अज़ मोहब्बत तल्ख़हा शीरीं शवद ।
वज़ मोहब्बत मिस्सहा ज़रीं शवद ॥
अज़ मोहब्बत दुर्दहा साफ़ी शवद ।
वज़ मोहब्बत दर्दहा शाफ़ी शवद ॥
अज़ मोहब्बत ख़ारहा गुल मी शवद ।
वज़ मोहब्बत सिरकहा मुल मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत दार तख़्ते मी शवद ।
वज़ मोहब्बत बार बख़्ते मी शवद ॥

प्रेमी लोग हृदय खोल देने वालों की जान पर ही मुग्ध हुये हैं और जितनी प्रेमिकायें हैं सब प्रेमियों की शिकार हैं ।

जिस पुरुष को तूने प्रेमी देखा बस समझ ले वही प्रेमिका है। यद्यपि सम्बन्ध में "यह" और "वह" दोनों हैं ।

तृषित पुरुष यदि संसार में जल की खोज करते हैं तो जल भी इस संसार में तृषितों की खोज में रहता है ।

यदि तेरी विनती शक्कर का स्वाद रखती है तो प्रेमिका की भी इच्छा विनती रहित रहने की नहीं है ।

प्रेम के प्रभाव

प्रेम के कारण कड़वी वस्तुयें मीठी हो जाती है। प्रेम के स्वभाव के कारण ताँबा सोना (स्वर्ण) बन जाता है ।

प्रेम ही से तलछट स्वच्छ बन जाती है । प्रेम ही से समस्त रोग अच्छे मालूम पड़ते हैं (दुखों में चैन मिलता है) ।

प्रेम से कंटक पुष्प के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं और प्रेम ही से सिरके सुरा बन जाते हैं ।

प्रेम ही से शूली का तख़्ता राज्य सिंहासन बन जाता है और प्रेम ही से भार सौभाग्य बन जाता है ।

अज़ मोहब्बत सिज्न गुलशन मी शवद ।
बे मोहब्वत रोज़ा गिलख़न मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत नार नूरे मी शवद ।
अज़ मोहब्बत देव हूरे मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत संग रौग़न मी शवद ।
बे मोहब्बत मोम आहन मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत हुज्न शादी मी शवद ।
वज़ मोहब्बत गोल हादी मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत नेश नोशे मी शवद ।
वज़ मोहब्वत शेर मूशे मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत सुक़्म सेहत मी शवद ।
वज़ मोहब्बत क़ह रहमत मी शवद ॥
अज़ मोहब्बत मुर्दा ज़िन्दा मी शवद ।
वज़ मोहब्बत शाह बन्दा मी शवद ॥
ईं मोहब्बत हम नतीजे दानिशस्त ।
कै गज़ाफ़ा बर चुनीं तख़्ते नशिस्त ॥
दानिशे नाक़िस कुजा ईं इश्क़ ज़ाद ।
इश्क़ ज़ायद नाक़िस अम्मा बर जमाद ॥

प्रेम से कारागृह उद्यान बन जाता है। प्रेम के बिना उद्यान भाड़ बन जाता है।

प्रेम ही से अग्नि प्रकाश बन जाती है। प्रेम ही से कुरूप सुन्दर प्रतीत होता है ।

प्रेम हो तो पत्थर घुलकर तेल बन जाता है । प्रेम न हो तो मोम लोहा बन जाता है।

प्रेम के कारण रन्ज व दुख प्रसन्नता के रूप में पलट जाते हैं और प्रेम ही से भूतप्रेत मार्गदर्शक बन जाते हैं।

प्रेम से कष्ट आराम बन जाते हैं। प्रेम के ही प्रभाव से सिंह एक मूसा बन जाता है।

प्रेम से रोग स्वास्थ्य बन जाता है। प्रेम ही से क्रोध दया बन जाता है।

प्रेम से मृतक जीवित हो जाता है और प्रेम से बादशाह गुलाम बन जाता है।

यह प्रेम भी विद्या का फल है, वह व्यर्थ इस प्रकार के सिंहासन पर आरूढ़ नहीं हुआ।

अधूरी विद्या ने ऐसा प्रेम कहाँ उत्पन्न किया ! प्रेम अधूरा पैदा होता है परन्तु बेजान पर (जो अपने प्राणों को प्राण नहीं समझते)।

नवाख़्तन मजनूँ सगे कूए लैला रा

हमचू मजनूँ कूँ सगे रा मी नवाख़्त ।
बोसाअश मीदादो पेशश मी कुदाख़्त ॥
गिर्दे ऊ मी गश्त ख़ाज़े दर तवाफ़ ।
हमचू हाजी गिर्दे काबा बे गज़ाफ़ ॥
हम सरो पायश हमीं बोसीदो नाफ़ ।
हम जुलाबो शक्करश मीदाद साफ़ ॥
बुलफ़ज़ूले गुफ़्त कै मजनूने ख़ाम ।
ईंचे शैदस्त ईंके मी आरी मदाम ॥
पूज़े सग दायम पेलीदे मी ख़ुरद ।
मक़अद ख़ुद रा बलब मी उस्तरद ॥
एवहाए सग बसे ऊ मी शमुर्द ।
ऐबदाँ अज़ ग़ैबदाँ बूए नमुर्द ॥
गुफ़्त मजनूँ तू हमा नक़्शी वतन ।
अन्दर आ बिनिगर तू अज़ चश्माने मन ॥
कीं तिलिस्मे बस्तए मौलास्त ईं ।
पासबाने कूचए लैलास्त ईं ॥

मजनूँ का लैला की गली के कुत्ते से प्रेम करना

मजनूँ एक कुत्ते को अधिक प्यार करता था। उसका अच्छी तरह चुम्बन किया करता था और उसके सामने लोट जाया करता था।

उसके चारों ओर चकफेरियाँ (चक्कर) लगाता था, जिस प्रकार हज्ज करने वाले हाजी लोग काबे के चारों ओर प्रसन्नता से फेरी लगाते हैं।

उसके सिर, पैर और पेट का चुम्बन करता था और उसको गुलाब और शक्कर का स्वच्छ शर्बत पिलाता था।

किसी अनभिज्ञ पुरुष ने उससे पूछा, ऐ बेवकूफ़ मजनूँ ! तू सदैव यह क्या ढोंग किया करता है।

कुत्ता सदा अपवित्र वस्तुओं का भक्षण करता है और अपने अपवित्र स्थान को अपनी जिह्वा से चाटता है।

वह पुरुष कुत्ते की अत्यन्त बुराइयाँ कर रहा था परन्तु बुराई देखने वाले को रहस्य देखने वाले की क्या ख़बर थी।

मजनूँ ने उसको उत्तर दिया कि तू तो बाह्यरूप से सूरत और बदन देखता है। क्षणमात्र के लिये हृदय के अन्दर प्रवेश कर और मेरी आँखों से देख,

कि यह कुत्ता ईश्वर का बनाया हुआ जादू है, यह लैला की गली का चौकीदार है ; इसके साहस,

हिम्मतश बीनो दिलो जानो शिनाख़्त।
कू कुजा बेगुज़ीदो मसकनगाह साख़्त॥
ऊ सगे फ़र्रुख़ रुख़े कहफ़े मनस्त।
बलके ऊ हम दर्दो हम लहफ़े मनस्त॥
आँ सगे कै गश्त दर कूयश मुक़ीम।
ख़ाके पायश बेह ज़े शेराने अज़ीम॥
आँ सगे कै बाशद अन्दर कूए ऊ।
मन बशेराँ कैदेहम यकमूए ऊ॥
ऐ के शेरा मर सगानश रा ग़ुलाम।
गुफ़्तन इमकाँ नेस्त ख़ामुश वस्सलाम॥
गर ज़े सूरत बगुज़रेद ऐ दोस्ताँ।
जन्नत अस्तो गुलसिताँ दर गुलसिताँ॥

दीवान

(१)

चे तदबीर ऐ मुसलमानाँ कि मन ख़ुदरा नमी दानम्।
न तर्सा न यहूदम् न मन गबरम् न मुसलमानम्॥
न शर्क़ीयम् न ग़र्बीयम् न बर्रीयम् न बहरीयम्।
न अज़ काने तबीईयम न अज़ अफ़लाके गरदानम्॥

इसके हृदय, इसके जिगर और इसकी पहिचान को तो देखो कि किस स्थान को चुनकर अपने रहने का स्थान नियत किया है।

यह "कहफ़" वालों के कुत्ते के समान धन्यवाद का पात्र है, यह मेरे दुखों का साथी और मित्र है।

जो कुत्ता प्रेमिका की गली में रहता है उसके पाँवों की धूल बड़े बड़े सिंहों से भी बढ़कर है।

जो कुत्ता उस प्रेमिका की गली में रहता है, मैं उसके एक बाल बराबर भी सिंहों को नहीं समझता।

चूंकि आम आदमी की बोली में सिंह उसके कुत्तों का ग़ुलाम नहीं कह सकते इस लिये बस चुप रहो।

मित्रो! यदि तुम इस प्रत्यक्ष दुनियाँ से सम्बन्ध त्याग दो तो फिर स्वर्ग और आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं।

दीवान

(१)

मुसलमानो! मैं क्या करूँ? मैं तो यही नहीं समझता हूँ कि मैं क्या वस्तु हूँ। न तो मैं ईसाई हूँ, न यहूदी न पारसी, और न मुसलमान।

न तो मैं पूर्व का रहने वाला हूँ, न पश्चिम का। न स्थल में रहता हूँ, न प्राकृतिक खान का जवाहर हूँ और न घूमने वाले आकाश का नक्षत्र।

न अज़ ख़ाकम् न अज़ आबम् न अज़ बादम् न अज़ आतिश ।
न अज़ अरशम् न अज़ फ़रशम् न अज़ कोनम् न अज़ कानम् ॥
न अज़ हिन्दम् न अज़ चीनम् न अज़ बलग़ारो सक़लीनम् ।
न अज़ मुल्के इराक़ीनम् न अज़ ख़ाके ख़ुरासानम् ॥
न अज़ दुनिया न अज़ उक़बा न अज़ जन्नत न अज़ दोज़ख़ ।
न अज़ आदम् न अज़ हव्वा न अज़ फ़िरदौसे रिज़वानम् ॥
मकानम् लामकाँ बाशद् निशानम् बेनिशाँ बाशद् ।
न तन बाशद न जाँ बाशद् के मन अज़ जाने जानानम ॥
दुई अज़ खुद बदर करदम् यके दीदम् दो आलम रा ।
यके जोयम् यके दानम् यके बीनम् यके ख़ानम् ॥
होवल अव्वल होवल आख़िर होवल ज़ाहिर होवल बातिन ।
बजुज़ याहू व यामनहू कसे दीगर नमी दानम् ॥
ज़े जामे इश्क़ सर मस्तम् दो आलम रफ़ा अज़ दस्तम् ।
बजुज़ रिन्दी व क़ल्लाशी न बाशद हेच सामानम ॥
अगर दर उम्र ख़ुद रोज़े दमे बे तो बर आवुर्दम् ।
अज़ाँ वक़्तो अज़ाँ सायत ज़े उम्रे ख़ुद पशेमानम् ॥

न तो मैं मिट्टी ही से उत्पन्न हुआ हूँ और न वायु से । न तो जल से और न अग्नि से । मैं न तो आकाश से आया हूँ और न पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हूँ । न तो मैं संसार का ही परिमाणु हूँ और न किसी खान ही से निकला हुआ जवाहर हूँ ।

न मैं भारतीय हूँ और न चीनी । न तो मैं बलग़ेरिया का निवासी हूँ और न सक़लातिया का । मैं ईराक़ देश का भी नहीं हूँ और न ख़ुरासान का ।

न तो मैं संसार का ही हूँ और न आकाश का । न स्वर्ग का ही जीव हूँ और न नर्क का । न तो मुझे आदम से ही सम्बन्ध है और न हौआ से । और न मैं फ़िरदौस से ही आया हूँ ।

मेरा स्थान वह है जो कोई स्थान ही नहीं है और मेरा पता, न पते में है । न मैं शरीर हूँ और न प्राण, अपितु प्राणों का प्राण हूँ ।

मैंने अपने मस्तिष्क तथा हृदय से द्वैत का विचार निकाल डाला है । एक ही को ढूँढता हूँ, उसी से परिचित हूँ, वही मेरी दृष्टि में है और उसी का नाम लेता हूँ ।

वही आदि है और वही अन्त । वही प्रकट है और वही लुप्त । मेरा सर्वस्व वही है । यह भी तू ही है और वह भी तू ही है । इसके अतिरिक्त और मैं किसी को नहीं जानता ।

मैं प्रेम की मदिरा पान कर मदमस्त हो रहा हूँ । दोनों जहाँ को त्याग चुका हूँ । भिक्षा और निर्धनता के अतिरिक्त मेरे पास कोई वस्तु नहीं है ।

यदि मैंने अपने जीवन में तुझे भूलकर एक साँस भी ली है तो उस समय और उस घड़ी के लिये अब पछ्ता रहा हूँ ।

अगर दस्तम देहद रोज़े दमे बातो दरीं ख़िलवत।
दो आलम ज़ेरे पा आरम् हमी दस्ते बरफ़शानम॥
इला ऐ "शम्से तबरेज़ी" चुनीं मस्तम् दरीं आलम्।
कि जुज़ मस्ती व क़ल्लाशी नबाशद हेच दस्तानम्॥

(२)

ब रोज़े मर्ग चु ताबूते मन रवाँ बाशद।
गुमाँ मबर के मरा दिल दरीं जहाँ बाशद॥
बराये मन मगरी व मगो दरेग़ दरेग़।
ब दामे देव दर उफ़्ती दरेग़ आँ बाशद॥
जनाज़ाअम चु बबीनी मगो फ़िराक़ फ़िराक़।
मरा विसालो मुलाक़ात आँ ज़माँ बाशद।
मरा ब गोर सपारी मगो बिदा बिदा।
कि गोर परदए जमीअत जिनाँ बाशद॥
फ़रो शुदन चु ब दीदी बरामदन बिनगर।
ग़रूबे शम्सो क़मर रा चेरा ज़ियाँ बाशद॥

यदि इस अवस्था में तू मुझे क्षण भर के लिये भी मिल जावे तो मैं दोनों लोकों को पाँव से कुचल डालूं और उनसे अपना सारा सम्बन्ध छोड़कर पृथक हो जाऊँ।

ऐ मेरे शम्ब तबरेज़! तुझे स्मरण रहे कि मैं इस संसार में इस प्रकार मस्त हूँ कि मस्ती और बेफ़िक्री के अतिरिक्त मेरे कोई कार्य नहीं हैं। इसी में मेरी ख्याति है।

(२)

मृत्यु के दिन जब लोग मुझे शमशान को ले चलेंगे यह मत सोचना कि मेरा हृदय इस संसार में होगा।

मेरे मुख को मृत्यु की छाप से विवर्ण देखकर शोक मत प्रकट करना। शोक की बात तो यह होगी कि तू शैतान के पंजे में आजायगा।

मेरी अर्थी निकलती देखकर इस बात पर दुख मत प्रगट करना कि मैं संसार से बिदा हो रहा हूँ। नहीं, वही तो दिन होगा मेरे लिये प्रियतम से मिलने और उसके संसर्ग में बैठने का।

मुझे समाधिस्थ करके यह मत कहना, जाओ बिदा हो, क्योंकि वह समाधि तो मेरे हार्दिक विश्वास के लिये पर्दों के समान होगी।

सूर्य और चन्द्र का अस्त होना देखकर उनका उदय होना भी देख। उनका अस्त होना उनके लिये हानिकारक क्यों है?

तुरा गुरूब नुमायद व लेक शर्क़ बुवद।
लहद चु हब्स नुमायद ख़लासे जाँ बाशद॥

(३)

ऐ आशिक़ाँ ऐ आशिक़ाँ हंगामे कूचस्त अज़ जहाँ।
दर गोश जानम मी रसद तबले रहील अज़ आस्माँ॥
निक सारेबाँ बरख़ास्ता क़त्तारहा आरास्ता।
अज़ मा हलाली ख़्वास्ता चे ख़ुफ़्तद ऐ कारवाँ॥
ईं बाँगहा अज़ पेशो पस बाँगे रहील अस्तो जरस।
हर लह्ज़ए नफ़्सो नफ़स सरमी कुनद दर लामकाँ॥
ज़ीं शम्मा हाये सरनगूँ ज़ीं परदहाये नीलगूँ।
ख़ल्क़े अजब आमद बरूँ ताग़ैबहा गरदद अयाँ॥
ज़ीं चर्ख़े दौलाबी तोरा आमद गिराँ ख़ाबी तोरा।
फ़रयाद अज़ीं उम्रे सुबुक ज़िन्हार अज़ीं ख़्वाबे गराँ॥
ऐ दिल सुए दिलदार शौ ऐ यार सुये यार शौ।
ऐ पासबाँ बेदार शौ ख़ुफ़्ता न शायद पासबाँ॥

जब तू उसको डूबता हुआ देखता है तो वास्तव में वह उदय होता है। समाधि देखने में कारागार के समान ज्ञात होती है पर है वास्तव में वह प्राणों के मोक्ष का मार्ग।

(३)

ओ प्रेमियो ! संसार से चल देने का समय निकट है। मेरे प्राणों को आकाश में बजने वाले कूच के नक़्क़ारे का शब्द सुनाई पड़ रहा है।

यह देखो कारवां पंक्तियों में चलने के लिये तैयार खड़ा है। हमसे भी तय्यारी के लिये कह दिया है। उठो, काफ़ले के साथ चलने वालो ! क्या तुम्हें नींद आ रही है ?

यह जो आगे और पीछे से शब्द सुनाई पड़ रहे हैं वह और कुछ नहीं केवल चलने की और घरौंटे की आवाज़ें हैं। प्रतिक्षण प्राण और साँस स्थान रहित स्थान को जा रहे हैं।

इन औंधे दीपकों से और इन नीले रंग के पर्दों से नाना भाँति की विलक्षणताएँ इसलिये प्रकट हो रही हैं ताकि रहस्यों का पता लग जावे।

इस ढंग के और ऐसे आस्मान से मुझको घोर निद्रा आगई है। इस तीव्र-गामिनी अवस्था के हाथ से फ़रियाद की जाती है और इस गम्भीर नींद से दूर रहने का प्रयत्न किया जाता है।

ऐ दिल ! प्यारे की तरफ़ चल और हे मित्र ! प्रियतम के पास चल। चौकीदार ! उठ जाग जा, तेरे लिये इस प्रकार सोना ठीक नहीं है।

हर सूए बाँगो मश्गाला हर कूए शम्मो मशअला।
किम् शब जहाने हामिला ज़ायद जहाने जावेदाँ॥

तू गिल बुदीओ दिल शुदी जाहिल बुदी आक़िल शुदी।
आँ कू कशीदत ईं चुनो आँसू कुशादत आँ चुनाँ॥

अन्दर कशाकशहाये ऊ नौशुस्त ना खुशहाये ऊ।
आबस्त आतिशहाय ऊ बरवै मकुन रूरा गिराँ॥

दर जाँ नशिस्तन कारे ऊ तौबा शकिस्तन कारे ऊ।
अज़ हीलए बिस्यारे ऊ चूँ ज़र्रहा लर्जां दिलाँ॥

ऐ रेशखन्दे रख़ता जेह यानी मनम सालारे देह।
ता कै जेही गरदन बेनेह वर नै कशन्दत चूँ कमाँ॥

तुख़्मे दग़ल मी काश्ती अफ़सोस हामी दाश्ती।
हक़रा अदम् पिंदाश्ती अकनू बेबीं ऐ क़िलतबाँ॥

ऐ ख़रबेगा औलातरी देगे सियाह औलातरी।
दर क़ारे चाह औलातरी ऐ नङ्ग ख़ानो ख़ानदाँ॥

चारों तरफ़ से आनन्द और प्रसन्नता की आवाज़ें आ रही हैं। प्रत्येक गली में दीपकों और मशालों का उजाला फैला हुआ है। यह इसलिये कि यह नाशवान संसार आज एक अमर संसार को उत्पन्न करेगा और उसी के शुभागमन में आज इसने यह आनन्दित रूप धारण किया है।

तू मिट्टी था पर अब दिल के रूप में परिणत हो गया है। मूर्ख था परन्तु अब बुद्धिमान् हो गया है। जिसने तुझे ऐसा बना दिया है वही तुझे उस प्रकार उधर भी ले जायगा।

उसकी इस खींचतान में जो कष्ट मिलें उन्हें मधु की मिठास समझो। उसकी आग को पानी के समान शीतल समझो और उस पर क्रोध न करो।

इसके काम हैं प्राणों में समा जाना और शपथ को तोड़ डालना। अगणित कार्यों से सबके हृदय ऐसे काँपते हैं जैसे वायु में कण।

ए बेवक़ूफ़! तू कहता है कि मैं गाँव का मालिक हूँ। तू कब तक घमंड में इस तरह उचकता रहेगा? अपना सर झुका दे नहीं तो कमान की तरह तुझे कमान पर चढ़ायेंगे।

तू सदैव मक्कारी के बीज बोया करता था, और बहुत अफ़सोस किया करता था; भगवान को तूने समझा था कि वह है ही नहीं। अब, ए पागल! अपनी करनी भोग।

ए थान के गधे और घर का नाम डुबानेवाले! अच्छा होता यदि तू एक काली हाँड़ी के समान कुँवे की तह में पड़ा रहता।

दरमन कसे दीगर बूवद कीं चश्महा अज़ वै जेहद ।
गर आब सोज़ानी कुनद ज़ातश बुवद ईं रावेदाँ ।।
दर कफ़ न दारम संगे मन बाकस न दारम जंगे मन ।
बर कस न गीरम तंगे मन ज़ीरा ख़ुशाम चूँ गुलसिताँ ।।
पस चश्मे मन ज़ाँ सर बुवद वज़ आलमे दीगर बुवद ।
ईं सू जहाँ आसूँ जहाँ बनशिस्ता मन बर आस्ताँ ।।
बर आस्ताँ आँ कस बुवद कू नातिक़े अख़रस बुवद ।
ईं रम्ज़े गुफ़्तन बस बुवद दीगर मगो दर कश ज़बाँ ।।

(४)

बाँग ज़दम नीम शबाँ कीस्त दरीं ख़ानए दिल ।
गुफ़ मनम, कज़ रुख़े मन, शुद महो ख़ुरशीद ख़जिल ।।
गुफ़ के ईं ख़ानए दिल पुर हमाँ नक़्शस्त चेरा ।
गुफ़्म कीं अक्से तू अस्त ए रुख़े तौ शमा चेगिल ।।
गुफ़ कि ईं नक़्शे दिगर चीस्त पुर अज़ ख़ूने जिगर ।
गुफ़्म की नक़्शे मने ख़स्ता दिलो पाये बगिल ।।
बस्तमे मन गरदने जाँ बुरहम पेशश बनिशां ।
मुजरिमे इश्क़स्त मकुन मुजरिमे ख़ुदरा तु बहिल ।।

मेरे अंदर तो कोई और रहता है और यह सोते उसी से जारी हैं । अगर पानी जलने लगता है तो समझ ले कि यह (मेरी) आग की वजह से है ।

न मैं किसी से लड़ता हूं, न किसी को दबाता हूं । मैं तो सदैव इसी कारण बाग़ के समान प्रसन्न रहता हूँ ।

यही कारण है कि मेरे नेत्र दूसरे के और दूसरे लोक के होते हैं । इस लोक और परलोक के बीच में चौखट की तरह बना बैठा हूँ ।

एक चौखट पर वही बैठा रह जाता है जो गूंगा होता है । बस मैं इतना ही इशारा देता हूँ तुम समझ जाओ (कि मेरा मतलब क्या है) और चुप साध लो ।

(४)

आधी रात को मैंने डपट कर पूछा, मेरे हृदय रूपी घर में कौन है ? उस प्रियतम ने उत्तर दिया, मैं हूँ जिसके मुख की आभा से सूर्य्य और चन्द्र प्रकाशित हो रहे हैं ।

उसने पूछा, इस घर में यह बहुत सी सूरतें क्यों दिखलाई पड़ रही हैं ? मैंने उत्तर दिया, ऐ चुगल (चीन देश का एक प्रान्त जहाँ के मनुष्य बहुत रूपवान होते हैं) ! इस दीपक पर तेरे मुख का प्रतिविम्ब पड़ रहा है ।

उसने पूछा, इसी घर में, भय से डूबी हुई यह दूसरी सूरत कैसी है ? मैंने उत्तर दिया, यह घायल और विपत्तियों में पड़े हुए दिल का चित्र है ।

मैंने प्राणों की गर्दन बाँधी और उसके सम्मुख ले गया; "ले, यह तुझसे प्रेम करने का अपराधी है । इसको क्षमा न कर ।"

दाद सरे रिश्ता बमन रिश्तए पुर फ़िला व फ़न।
गुफ़्त बकश ता बकशम हम बकुशो हम मगसिल॥
ताफ़ अज़ाँ ख़रगए जाँ सूरते तुरकम बे अज़ाँ।
दस्त व बुरदम सूए ऊ दस्ते मरा ज़द के बहिल॥
गुफ़्तम तू हम चों फ़लाँ तुर्श शुदी गुफ़्त बेदाँ।
मन तुरशे मसलहतम ना तुरशे कीनओ ग़िल॥
हर के दर आयद के मनम बर सरे शाख़श बेज़नम।
कीं हरमे इश्क़ बुवद ऐ हैवाँ नीस्त अग़ल॥
हस्त सलाहे दिलो दीं सूरते आँ तर्के यक़ीं।
चश्मे फ़रोमालो बबीं सूरते दिल सूरते दिल॥

(५)

मन आँ रोज़ बूदम कि अस्माँ न बूद।
निशाँ अज़ वजूदे मुसम्मा न बूद॥
जोमाँ शुद मुसम्मा व अस्माँ पेदीद।
दराँ रोज़ काँजा मनो माँ न बूद॥
निशाँ गश्त मज़हर सरे ज़ुल्फ़े यार।
हनोज़ाँ सरे ज़ुल्फ़ ज़ेबा न बूद॥

उसने रस्सी का सिरा, जो कि चालाकियों और झुटाइयों से भरा था, मेरे हाथ में दे कर कहा कि इसे खींच जिससे मैं भी खिंचूँ, परन्तु इसे तोड़ना मत।

उस प्राण के तम्बू से मेरे प्यारे का मुख और भी अधिक लावण्यमय प्रतीत हुआ। मैंने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। उसने हाथ हटाकर कहा, बस हाथ न लगाना।

मैंने कहा कि अमुक पुरुष जिस प्रकार मुझसे रुष्ट हो गया था उसी प्रकार तू भी क्यों होने लगा है। वह बोला कि तुझे नहीं मालूम इस रूठने में भी एक ख़ास भेद है। मैं शत्रुता और बैर से नहीं बिगड़ता हूँ।

जो यहाँ अहंकार के साथ आता है उसकी जड़ मैं काट (उसे मैं पंगु बना) देता हूँ। यह प्रेम का तीर्थस्थान है, वासना रहित पवित्र है। जानवरों के चरने का स्थान नहीं है।

उस प्रियतम का मुख ही इस हृदय की कोठरी की सजावट है। तनिक आँखें मलकर देख कि तेरे दिल में ही दिल कितना चमत्कृत हो रहा है।

(५)

मैं उस दिन, जबकि वस्तुओं का नामकरण नहीं हुआ था, प्रस्तुत था; तब न वह वस्तुएँ ही थीं जिनका नाम रक्खा गया है।

मुझी से नाम रक्खी गई वस्तुएँ और सब नाम उत्पन्न हुए और वह भी उस दिन जब कि वहाँ "मैं" और "तू" का भेद भाव कुछ भी न था।

यार की काली घुँघराली अलकों ने पथप्रदर्शक का कार्य किया पर अब तक वह अलकें प्रकट नहीं हुई थीं।

चलीपा व नसरानिया सर बसर।
ब पैमूदम अन्दर चलीपा न बूद॥
बबुतख़ाना रफ़्तम् ब दैरे कोहन।
दरो हेच रंगे हवेदा न बूद॥
बकोहे हज़ाँ रफ़्तनों क़ंदहार।
ब दीदम दराँ ज़ेरो बाला न बूद॥
ब अन्दन शुदम् बर सरे कोहे काफ़।
दराँ जाये जुज़ जाय उन्का न बूद॥
ब काबा कशीदम् इनाने तलब।
दराँ मक़सदे पीरो बरना न बूद॥
बपुरसीदम अज़ इब्नसीनाश हाल।
बर अन्दाज़ए इब्नसीना न बूद॥
सूए मन्ज़रे क़ाबे कौसैं शुदम।
दराँ बारगाहे मोअल्ला न बूद॥
निगह करदम् अन्दर दिले ख़ेश्तन।
दराँ जाश दीदम् दिगर जा न बूद॥

मैं ने समस्त चिलेपा और निसरानियों को भली प्रकार देखा परन्तु वह अलकें, वह घुँघराली लटें चिलेपा (सलीब पर चढ़ा हुआ मनुष्य। मिसरानियों का धार्मिक चिह्न) में नहीं दिखलाई पड़ीं।

एक बहुत ही प्राचीन मन्दिर में गया। देखूँ कदाचित वहीं कुछ भेद मिले। पर वहाँ भी दृष्टि को उस इच्छित वस्तु का कोई निशान न मिला।

हिरात के पर्वतों पर चढ़कर देखा, क़न्दहार की पृथ्वी पर खोज की पर उस ऊँचाई और निचाई में भी उसका पता न पाया।

विश्वास था कि काफ़ के पर्वतों में वह अवश्य मिलेगा। पर वहाँ पहुँचने पर उनके (अप्सराओं के) निवास स्थान के अतिरिक्त कुछ भी दिखलाई न दिया।

फिर खोज की। काबे में पहुँचा परन्तु वहाँ भी वह वृद्ध और युवाओं का हृदय-वल्लभ न मिला।

इब्नसीना (एक बहुत बड़े हकीम) से पूछा, आप उसके विषय में कुछ बतला सकते हैं ? पर उन्होंने भी सर हिलाकर अपनी मजबूरी प्रकट कर दी। फिर मैंने काबा और कौसैं के सुन्दर दृश्यों में उसकी खोज की परन्तु उस दिव्य स्थान में भी उसे न पाया।

अन्त में मैंने अपने हृदय के कोने में दृष्टि डाली। देखता क्या हूँ कि वह वहीं पर उपस्थित है। दूसरे स्थानों में व्यर्थ भटकता फिरा।

बजुज़ "शम्शतबरेज़" पाकीज़ा जाँ।
कसे मस्तो मख़मूरो शैदा न बूद॥

(६)

हर नक़्श रा के दीदी जिनसश ज़े ला मकानस्त।
गर नक़्श रफ़ ग़म नेस्त अस्लश चु जावेदानस्त॥
हर सूरते कि दीदी हर नुक़्ता के शुनीदी।
बद दिल मशो के रफ़्ताँ ज़ीराना आँ चुनानस्त॥
चूँ अस्ले चश्मा बाक़ीस्त फ़रअश हमेशा साक़ीस्त।
चूँ हर दो बे ज़वालन्द अज़ चे तुरा फ़ुग़ानस्त॥
जाँ रा चु चश्मये दां वीं सुनुअहा चु जू हा।
ता चश्मा हस्त बाक़ी जू हा अज़ो रवानस्त॥
ग़म रा बरूँ कुन अज़ सर वीं आबे जू हमो ख़ुर।
अज़ फ़ौते आब मन्देश कीं आबे बेकरानस्त॥
जाँ दम के आमदस्ती अन्दर जहाने हस्ती।
पेशत के ता बरस्ती बिनहादा नर्दबानस्त॥
अव्वल जमाद बूदी आख़िर नबात गश्ती।
आँ गह शुदी तो हैवाँ ईं बर तू चूँ निहानस्त॥

सारांश यह कि शम्सतबरेज़ के अतिरिक्त कोई मस्त और मतवाला प्रेमिक न था।

(६)

तुमको जो रूप दिखाई देता है उसकी वास्तविकता किसी विशेष स्थान में नहीं हैं! रूप के मिट जाने का क्या शोक जब कि उसका तत्व स्थायी है।

अतएव जो रूप आँखों के समक्ष है और उसके विषय में जो रहस्य सुनाई पड़ता है, उसके खो जाने अथवा विलुप्त हो जाने पर खेद मत करो।

वास्तव में वह मिटती नहीं है। सोते में जब तक जलधारा प्रवाहित रहती है उसकी नालियाँ पानी देती रहती हैं और फिर जब कि सोता और उसकी नालियाँ चिरस्थायी हैं तो तुम्हें चिल्लाने की क्या आवश्यकता है?

परमेश्वर एक सोते के सदृश है और उसके निर्मित रूप नालियों के समान हैं। जब तक चश्मा रहेगा, नालियाँ उस समय तक उसमें से निकलती रहेंगी।

तू चिन्ता न कर और इन नालियों का जल पान करता रह। यह विचार मतकर कि पानी न रहेगा। चश्मे में अथाह पानी भरा हुआ है।

तू जब से इस संसार में आया है तेरी उत्पत्ति के समय से ही तेरे सम्मुख उन्नति की सीढ़ी रक्खी हुई है।

तू पहले पत्थर था, फिर पौधा हुआ और फिर पशु के रूप में परिणित हो गया। परन्तु तुझ पर यह भेद प्रगट क्यों नहीं हुआ?

गश्ती अज़ाँ पल इन्सां बाइल्मो अक़्लो ईमाँ।
बिनगर चे गिल शुदाँ तन कू जुज्वे खाक़दानस्त॥
ज़े इन्साँ चु सैर करदी बेशक फ़रिश्ता गरदी।
बे ईं ज़मी अज़ाँ पस जायत बर आस्मानस्त॥
बाज़ अज़ फ़रिश्तगी हम बगुज़र बरो दरायम।
ता क़तरये तो बहरे गरदद कि सद उमानस्त॥
बगुज़र अज़ीं बलद तू मीगो ज़े जाने अहदे तू।
गर पीर गश्त जिस्मत चे ग़म चु जाँ जवानस्त॥

(७)

गुफ़्ता के कीस्त बर दर, गुफ़्तम कमीं गुलामत।
गुफ़्ता चे कारदारी, गुफ़्तम महा सलामत॥
गुफ़्ता के चन्द रानी, गुफ़्तम के ता बख़ानी।
गुफ़्ता के चन्द जोशी, गुफ़्तम के ता क़यामत॥
दावाए इश्क़ करदम सौगन्द हा बख़ुर्दम।
कज़ इश्क़ या वा करदम मन मुल्कतो शहामत॥

पशु से तुझे एक सत्यवादी और विद्वान् मनुष्य का रूप मिला। देख, मिट्टी का एक ढाँचा कितना सुन्दर सुमन बन गया है।

मनुष्य की अवस्था से यदि आगे बढ़ा तो तू निस्सन्देह देवता हो जायगा और तेरा निवास आकाश में होगा। पृथ्वी छूट जायगी।

फिर इस अवस्था को भी छोड़ कर उस समुद्र से जा मिल जो अत्यन्त विशाल है, ताकि एक बूंद के स्थान पर तू एक ऐसी नदी बन जावे जो सैकड़ों नदियों से बढ़कर है।

अब इस जन्म के चक्कर में न पड़ कर प्राण से जाकर मिल जा और उससे कह कि तेरा शरीर वृद्ध हो गया है परन्तु तू इसकी चिन्ता मत कर। जीव तो तेरा अभी युवक ही है।

(७)

प्यारे ने पूछा कि द्वार पर कौन है। मैंने उत्तर में कहा, "तेरा एक तुच्छ सेवक।" उसने पूछा कि यहाँ क्यों आया है। मैंने उत्तर दिया, "मन-मोहन! तेरी अभ्यर्थना करने।"

उसने पूछा कबतक आवारा फिरता रहेगा। मैंने उत्तर दिया, "जब तक तू न बुलायेगा।" उसने पूछा तू कब तक अपना जोश दिखाता रहेगा। मैंने कहा, "प्रलय तक।"

मैंने उसके सम्मुख उसके प्रति अपने हृदय का प्रेम दर्शाया और बहुत सी शपथें उठाईं। कहा कि देख तेरे प्रणय में पड़कर मैंने अपनी प्रतिष्ठा और राज पद का परित्याग कर दिया है।

गुफ़्ता बराये दावा क़ाज़ी गवाह ख़ाहद ।
गुफ़्तम गवाह अश्कम ज़रदीए रुख़ अलामत ॥
गुफ़्ता गवाह जरहस्त तर दामनस्त चश्मत ।
गुफ़्तम बफ़र्रे अदलत अदलन्दो बेग़रामत ॥
गुफ़्ता चे अज़्मदारी गुफ़्तम वफ़ावो यारी ।
गुफ़्ता ज़े मन चे ख़ाही गुफ़्तम के लुत्फ़े आमत ॥
गुफ़्ता के बूद हमराह गुफ़्तम ख्यालत ए शाह ।
गुफ़्ता के ख़ांदत ईं जा गुफ़्तम के बूए जामत ॥
गुफ़्ता कुजास्त ख़ुशतर गुफ़्तम के क़स्रे क़ैसर ।
गुफ़्ता चे दीदी आँ जा गुफ़्तम के सद करामत ॥
गुफ़्ता चरास्त ख़ाली गुफ़्तम ज़े बीम रहज़न ।
गुफ़्ता के कीस्त रहज़न गुफ़्तम के ईं मलामत ॥
गुफ़्ता कुजास्त एमन गुफ़्तम बज़ोहदो तुक़वा ।
गुफ़्ता के ज़ोहद चे बूवद गुफ़्तम रहे सलामत ॥

प्रियतम ने कहा, "न्यायाधीश अभियोग के प्रमाण स्वरूप साक्षी चाहता है।" मैंने उत्तर दिया, "मेरे अश्रु विन्दु साक्षी हैं और मुख पर की ज़र्दी प्यार की निशानी है।"

उसने कहा, "साक्षी अविश्वासी है, तेरी आंख से ही अपराध, तेरे कथन की असत्यता प्रगट होती है।" मैंने उत्तर दिया, "तेरी न्याय-प्रियता से अब वह विश्वासी हैं। उनमें किसी प्रकार की कालिमा नहीं है।"

उसने कहा, "फिर किस बात की चाह है। मैंने कहा कि तेरे साथ रहने और सच्चे दिल से सेवा करने की।" उसने पूछा, "यह सब कुछ है परन्तु मुझसे किस बात की आशा रखता है।" मैंने कहा, "केवल तेरी उस कृपा की जो दूसरों के लिये भी है।"

उसने पूछा, "तेरे साथ में और कौन था?" मैंने कहा, "हे सम्राट! तेरा ध्यान।" उसने कहा, "तुझे यहाँ तक खींच कौन लाया है?" मैंने कहा, "तेरे प्याले की कामना।"

उसने कहा, "सबसे अच्छा रमणीक स्थान कौन है?" मैंने कहा, "सम्राट का भवन।" उसने पूछा, "तुझे वहाँ क्या प्राप्त हुआ है?" मैंने उत्तर दिया, "सैकड़ों प्रतिष्ठाएँ।"

उसने पूछा, "तू ख़ाली हाथ क्यों आया है? "मैंने कहा, "चोर के भय से।" उसने कहा, "उस डाकू का नाम बतला सकते हो?" मैंने उत्तर दिया, "उसका नाम है तेरे प्रणय में लोगों की बदनामी।"

उसने पूछा, "फिर वह स्थान कौन है जहाँ किसी प्रकार का भय नहीं है।" मैंने कहा, "पवित्रता और विवेक।" उसने पूछा "विवेक क्या वस्तु है?" मैंने कहा "कुशलत्व का मार्ग।"

गुफ़ा कुजास्त आफ़त गुफ़्म ब कूए इश्क़त।
गुफ़ा चे गूनी आँजा गुफ़्म दर इस्तक़ामत॥
बिस्यार आज़मूदम अम्मा न बूद सूदम।
"मन जररबल मुजर्रब हल्लत बोहन नदामत"॥
ख़ामोश गर बजोयम मन नुक़्ताहाये ऊरा।
अज़ ख़ेश तन बरा ई न दर कशद न बामत॥

(८)

आँ रूह रा के इश्क़े हक़ीक़ी शोआर नेस्त।
नाबूदा बेह के बूदने ऊ ग़ैरे आर नेस्त॥
दर इश्क़ मस्त बाश कि इश्क़स्त हर चे हस्त।
बेकारो बारे इश्क़ बरे यार बार नेस्त॥
गोयन्द इश्क़ चीस्त, बगो तर्के इख़्तियार।
हर को ज़े इख़्तियार न रस्त इख़्तियार नेस्त॥
आशिक़ शहन्शेहस्त दो आलम बरो निसार।
हेच इल्तिफ़ाते शाह बसूये निसार नेस्त॥
इश्क़स्तो आशिक़स्त कि बाक़ीस्त ता अबद।
दिल जुज़ बरी मनेह कि बजुज़ मुस्तआर नेस्त॥

उसने पूछा, "विपत्तियाँ कहाँ हैं?" मैंने कहा, "तेरे प्रेम-पथ में।" उसने पूछा, "तू वहाँ किस अवस्था में है?" मैंने कहा, "बहुत ही दृढ़ और सावधान हूँ।"

मैंने बहुत तरह से उसकी परीक्षा लेनी चाही। परन्तु मुझे कोई लाभ न हुआ। जो मनुष्य किसी ऐसे को परीक्षा लेना चाहता है जो उसमें उत्तीर्ण हो चुका है तो उसे केवल कष्ट ही प्राप्त होता है।

बस अब यहीं ठहर जा। यदि मैं उसके रहस्यों का उद्‌घाटन करूँगा तो तू अपने आपको भूल जायगा और तुझे किसी वस्तु का ज्ञान न रहेगा।

(८)

जो आत्मा सच्चा प्रेम ग्रहण न करे उसका नष्ट हो जाना ही अच्छा है। क्योंकि उसका जीवन लज्जा-जनक है।

प्रेम में तन्मय हो जा। प्रेम सर्वस्व है। बिना इसमें लवलीन हुए प्यारे का सामीप्य प्राप्त न होगा।

लोग पूछते है "प्रेम क्या वस्तु है?" कह दे अपने अधिकार को त्याग देना। जिसने अपने अधिकार को त्यागा नहीं वह प्रेम के लिये बनाया ही नहीं गया।

प्रेमी एक सम्राट है जिस पर दोनों संसार न्यौछावर हैं। राजा को इस निछावर की कोई परवाह नहीं होती।

प्रेमी और प्रेम अमर हैं। प्रेम के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से प्रेम न कर। क्योंकि अन्य वस्तुओं का अस्तित्व अस्थायी है।

ताकै किनारगीरी माशूक़े मुरदा रा।
जाँ रा किनारगीर कि ऊरा किनार नेस्त ॥

आँ कज़ बहार ज़ाद बमीरद गहे ख़िज़ाँ।
गुल्ज़ारे इश्क़ रा मदद अज़ नौबहार नेस्त ॥

आँ गुल कि अज़ बहार बुवद ख़ार यारे ऊस्त।
वाँ मय कि अज़ असीर बुवद बेख़ुमार नेस्त ॥

नज्ज़ारा गर मबाश दरीं राह मुन्तज़िर।
वल्ला कि हेच मर्ग बतर्ज़े इन्तज़ार नेस्त ॥

बर क़ल्बे नक़्द ज़न तु अगर क़ल्ब नेस्ती।
ईं नुक़्ता गोश्दार गिरत गोश्वार नेस्त ॥

बर अस्पे तन मलरज़ा सुबुकतर पियादा शौ।
पर्रश देहद ख़ुदाए कि बर तन सवार नेस्त ॥

अन्देशहा रेहा कुनो दिल शाद शौ तमाम।
चूँ रूये आईना के बनक़्शो निगार नेस्त ॥

चूं सादा शुद ज़े नक़्श हमा नक़्शहा दरूस्त।
जाँ सादा रू ज़े रूए कसे शर्मसार नेस्त ॥

मरी हुई प्रियतमा को कब तक गोद में लिये रहेगा ? वह तत्व नहीं रखती। गोद में लेना है तो प्राण को ले।

जो वस्तु बहार से उत्पन्न होती है वह पतझड़ के समय मिट जाती है। परन्तु प्रेम की फुलवाड़ी बहार से सम्बन्ध नहीं रखती।

वह स्वयं सदा बहार है। जो पुष्प बहार मे उत्पन्न होता है पतझड़ में वह कण्टक बन जाता है और अंगूर के निचोड़े हुए पानी से जो शराब बनता है उसमें भी नशे के उतार के समय कष्ट अवश्य होता है।

यदि तू खोटे सिक्के के सदृश नहीं है तो स्वच्छ हृदय प्राप्त कर। यदि तेरे कान में मोती नहीं हैं तो उस सिक्के को कान में धारण कर ले।

प्रेमी इस मार्ग में इंतज़ार नहीं करता, जैसे कि मृत्यु किसी के लिये नहीं ठहरती।

शरीर रूपी घोड़े पर काँपते हुए सवार के समान न बैठ। शीघ्र ही पैदल चलना प्रारम्भ कर। जो शरीर पर सवार नहीं होता उसे शीघ्र ही पंख मिल जाते हैं।

सब चिन्ताओं का त्याग करके हृदय को प्रसन्न बनाले। उसे उस दर्पण के रूप में ले आ, जिसमें कोई बेल बूटा नहीं होता।

जब तू ने दर्पण सा अपने चेहरे को नक़्शों से ख़ाली कर दिया तब सब नक़्श मिट गये। ऐसा चेहरा फिर किसी के चेहरे से शरमिन्दा नहीं होता।

गश्ती अज़ाँ पल इन्सां बाइल्मो अक़्लो ईमाँ।
बिनगर चे गिल शुदाँ तन कू जुज़्वे खाक़दानस्त ।।
ज़े इन्साँ चु सैर करदी बेशक फ़रिश्ता गरदी।
बे ईं ज़मी अज़ाँ पस जायत बर आस्मानस्त ।।
बाज़ अज़ फ़रिश्तगी हम बगुज़र बरो दरायम।
ता क़तरये तो बहरे गरदद कि सद उमानस्त ।।
बगुज़र अज़ीं बलद तू मीगो जे जाने अहदे तू।
गर पीर गश्त जिस्मत चे ग़म चु जाँ जवानस्त ।।

(७)

गुफ़्ता के कीस्त बर दर, गुफ़्तम कमीं गुलामत।
गुफ़्ता चे कारदारी, गुफ़्तम महा सलामत ।।
गुफ़्ता के चन्द रानी, गुफ़्तम के ता बख़ानी।
गुफ़्ता के चन्द जोशी, गुफ़्तम के ता क़यामत ।।
दावाए इश्क़ करदम सौगन्द हा बख़ुर्दम।
कज़ इश्क़ या वा करदम मन मुल्कतो शहामत ।।

पशु से तुझे एक सत्यवादी और विद्वान् मनुष्य का रूप मिला। देख, मिट्टी का एक ढाँचा कितना सुन्दर सुमन बन गया है।

मनुष्य की अवस्था से यदि आगे बढ़ा तो तू निस्सन्देह देवता हो जायगा और तेरा निवास आकाश में होगा। पृथ्वी छूट जायगी।

फिर इस अवस्था को भी छोड़ कर उस समुद्र से जा मिल जो अत्यन्त विशाल है, ताकि एक बूंद के स्थान पर तू एक ऐसी नदी बन जावे जो सैकड़ों नदियों से बढ़कर है।

अब इस जन्म के चक्कर में न पड़ कर प्राण से जाकर मिल जा और उससे कह कि तेरा शरीर वृद्ध हो गया है परन्तु तू इसकी चिन्ता मत कर। जीव तो तेरा अभी युवक ही है।

(७)

प्यारे ने पूछा कि द्वार पर कौन हैं। मैंने उत्तर में कहा, "तेरा एक तुच्छ सेवक।" उसने पूछा कि यहाँ क्यों आया है। मैंने उत्तर दिया, "मन-मोहन! तेरी अभ्यर्थना करने।"

उसने पूछा कबतक आवारा फिरता रहेगा। मैंने उत्तर दिया, "जब तक तू न बुलायेगा।" उसने पूछा तू कब तक अपना जोश दिखाता रहेगा। मैंने कहा, "प्रलय तक।"

मैंने उसके सम्मुख उसके प्रति अपने हृदय का प्रेम दर्शाया और बहुत सी शपथें उठाईं। कहा कि देख तेरे प्रणय में पड़कर मैंने अपनी प्रतिष्ठा और राज पद का परित्याग कर दिया है।

गुफ़्ता बराये दावा क़ाज़ी गवाह ख़ाहद।
गुफ़्तम गवाह अश्कम ज़रदीए रुख़ अलामत॥
गुफ़्ता गवाह जरहस्त तर दामनस्त चश्मत।
गुफ़्तम बफ़र्रे अदलत अदलन्दो बेग़रामत॥
गुफ़्ता चे अज़्मदारी गुफ़्तम वफ़ावो यारी।
गुफ़्ता ज़े मन चे ख़ाही गुफ़्तम के लुत्फ़े आमत॥
गुफ़्ता के बूद हमराह गुफ़्तम ख़्यालत ए शाह।
गुफ़्ता के ख़ांदत ईं जा गुफ़्तम के बूए जामत॥
गुफ़्ता कुजास्त ख़ुशतर गुफ़्तम के क़स्रे क़ैसर।
गुफ़्ता चे दीदी आँ जा गुफ़्तम के सद करामत॥
गुफ़्ता चरास्त ख़ाली गुफ़्तम ज़े बीम रहज़न।
गुफ़्ता के कीस्त रहज़न गुफ़्तम के ईं मलामत॥
गुफ़्ता कुजास्त एमन गुफ़्तम बज़ोहदो तुक़वा।
गुफ़्ता के ज़ोहद चे बूवद गुफ़्तम रहे सलामत॥

प्रियतम ने कहा, "न्यायाधीश अभियोग के प्रमाण स्वरूप साक्षी चाहता है।" मैंने उत्तर दिया, "मेरे अश्रु विन्दु साक्षी हैं और मुख पर की ज़र्दी प्यार की निशानी है।"

उसने कहा, "साक्षी अविश्वासी है, तेरी आंख से ही अपराध, तेरे कथन की असत्यता प्रगट होती है।" मैंने उत्तर दिया, "तेरी न्याय-प्रियता से अब वह विश्वासी हैं। उनमें किसी प्रकार की कालिमा नहीं है।"

उसने कहा, "फिर किस बात की चाह है। मैंने कहा कि तेरे साथ रहने और सच्चे दिल से सेवा करने की।" उसने पूछा, "यह सब कुछ है परन्तु मुझसे किस बात की आशा रखता है।" मैंने कहा, "केवल तेरी उस कृपा की जो दूसरों के लिये भी है।"

उसने पूछा, "तेरे साथ में और कौन था?" मैंने कहा, "हे सम्राट! तेरा ध्यान।" उसने कहा, "तुझे यहाँ तक खींच कौन लाया है?" मैंने कहा, "तेरे प्याले की कामना।"

उसने कहा, "सबसे अच्छा रमणीक स्थान कौन है?" मैंने कहा, "सम्राट का भवन।" उसने पूछा, "तुझे वहाँ क्या प्राप्त हुआ है?" मैंने उत्तर दिया, "सैकड़ों प्रतिष्ठाएँ।"

उसने पूछा, "तू ख़ाली हाथ क्यों आया है? "मैंने कहा, "चोर के भय से।" उसने कहा, "उस डाकू का नाम बतला सकते हो?" मैंने उत्तर दिया, "उसका नाम है तेरे प्रणय में लोगों की बदनामी।"

उसने पूछा, "फिर वह स्थान कौन है जहाँ किसी प्रकार का भय नहीं है।" मैंने कहा, "पवित्रता और विवेक।" उसने पूछा "विवेक क्या वस्तु है?" मैंने कहा "कुशलत्व का मार्ग।"

गुफ़्ता कुजास्त आफ़त गुफ़्तम ब कूए इश्क़त।
गुफ़्ता चे गूनी आँजा गुफ़्तम दर इस्तक़ामत॥
बिस्यार आज़मूदम अम्मा न बूद सूदम।
"मन जररबल मुजर्रब हल्लत बोहन नदामत"॥
ख़ामोश गर बजोयम मन नुक़्ताहाये ऊरा।
अज़ ख़ेश तन बरा ई न दर कशद न बामत॥

(८)

आँ रूह रा के इश्क़े हक़ीक़ी शोआर नेस्त।
नाबूदा बेह के बूदने ऊ ग़ैरे आर नेस्त॥
दर इश्क़ मस्त बाश कि इश्क़स्त हर चे हस्त।
बेकारो बारे इश्क़ बरे यार बार नेस्त॥
गोयन्द इश्क़ चीस्त, बगो वर्के इख़्तियार।
हर को ज़े इख़्तियार न रस्त इख़्तियार नेस्त॥
आशिक़ शहन्शेहस्त दो आलम बरो निसार।
हेच इल्तिफ़ाते शाह बसूये निसार नेस्त॥
इश्क़स्तो आशिक़स्त कि बाक़ीस्त ता अबद।
दिल जुज़ बरी मनेह कि बजुज़ मुस्तआर नेस्त॥

उसने पूछा, "विपत्तियाँ कहाँ हैं?" मैंने कहा, "तेरे प्रेम-पथ में।" उसने पूछा, "तू वहाँ किस अवस्था में है?" मैंने कहा, "बहुत ही दृढ़ और सावधान हूँ।"

मैंने बहुत तरह से उसकी परीक्षा लेनी चाही। परन्तु मुझे कोई लाभ न हुआ। जो मनुष्य किसी ऐसे को परीक्षा लेना चाहता है जो उसमें उत्तीर्ण हो चुका है तो उसे केवल कष्ट ही प्राप्त होता है।

बस अब यहीं ठहर जा। यदि मैं उसके रहस्यों का उद्‌घाटन करूँगा तो तू अपने आपको भूल जायगा और तुझे किसी वस्तु का ज्ञान न रहेगा।

(८)

जो आत्मा सच्चा प्रेम ग्रहण न करे उसका नष्ट हो जाना ही अच्छा है। क्योंकि उसका जीवन लज्जा-जनक है।

प्रेम में तन्मय हो जा। प्रेम सर्वस्व है। बिना इसमें लवलीन हुए प्यारे का सामीप्य प्राप्त न होगा।

लोग पूछते हैं "प्रेम क्या वस्तु है?" कह दे अपने अधिकार को त्याग देना। जिसने अपने अधिकार को त्यागा नहीं वह प्रेम के लिये बनाया ही नहीं गया।

प्रेमी एक सम्राट है जिस पर दोनों संसार न्यौछावर हैं। राजा को इस निछावर की कोई परवाह नहीं होती।

प्रेमी और प्रेम अमर हैं। प्रेम के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु से प्रेम न कर। क्योंकि अन्य वस्तुओं का अस्तित्व अस्थायी है।

ताकै किनारगीरी माशूक़े मुरदा रा।
जाँ रा किनारगीर कि ऊरा किनार नेस्त ॥

आँ कज़ बहार जाद बमीरद गहे ख़िज़ाँ।
गुल्ज़ारे इश्क़ रा मदद अज़ नौबहार नेस्त ॥

आँ गुल कि अज़ बहार बुवद ख़ार यारे ऊस्त।
वाँ मय कि अज़ असीर बुवद बेख़ुमार नेस्त ॥

नज़्ज़ारा गर मबाश दरीं राह मुन्तज़िर।
वल्ला कि हेच मर्ग बतर्ज़े इन्तज़ार नेस्त ॥

बर क़ल्बे नक़्द जन तु अगर क़ल्ब नेस्ती।
ईं नुक़्ता गोश्दार गिरत गोश्वार नेस्त ॥

बर अस्पे तन मलरज़ा सुबुकतर पियादा शौ।
पर्रश देहद ख़ुदाए कि बर तन सवार नेस्त ॥

अन्देशहा रेहा कुनो दिल शाद शौ तमाम।
चूँ रूये आईना के बनक़्शो निगार नेस्त ॥

चूं सादा शुद ज़े नक़्श हमा नक़्शहा दरूस्त।
जाँ सादा रू ज़े रूए कसे शर्मसार नेस्त ॥

मरी हुई प्रियतमा को कब तक गोद में लिये रहेगा ? वह तत्व नहीं रखती। गोद में लेना है तो प्राण को ले।

जो वस्तु बहार से उत्पन्न होती है वह पतझड़ के समय मिट जाती है। परन्तु प्रेम की फुलवाड़ी बहार से सम्बन्ध नहीं रखती।

वह स्वयं सदा बहार है। जो पुष्प बहार से उत्पन्न होता है पतझड़ में वह कण्टक बन जाता है और अंगूर के निचोड़े हुए पानी से जो शराब बनता है उसमें भी नशे के उतार के समय कष्ट अवश्य होता है।

यदि तू खोटे सिक्के के सदृश नहीं है तो स्वच्छ हृदय प्राप्त कर। यदि तेरे कान में मोती नहीं हैं तो उस सिक्के को कान में धारण कर ले।

प्रेमी इस मार्ग में इंतज़ार नहीं करता, जैसे कि मृत्यु किसी के लिये नहीं ठहरती।

शरीर रूपी घोड़े पर काँपते हुए सवार के समान न बैठ। शीघ्र ही पैदल चलना प्रारम्भ कर। जो शरीर पर सवार नहीं होता उसे शीघ्र ही पंख मिल जाते हैं।

सब चिन्ताओं का त्याग करके हृदय को प्रसन्न बनाले। उसे उस दर्पण के रूप में ले आ, जिसमें कोई बेल बूटा नहीं होता।

जब तू ने दर्पण सा अपने चेहरे को नक़्शों से खाली कर दिया तब सब नक़्श मिट गये। ऐसा चेहरा फिर किसी के चेहरे से शरमिन्दा नहीं होता।

आईना सादा ख़ाही ख़ुदरा दरू निगर।
कूरा जे रास्त गोई शरमो हज़ार नेस्त॥
चूँ रूए आहिनी जे तमीज ईं सफ़ा बयाफ़्त।
ता रूए दिल चे याबदे कू रा ग़ुबार नेस्त॥
लेकिन मियाने आहनो दिल ईं तफ़ावतसत।
कीं राज़ दार आमद व आँ राज़दार नेस्त।

(९)

मन अज़ आलम तुरा तनहा गुज़ीनम।
रवादारी के मन ग़मगीं नशीनम्॥
दिले मन चूँ क़लम अन्दर कफ़े तुस्त।
ज़े तुस्त इरशाद मानम व रहज़ीनम्॥
बजुज़ आँचे तू ख़ाही मन चे ख़ाहम्।
बजुज़ आँचे नुमाई मन चे बीनम्॥
गहे अज़ मन ख़ारे रू यानी गहे गुल।
गहे गुल बोयमो गह ख़ार चीनम्॥
मरा गर तू चुनादारी चुनानम्।
मरा गर तू चुनी ख़ाही चुनीनम्॥

यदि दर्पण को स्वच्छ तथा सादा रखना चाहता है तो अपना बदन उसमें देख। यह समझ ले कि उसे सत्य प्रकट करने में न लज्जा ही है और न भय।

जब लोहे के तख़्ते का ऊपरी भाग बुद्धि द्वारा इतना स्वच्छ हो गया है तो ध्यान दे कि हृदय जिसमें कोई गन्दापन नहीं होता कितना निर्मल हो जायगा।

परन्तु लोहे और हृदय में अन्तर है। हृदय रहस्यमय है और लोहे में कोई रहस्य नहीं है।

(९)

इस सारे संसार में मैं केवल तुझी से प्यार करता हूँ। तेरी इच्छा है कि मैं अकेला बैठा हुआ कालक्षेप करूँ।

मेरा दिल क़लम है और तेरे हाथ में है। मैं प्रसन्न हूँ अथवा दुखी, जो कुछ भी हूँ, हूँ तेरी ही तरफ़ से।

जो कुछ भी तेरी इच्छा है उसके अतिरिक्त और मेरी इच्छा हो ही क्या सकती है? जो कुछ भी तू दिखाता है, मैं उसके सिवा और क्या देखूँ?

तू कभी तो मुझ में काँटे उत्पन्न करता है और कभी फूल। कभी मैं पुष्पों की सुगन्ध लेता हूँ और कभी कांटे चुनता हूँ।

अगर तू वैसा रक्खे वैसा हूँ और ऐसा रक्खे ऐसा हूँ; जिस प्रकार तू मुझको रखना चाहता है मैं वैसा ही हूँ।

दराँ ख़ुम्मे कि दिलरा रंग बख़्शी।
कि बाशम मन चे बाशद मेहरो कीनम्॥
तू बदी अव्वलो आख़िर तू बाशी।
तु बह कुन आख़िरम् अज़ अव्वलीनम्॥
चु तू पिनहा शवी अज़ अह्ले कुफ़्रम्।
चु तू पैदा शवी अज़ अह्ले दीनम्॥
बजुज़ चीज़े कि दादी मन चे दारम्।
चे मी जोई ज़े जेबो आस्तीनम्॥

(१०)

बग़ीर दामने लुत्फ़श कि नागहाँ बगुरेज़द।
वले मकश तु चूं तीरश कि अज़ कमाँ बगुरेज़द॥
चे नक़्शहा के बबाज़द चे हीलहा कि बसाज़द।
बनक़्श हाज़िरे बाशद ज़े राहे जाँ बगुरेज़द॥
दर आसमाँश बजोई चो मेह दर आब बेताबद।
दर आब चूंकि दर आई ब आस्मां ब गुरेज़द॥

तू जिस रंग में चाहे मुझे रंग दे। मैं क्या वस्तु हूँ और मेरा प्यार तथा बैर क्या है?

प्रथम तो मुझमें और तुझमें कोई भेद नहीं था। जो तू था वही मैं था। और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा। तू ही मेरे अन्त को मेरे आदि से उत्तम बनादे।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जायगा उस समय मैं विधर्मी हो जाऊँगा। और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा, मैं धर्मात्मा हो जाऊँगा।

जो कुछ तूने दिया है उसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। तू मेरी जेबें और आस्तीनें क्यों टटोल रहा है?

(१०)

उसके कृपा-रूपी अञ्चल को पकड़ ले। स्मरण रख वह यकायक भाग जाता है। परन्तु उसे एक बाण के समान अपनी तरफ़ खींच मत। खींचने से बाण धनुष को छोड़ देता है।

वह कैसे निराले, विविध प्रकार के रंग दिखलाता है और बहाने करता है। चित्र के रूप में सदैव समस्त में वर्त्तमान रहता है पर प्राणों के मार्ग से अदृश्य हो जाता है।

यदि तू आकाश में उसकी खोज करे तो वह चन्द्र बनकर नीचे, पानी में प्रतिबिम्बित होता है पर जैसे ही तू उसे वहाँ देखने आता है वह पुनः आकाश-चारी हो जाता है।

ज़े लामकाँश ब जोई निशाँ दहेद बमकानत।
चु दर मकाँश ब जोई ब लामकाँ बगुरेज़द ॥
चु तीर मीं बेरवद अज़ कमाँ चु मुर्ग़ गुमानत।
यक़ीं बेदाँ के यक़ींदार अज़ गुमाँ बगुरेज़द ॥
अज़ ईनो आँ बगुरेज़म ज़े तर्स नै ज़े मलूली।
के आँ निगारे लतीफ़म अज़ीनो आँ बगुरेज़द ॥
गुरेज़े पाये चु बादम ज़े इश्क़े गुल चु सबा अम।
गुले ज़े बीमे ख़िज़ाने ज़े बोस्तां बगुरेज़द ॥
चुनाँ गुरेज़दे नामश चु क़स्द गुफ़्तने बीनद।
कि गुफ़्त नीज़ न ताबी कि आँ फ़लाँ बगुरेज़द ॥
चुना गुरेज़द अज़ तु कि गर नवीसी नक़्शश।
ज़े लौह नक़्श बपररद जो दिल निशाँ बगुरेज़द ॥

(११)

सूरतगरे नक्काशम् हर लहज़ा बुते साज़म्।
वाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगज़ाज़म् ॥

तू जब उसकी खोज में बनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह बनों में भाग जाता है।

यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी बाण के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इस से दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनों का प्रणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है।

वह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तख्ती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्त्तियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी कृतिओं को तेरे सन्मुख पिघला डालता हूँ।

सद नक़्श बर अंगेज़म् बा रूह दराँ मेज़म् ।
चूँ नक़्शे तुरा बीनम् दर आतिशश अंदाज़म् ।।

तू साक़िए ख़ुम्मारी या दुश्मने हुशियारी ।
या आँ कि कुनी वीराँ हर ख़ाना कि बर साज़म् ।।

जाँ रेख़्ता शुद बा तू आमेख़्ता शुद बा तू ।
चूँ बूए तु दारद जाँ जाँरा हला ब नवाज़म् ।।

हर ख़ूं के ज़मीं रोयद बा ख़ाक तु मी गोयद ।
बा महरे तू हम रंगम बा इश्क़े तू अम्बाज़म् ।।

दर ख़ानए आबो गिल बे तुस्त ख़राब ईं दिल ।
या ख़ाना दर आ ऐ जाँ, या ख़ाना ब परदाज़म् ।।

शिकवए नै

बिश्नो अज़ नै चूं हिकायत मी कुनद ।
अज़ जुदाईहा शिकायत मी कुनद ।।
कज़ नेस्ताँ ता मरा बबुरीदा अन्द ।
अज़ नफ़ीरम मर्दे ज़न नालीदा अन्द ।।

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ ।

तू मदिरा बनाने वाला साक़ी है अथवा चतुरता का बैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है ।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है । तुझसे परिचित है । और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है ।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है । प्रियतम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ ।

बाँसुरी की शिकायत

सुनो बाँसुरी क्या कहती है । वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है ।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे बीन से स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं ।

सीना ख़ाहम शुर्रह शुर्रह अज़ फ़िराक़।
ता बेगोयम शर्रह दर्द इश्तियाक़॥

हर कसे कू दूर मानद अज़ अस्ले ख़ेश।
बाज़ जोयद रोज़गारे वस्ले ख़ेश॥

मन बहर जामीयते नालाँ शुदम।
जुफ़्ते बदहालाँ व ख़ुशहालाँ शुदम॥

हर कसे अज़ ज़न्ने ख़ुदशुद यारे मन।
अज़ दरूने मन नजुस्त असरारे मन॥

सिर्रे मन अज़ नालए मन दूर नेस्त।
लेके चश्मो गोश रा आँ नूर नेस्त।

तन ज़े जानो जाँ ज़े तन मस्तूर नेस्त।
लेके कसरा दीदे जाँ दस्तूर नेस्त॥

आतिशास्त ईं बाँगे नायो नेस्त बाद।
हर के ईं आतिश नदारद नेस्त बाद॥

आतिशे इश्क़स्त कंदर नै फ़िताद।
जोशिशे इश्क़स्त कंदर मै फ़िताद॥

मेरा हृदय वियोग के शोक से विदीर्ण हो जाय तब मैं उसके टुकड़े दिखा कर अपने कष्टों को सुनाऊँ।

जो पुरुष अपने मूल तत्व से विलग हो जाता है उसको पुनः उससे मिलने की चिन्ता रहती है।

मैं प्रत्येक जलसे में अपना रुदन करती रही हूँ और अच्छे व बुरे पुरुषों से मेल भी रक्खा है।

और प्रत्येक पुरुष ने भिन्न भिन्न प्रकार से सहायता की है परन्तु मेरे आंतरिक भेद को किसी ने भी नहीं टटोला।

क्योंकि मेरा भेद मेरे रोने धोने से अलग नहीं है परन्तु आँख और कान में वह प्रकाश कहाँ जो उस भेद को जान सके।

प्रत्येक पुरुष को इस बात का ज्ञान है कि शरीर और प्राण दो वस्तु हैं परन्तु कोई भी प्राण नहीं देखता।

बाँसुरी का स्वर एक आग है हवा की फूंक नहीं है अगर किसी में यह आग न हो तो वह मृत्यु को प्राप्त हो जाय।

बाँसुरी में जिस अग्नि का प्रकाश है वह प्रेमाग्नि है शराब में (सुरा) जो जोश है (उमङ्ग) वह प्रेम का जोश है।

नै हरीफ़े हर कि अज़ यारे बुरीद।
पर्दाहायश पर्दाहाये मा दरीद॥
हमचु नै ज़हे व तिर्याक़े कि दीद।
हमचु नै दमसाज़ व मुशताक़े कि दीद॥
नै हदीसे राह पुरख़ूं मी कुनद।
क़िस्साहाये इश्क़े मजनूं मी कुनद॥
दोदहाँ दारेम गोया हमचो नै।
यक दहाँ पिनहाँस्त दर लबहाए वै॥
यक दहाँ नालाँ शुदा सूए शुमा।
हाए हूए दर फ़िगन्दा दर समा॥
लेके दानद हर के ऊ रा मंज़रस्त।
कीं फ़ुग़ाने ईं सरी हमज़ाँ सर अस्त॥
दमदमा ईं नाए अज़ दमहाय ओस्त।
हाए हूए रूहे अज़ हैहाय ओस्त॥
महरमे ईं होश जुज़ बेहोश नेस्त।
मर ज़बाँ रा मुशतरी जुज़ गोश नेस्त॥

बाँसुरी उसकी सहायक है जिसका किसी मित्र से वियोग है।

उसके पर्दों ने हमारे पर्दे विदीर्ण कर दिये हैं, सत् को प्रकट कर दिया है। बाँसुरी की तरह विष और जहरमोरा (एक प्रकार का विष) दोनों का स्वाद किसने लिया है और उसके समान दिल बहलाने वाला और प्रेमी दोनों को किसने देखा है।

बाँसुरी एक शोक पूर्ण मार्ग की कहानी सुनाती है और प्रेम युक्त क़हानियाँ मनुष्य को उन्मादी बना देती हैं (मजनूं के प्रेम की कहानी कहती है।)

हम भी बाँसुरी की तरह दो मुँह रखते हैं एक मुँह उसके ओष्ठों में लुप्त है।

एक मुँह हमारे सम्मुख रुदन कर रहा है और उसने सम्पूर्ण अकाश को हाय हाय के शोर से परिपूर्ण कर दिया है।

परन्तु जिसकी दृष्टि है वह भली प्रकार से जानता है कि इस सिरे की आवाज़ उस सिरे की आवाज़ है।

इस बाँसुरी का सुर उस दूसरे मुँह की फूकों से है और रूह (जान) का विलाप करना उसी के विलाप के कारण है।

इस चतुराई को केवल प्रेमोन्मादी ही जान सकता है, अन्य नहीं। जिह्वा का ग्राहक केवल कान है।

गर नबूदे नालए नै रा समर।
नै जहां रा पुर नकर्दे अज़ शकर॥

लैला व मजनूं

अबलहाँ गुफ़्तन्द मजनूँ रा जे जेह्ल।
हुस्ने लैला नेस्त चन्दाँ हस्त सेह्ल॥
बेहतर अज़ वै सद हज़ाराँ दिलरुबा।
हस्त हम चूँ माह दर शहर ए केआ॥
नाज़नीं तर ज़ो हज़ाराँ हूर वश।
हस्त बेगुज़ीं जाँ हमा यकबारे ख़श॥
वारहाँ ख़ुद रा व मारा नीज़ हम।
अज़ चुनी सौदाए ज़िश्ते मुत्तहम॥
गुफ़ सूरत कूज़ास्त व हुस्न मै।
मै .ख़ुदायम मी देहद अज़ ज़र्फे वै॥
मर शुमा रा सिर्का दादज़ कूज़ा अश।
ता नबाशद इश्क़े ऊ ताँ गोश कश॥
अज़यके कूज़ा देहद ज़हरो असल।
हरयके रा दस्ते हक़्क़े अज़्ो जल॥

अगर बाँसुरी का रोदन निष्फल होता तो "नै" (बाँसुरी) संसार को धन्यवाद से न भर देती।"

मजनूँ और लैला

मूर्ख लोगों ने मजनं से नादानी से पूछा कि लैला में क्या सुन्दरता है वह तो कुछ भी सुन्दर नहीं है।

उससे श्रेष्ठ (उत्तम) लाखों प्रेमिकायें शहर में चन्द्र के समान उपस्थित हैं।

हावभाव में उससे श्रेष्ठ सहस्रों युवतियाँ उपस्थित हैं, तुम उन सब में से जिसको चाहो चुन लो।

और स्वयं हम सबको भी इस अप्रतिष्ठा के व्यापार से मुक्त करो।

मजनूँ ने उत्तर दिया कि सूरत (चित्र) तो एक पात्र है और यौवन उसमें भरी हुई सुरा। ईश्वर मुझको उसी के प्याले से सुरा का पान कराता है।

तुम लोगों को उसके पात्र से परे कर दिया है जिसके कारण उसका यौवन तुमको अपनी ओर आकर्षित न कर सके।

एक ही पात्र से विष और शहद ईश्वर का पवित्र हाथ लोगों को दिया करता है।

कूज़ा मी बीनीं व लेकिन आँ शराब।
रूए ननुमायद बचश्मे ना सवाब॥
क़ासरातुत्तर्फ़ बाशद ज़ौक़े जाँ।
जुज़ बख़स्में ख़ेश ननुमायद निशाँ॥
क़ासरातुत्तर्फ़ बाशद आँ मुदाम।
वीं हिजाबे ज़र्फ़हा हमचू ख़याम॥

सवाल करदन बाबत नमाज़

आँ यके पुर्सीद अज़ मुफ़्ती बराज़।
गर कसे गिर्यद बनौहा दर नमाज़॥
आँ नमाज़े ऊ अजब बातिल शवद।
या नमाज़श जायज़ो कामिल बुवद॥
गुफ़्त आबेदीदा नामश बहे चीस्त।
बिनगरी ता ऊ चे दीदस्तो गिरीस्त॥
आबे दीदा ता चे दीदा अस्त अज़ निहाँ।
ता बदाँ शुद ऊ ज़े चश्मेद ख़ुद रवाँ॥

तुम लोग पात्र को देखते हो परन्तु वह सुरा तिरछी आँख में दिखाई नहीं देती।

नीची दृष्टि देखने वाली स्वर्ग की देवियाँ प्राणों का आनन्द प्राप्त करती हैं और वह केवल अपने ही आखेट पर दृष्टि रूपी बाण का प्रयोग करती हैं।

वह सुरा सदैव नीची दृष्टि रखने वाली है और प्यालों का आवरण तम्बू के समान है।

नमाज़ की बाबत सवाल करना

मुफ़्ती (फ़तवा देने वाला) से एक पुरुष ने चुपके से पूछा कि यदि कोई पुरुष नमाज़ में दहाड़ें मार २ कर रोये,

तो क्या वह नमाज़ उसकी भंग हो जायगी या पूर्ण होगी ?

फ़तबा देने वाले ने कहा कि अश्रुओं का नाम नेत्र जल है। अब तुम देखो कि उस पुरुष ने क्या देखा जिसके कारण वह रो पड़ा।

नेत्र के जल को अन्दर (भीतर) से क्या देख पड़ा जिसके कारण वह नेत्रपट से प्रकट हो प्रवाहित हुआ।

गर ज़े शोक़े हक़ कुनद गिर्या दराज़।
या नदामत अज़ गुनाहे दर नयाज़॥
ख़ौफ़े हक़ गर बाशद आँ गिया ख़ुशस्त।
ज़ाँके आँ आबे तू दफ़े आतिशस्त॥
बेशके गिर्दे नमाज़े ऊ कमाल।
क़ुर्ब याबद दर रहे हक़ ला महाल॥
आँ जहाँ गर दीदाअस्त आँ पुर नियाज़।
रौनक़े याबद ज़े नौहा आं नमाज़॥
वर्ज़े रंजे तन बुवद वज़ दर्दो सोग।
रेसमाँ बगुसस्त व हम बशिकस्त दोग॥
वर फ़ुग़ां अज़ मातमे फ़रज़न्द कर्द।
की दिलो जानश ज़े मातम कर्द दर्द॥
मे ने अरज़द आं नमाज़े ऊ दो जौ।
ज़ाँके बा अग़यार गरदद दिल गिरौ॥
पस नमाज़श बेशके बातिल बुवद।
गिरयए ऊ नीज़ बे हासिल बुवद॥

यदि ईश्वर के चाव से कोई अति रुदन करता है या विनती करते समय अपने पापों से शर्मिन्दा होकर रोता है,

या यदि वह ईश्वरीय भय से रोया है तो उस रोदन का क्या कहना, क्योंकि तेरे इस जल से अग्नि शान्त होगी और वह ईश्वर का भक्त बन जायगा।

क्योंकि उस समय उस पुरुष की अन्तरात्मा में सच्ची भक्ति उत्पन्न हो गई है। उसके रुदन करने से उसकी नमाज़ भी पूर्ण हो जायगी।

और यदि वह किन्हीं अन्य कष्टों या सांसारिक दुःखों के कारण रोया तो समझ लो कि तागा भी टूटा और तकला भी।

यदि वह अपने पुत्र शोक से रोया कि उसके दिल में शोक उत्पन्न हो गया।

तो भी उसकी यह नमाज़ दो कौड़ी की भी नहीं हुई क्योंकि उसका दिल अन्य ईश्वर में लीन हो गया।

इस कारण अवश्य उसकी नमाज़ भङ्ग हुई और उसका रोना भी व्यर्थ हुआ।

क्योंकि नमाज़ की वास्तविकता यह है कि पुरुष अपने बदन को चूर कर दे।

ज़ांके तर्के तन बुवद अस्ले नमाज़।
तर्के ख़ेशो तर्के फ़रज़न्द अज़ नयाज़॥

अज़ ख़लील आमोज़ क़ुर्बां कुन वलद।
तन बेनेह् बर आतिशे नमरूद रद॥

हासिल आँके ता बेदानी ए केआ।
कज़ बुका फ़र्क़ीस्त बेहद ता बुका॥

मरतबेए इंसान

पस बसूरत आलमे असग़र तुई।
पस बमानी आलमे अकबर तुई॥

ज़ाहिरा आँ शाख़ अस्ले मेवअस्त।
बातिनन बहे समर शुद शाख़ हस्त॥

गर नबूदे मैलो उम्मीदे समर।
कै निशाँदे बाग़बाँ बेख़े शजर॥

पस बमानी आँ शजर अज़ मेवा ज़ाद।
गर बसूरत अज़ शजर बूदश निहाद॥

स्वयं अपना और पुत्र का भी उस विनती की अवस्था में ध्यान न करे।

देख और ख़लील से शिक्षा ग्रहण कर कि अपना पुत्र भी बलिदान कर दिया और पुनः अपना शरीर नमरूद (एक बादशाह) को जलवाई अग्नि में डाल दिया अर्थात् उसको सौंप दिया।

सारांश यह है कि ऐ विद्वान पुरुष ! तुझको यह मालूम रहना चाहिये कि रोने रोने में भी अधिक अन्तर है।

मनुष्य की वास्तविकता

वैसे तो देखने में छोटा संसार है परन्तु वास्तव में बहुत बड़ी दुनिया है।

प्रकट रूप में डाली से मेवा उत्पन्न है परन्तु वास्तव में मेवा फलने से पूर्व डाली निकलती है।

यदि फल की उत्कंठा और अभिलाषा न होती तो माली वृक्ष का पौधा क्यों लगाता ?

वास्तव में पेड़ मेवे से उत्पन्न है, परन्तु प्रकट रूप से पेड़ से मेवा निकलता है।

गर बसूरत मन ज़े आदम ज़ादा अम।
मन बमानी जद्दे जद उफ़्तादा अम ॥
पस ज़े मन ज़ाईदा दर माना पिदर।
पस ज़े मेवा ज़ाद दर माना शजर ॥

मरतबात राहे सादिक़

हर शराबे बन्दए आँ क़द्दो ख़द।
जुम्ला मस्ताँरा बुवद बर तो हसद ॥
हेच मोहताजे मए गुलगूँ नई।
तर्क कुन गुलगूना, तू गुलगूनई ॥
जौहरस्त इंसाँ व चर्ख़ ऊ रा अर्ज़।
जुमला फ़र्रा व सायन्दो तू ग़र्ज़ ॥
इल्म जोई अज़ कुतुबहाए फ़सोस।
ज़ौक़ जोई तू ज़े हलवाए सबोस ॥
ए ग़ुलामत अक़्लो तदबीरातो होश।
तू चराई ख़ेश रा अरज़ाँ फ़रोश ॥

प्रत्यक्ष में तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का दादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए बाप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृक्ष मेवे से उत्पन्न होता है।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है। तमाम मतवालों को तुझ पर ईर्षा है।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है। गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है।

मनुष्य जौहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है। वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डालो और परछाईं के समान हैं।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या ढूँढ़ता है अर्थात छिलकों के हलवे में आनन्द ढूँढ़ता है।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सस्ते मूल्य में क्यों बेचता है।

खिद्मते बर जुमला हस्ती मुफ़रज़ ।
जौहरे चूँ इज्ज दारद बा अरज़ ॥

बह्र इल्मे वर नमे पिनहाँ शुदा ।
दर से गज़ तन आलमे पिनहाँ शुदा ॥

एक हिकायत

कौदके दर पेशे ताबूते पिदर ।
ज़ार मी नालीदो बर मी कोफ़्त सर ॥
कै पिदर आख़िर कुजायत मी बरन्द ।
ता तुरा दर ज़ेर ख़ाके बफ़शरन्द ॥
मी बरन्दत ख़ानए तंगो ज़हीर ।
नै दरो क़ाली व नै दर वै हसीर ॥
नै चिरागे दर शबो व नै रोज़े नान ।
नै दराँ बूए तआमो नै निशान ॥
नै दरे मामूर नै दर बाम राह ।
नै यके हमसाया कू बाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओं की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर "अर्ज़" के सामने क्यों सर झुकाता है।

तू विद्या रूपी सागर है जो कि एक बूँद में व्याप्त है और एक तीन हाथ के शरीर में सम्पूर्ण संसार छिपा हुआ है।

एक कहानी

एक बच्चा पिता के मृतक शरीर के समीप फूट फूट कर रुदन करता हुआ सर पीटता था।

और पूछता था पिता जी को कहाँ लिये जाते हो? फिर कहता था ऐ पिता तुमको मिट्टी के नीचे गाड़ आवेंगे।

एक कम चौड़े और अँधेरे घर में तुमको डाल देंगे, न उसमें क़ालीन है न चटाई।

न रात्रि के समय प्रकाश है और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का लेशमात्र तक नहीं है।

न उस घर का कोई खुला हुआ पट है और न उसकी छत पर जाने का मार्ग। न कोई पड़ोसी है कि जिससे सहारा मिले।

जिस्म तू कि बोसागाहे ख़ल्क़ बूद।
चूँ रवद दर ख़ानए कोरो कबूद॥
ख़ानए बे ज़ीनहारो जाय तंग।
की दरू नै रूए मी मानद न रंग॥
ज़ीं नुसक़ औसाफ़े ख़ाना मी शमुर्द।
वज़ दोदीदा अश्क़ ख़ूनीं मी फ़शर्द॥
गुफ़्त जूजी बा पिदर ऐ अर्जमन्द।
वल्ला ईं रा ख़ानए मा मी बरन्द॥
गुफ़ जूजी रा पिदर अबला मशौं।
गुफ़ ऐ बाबा निशाने हा शुनो॥
ईं निशानेहा कि गुफ़ ऊ यक बयक।
ख़ानए मारास्त बे तरदीदो शक॥
नै हसीरो नै चिराग़ो नै तुआम।
नै दरश मामूरो नै सहनो नै बाम॥
ज़ीं नमत दारन्द बर ख़ुद सद निशाँ।
लेक कै बीनन्द आँरा ताग़ायाँ॥

खेद है, तुम्हारे बदन को कभी लोग चुमकारा करते थे यह किस प्रकार अंधेरे और उजाड़ घर में जायगा।

ऐसा घर जिसमें न कोई शरण है और न खुला स्थान। वहाँ बदन (चेहरे) की रंगत और चमक जाती रहती है।

वह बच्चा इस प्रकार घर की अवस्थाओं का वर्णन कर रहा था और दोनों नेत्रों से लहू के अश्रु प्रवाहित थे।

जोजी (छोटा बच्चा) ने अपने पिता से कहा कि पिता जी! ईश्वर की सौगंध इसको तो हमारे घर में लिये जा रहे हैं।

जोजी के पिता ने उत्तर दिया क्या नासमझ हुआ है। लड़के ने कहा बाबा, चिन्ह सुनलो।

उसने जितने चिन्ह एक एक कर के वर्णन किये हैं यह सत्य हैं और अवश्य ही हमारे घर में हैं।

वहाँ न चटाई है न प्रकाश है, न भोजन है, न उसमें पट लगे हुये द्वार हैं, न आँगन है और न कोठा।

अपने पास इस प्रकार सहस्रों चिह्न पुरुष रखते हैं परन्तु मार्ग से भटके हुये उसको कब देखते हैं।

ख़ानए आँ दिल कि मानद बे ज़िया।
अज़ शुआये आफ़ताबे किब्रिया॥

तंगो तारकिस्त चूँ जाने जहूद।
बेनवा अज़ ज़ौक़े सुलताने वदूद॥

गोर ख़ुशतर अज़ चुनीं दिल मरतरा।
आख़िर अज़ गोरे दिले ख़ुद बर तरा॥

शिकवाहाय आशिक़

आँ यके आशिक़ ब पेशे यार ख़ुद।
मे शमुर्द अज़ ख़िदमतो अज़कारे ख़ुद॥

कज़ बराए तू चुनीं करदम चुनाँ।
तीरहा ख़ुर्दम दरीं रज़्मो सेनाँ॥

माल रफ़्तो ज़ोर रफ़्तो नाम रफ़्त।
बर मनज़ इशक़त बसे नाकाम रफ़्त॥

हेच सुबहम ख़ुफ़्ता या ख़नदाँ नयाफ़्त।
हेच शामम बर सरो सामाँ न याफ़्त॥

ईश्वरीय सूर्य की किरण जिस दिल में प्रकाशवान नहीं हुई वह अंधकार मय घर है। वह इस प्रकार क्षुद्र व अंधकार मय है जिस प्रकार नास्तिक का दिल।

कि वह दयावान राजा के साहस के स्वाद के आनन्द का लेशमात्र भी भागी नहीं बनता।

मेरे लिये ऐसे दिल से क़ब्र अच्छी है। कभी तो अपने दिल की क़ब्र से ऊपर आ।

प्रेमी की शिकायत

एक प्रेमी था जो अपनी प्रेमिका के समक्ष अपनी सेवाओं और कार्य का वर्णन कर रहा है,

कि मैंने तेरे लिये यह किया, वह किया, उस युद्ध में तीर और भालों के घाव सहन किये।

मेरा धनमाल और ऐश्वर्य सब नष्ट होगया। मैंने तेरे प्रेम में अत्यन्त कष्ट सहन किया।

किसी पुरुष ने भी कभी प्रातःकाल के समय भी सोता या हँसता नहीं पाया और कभी संध्याकाल को किसी ने मुझे प्रसन्नचित्त नहीं देखा।

उंचे ऊ नौशीदा बूद अज़ तल्ख़ो दुर्द।
ऊ बतफ़सीलश यकायक मी शमुर्द॥

नज़ बराये मिन्नते बल मी नमूद।
बर दुरुस्तीए मोहब्बत सद शहूद॥

आक़िलाँ रा यक इशारत बस बुवद।
आशिक़ाँ रा तिश्नगी जाँ कै रवद॥

सद सख़ुन मी गुफ़ जाँ दर्दे कुहन।
दर शिकायत के न गुफ़्तम यक सख़ुन॥

आतिशे बूदस्त नमीदानिस्त चीस्त।
लेके चूँ शमा अज़ तफ़े ऊ मी गिरीस्त॥

बादे गिर्या गुफ़ ईं हा रफ़ लेक।
ईं ज़माँ इरशाद कुन तू यार नेक॥

हरचे फ़रमाई बजाँ इस्तादाअम्।
बर ख़ते तो पा व सर बनिहादा अम्॥

गर दर आतिश रफ़ बायद चूँ ख़लील।
वर चू येहिया मीकुनी ख़ूनम सबील॥

तात्पर्य यह कि उस प्रेमी ने जो जो कठिनाइयाँ सहन की थीं उनको बार बार सुना रहा था।

परन्तु इससे वह प्रेमिका पर किसी प्रकार का कृतज्ञता का भार नहीं प्रकट करता था बल्कि अपना प्रेम सच्चा होने पर सहस्रों क्षेपक दे रहा था।

यह तो बुद्धिमानों के लिये है कि उन्हें एक संकेत से ही तुष्टि हो जाती है परन्तु मदमस्त प्रेमियों की पिपासाग्नि इससे कब शान्त होती है।

वह अपने भूतकाल के कष्टों की सहस्रों बातें कह रहा था पर अभी उसको शिकायत थी कि मैंने कुछ भी नहीं किया।

उसके हृदय में अग्नि भभक रही थी परन्तु उसको यह पता न था कि क्या है; इस पर भी उसकी उष्णता से मोम सम घुल रहा था।

रुदन करने के पश्चात् कहा कि सब बातें तो सम्पूर्ण हो चुकीं अब आप यह कहिये कि क्या आज्ञा है, मैं उसको पूर्ण करने के लिये जी जान से प्रस्तुत हूँ।

जो आज्ञा हो उसको हार्दिक भाव से पूर्ण करूँगा। मैं सर से पैर तक अर्थात् पूर्णतया आपका दास हूँ।

यदि "खलीलअल्लाह" की तरह अग्नि में प्रवेश करने की आज्ञा हो या "यूहा" पैग़म्बर के समान मेरा रुधिर बहा दीजिये,

वर ज़े गिर्या चूँ शोएब आमाँ शवम ।
वर चू यूनस दर फ़मे माही रवम ॥
वर चू यूसुफ़ चाहो ज़िन्दानम कुनी ।
वर ज़े फ़क़रम ईसए मरयम कुनी ॥
रुख़ न गरदानम नगरदम अज़ तो मन ।
बहे फ़रमाँ तो दारम जानो तन ॥
गुफ़ माशूक़ ईं हमा कर्दी वलेक ।
गोश बकुशा पेहनो अन्दरयाब नेक ॥
काँचे असल असले इश्क़स्त व विलास्त ।
आँ न कर्दी उंचे कर्दी फ़रआहस्त ॥
गुफ़श आँ आशिक़ बगो काँ अस्ल चीस्त ।
गुफ़ अस्लश मरदनस्तो नीस्तीस्त ॥
तू हमा करदी न मुरदी ज़िन्दई ।
हीं बेमीर अर यारे जाँ बाज़िन्दई ॥
गर बेमीरी ज़िन्दगी याबी तमाम ।
नामे नीकूए तू मानद ता क़याम ॥
चूँ शनूद आँ आशिक़े बे ख़ेशतन ।
आहे सर्दे बरकशीद अज़ जानो तन ॥

"शोयब" पैग़म्बर के समान मैं अंधा होजाऊँ या "यूनिस" पैग़म्बर की तरह मछली (मत्स) के मुंह में प्रवेश कर जाऊँ ।

और या "यूसुफ़" की तरह मुझे कारागृह में डाल दे या "ईसा" के समान मुझे फ़क़ीर बना दे ।

मैं कभी मुंह न फेरूंगा और तेरी आज्ञा से कभी मुख न मोड़ूँ गा । मेरा यह शरीर और प्राण दोनों तेरी आज्ञा को पूर्ण करने के लिये प्रति समय प्रस्तुत है ।

प्रेमिका ने उत्तर दिया कि श्रीमान् आपने सब किया परन्तु अब कान खोलकर ध्यानपूर्वक श्रवण करो,

कि प्रेम और प्यार का जो वास्तविक मूल है तुमने उसी को नहीं दिया और यह तो सब आडम्बर है ।

प्रेमी ने पूछा तो कृपया उसी वास्तविक मूल को प्रकट करिये । प्रेमिका ने उत्तर दिया कि वह वास्तविक मूल प्राण त्याग देना अर्थात् नष्ट हो जाना हैं ।

तुमने करने को सब कुछ किया परन्तु मरे नहीं और अबतक जीवित हो । यदि तुम सच्चे प्रेमी हो तो अभी मर जाओ ।

तुम मर जाओगे तो तुमको पूर्ण जीवन का आनन्द प्राप्त हो जायगा और प्रलय पर्यन्त तुम्हारा यश रहेगा ।

अभिमान रहित प्रेमी ने जब यह बात सुनी उसने हृदय से ठंडी साँस ली

हमदराँ दम शुद दराज़ो जाँ बेदाद ।
हमचो गुल दर बाग़ सर ख़न्दानो शाद ।।
मानद आँ ख़न्दा बरो वक़्फ़े अबद ।
हमचो जानो अक़्ले आरिफ़ बेकवद ।।
अरजई बेशुनीद नूरे आफ़ताब ।
सूए अस्ले ख़ेश बाज़ आमद शताब ।।
नूर दोदा सूए दीदा बाज़ गश्त ।
मानँद दर सौदाए ऊ सह्‌रा व दश्त ।।

सिलसिलाए शह्‌वत

ख़ल्क़ देवानन्दो शह्‌वत सिलसिला ।
मेकशद शाँ सूए दुक़ानो ग़ला ।।
हस्त ईं ज़ँजीर अज़ ख़ौफ़ो वला ।
तू मबीं ईं ख़ल्क़ रा बे सिलसिला ।।
मी कशानद शाँ सूए किश्तो शिकार ।
मी कशद शाँ सूए काहाँ व बिहार ।।
मी कशानद शाँ बसूए नेको बद ।
गुफ़्त हक़ फ़ी जोदेहा हबलुम मसद ।।

और उसी समय लम्बा लम्बा लेट गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया।

फूल के समान हँसते खेलते मुरझा गया अर्थात् नष्ट हो गया।

और बड़ी हँसी उसके ऊपर सदैव उपस्थित रही, हृदय रहित ईश्वर की जान और बुद्धि की तरह।

सूर्य के प्रकाश ने "लौट आ" की आज्ञा सुनी और तुरन्त अपने वास्तविक स्थान को चली गई।

आँखों का प्रकाश पुनः आँखों में आगया और मैदान और जंगल उसके पश्चात् अँधेरे में ही रह गये।

अभिलाषाएँ

लोग सब देव हैं और इन्द्रिय लोलुपता एक बंधन है जो उनको इच्छा के कारणों की ओर खींच ले जाता है।

यह बंधन भय व आनन्द युक्त है। तू यह विचार न कर कि यह लोग क़ानून रहित हैं।

यही अभिलाषा का बंधन उनको खेती करने, आखेट करने, खानों को खोदने और नदियों में जाने की ओर खींच ले जाता है।

यह उनको शुभ और अशुभ सब की ओर आकर्षित करता है। ईश्वर ने कह दिया है कि उसके गले में एक घास की बटी हुई रस्सी है।

इश्क़े इलाही

हरचे रोईद अज़ पए मोहताज रुस्त।
ता बयाबद तालिबे चीज़े कि जुस्त॥
हक़ तआला कीं समावत आफ़रीद।
अज़ बराए रफ़ए हाजात आफ़रीद॥
हरकि जोया शुद बयाबद आक़बत।
मायए दर्दस्त अस्ले मरहमत॥
हर कुजा दरदे दवा आँजा रवद।
हर कुजा फ़क़रे नवा आँजा रवद॥
हर कुजा मुशकिल जवाब आँजा रवद।
हर कुजा पसतीस्त आब आँजा रवद॥
ज़रए जाँरा किश जवाहिर मुज़मरस्त।
अब्रे रहमत पुर ज़े आबे कौसरस्त॥

वस्फ़े इश्क़

आशिक़ाँ रा हर नफ़स सोज़ीद नीस्त।
बर देहे वीराँ ख़िराजो उश्र नीस्त॥

ईश्वरीय प्रेम

जो कुछ उत्पन्न हुआ है वह दरिद्र ही के लिये उत्पन्न हुआ है ताकि याचने वाले को जिस वस्तु की इच्छा हो प्राप्त हो सके।

ईश्वर ने इन वस्तुओं को उत्पन्न किया तो लोगों की आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिये उत्पन्न किया।

जो पुरुष ढूंढ़ता है अंत में प्राप्त करता है अनुग्रह का वास्तविक मूल कष्ट सहन करने के कारण है।

जहाँ कोई बीमारी प्रकट होती है वहाँ औषधि पहुँच जाती हैं। जिस स्थान पर दरिद्रता होती है उस जगह सामान पहुँच जाता है।

जहाँ किसी कठिनता का सामना होता है वहीं उसके पूर्ण होने का आसान (सरल) रूप भी उत्पन्न हो जाता है और जहाँ अधिक निचाई होती है वहाँ पानी पहुँचता है।

जान (प्राण) रूपी क्षेत्र के लिये जिसमें जवाहरात गुप्त हैं कृपा रूपी बादल (मेघ) को वदी रूपी मेंह से परिपूर्ण है।

प्रेम की ख़ूबियाँ

प्रेमी लोग प्रतिक्षण अग्नि में जला करते हैं। उजाड़ गावों पर लगान नहीं लगता।

ख़ू शहीदाँ रा जे आब औला तर अस्त।
ईं ख़ता अज़ सद सवाब औला तरस्त ॥
दर दरूने काबा रस्मे क़िब्ला नीस्त।
चे ग़म अरग़वास रा बा चपला नीस्त ॥
इल्लते इश्क़ज़ हमा दींहा जुदास्त।
आशिक़ाँ रा मज़हबो मिल्लत ख़ुदास्त ॥

ज़ांके आशिक़ दर दमे नक़दस्त मस्त।
लाजरम् अज़ कुफ़ो ईमाँ बरतरस्त ॥
कुफ़ो ईमाँ हर दो ख़ुद दरबाने ऊस्त।
कूस्त मग़ज़ो कुफ़ो दीं ऊ रा दो पोस्त ॥
कुफ़् क़िश्रे ख़ुश्क रू बर ताफ़्ता।
बाज़ ईमाँ क़िश्रे लज़्ज़त याफ़्ता ॥
क़िश्रहाए ख़ुश्क रा जा आतिशस्त।
क़िश्रहाए पैवस्ता मग़ज़े जाँ ख़ुशस्त ॥
मग़ज़े ख़ुदज़ मर्तबा ख़ुश बरतरस्त।
बरतरस्त अज़ ख़ुद कि लज़्ज़त गुस्तरस्त ॥

शहीदों के लिये रक्त जल से श्रेष्ठतर है; उनकी यह त्रुटि शत नेकियों से बढ़कर है।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बूढ़े का कोई क़ायदा नहीं है। यदि डुबकी लगाने वालों के पास तूंवरा नहीं है तो क्या चिंता है।

प्रेम का रोग समस्त मतों से निराला है। प्रेमियों का धर्म और मत ईश्वर है।

चूँकि प्रेमी नक़द माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया।

नास्तिकता और धर्म दोनों उसी नक़द के ड्योढ़ीवान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वही नक़द है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं।

नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण है क्योंकि वही स्वाद देने वाला है।

शेख़ सादी

(जन्म ११८४ ई० : मृत्यु १२९१ ई०)



सादी
(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

इनका पूरा नाम था मश्रफ़उद्दीन बिन मसीहउद्दीन अबदुल्ला । इनका जन्म शीराज़ में सन् ११८४ ई० में हुआ था और शरीरान्त सन् १२९१ ई० में। इन्होंने रहस्यवाद पर अधिक न लिखकर धर्म्म सम्बन्धी विषयों पर अपनी क़लम चलाई थी । इनकी रचनाएँ भी कर्त्तव्याकर्त्तव्य से ही सम्बन्ध रखती हैं।

इन्होंने भी कई एक स्थानों तथा देशों में भ्रमण किया था, जिनमें से अरब, अबसीनियाँ, सीरिया, दमिश्क, उत्तरी अफ़्रीका, एशिया माइनर, जेरूसलम और भारतवर्ष के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं। सिन्ध प्रान्त में, इन्हें कई एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी मिले थे। बग़दाद में इनकी भेंट सूफ़ी शेख़ शहाबुद्दीन से हुई थी। इन्होंने बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इनकी ख्याति गुलिस्ताँ तथा बोस्ताँ से अधिक है। गुलिस्ताँ में इन्होंने धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन करके अपने अनुभवों को दर्शाया है। बोस्ताँ में (जिसमें के कई एक पद मैंने इस पुस्तक में उद्धृत किये है) ईश्वरवाद की झलक है, जिससे यह प्रकट होता है कि वह रहस्यवादी थे और आध्यात्मिक विद्या से भी कुछ जानकारी रखते थे। भाषा की सरलता से इनकी कविता में एक अनोखापन आ जाता है। इन्होंने कई विषयों पर कविताएँ लिखी हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं और जिनके कारण उनका स्थान कवियों में ऊँचा हो गया है। सादी ने कविता लिखना वृद्धावस्था में आरम्भ किया था। उन्होंने कई बार अपने समय के राजाओं के यहाँ राजकवि के रूप में रहने का प्रयत्न किया। परन्तु स्वीकार नहीं हुआ।

इनके विचार बहुत ही पवित्र थे। इन्होंने कई एक नवीन विषयों पर लिखने का प्रयत्न किया था, जिनमें से शृङ्गार रस तथा भारतीय ढंग पर कविता लिखना भी थे। गजल लिखने में वह हाफ़ीज़ से कुछ ही कम होंगे। ब्राउन ने उनके विषय में लिखा है, "इनकी रचानाओं में पूर्वीय झलक पूर्णतयः वर्त्तमान है। सुन्दर से सुन्दर और रद्दी से रद्दी रचनाओं में भी यही बात जाती है। और फिर यह बात भी साधारण नहीं है कि जहाँ कहीं भी फ़ारसी भाषा का अध्ययन किया जाता है, पढ़ने वाले के हाथ में पहले इनकी ही पुस्तक आती है। यह बात लगभग डेढ़ सौ वर्ष से चली आ रही हैं।"

(लि० हि० अ० पर० जिल्द २ पृष्ठ ५३२)

प्रमुख रचनाएँ:—

गुलिस्ताँ।
बोस्ताँ।
दीवान।
अखलाक़ी नासीन।
जिजी सेखानी।

इश्क़

खुशा वक्ते शोरीदगाने ग़मश।
अगर रेश बीनन्दो गर मरहमश॥

गदायाने अज़ पादशाही नफ़ूर।
बउम्मीदश अंदर गदाई सबूर॥

दमादम शराबे अलम दर कशन्द।
बगर तल्ख़ बीनन्द दम दर कशन्द॥

बलाए ख़ुमारस्त दर ऐशे मुल।
सिलहदार ख़ारस्त बा शाख़े गुल॥

न तल्ख़स्त सब्रेके बर यादे ओस्त।
कि तल्ख़ी शकर बाशद अज़ दस्ते दोस्त॥

असीरश न ख़ाहद रिहाई जे बन्द।
शिकारश न ख़ाहद ख़लास अज़ कमन्द॥

सलातीने उज़लत गदायाने है।
मंज़िल शनासाए गुम करदा पै॥

प्रेम

उसके प्रेमियों के लिये क्या ही सुनहरा अवसर है! वह घाव भी देखते हैं और औषधि भी।

ऐसे प्रेमी सम्राट् के पद को घृणा से ठुकरा देते हैं और उसकी आशा में रह कर निर्धनता पर सन्तोष करते हैं।

वह सर्वदा प्रेम की मदिरा पान किया करते हैं और जो उसे कड़वी समझते हैं संसार के प्रलोभनों में पड़, नहीं पीते हैं।

मदिरा-पान में आनन्द है परन्तु नशे के उतार में कष्ट हैं। प्रत्येक पुष्प की रखवाली के लिये टहनियों में कण्टक छिपे रहते हैं।

उसकी स्मृति में जो सन्तोष है वह कड़वा नहीं है। मित्र के हाथ की दी हुई कड़वी वस्तु भी मीठी हो जाती है।

उसका बन्दी, कारागार से मुक्त होने का इच्छुक नहीं है। जो उसके प्रेम-पाश में अवरुद्ध हो गया वह छूटना नहीं चाहता।

उसके प्रणय के भिखारी भी संसार के सम्राटों से कम नहीं हैं। मंज़िलों को पहचानने वाले (संसारी) रास्ता भूले हुए हैं।

मलामत कशानन्द मस्ताने यार।
सबुकतर बरद उश्तुरे मस्त बार॥
बसर वक़्ते शाँ ख़ल्क़ कै रह बरन्द।
कि चूँ आबे हैवाँ बज़ुल्मत दरन्द॥
चूँ बैतुलमुक़द्दस वरूँ पुर्ज़ ताव।
रिहा करदा दीवारे बरूँ ख़राब॥
चु परवाना आतश बख़ुद दर ज़नन्द।
न चूं किर्मे पीला बख़ुद दर तनन्द॥
दिलाराम दरबर दिलाराम जूय।
लबज़ तिश्नगी ख़ुश्क बर तर्फ़े जूय॥
नगोयम कि बर आब क़ादिर नयन्द।
कि बर साहिले नील मुसतसक़ी अन्द॥

गुफ़्तार अन्दर सबूत इश्क़े हक़ीक़ी बदलीले मजाज़ी।

तुरा इश्क़ हमचूं ख़ुदे ज़ाबो गिल।
रुबायद हमे सब्रो आरामे दिल॥

हम उसके प्रणयी हैं जो सहन शील है और मतवाले ऊँट के समान शीघ्र अपनी लादी ले जाते हैं।

संसार को उनकी ओर आकर्षित होने से क्या प्राप्त होगा जब कि अमृत के समान वह अन्धकार में छिपे हुए हैं।

बेतुलमुक़द्दस के समान उनका हृदय प्रकाश से परिपूर्ण हो रहा है। उन्होंने इस ढांचे को दुरावस्था में छोड़ रक्खा है। शरीर की तनिक भी चिन्ता नहीं है।

पतंगे के समान प्रणय की अग्नि में अपने आप को जला रहे हैं। जिस प्रकार रेशम का क्रीड़ा अपने ही ऊपर ताना-बाना तान देता है, उसी प्रकार उन्होंने भी अपने को भुला रक्खा है।

उनका प्यारा गोद में है, परन्तु उसी की खोज में व्यस्त हैं। सामने पानी से भरा हुआ तालाब है परन्तु ओंठ वहाँ तक पहुँचना नहीं चाहते।

यह नहीं कि वह जान बूझ कर ऐसा कर रहे हैं। परन्तु उन्हें प्यास का रोग है। नील नदी के तट पर बैठे हुए हैं परन्तु ओंठ अब भी सूख रहे हैं।

सांसारिक प्रेम के उदाहरण देकर, सच्ची लगन का वर्णन

जल और मिट्टी के संयोग से बने हुए, अपने ही समान मनुष्य का प्रेम व्याकुल कर देता है। जीवन की शान्ति और आनन्द दोनों विलुप्त हो जाते हैं।

बबेदारेयश फ़ित्ना बर ख़त्तो ख़ाल।
बख़ाबन्दरश पाए बन्दे ख़याल॥
बसिदक़श चुनाँ सर नेही बर क़दम।
कि बीनी जहां बावजूदश अदम॥
चो दर चश्मे शाहिद नुश्रायद ज़रत।
ज़रो ख़ाक यकसां नुमायद बरत॥
ि गर बा कसत दर न आयद नफ़स।
कि बा ऊ नमानद दिगर जाए कस॥
तू गोई बचश्म अन्दरश मंज़िलस्त।
बगर चश्म बरहम निही दर दिलस्त॥
न अन्देशा अज़ कस कि रुसबा शवी।
न क़ूवत कि यकदम शिकेबा शवी॥
गरत जां बेख़ाहद बकफ़ बर निही।
वरत तेग़ बर सर नेहद सर निही॥
चु इश्क़े कि बुनियादे ऊ बर हवास्त।
चुनी फ़ित्ना अंगेज़ो फ़रमां रवास्त॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलों और मुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के स्वप्न दिखलाई देते हैं।

तुझको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जँचे।

जब तेरी प्रियतमा तेरी स्वर्ण मुद्राओं की तरफ़ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और मिट्टी को समान रूप से देख।

फिर किसी दूसरे की तरफ़ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उसके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो।

उसके प्रणय में इस प्रकार रँग जा कि वह तेरी आंख में ही सर्वदा विद्यमान् रहे और आँख मूँद लेने पर हृदय में दिखलाई दे।

तू सदैव उसके लिये व्यग्र रह और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न कर। कारण कि जब वह सर्वदा तुझी में है तब तुझसे पृथक किस प्रकार हो सकता है! उसके प्रेम में अपने को मतवाला बना डाल।

यदि वह तेरे प्राण चाहता है तो हथेली पर रखकर उसके सामने कर दे। यदि वह तलवार तेरी गर्दन पर रखता है तो अपना सिर ही उसे दे डाल।

जब वासनाओं से परिपूर्ण प्रेम में, प्रणयी की यह अवस्था हो जाती है तो उन प्रेमियों पर क्यों आश्चर्य होता है, जो ईश्वर से मिलने के लिये मतवाले हो रहे हैं।

अजब दारी अज़ सालिकाने तरीक़ ।
कि बाशन्द दर बहे माना ग़रीक़ ।।

बसौदाए जानाँ ज़े जाँ मुश्तग़िल ।
बज़िक्रे हबीब अज़ जहां मुश्तग़िल ।।

बयादे हक़ अज़ ख़ल्क़ बगुरेख़्ता ।
चुनां मस्त साक़ी कि मै रेख़्ता ।।

नेशायद ब दारू दवा कर्दे शां ।
कि कस मुत्तिला नेस्त बर दर्दे शां ।।

"अलस्त" अज़ अज़ल हमचुनाँ शाँ बगोश ।
बफ़र्यादे "क़ालूबला" दर ख़रोश ।।

गरोहे अमलदार उज़लत नशीँ ।
क़दमहाए ख़ाकी दमे आतशीँ ।।

बयक नारा कोहे ज़े जाबरकनन्द ।
बयक नाला मुल्के बहम बर कुनन्द ।।

चो बादन्द पिनहाँ व चालाक पूए ।
चु मुशकन्द ख़ामोशो तसबीह गूए ।।

जो सत्य की नदी में अपने आप को डुबा चुके हैं, ईश्वर की स्मृति में जान की भी चिन्ता छोड़ बैठे हैं ।

और उसके लिये संसार से मुख मोड़ बैठे हैं । संसार के बन्धनों को तोड़ कर उसके लिये भाग निकले हैं ।

उसके प्रणय की मदिरा में इस प्रकार मस्त हो रहे हैं कि कुछ सूझता नहीं है ।

औषधि देकर उनके रोग को दूर करने की चेष्टा व्यर्थ है । उनकी पीड़ा को कोई नहीं समझता ।

मृत्यु के समय ईश्वर ने उनसे पूछा, " क्या मैं तुम्हारा पालन कर्त्ता नहीं हूँ ? " उन्होंने अपने उत्तर में इस प्रश्न की पुष्टि की ।

एक प्रेमी किसी एक कोने में बैठा हुआ है । शरीर की सुध नहीं है । पैरों पर धूल जम रही है । और मुख से गरम श्वासें निकल रही हैं ।

उसकी चिल्लाहट में वह शक्ति है कि पहाड़ को जड़ से उखाड़ दे और सारे देश को मिटा डाले ।

वह वायु के समान व्याप्त और शीघ्र गामी है । वह मुश्क के समान गुप्त तथा माला फेरने वाला है ।

सहरहा बेगिर्यंद चंदाँकि आब।
फ़ेरोशोयद अज़ दीदा शां कोहले ख़ाब॥

फ़रस कुश्ता अज़ बसके शब राँदा अन्द।
सहर गह ख़रोसां कि वा माँदा अन्द॥

शबो रोज़ दर बहरे सूदो व सोज़।
नदानन्द अज़ आशुफ़गी शबज़ रोज़॥

चुनाँ फ़िता बर हुस्नै सूरत निगार।
कि बा हुस्ने सूरत नदारन्द कार॥

नदादन्द साहबदिलाँ दिल बपोस्त।
वगर अबलहे दाद बेमग़ज़ो गोस्त॥

मए सिर्फ़े वहदत कसे नोश कर्द।
कि दुनिया व उक़बा फ़रामोश कर्द॥

हिकायत गदाज़ादा बा पादशाहज़ादा

शुनीदम कि वक़्ते गदा ज़ादए।
नज़र दाश्त बा पादशा ज़ादए॥

प्रभात होते ही उसके नेत्रों से आँसुओं की वह धारा प्रवाहित होती है कि सुर्मा बिल्कुल धुल जाता है।

अहर्निश उसकी स्मृति रूपी पीड़ा में अपने आपको जलाया करता है। उसकी याद में पागल बना रहता है।

यह भी ध्यान नहीं है कि कब दिन समाप्त होता है, रात कब आरम्भ होती है।

ईश्वर के मुखारविन्द ने कुछ ऐसा जादू डाला है कि उसे संसार के किसी अन्य मुख से किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं रह गया है।

उसने अपने आप को सांसारिक प्रेम में नहीं डाल रक्खा है। यदि किसी ने अपने आपको मानवी प्रेम में फँसा दिया तो वह बहुत बड़ा मूर्ख तथा मन्द बुद्धि है।

ईश्वर के प्रेम में मग्न वास्तव में उसी को समझना चाहिये जिसने अपने अस्तित्व तथा संसार दोनों को भुला दिया हो।

फ़क़ीर के लड़के का शाहज़ादे पर आसक्त होना

मैंने सुना है कि किसी समय एक भिखारी एक शाहज़ादे पर आसक्त हो गया।

कसे गुफ़्शे शेख़ दीवाना रंग।
अजब सब्रदारी तू वर चोबो संग॥
बगुफ़् ईं जफ़ा बर मनज़ दस्ते ओस्त।
न शर्तस्त नालीदन अज़ दस्ते दोस्त॥
मन ईनक दमे दोस्ती मी ज़नम।
गर ऊ दोस्त दारद वगर दुश्मनम॥
ज़े मन सब्र बे ऊ तवक़्क़ो मदार।
कि बा ऊ हम इमकाँ नदारद क़रार॥
न नैरूए सबरम न जाए सितेज़।
न इम्काने बूदन न पाए गुरेज़॥
मगो ज़ीं दरेबारगह सर बेताब।
वगर सर चु मेख़म कशद दर तनाब॥
न परवाना जाँदादा दर पाए दोस्त।
बेह अज़ ज़िन्दा दर कुंजे तारीके ओस्त॥
बगुफ़्र ख़ुरी ज़ख़्मे चौगाने ऊ।
बेगुफ़्ता बपायश दर उफ़्म चो गू॥

किसी ने उससे कहा, "ऐ मूर्ख ! इतना पागल क्यों हो गया है कि कोड़ों और डण्डों की मार खाकर भी सन्तुष्ट दिखलाई पड़ता है ! मुख से आवाज़ नहीं निकलती है।"

उसने उत्तर दिया कि यह कठोरता मेरे प्यारे की तरफ़ से है और प्यारे के मारने पर मुख से आवाज़ निकालना उचित नहीं है।

मैं अभी तक उसका प्रेमी होने का दावा करता हूँ। वह चाहे मुझे अपना मित्र समझे अथवा शत्रु।

उसके बिना मुझे कल नहीं पड़ सकती अथवा उसके साथ भी धैर्य न होगा। न तो मुझे चैन ही मिलता है और न लड़ाई ही करने की इच्छा होती है।

न तो एक स्थान पर स्थिर होकर बैठा ही जाता है और न भागने ही के लिये पैर आगे बढ़ते हैं।

मुझे उसके दर्बार से—उसके सम्मुख से हट जाने के लिये मत कहो। यदि मेरा शिर भी मेख़ (खूंटे) की तरह रस्सी में खिंचे तब भी मैं वहाँ से नहीं हट सकता।

मैं तो अब अपने प्यारे के पास से हट नहीं सकता हूँ। क्या पतंगे ने अपने प्यारे के चरणों पर निज को न्योछावर नहीं कर दिया ? वह जीवन से बढ़कर उस अँधेरे कोने में है।

यदि उसके चौगान से तू घायल होकर, उसके चरणों पर गेंद के समान जा कर गिर पड़े,

बगुफ़्ता सरत गर बेबुर्रद बतेग़।
बगुफ़ ईं क़दर न बूवद अज़ वै दरेग़॥
यके रा कि माशूक़ बाशद यके।
नयाज़ारद अज़ वै बहर अन्दके॥

मरा ख़ुद ज़े सर नेस्त चन्दाँ ख़बर।
कि ताजस्त बर तारकम या तबर॥
मकुन बा मने नाशिकेबा इतेब।
कि दर इश्क़ सूरत न बन्दद शिकेब॥
चु याक़ूबम अर दीदा गर्दद सुपीद।
नबुर्रम ज़े दीदारे यूसुफ़ उमीद॥

और यदि तलवार से वह तेरे शिर को काट डाले तो भी उसके प्रति तनिक भी बेरुख़ी प्रकट मत कर।

यदि किसी का कोई प्यारा हो तो उसे प्रत्येक बात सहने के लिये सदैव उद्यत् रहना चाहिये। मुझे अपनी तनिक भी सुध नहीं है।

मुझे क्या दण्ड मिल रहा है? यह भी नहीं ज्ञात हो रहा है। न मालूम मेरे शिर पर छत्र रक्खा हुआ है अथवा कुल्हाड़ी।

मैं व्याकुल हूँ; मुझ पर क्रोध मत कर। इस आसक्ति में मैंने अपनी शान्ति खो दी है।

यदि हज़रत याक़ूब के समान मैं अन्धा हो जाऊँ तब भी यूसुफ़ के दर्शनों की अभिलाषा हृदय में बनाए रक्खूँ।

शब्सतरो

(जन्म १२५० ई०: मृत्यु १३२० ई०)

इनका नाम सईदुद्दीन महमूद था। आपका जन्म स्थान शब्सतर जो तबरेज़ के निकट स्थित है, बतलाया जाता है। आपका जन्म लगभग १२५० ईस्वी में और मृत्यु १३२० ई० में हुई थी। आप एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी थे। इन्होंने लिखा कम है, परन्तु जो कुछ भी लिखा है बहुत ही उत्तम है। आपकी पुस्तक "गुलशन राज़" के विषय में प्रोफ़ेसर ब्राउन का कहना है :—

"सूफ़ी धर्म्म ग्रन्थों में इसका स्थान बहुत ही ऊँचा है।"

(लि० हि० आ० प२० जिल्द ३ पृष्ठ १४८)

यह पुस्तक ख़ुरासान के अमीर हुसैनी के पन्द्रह प्रश्नों के उत्तर में लिखी गई है। लेवी इसके विषय में लिखते हैं :—

"प्रश्नों के उत्तर जो कि छोटे छोटे उदाहरणों तथा गूढ़ बातों में दिये गये हैं इस प्रकार के रहस्यवाद को और भी उत्तम बना देते हैं। सुन्दर भावों को यह एक नवीन आभा प्रदान करते हैं।"

(प० लि० लेवी० पृष्ठ ७३)

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन तथा अंग्रेज़ी भाषा में हो गया था। और वहाँ पर इसकी प्रशंसा भी बहुत हुई। इसकी सहायता से गुणों की उलझनें पूर्णतयः समझ में आ जाती हैं। जामी ने इस पुस्तक के विषय में कई बार लिखा है। अपनी लवायह नामी पुस्तक में उन्होंने बड़ी तारीफ़ की है। आपके जीवन में कोई घटना नहीं हुई। इतने वर्ष बड़ी शान्ति के साथ व्यतीत हो गये।

प्रमुख रचनाएँ :—

गुलशने राज़।

हक़्क़ुल यक़ीन।

रिसाला शहीद।

रहे दूरो दराज़स्त ईं रिहा कुन।
चो मूसा यक ज़माँ तर्के असा कुन॥
दरा दर वादीए ऐमन ज़माने।
शुनो इन्नी अनल्लाह बेगुमाने॥
मोहक्क़िक़ रा कि बर वहदत शुहूदस्त।
नख़ुस्तीं नज़रत बरनूरे वजूदस्त॥
दिले कज़ मारफ़त नेरे सफ़ा दीद।
ज़े हर चीज़े कि दीद अव्वल ख़ुदा दीद॥
बुवद फ़िक्रे निकू रा शर्ते तजरीद।
पसंगा लमअए अज़ बर्क़े ताईद॥
हराँ कस रा कि ऐज़िद राह ननमूद।
ज़े इस्तेमाले मंतिक़ हेच न कुशूद॥
हकीमे फ़लसफ़ी चूँ हस्त हैराँ।
नमी बीनद ज़े अशया ग़ैरे इमकाँ॥
ज़े इमकाँ मी कुनद इसबाते वाजिब।
अज़ाँ हैराँ शुद अंदर ज़ाते वाजिब॥

प्रेम का मार्ग एक बहुत ही विस्तृत मार्ग है। उसको तू छोड़ दे और शान्ति के साथ अपनी लाठी को पृथ्वी पर टेक दे।

कुछ समय के लिये तू उस प्रेममयी घाटी में चला जा और वहाँ बिना किसी कष्ट अपना उद्घेग कि "मैं ही ईश्वर हूँ" सुनले।

जिस निरीक्षक के सम्मुख अद्वैत पूर्णतया प्रकट है उसकी पहली दृष्टि अस्तित्व की चमक पर ही पड़ती है।

जिस साधु पुरुष ने परमेश्वर से साक्षात कर उसकी आभा को देखा है, उसे प्रत्येक वस्तु में उसी का जलवा दिखलाई पड़ता है।

ईश्वर की खोज में निकलने वालों के लिये सब से पहले त्याग की आवश्यकता है, इसके उपरान्त उसकी सहायता रूपी बिजली की।

जिस मनुष्य को परमात्मा ने ही मार्ग नहीं दिखलाया उसको तर्क वितर्क से क्या लाभ हुआ।

एक दार्शनिक, जो कि हैरान हो रहा है, इन सांसारिक वस्तुओं में क्षण-भंगुरता के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखता है।

वह इस क्षणभंगुरता से अमरत्व को सिद्ध करता है। इस कारण वह ईश्वरीय अस्तित्व के चक्कर में पड़ गया है।

गहे अज़ दौर दारद सैरे मा कूस।
गहे अंदर तसल्सुल गश्ता महबूस॥
चो अक़्लश कर्द दर हस्ती तवग़ुल।
फ़िरो पेचीद फ़ायश दर तसल्सुल॥
ज़हूरे जुम्लए अशया बज़िद्दस्त।
वले हक़ रा नमानिंदो न ़िनिद्दस्त॥
चो न बुवद ज़ाते हक़ रा ज़िद्दो हम ता।
नदानम ता चे गूना दानी ऊ रा॥
नदारद वाजिब अज़ मुमकिन नमूना।
चे गूना दानियश आख़िर चे गूना॥
ज़ेहे नादाँ कि ऊ ख़ुरशीदे ताबाँ।
बनूरे शमआ जोयद दर बियाबाँ॥

तमसील

कसे कू अक़्ले दूरंदेश दारद।
बसे सरगश्तगी दर पेश दारद॥
जे दूरंदेशिए अक़्ले ़ फ़ुज़ूली।
यके शुद फ़लसफ़ी दीगर ़हल्लूली॥

कभी वह दूर से उलटी चाल चलता हुआ दृष्टिगोचर होता है और कभी भिन्न भिन्न सम्बन्धों के बन्धनों में बँध जाता है।

जब उसकी बुद्धि—उसका मस्तिष्क—इस अस्तित्व के सोच में पूर्णतया लगजाता है, उस समय उसके पैरों में भ्रम के बन्धन पड़ जाते हैं।

सारी वस्तुओं का प्रकट होना केवल ईश्वर पर निर्भर है—सब उसी के प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, परन्तु उसमें किसी का भी प्रकाश नहीं है।

वह लासानी है। जब ईश्वर की समानता करने वाला कोई नहीं है और न उसका विरोध करने वाला ही कोई है, तो न मालूम तू उसका पता किस प्रकार लगा सकेगा!

उसके अस्तित्व के विषय में कोई बात निर्णयात्मक रूप से कही ही नहीं जा सकती, तब तू उसका ज्ञान किस प्रकार प्राप्त करेगा?

तू भी कैसा मूर्ख है जो प्रकाशित सूर्य के प्रकाश को, दीपक लेकर मैदान में खोज रहा है।

उदाहरण

जिसमें बहुत दूर तक सोचने की शक्ति वर्त्तमान है, उसके सम्मुख सैकड़ों पेचीदा प्रश्न उपस्थित रहते हैं।

इस बुद्धि की व्यर्थ दौड़ के ही कारण एक दार्शनिक बन गया और दूसरा अवतार में विश्वास करने वाला, प्रकृति के उच्च विकास सूर्य आदि में प्रेम तथा विश्वास मानने वाला।

ख़िरद रा नेस्त ताबे नूरे आँ रूए।
बरै अज़ बहे ऊ चश्मे दिगर जूए॥
दो चश्मे फ़लसफ़ी चूँ बूद अहवल।
ज़े वहदत दीदने हक़ शुद मोअत्तल॥
ज़ि नाबीनाई आमद राए तशबीह।
ज़े यक चश्मीस्त इदराकाते तंज़ीह॥
तनासुख़ ज़ाँ सबब शुद कुफ्रो बातिल।
कि आँ अज़ तंग चश्मी गश्त हासिल॥
अगर ख़्वाही बीनी चशमए ख़ुर।
तुरा हाजत फ़ितद बा जिस्मे दिगर॥
चु चश्मे सर न दारद ताक़तो ताब।
तवाँ ख़ुरशीदे ताबाँ दीद दर आब॥
अज़ो चूँ रोशनी कमतर नुमायद।
दर इदराके तो हाली मे फ़िज़ायद॥
अदम आईनए हस्तीस्त मुतलक़।
अज़ो पैदास्त अक्से ताबिशे हक़॥

बुद्धि उस मुख के प्रकाश को देखने की सामर्थ्य नहीं रखती। इस कारण उस प्रकाश को देखने के लिये एक दूसरी ही आँख की खोज कर।

दार्शनिक की दोनों आँखों में से एक ईश्वर की सर्वव्यापकता देखते देखते व्यर्थ हो गई।

जब वह अन्धा हो गया तब उसे उपमान और उपमेय का ध्यान आया और एक आँख होने के कारण उसमें सोचने विचारने की शक्ति का विकास हुआ।

आवागमन का ज्ञान लोगों को पूर्णरूप से प्राप्त नहीं हुआ है और जो हुआ भी है वह भी संकीर्ण दृष्टि द्वारा। इसी कारण वह सारहीन और व्यर्थ कहा जाता है।

यदि तू सूर्य के प्रकाश को देखने का इच्छुक है तो तुझको एक दूसरे शरीर की आवश्यकता होगी।

जब तेरे शिर के नेत्रों में उस प्रकाश के सम्मुख देखने की शक्ति नहीं है तब तू उसे पानी में देख सकता है।

उस सूर्य का प्रकाश जल में बहुत कम पड़ता है, इसलिये तेरी विचार शक्ति में वह तत्क्षण अधिक हो जाता है।

यह शरीर, अस्तित्व के दर्पण के समान है। इसी शरीर के द्वारा ईश्वरीय प्रकाश तुझमें से प्रकाशित होता है।

अदम चूँ गश्त हस्ती रा मुक़ाबिल।
दरो अक्से शुद अंदर हाल हासिल॥

शुदाँ वहदत अज़ीं कसरत पिदीदार।
यके रा चूँ शमुर्दी गश्त बिसयार॥

अदद गरचे यके दारद बिदायत।
वलेकिन हरगिज़श न बुवद निहायत॥

अदम दर जाते ख़ुद चूँ बूद साफ़ी।
अज़ो बा ज़ाहिर आमद गंजे मख़फ़ी॥

हदीसे कुन्तो कन ज़न रा फ़िरोख़ाँ।
कि ता पैदा बेबीनी सिर्रे पिनहाँ॥

अदम आईना आलम अक्सो इन्साँ।
चो चश्मे अक्स दर वै शख़्स पिन्हाँ॥

अगर मरदी बुरूँ आ व नज़र कुन।
हर चआयद ब पेशद जाँ गुज़र कुन॥

मियाने रोज़ो शब अंदर मराहिल।
मशो मौक़ूफ़ हमराहे रवाहिल॥

जब शरीर सत् के समक्ष उपस्थित हुआ तो उसी क्षण उसके अन्दर एक प्रतिबिम्ब आ पड़ा।

और फिर वही प्रकाश इतनी अधिकता के साथ प्रकट हुआ। जब तू एक को गिनेगा वही बहुत हो जायगा।

गोकि गिनती का आरम्भ इकाई से ही होता है, परन्तु उसकी कोई सीमा नहीं है।

उसे जितना चाहो बढ़ाओ। मनुष्य एक अत्यन्त पवित्र जीव था। इसलिये उसके द्वारा गुप्त कोष प्रकट हो गया।

"मैं एक गुप्त कोष था" इस बात को पढ़, ताकि गुप्त रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे।

ईश्वर एक दर्पण है, जिसका प्रतिबिम्ब यह संसार है। मनुष्य उस प्रतिबिम्ब की आँख है, जिसके भीतर एक मनुष्य छिपा हुआ है।

यदि तू मनुष्य है तो मैदान में आकर देख, जो कुछ बाधाएँ तेरे सम्मुख आवें उन्हें पार कर जा।

अहर्निश अपने मार्ग में, बिना विराम-विश्राम के आगे बढ़ता जा। साथ चलने वालों की तरह थक कर बीच में मत बैठ जा और न किसी सवारी पर बैठ।

खलील आसा बरो हक़ रा तलब कुन।
शबे रा रोज़ो रोज़े रा बशब कुन॥
सितारा बा महो ख़ुरशीदे अकबर।
बुवद हिस्सो ख़यालो अक़्ले अनवर॥
बेगिर्दां ज़ी हमाँ ऐ राहरौ रूए।
हमेशा लाओहब्बुल ओफ़लीं गोए॥
चो पुश्त आईना बाशद मुकद्दर।

नुमायद रूए शख़्स अज़ रूए दीगर॥
शुआये आफ़ताब अज़ चारुम अफ़लाक।
नगर्दद मुनअकिस जुज़ बर सरे ख़ाक॥
तू बूदी अक्से माबूदे मलायक।
अज़ाँ गश्ती तू मसजूदे मलायक॥
बुवद अज़ हर तने पेशे तो जाने।
वज़ो दर बस्ता बा तो रेसमाने॥
अज़ाँ गश्तंद अमरत रा मुसख़्ख़र।
कि जाने हर यके दर तुस्त मुज़म्मर॥
तु मग़्ज़े आलमी जाँ दर मियानी।
बेदाँ ख़ुद रा कि तू जाने जहानी॥

खलील के समान जाकर ईश्वर की खोज कर। दिन से लेकर रात तक और रात से लेकर दिन तक बराबर समान रूप से लगा रह।

यह बड़ा सा सूर्य, यह नक्षत्र और यह चन्द्रमा सब सुन्दर हैं, विचारों और ध्यान के द्योतक हैं।

तू इन सब के फेर में न पड़। और सदैव यही कहता रह कि मैं नाशवान् वस्तुओं को नहीं चाहता।

जब दर्पण की पुश्त मैली होती है, तब किसी देखने वाले का मुख दूसरी तरफ़ से दिखलाई पड़ता है।

सूर्य्य की किरणों का प्रतिविम्ब चौथे आकाश से जब पड़ता है तब मिट्टी पर ही पड़ता है।

तू स्वर्गीय दूतों के तेज का प्रतिविम्ब था और इसी कारण उनसे तेरी अभ्यर्थना कराई गई।

तेरे पास प्रत्येक शरीर का एक प्राण वर्त्तमान है। और उस शरीर से लेकर तेरे प्राणों के अन्दर तक एक डोरी बँधी रहती है।

हर एक के प्राण तुझ में गुप्त हैं इसीलिए सब तेरे सेवक हैं।

तू इस संसार का सार है और इसी कारण बीच में है, अपने आपको समझ ले। तू इस संसार का प्राण है।

सवाल

कि बाशम मन मरा अज़ मन ख़बर कुन !
चे मानी दारद अन्दर ख़ुद सफ़र कुन ?

जवाब

दिगर करदी सवाल अज़ मन कि मन चीस्त ?
मरा अज़ मन ख़बर कुन ता कि मन कीस्त ।।
चो हस्ती मुतलक़ आमद दर इशारत ।
बलफ़्ज़े मन कुनन्द अज़ वै इबारत ।।
हक़ीक़त कज़ ताआयुन शुद मोअय्यनं ।
तो ऊ रा दर इबारत गुफ़ई मन ।।
मनो तू आरिज़े ज़ाते वजूदेम ।
मुशब्बकहाय मिशकाते वजूदेम ।।
हमा यक नूर दाँ अश्बाहो अरवाह ।
गह अज़ आईना पैदा गह ज़े मिसबाह ।।
तु गोई लफ़्ज़े मन दर हर इबारत ।
बसूए रूह मी बाशद इशारत ।।

प्रश्न

मैं कौन हूँ ? मुझे अपने आप पर प्रगट कर दे । "तू स्वयम् अपने अन्दर यात्रा कर" इसका क्या आशय है ?

उत्तर

तूने फिर यही प्रश्न किया कि " मैं " क्या वस्तु है ? मुझको बता दे कि यह " मैं " कौन है ?

जब इस जीवन की तरफ़ स्वाभाविक ढंग से इशारा किया जाता है तब " मैं " शब्द के साथ उसका वर्णन करते हैं ।

जो रहस्य वास्तविकता के रूप में परिणित हो गया है तूने शब्दों में उसको " मैं " कहा है ।

" मैं " और " तू ' सब उसी अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं और अस्तित्व के दीपक की जालियाँ हैं ।

यह सारी सूरतें और रूहें एक ही प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, जो कभी दर्पण से प्रगट होती हैं और कभी दीपक से ।

तू जिस प्रकार से भी " मैं " शब्द को कहेगा, उससे केवल आत्मा की ओर संकेत होगा ।

चो कर्दी पेशवाए ख़ुद ख़िरद रा।
नमी दानी ज़े जुज़्वे ख़ेश ख़ुद रा॥
बेरौ ऐ ख़्वाजा ख़ुद रा नेक बेशनास।
कि न बुवद फ़रबिही मानिन्दे आमास॥
मनो तू बरतरज़ जानो तन आमद।
कि ईं हर दो ज़े अजज़ाए मन आमद॥
बलफ़्ज़े मन न इनसानस्त मख़सूस।
कि ता गोई बदो जानस्त मख़सूस॥
यके रह बरतर अज़ कौनो मकाँ शौ।
जहाँ बेगुज़ारो ख़ुद दर ख़ुद जहाँ शौ॥
ज़े ख़त्ते वहमिए हाए हुवीयत।
दु चश्मी मी शवद दर वक़्ते रोयत॥
न मानद दरमियाना रहरवे राह।
चो हाए हू शवद मुलहक़ ब अल्लाह॥
बुवद हस्ती बहिश्त इमकाँ चो दोज़ख़।
मनो तू दरमियाँ मानिन्दे बरज़ख़॥

जब तू बुद्धि को अपना पथ प्रदर्शक मानता है, उस समय तू यह नहीं विचार करता कि तुझ में और बुद्धि में अन्तर है—दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं।

अपने आपको अच्छी तरह पहचान ले। सूजन और मुटापा एक ही वस्तु को नहीं कहते हैं।

"मैं" और "तू" दोनों प्राण और शरीर से बहुत बढ़े चढ़े हैं, क्योंकि यह दोनों अहम् अंश हैं।

अहं के शब्द से केवल मनुष्य का बोध नहीं होता है जिससे तू यह समझ ले कि केवल प्राणों के कारण यह शब्द आता है।

एक बार तू इस क्षणिक् जगत से ऊपर चला जा और अपने अन्दर एक दूसरे ही जग का निर्माण कर।

इस जीवन में अद्वैत के भ्रम से भी अपने आपको पृथक कर ले। देखने के समय मन दो आँख वाली वस्तु बन जाता है।

उस समय पथिक बीच से विलुप्त हो जाता है और वह हवा के समान ईश्वर से जा मिलता है।

अस्तित्व स्वर्ग के समान है और यह संसार नर्क के तुल्य है। इन दोनों के मध्य में "मैं" और "तू" एक निर्दिष्ट सीमा के समान खड़े हुए हैं।

चो बरख़ेज़द तोरा ईं परदा अज़ पेश।
न मानद नीज़ हुक्मे मज़हबो केश॥

हमा हुक्मे शरीयत अज़ मनो तुस्त।
कि आँ बर बस्तए जानो तने तुस्त॥

मनो तू चूँ न मानद दरमियाना।
चे मसजिद चे कनिश्त चे दैरख़ाना॥

ताअय्युन नुक़्तए वहमीस्त दर ऐन।
चो साफ़ी गश्त ऐनत ग़ैन शुद ऐन॥

दो ख़ुतबा बेश न बुवद राहे सालिक।
अगरचे दारद ऊ चंदीं महालिक॥

यक अज़ हाए हुयत दर गुज़श्तन।
दोवम सहराए हस्ती दर नवश्तन॥

दरीं मशहद यके शुद जम्मो अफ़राद।
चो वाहिद सारी अन्दर ऐने आदाद॥

तु आँ जमई कि ऐने वहदत आमद।
तु आँ वाहिद कि ऐने कसरत आमद॥

जब यह भेद भाव मिट जायगा उस समय धर्म और दीन की आज्ञाएँ भी शेष न रहेंगी।

धर्म ग्रन्थों की सारी बातें केवल तेरे अहंकार पर निर्भर हैं। तू समझता है कि अहं तेरे प्राणों और शरीर के साथ बँधा हुआ है।

जब "मैं" और "तू" तेरे बीच में न रह जायँगे उस समय मन्दिर, मस्जिद और गिरजा सब तेरे लिये समान हो जायँगे।

तेरे मन में केवल यही भ्रम "मैं" और "तू" घुसा हुआ है। जिस समय यह भ्रम मिट जायगा, तू निर्मल हो जायगा।

पथिक को बहुत दूर नहीं चलना है। हां, उसके मार्ग में विघ्न बाधाएँ अवश्य बहुत हैं।

तुझे केवल दो बातों का स्मरण रखना उचित है। एक तो यह कि तू ममत्व की बाधा को दूर कर दे और दूसरी अस्तित्व के मैदान को पार कर जा।

इस स्थान में मूल और शाखाएँ सब एक ही दिखलाई पड़ रही हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि इकाई के अंक में सभी सम्मिलित हैं।

तू मूल है अथवा इकाई। तू ही मुख्य वस्तु है। तुझी में से सब की उत्पत्ति है।

कसे ईं सिर शिनासद कू गुज़र कर्द ।
ज़े जुज़वी सूए कुल्ली यक सफ़र कर्द ॥

बेदाँ अव्वल कि ता चूँ गश्त मौजूद ।
कि ता इन्सान कामिल गश्त मौलूद ॥

दर अतवारे जमादी बूद पैदा ।
पसज़ रूहे इज़ाफ़ी गश्त दाना ॥

पसंगह ज़ुंबिश कर्द ऊ ज़े क़ुदरत ।
पसज़ वै शुद ज़े हक़ साहब इरादत ॥

बतिफ़्ली कर्द बाज़ एहसासे आलम ।
दरो बिलफ़ेल शुद वसवासे आलम ॥

चो जज़्ज़र्यात शुद बर वै मुरत्तब ।
बकुल्लीयात रह बुर्द अज़ मुरक्कब ॥

ग़ज़ब गश्त अन्दरो पैदा व शह्वत ।
वज़ीशां ख़ास्त बुख़्लो हिर्सो नख़वत ॥

बफ़ेल आमद सिफ़त हाए ज़मीमा ।
बतर शुद अज़ ददो देवो बहीमा ॥

वही मनुष्य इस रहस्य को समझ सकता है जो मार्ग को पार कर गया है और अपनत्व को भूलकर इकाई तक पहुँच गया है।

पहले तू इस संसार की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त कर। और फिर यह देख कि मनुष्य किस प्रकार उत्पन्न हुआ।

पहले वह पत्थर-मिट्टी के रूप में प्रकट हुआ और उसके उपरान्त आत्मा के रूप में प्रकट होकर एक संसार बन गया।

तब उसकी रचना का कौशल प्रगट हुआ और वह माँ के पेट में आकर मनुष्य रूप में प्रकट हुआ।

बचपन में उसने इस संसार की ख़ूबी को दिखलाया और उसके भीतर यहाँ की वस्तुएँ उत्पन्न हो गईं।

जब उसके आकर संसार की समस्त वस्तुएँ यथोचित रूप से विद्यमान हो गईं तब वह मिश्रण से पूर्णता पर पहुँच गया।

फिर उसमें क्रोध और इच्छाएँ उत्पन्न हुईं और इन दोनों में सम्पर्क से अभिमान, कृपणता,

और लालच इत्यादि दुर्भावनाओं का आविर्भाव हुआ। हिंसक पशुओं और राक्षसों से भी आगे बढ़ गया।

तनज़्ज़ुल रा बुवद ईं नुक़्ता असफ़ल।
कि शुद बा नुक़्तए वहदत मुक़ाबिल॥

शुद अज़ अफ़अल कसरत बे निहायत।
मुक़ाबिल गश्त अज़ाँ रू बा बिदायत॥

अगर गरदद मुक़य्यद अन्दरीं दाम।
बगुमराही बुवद कमतर ज़े अनआम॥

वगर नूरे रसद अज़ आलमे जाँ।
ज़े फ़ैज़े जज़बा या अज़ अक्से बुरहाँ॥

दिलश बा लुत्फ़े हक़ हमराज़ गर्दद।
अज़ाँ राहे कि आमद बाज़ गर्दद॥

ज़े जज़बा या ज़े बुरहाने यक़ीनी।
रहे यावद बईमाने यक़ीनी॥

कुनद यक रजअत अज़ सिज्जीने फ़ुज्जार।
रुख़ आरद सूए इल्ली ईने अबरार॥
बतौबा मुत्तसिफ़ गरदद दराँ दम।
शवद दर इसतिफ़ा औलादे आदम॥

उच्च पद से नीचे गिरने के लिये यह सबसे छोटा शब्द है जो कि वहदत शब्दकी समानता रखता है।

साँसारिक कार्यों और झंझटों की अधिकता से वह इस संसार में बिलकुल घुल मिल गया। उसे यह भी ज्ञान न रहा कि उसका उत्पन्न कर्ता कौन है।

यदि वह इसी जाल में फँसकर रह गया तो अज्ञानी पशुओं से भी अधिक उसकी अवस्था शोचनीय हो जायगी।

यदि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रभाव से अथवा ईश प्रदत्त प्रकाश से जो कि सभी कार्यों से प्रकट होता है,

उसका हृदय उस महान् के प्रति प्रेम बन्धनों में बँध जावे तब तो वास्तव में वह जिस मार्ग से आता है उसी से लौट जाता है, अन्यथा नहीं।

ईश्वर की कृपा से अथवा प्रकट दलीलों से वह सचाई तक पहुँचाने वाला मार्ग पा जाता है।

वह पापात्माओं और बुरे काम करने वालों को छोड़ कर पुण्यात्माओं की ओर अग्रसर होता है।

नर्क को त्याग कर स्वर्ग में पहुँचता है। वह उसी समय साँसारिक वासनाओं को त्याग कर ईश्वर की एक पवित्र तथा सच्ची सन्तान बन जाता है।

जे अफ़आले निकोहीदा शवद पाक।
चो इदरीसे नबी दर चारुम अफ़लाक॥
चो याबद अज़ सिफ़ाते बद नजाते।
शवद चूँ नूह अज़ाँ साहब हयाते॥
नमानद क़ुद्रते जुजवीश दर कुल।
ख़लील आसा शवद साहब तवक्कुल॥
इरादत बा रज़ाए हक़ शवद ज़म।
रवद चूँ मूसा अन्दर बाबे आज़म॥
जे इल्मे ख़ेशतन याबद रिहाई।
चु ईसीये नबी गरदद समाई॥
देहद यक बारा हस्ती रा बताराज।
दर आयद अज़ पए अहमद बमेराज॥
रसद चूँ नुक़्तए आख़िर बअव्वल।
दराँजा ना मलक गुंचद न मुरसल॥
कसे मर्दे तमामस्त कज़ तमामी।
कुनद बा ख़ाजगी कारे गुलामी॥

वह अपकर्मों को छोड़कर, नबी के समान चौथे आकाश पर पहुँच जाता है।

जब वह कुभावनाओं और कुकर्मों से छुटकारा पा जाता है तब उसका जीवन नूह से भी अधिक हो जाता है।

उस समय सुकर्मों के प्रभाव से उसका बुरा स्वभाव मिट जाता है और वह ख़लील पैग़म्बर के समान ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो जाता है।

उसकी इच्छायें बिलकुल ईश्वर के रँग में रँग जायँगी और वह हज़रत मूसा के समान नदी के बड़े दर्वाज़े में प्रविष्ट हो जायगा।

उसमें जो अहंकार वर्तमान रहता है उसे भूलकर वह ईसा नबी के समान आकाशवत् हो जाता है।

वह अपने अस्तित्व को बिलकुल मिटा देता है और अहमद के पीछे पीछे चलकर स्वर्गीय सीढ़ियों तक पहुँच जाता है।

वह वहाँ इस प्रकार पहुँच जाता है, जिस प्रकार वृत्त का अन्तिम विन्दु सबसे पहले विन्दु तक पहुँच जाता है। उस स्थान पर न स्वर्गीय दूत ही पहुँच सकता है और न रसूल ही।

पूर्ण मनुष्य वही है जो पूर्ण होने पर और बड़ा होने पर भी नम्र रहता हो और सेवा में निमग्न रहता हो।

पसाँगाहे कि बे बुर्रद ऊ मसाफ़त।
नेहद हक्र बर सरश ताजे ख़िलाफ़त॥
बक़ाए याबदो बादज़ फ़ना बाज़।
रवद अंजामे ऊ दीगर बाआग़ाज़॥
शरीअत रा शआरे ख़ेश साज़द।
तरीक़त रा दिसारे ख़ेश साज़द॥
हक़ीक़त ख़ुद मक़ामे ज़ाते ऊ दाँ।
बुवद दायम मियाने कुफ़्रो ईमाँ॥
बअख़्लाक़े हमीदा गश्ता मौसूफ़।
बइल्मो ज़ोहदो तक़वा बूदा मारूफ़॥
हमा बा ऊ वले ऊ ज़ीं हमा दूर।
बज़ेरे क़ुब्बाहाए सित्र मस्तूर॥

तमसील

तबह गरदद सरासर मग़्ज़े बादाम।
गरश अज़ पोस्त बेख़राशी गहे ख़ाम॥
वले चूँ पुख़्ता शुद बा पोस्त नीकोस्त।
अगर मग़्ज़श बरारी बर कुनी पोस्त॥

जिस समय वह मार्ग पार कर लेता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर अपनी राज्य मुकुट रख देता है ।

वह अमर हो जाता है और विनाश के उपरान्त वह पुनः सत की ओर लौट जाता है ।

उस समय वह धर्म्मग्रन्थों को अपने वस्त्र बना लेता है और शिक्षा-दीक्षा को भी अपना वस्त्र बना लेता है ।

वह स्वयम् सत का निवास स्थान बन जाता है जो कि सदैव नास्तिकता और ईमान के मध्य में है ।

वह जितने भी प्रसिद्ध गुण हैं उनसे विभूषित होता है । विद्या पवित्रता और सद्गुणों में ख्याति लाभ करता है ।

उसके सभी मित्र बन जाते हैं और वह सारे संसार से परदों के क़नातों के नीचे छुपा रहता है ।

उदाहरण

यदि कच्चे बादाम का, छिलका खुरच कर गूदा निकालना चाहो तो वह बिलकुल बर्बाद हो जाता है ।

जब छिलका गूदे के साथ पक जाता है, उसे तोड़ कर गूदा निकाला जा सकता है ।

शरीअत पोस्त मग़ज़ आमद हक़ीक़त।
मियाने ईं व आँ बाशद तरीक़त॥

ख़लल दर राहे सालिक नक़्से मग़ज़स्त।
चो मग़ज़श पुख़ता शुद बे पोस्त नग़ज़स्त॥

चो आरिफ़ बा यक़ीने ख़ेश पैवस्त।
रसीदा गश्त मग़ज़ो पोस्त बशिकस्त॥

वजूदश अन्दरीं आलम न आयद।
बुरूँ रफ़्त ऊ दिगर हरगिज़ न आयद॥

वगर बापोस्त याबद ताबिशे ख़ुर।
दरीं नशअत कुनद यक दौरे दीगर॥

दरख़्ते गरदद ऊ अज़ आबो अज़ ख़ाक।
कि शाख़श बेगुज़रद अज़ हफ़्तुम अफ़लाक॥

हमा दाना बुरूँ आरद दिगर बार।
यके सद गश्ता अज़ तक़दीरे जब्बार॥

चु सैरे हब्बा दर ख़त्ते शजर शुद।
ज़े नुक़्ता ख़त ज़े ख़त दौरे दिगर शुद॥

धार्मिक ग्रन्थ और बातें छिल्के के समान हैं और सत गूदा है। इस गूदे और छिलके के बीच में मध्यम वस्तु व्यवहार है।

पथिक के मार्ग में तभी बाधा पड़ सकती है जब गूदे में कुछ ख़राबी हो, जब उसका गूदा पक गया, वह बिना छिल्के के अच्छा है।

जब जिज्ञासु पर यह वास्तविकता प्रकट हो जाती है, उस समय छिलका टूट जाता है और गूदा पक जाता है।

जब इस अवस्था में वह पहुँच जाता है उस समय संसार के बन्धनों को तोड़ कर वह उसे पार कर जाता है और फिर लौट कर नहीं आता।

परन्तु यदि छिलके के साथ गूदे को सूर्य की तपन मिले तो वह एक दूसरे ही रूप में परिवर्तित हो जाता है।

पानी और मिट्टी के संसर्ग से वह एक वृक्ष के रूप में उत्पन्न होता है और इतना विशाल हो जाता है कि उसकी टहनियाँ सातवें आकाश तक पहुँच जाती हैं।

और उससे ऊपर भी उठ जाती हैं। वही बीज पुनः फलकर दिखाई देता है और इस प्रकार ईश्वरीय शक्ति से एक का सौ हो जाता है।

जब बीज से अंकुर उत्पन्न हुआ तब ऐसा हुआ जैसे एक बिन्दु से एक रेखा बन गई हो और रेखा से दूसरा रूप बन गया।

चो शुद दर दायरह सालिक मुकम्मल ।
रसद हम नुक़्तए आख़िर बअव्वल ॥
दिगर बारह शवद मानिन्दे परकार ।
बराँ कारे कि अव्वल बूद दरकार ॥
चो कर्द ऊ क़तआ यक बारा मसाफ़त ।
नेहद हक़ बर सरश ताजे ख़िलाफ़त ॥
तनासुख़ न बुवद ईं कज़ रूए माना ।
ज़हूरा तस्त दर ऐने तजल्ला ॥
"वक़द सालू व क़ालू मन निहायद" ।
"फ़क़ीला हियर रुजूओ इलल बिदाहा" ॥

सवाल

कि शुद बर सिर्रे वहदत वाक़िफ़ आख़िर ?
शिनासाए चे आमद आरिफ़ आख़िर ?

जवाब

कसे बर सिर्रे वहदत गश्त वाक़िफ़ ।
के ऊ वाक़िफ़ न शुद अन्दर मवाक़िफ़ ॥

जब पथिक ने वृत्त के अन्दर अपना मार्ग पूर्णकर लिया तो फिर वह वहीं चला जायगा जहाँ से उसकी उत्पत्ति हुई थी ।

उस समय वह पुनः परकार की भाँति वही कार्य करने लगेगा जो पहले करता था ।

जिस समय वह एक बार अपना पथ पार कर चुकता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर साम्राज्य का मुकुट रख देता है ।

वह आवागमन से मुक्त हो जाता है । क्योंकि अर्थानुसार यह बहुत से प्रकाश हैं जो उसी के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं ।

लोगों ने प्रश्न किया कि अन्त क्या है ? उनको उत्तर दिया गया कि आदि को लौटना ही अन्त का नाम है ।

प्रश्न

अद्वैत का रहस्य कौन जानता है ? ज्ञानी ने किस गुप्त भेद को पहचाना है ?

उत्तर

अद्वैत के रहस्य को वही मनुष्य जान सका है, जो अपने मार्ग में कहीं ठहरा नहीं है । जो अविश्रान्त रूप से आगे ही बढ़ता गया है ।

वले आरिफ़ शिनासाए वजूदस्त ।
वजूदे मुतलक़ ऊरा दर शहूदस्त ॥

बजुज़ हस्ती हक़ीक़ी हस्त न शनाख्त ।
व बा हस्ती ज़े हस्ती पाक दर बाख़्त ॥

वजूदे तू हमा ख़ारस्तो ख़ाशाक ।
बुरूँ अन्दाज़ अज़ ख़ुद जुम्ला रा पाक ॥

बरी तू ख़ानए दिल रा फ़ेरो रोब ।
मोहैया कुन मुक़ामे जाय महबूब ॥

चो तू बेरूँ शुदी ऊ अन्दर आयद ।
बतो बेतो जमाले ख़ुद नुमायद ॥

कसे कू अज़ नवाफ़िल गश्त महबूब ।
बलाए नफ़ी कर्द ऊ ख़ाना चारूब ॥

दरूने जाए महमूद ऊ मकाँ याफ़्त ।
ज़े बी "वबी सिर व बी यसमा" निशाँ याफ़्त ॥

ज़े हस्तौ ता बुवद बाक़ी बरोशैन ।
नेआयद इल्मे आरिफ़ सूरते ऐन ॥

परन्तु ज्ञानी वह है जो सत् को समझता है। उसे सत् सदैव साफ़ दिखलाई पड़ता है।

ब्रह्म के सिवाय उसने किसी को सत् नहीं पाया और उसने अपने अस्तित्व को उसी सत् में मिला दिया।

तेरा अस्तित्व बिलकुल गन्दा, कूड़े कर्कट से परिपूर्ण है। अपने अन्दर से इस कूड़े को झाड़ कर साफ़ कर दे।

बस तू केवल यार के विश्राम करने के स्थान को अपने हृदय-मंदिर को झाड़कर स्वच्छ करले।

जब तेरे हृदय से अहंकार निकल गया उस समय वह अन्दर आजायगा और उस समय वह अपना जलवा दिखलावेगा।

जिस मनुष्य ने अपना घर इन्कार रूपी झाडू से साफ़ कर लिया है वह नेक और अच्छे कार्य करके उसका स्नेह पात्र बनेगा।

उसका निवास उसी स्थान में होगा जिसकी प्रशंसा की गई है। और उसे यह पद मिल जाता है कि वह मेरी ही आँखों से देखता है और मेरे ही कानों से सुनता है।

जब तक जीवन का एक धब्बा भी शेष रहता है तब तक ज्ञानी का ज्ञान वास्तविक नहीं कहा जा सकता है।

मवाने ता न गरदानी जे खुद दूर ।
दरूने खानए दिल नायदत नूर ॥

मवाने चूँ दरीं आलम चहारस्त ।
तहारत करदन अज़ वै हम चहारस्त ॥

न खुस्तीं पाकी अज़ अहदासो अनजास ।
दोअम अज़ मासियत वज़ शर्रे वसवास ॥

सेउम पाकी अज़ अख़लाक़े ज़मींमस्त ।
कि बा वे आदमी हम चूँ बहीमस्त ॥

चहारुम पाकिए सिर्रस्त अज़ ग़ैर ।
कि ईं जा मुन्तही मी गरददश सैर ॥

हराँ कू कर्द हासिल ईं तहारात ।
शवद बेशक सज़ावारे मुनाजात ॥

तू ता खुद रा बकुल्ली दर न बाज़ी ।
नमाज़द कै शवद हरगिज़ नमाज़ी ॥

चो ज़ातत पाक गरदद अज़ हमाँ शैन ।
नमाज़द गरदद अंगह क़ुर्रतुलऐन ॥

जब तक तू साँसारिक बाधाओं को दूर न करेगा तब तक तेरे हृदय में प्रकाश न आवेगा ।

इस संसार में रुकावट डालने वाली चार वस्तुएँ हैं और उनसे पृथक होने के भी चार उपाय हैं ।

सब से पृथक गन्दी और हानि पहुँचाने वाली वस्तुओं से बचना है । दूसरा—अपकर्मों और बुरी इच्छाओं के जाल से पृथक रहना है ।

तीसरा—ऐसी बुरी आदतों से अपने आपको बचाना है, जिनके कारण मनुष्य पशु हो जाता है ।

चौथा—अपने रहस्य को दूसरों के हस्तात्तेप से बिल्कुल पवित्र रखना है । यहाँ पर उसकी चाल समाप्त हो जाती है ।

जिस मनुष्य ने उपर्युक्त ढङ्ग से कार्य करके अपने आपको पवित्र बना लिया है, वह निस्सन्देह ईश्वर से वार्त्तालाप करने योग्य हो जायगा ।

ऐ प्रार्थी ! तेरी प्रार्थना उस समय तक प्रार्थना न होगी, जिस समय तक अहङ्कार तेरे हृदय से बिल्कुल न मिट जायगा ।

जब तू सब प्रकार की मलीनता से रहित हो जायगा, तब तेरी प्रार्थना सुनी जायगी ।

नमानद दरमियाना हेच तमीज़।
शवद मारूफ़ो आरिफ़ जुमला यक चीज़॥

वराए अक़्ल तौरे दारद इन्साँ।
कि बिश्नासद बदाँ असरारे पिन्हाँ॥

बसाने आतश अन्दर संगो आहन।
निहादस्त ऐ ज़िद अन्दर जानो दर तन॥

चो बरहम ओफ़्तादो संगो आहन।
ज़े नूरश हर दो आलम गश्त रोशन॥

अज़ाँ मजमू पैदा गरदद ईं राज़।
चो बे शुनीदी बेरौ बाख़ुद बा परदाज़॥

तुई तू नुस्ख़ए नक़्शे इलाही।
बेजो अज़ ख़ेश हर चीज़े के ख़ाही॥

सवाल

कुदामी नुक़्ता रा नुक़्तस्त अनलहक़।
चे गोई हर ज़ए बूद आँ मुज़ब्बक़॥

उस समय मार्ग में कोई रोड़ा न रह जायगा। उपासक तथा उपास्य में कोई अन्तर न रहेगा।

बुद्धि के अतिरिक्त मनुष्य के पास एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा वह रहस्यों का उद्‌घाटन करता है।

जिस प्रकार ईश्वर ने पत्थर और लोहे के भीतर अग्नि को छिपाकर रक्खा है, उसी प्रकार उस शक्ति को भी मनुष्य के अन्दर छिपा दिया है।

जब वह पाषाण और लोहा दोनों आपस में टकराए तब उनसे अग्नि उत्पन्न हुई, जिसके प्रकाश से दोनों जहान प्रकाशित हो गये।

उन दोनों के टकराने से (मिलाप से) रहस्य प्रगट होता है, जिस प्रकार अग्नि प्रगट हो जाती है।

जब तूने यह समझ लिया तो अब जाकर अपना विचार कर। ईश्वर के भेद सब तुझी में गुप्त हैं। जो कुछ तू चाहे स्वयम् अपने ही भीतर खोज कर देख ले।

प्रश्न

अहं ब्रह्मास्मि (मैं ही ब्रह्म हूँ) यह किसका कथन है ? यह तू कैसे कह रहा है कि वह टूटी जबान वाला मूर्खता की बातें कर रहा था ?

जवाब

अनलहक़ कश्फ़े असरारस्त मुतलक़ ।
बजुज़ हक़ कीस्त ता गोयद अनलहक़ ॥
हमाँ ज़र्राते आलम हम चो मंसूर ।
तु ख़ाही मस्तगीरो ख़ाह मख़मूर ॥
दरीं तसबीहो तहलीलन्द दायम ।
बदीं मानी हमीं बाशन्द क़ायम ॥
अगर ख़ाही कि बर तो गरदद आसाँ ।
ब इम्मिन शै अरा यक रह फेरोख़ाँ ॥
चो करदी ख़ेशतन रा पंबा कारी ।
तु हम हल्लाज वार ईं दम बरारी ॥
बरावर पंबए पिंदारत अज़ गोश ।
निदाए वाहेदुल क़हआरे बे न्योश ॥
निदा मी आयद अज़ हक़ बर दवामत ।
चेरा गश्ती तु मौक़ूफ़े क़यामत ॥
दरादर वादिए ऐमन कि नागाह ।
दरख़्ते गेएदत इन्नी अनल्लाह ॥

उत्तर

अहंब्रह्मास्मि (मैं सत्य हूँ) यह कहना, सारे रहस्यों को बिल्कुल खोल देना है। ईश्वर के अतिरिक्त यह शब्द किसके मुख से निकल सकते हैं ?

इस संसार के सम्पूर्ण कण मन्सूर ही के समान हैं। उन्हें चाहे मतवाला समझ ले अथवा नशे में चूर।

वे सदैव इन्हीं शब्दों का उच्चारण करते हैं और इन्हीं शब्दों पर उनका जीवन निर्भर है।

यदि तू यह चाहता है कि इस बात का समझना तेरे लिये सरल हो जावे, तो उनमें लिखे हुए इन वाक्यों का अध्ययन कर डाल।

जब तू अपने आप को रुई के समान धुन डालेगा तब धुना के समान यही शब्द ज़ोर ज़ोर से तुझ में से निकलेंगे।

अभिमान की रुई को अपने कान से निकाल डाल और अद्वैत की आवाज़ को सुन।

ईश्वर की ओर से तेरे लिये सदैव यही आवाज़ आ रही है कि तू प्रलय को बाट क्यों जोह रहा है।

तू ऐमन की घाटी में चला आ। वहाँ प्रत्येक वृक्ष तुझसे यही कहेगा कि "ईश्वर मैं ही हूँ।"

रवा बाशद अनल्लाह अज़ दरख़्ते।
चिरा न बुवद रवा अज़ नेक बख़्ते॥

हर आँ कस रा कि अन्दर दिल शके नेस्त।
यक़ीं दानद के हस्ती जुज़ यके नेस्त॥

अनानीयत बुवद हक़ रा सज़ावार।
के हू ग़ैबस्तो ग़ायब वह्मो पिन्दार॥

जनाबे हज़रते हक़ रा दुई नेस्त।
दराँ हज़रत मनो माओ तुई नेस्त॥

मनो माओ तुओ ऊ हस्त यक चीज़।
कि दर वह्दत न बाशद हेच तमीज़॥

हराँ कू ख़ाली अज़ चूनो चेरा शुद।
अनलहक़ अंदरो सौतो सदा शुद॥

शवद बा वज्हे बाक़ी ग़ैर हालिक।
यके गर्दद सुलोको सैरो सालिक॥

हुलोलो इत्तेहाद अज़ ग़ैर ख़ेज़द।
वले वहदत हमाँ अज़ सैर ख़ेज़द॥

एक वृक्ष का जब यह कहना कि "ईश्वर मैं ही हूँ," ठीक है तब एक पवित्रात्मा का कथन क्यों न सत्य हो।

जिस मनुष्य के हृदय में कोई सन्देह नहीं है वह यह बात पूर्ण रूप से समझ लेगा कि सत् वास्तव में एक ही है।

अपने आप को 'आप' कहना ईश्वर को ही शोभा देता है। इसके भीतर 'वह' का शब्द गुप्त है। परन्तु सन्देह और घमंड का चिह्न भी नहीं दिखलाई पड़ता।

ईश्वर के सामने द्वैत का चिन्ह भी नहीं पाया जाता। उसके सर्कार में, मैं, "हम" और "तू" इत्यादि कुछ भी नहीं है।

मैं और तू इत्यादि में कोई भेद नहीं है। इकताई में किसी प्रकार का अन्तर होता ही नहीं है।

जिस मनुष्य के हृदय से यह बातें दूर हो गईं, उसकी अन्तरात्मा से 'अहम् ब्रह्मास्मि' की आवाज़ निकलने लगती है।

वह सदैव रहने वाली सूरत से सम्बन्ध स्थापित कर लेता है और उसके प्रति अपने तथा पराए सब एक ही हो जाते हैं।

उसमें मिल जाने अथवा अन्तर्हित हो जाने का प्रश्न तब उठता है जब हृदय में अहंकार रहता है।

ताअय्युन बूद कज़ हस्ती जुदा शुद ।
न हक़ बन्दा न बन्दा बा ख़ुदा शुद ॥
हुलोलो इत्तेहाद ईं जा मोहालस्त ।
कि दर वहदत दुई ऐने ज़ुलालस्त ॥
वजूदे ख़ल्क़ो कसरत दर नमूदस्त ।
न हर जां मी नुमायद ऐने बूदस्त ॥

तमसील

बेनेह आईनए अन्दर बराबर ।
दरो बेनिगर बे बीं आँ शख़्से दीगर ॥
यके रह बाज़ बीं ता चीस्त आँ अक्स ।
न ईनस्तो न आँ पस कीस्त आँ अक्स ॥
चो मन हस्तम बज़ाते ख़ुद ताअय्युन ।
नमी दानम चे बाशद सायए मन ॥
अदम बा हस्ती आख़िर चूँ शवद ज़म ।
न बाशद नूरो ज़ुल्मत हर दो बाहम ॥
चो माज़ी नेस्त मुस्तक़बिल महो साल ।
चे बाशद ग़ैर अर्जीं यक नुक़्तए हाल ॥

परन्तु अहंकार को त्याग देने से बिल्कुल ईश्वर से साक्षात् होता है । एक मनुष्य था जो जीवन से पृथक हो गया । न तो ईश्वर ही मनुष्य बना और न मनुष्य ही ईश्वर में मिला ।

यहाँ पर उसमें लीन हो जाने का विचार करना ही पथ से विचलित होना है । क्योंकि इकताई में दूसरी बात सोचना अनुचित है ।

सांसारिक मनुष्यों और जीवों का अस्तित्व दिखावे में है । यह सोचना कि जो वस्तु दिखलाई पड़ती है वही जीवन है, ठीक नहीं है ।

उदाहरण

तू अपने सम्मुख दर्पण रख ले और उसमें अपने को निरख, तुझे एक दूसरा ही मनुष्य दिखलाई पड़ेगा ।

पुनः एक बार ध्यान से देख और विचार कि यह प्रतिविम्ब क्या वस्तु है । न यह है और न वह है ।

फिर यह प्रतिविम्ब है क्या ? जब मैं अपने आप में मिला हूँ, मुझे नहीं ज्ञात होता कि मेरी छाया कैसी होगी ।

मृत्यु, जीवन के साथ मिलकर एक कैसे हो जावे । प्रकाश और अन्धकार कभी साथ साथ नहीं रहते ।

जब भूत काल नहीं है तब भविष्य के महीने और वर्ष क्या होंगे ? जो कुछ है सो यही वर्त्तमान है ।

यके नुक़्तस्त वहमी गशता सारी।
तु ऊ रा नाम कर्दा महरे जारी॥
जुज़ अज़ मन अन्दरीं सहरा दिगर नीस्त।
बेगो बा मन कि ता सौतो सदा चीस्त॥
अरज़ फ़ानोस्त चो हर जो मुरक्कब।
बेगो कै बूद या ख़ुद कू मुरक्कब॥
ज़े तूलो अर्ज़ वज़ उमक़स्त अजसाम।
वजूदे चूँ पिदीद आयद जे ऐदाम॥
अज़ीं जिन्सस्त अस्ले जुम्ला आलम।
चो दानिस्ती बे यार ईमाँ फ़अलज़म॥
जुज़ अज़ हक़ नेस्त दीगर हस्ती अलहक़।
हुवलहक़ गोयो गर ख़ाही अनलहक़॥
नमूदे वहमी अज़ हस्ती जुदा कुन।
न बेगाना ख़ुद रा आशना कुन॥

सवाल

चेरा मख़लूक़ रा गोयन्द वासिल।
सुलोको सैरे ऊ चूँ गश्त हासिल॥

एक सन्देह ही तेरे साथ बराबर लगा हुआ है। तूने उसी का नाम बहती हुई नदी रक्खा है।

मेरे अतिरिक्त इस बन में कोई दूसरा नहीं है। फिर यह आवाज़ और ध्वनि क्या है?

इच्छा एक मिट जाने वाली वस्तु है और कार्य उसी से मिलकर बना है। फिर यह बतला कि वह इच्छा कहाँ थी और वह उत्पन्न किस प्रकार हुई?

जितने भी शरीर हैं जितने भी आकार हैं, वह सब लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से मिलकर बने हैं।

इनके मिटा देने से किसी प्रकार के अस्तित्व का बोध किस प्रकार होगा? सारे संसार में केवल यही एक सार वस्तु है।

जब तू इसे समझ गया तो बस इसी के ऊपर अमल कर। चाहे तुम अपने को ईश्वर कहो चाहे परमेश्वर को ईश्वर, परन्तु वास्तविक बात यह है कि इस संसार में ईश्वर के अतिरिक्त किसी का अस्तित्व नहीं है।

तू अपने संशय को हृदय से दूर कर दे और अपने आप को मित्र बना ले, तू कोई दूसरा नहीं है।

प्रश्न

मनुष्यों के लिये यह क्यों कहा जाता है कि वे लवलीन हो गये? और फिर उन्हें मार्ग और संतोष, दोनों क्यों कर प्राप्त हुए?

जवाब

विसाले हक़ ज़े ख़ल्क़ीयत जुदाईस्त ।
ज़े ख़ुद बेगाना गश्तन आश्नाईस्त ॥
चो मुमकिन गरदे इमकाँ बर फ़िशानद ।
बजुज़ वाजिब दिगर चीज़ो नमानद ॥
वजूदे हर दो आलम चूँ ख़यालस्त ।
कि दर वक्ते, बक़ा ऐनें ज़वालस्त ॥
न मख़्लूक़स्त आँ कू गश्त वासिल ।
न गोयद ईं सख़ुन रा मर्दे कामिल ॥
अदम कै राह याबद अन्दरीं बाब ।
चे निस्बत ख़ाक रा बा रब्बे अरबाब ॥
अदम चे बुवद कि बा हक़ वासिल आयद ।
वज़ो सैरो सुलूके हासिल आयद ॥
अगर जानत शवद ज़ीं मानी आगाह ।
बेगोई दर ज़माँ असतग़फ़रउल्लाह ॥
तु मादूमो अदम पैवस्ता साकिन ।
ब वाजिब कै रसद मादूमे मुमकिन ॥

उत्तर

ईश्वर से मिलना संसार से पृथक हो जाना है और अपने आप से कोई दूसरा ही हो जाना, यह उसकी पहचान है ।

जब सम्भव इस संसार की गर्द को झाड़ देता है तो सत् के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता है ।

दोनों लोक और परलोक का अस्तित्व एक विचार मात्र है, जो कि मृत्यु के समय पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है ।

जिसने ईश्वर को पा लिया वह सांसारिक मनुष्यों में नहीं रह जाता है । पूर्ण इस बात को कभी भी नहीं कहेगा कि मैं मनुष्य हूँ ।

मनुष्य को इस दर्वाज़े से उस पार निकल जाने का मार्ग कब मिलेगा ? उस महान् परमेश्वर के साथ मिट्टी का क्या सम्बन्ध है ?

मनुष्य क्या वस्तु है जो वह ब्रह्म के साथ जा मिले और उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध प्रकट करे ।

यदि यह बात तेरी समझ में आजावे, तो निस्सन्देह उसी क्षण तू यह कहेगा कि मैं ईश्वर हूँ ।

तू नाशवान् है और तू इसी रूप में सदैव एक स्थान पर ठहरा हुआ है । यह नाशवान कब सत् तक पहुँच सकेगा ।

न दारद हेच जौहर बे अरज़ ऐन।
अरज़ चे बुवद कि ला यबक़ो ज़मानेन ॥
हकीमे कंदरी रह कर्द तसनीफ़।
बतूलो अर्ज़ो उमक़श कर्द तारीफ़ ॥
हयूला चीस्त जुज़ मादूमे मुतलक़।
कि मी गर्दद बदो सूरत मोहक़्क़ ॥
चे सूरत बे हयूला जुज़ अदम नेस्त।
हयूला नीज़ बे ऊ जुज़ अदम नेस्त ॥
शुदा अजसामे आलम जीं दो मादूम।
कि जुज़ मादूम अज़ीशाँ नेस्त मालूम ॥
बेबीं माहीयते रा बे कमो बेश।
न मादूमो न मौजूदस्त दर ख़ेश ॥
नज़र कुन दर हक़ीक़त सूए इमकाँ।
कि बे ऊ हस्ती आमद ऐने नुक़साँ ॥
वजूद अन्दर कमाले ख़ेश सारीस्त।
ताआयुनहा उमूरे एतबारीस्त ॥
उमूरे एतबारी नेस्त मौजूद।
अदद बिसयारो यक चीज़स्त मादूद ॥

कोई जवाहर बिना परीक्षा के सच्चा (पूर्ण) नहीं कहा जा सकता है। और सत् है क्या वस्तु ? वह, जो दो ज़मानों तक शेष न रहे।

जिस विद्वान ने इस विषय में कोई पुस्तक लिखी है उसने क्षणिक की परिभाषा लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से की है।

जिस अस्तित्व के द्वारा आकार सूरत उत्पन्न होती है वह क्षणभंगुरता के अतिरिक्त और क्या वस्तु है ? जब आकार विना पंचभूतों के कुछ भी नहीं है तो वह भी आकार विहीन कुछ भी नहीं है।

इस संसार के जितने भी मांस पिण्ड हैं वे इन्हीं दो वस्तुओं से बने हैं।
उनके विषय में नाश के अतिरिक्त और कोई बात ज्ञात नहीं है।

एक अद्वैत को देखो, जिसमें भाव अभाव तथा उत्पत्ति और लय कुछ भी नहीं है।

देखो, इस क्षणभंगुर संसार की तरफ़ ध्यान से, कारण, कि उसके बिना यह जीवन बिल्कुल अधूरा है।

अस्तित्व अपनी विशेषताओं के वृत्त के भीतर चक्कर लगा रहा है। वास्तविकताएँ जितनी भी हैं वह सब विश्वासी बातें हैं।

विश्वासी बातें यहाँ पर नहीं हैं। गिनतियाँ बहुत सी हैं परन्तु गिननेवाला एक ही है।

जहाँरा नेस्त हस्ती जुज़ मजाज़ी।
सरासर हाले ऊ लह वस्तो बाज़ी॥

तमसील दर अतवारे वजूद

बुख़ारे मुर्तफ़ा गर्दद ज़े दरिया।
ब अमरे हक़ फ़िरो आयद बसेहरा॥
शुआये आफ़ताब अज़ चर्ख़े चारुम।
फ़ेरो बारद शवद तरकीब बाहम॥
कुनद गरमी दिगर रह अज़्मे बाला।
दरावेज़द बदो आँ आबे दरिया॥
चु बाईशाँ शवद ख़ाको हवाज़िम।
बरूँ आयद नबाते सब्ज़ो ख़ुर्रम॥
ग़िज़ाये जानवर गरदद तबदील।
ख़ुर्द इनसाँ व याबद बाज़ तहलील॥
शवद यक नुक़्ता वगरदद दर अतवार।
वज़ाँ इन्साँ शवद पैदा दिगर बार॥
चु नूरे नफ़्स गोया दर तन आमद।
यके जिस्मे लतीफ़ो रौशन आमद॥

इस संसार में जीवन स्थायी नहीं है। उसकी तमाम बातें खेल कूद के समान हैं।

जीवन में उलटफेर

ईश्वर की आज्ञा से एक वाष्प नदी में उठती है और समतल भूमि में आकर नीचे गिर पड़ती है।

चौथे आकाश खण्ड से सूर्य्य की किरणें उस मैदान में आकर पड़ती हैं और फिर आपस में गुथ जाती हैं।

धूप पड़ने पर ताप उत्पन्न होता है और फिर वह गर्मी ऊपर को जाना चाहती है। उस समय नदी का जल उसमें सम्मिलित हो जाता है और उससे लिपट जाता है।

जब उस ताप और जल के साथ मिट्टी और वायु भी मिल जाती हैं तब वह एक हरी-भरी घास के रूप में परिणत हो जाती है।

वही पशुओं की आशा हो जाती है। मनुष्य खाता है और फिर वह पच जाता है।

वही एक बिन्दु के रूप में परिणत हो जाता है और जन्म मरण के चक्कर में पड़कर पुनः मनुष्य के रूप में उत्पन्न होता है।

जब बोलने वाला मनुष्य के अन्दर एक चिनगारी के समान प्रवेश करता है तब शरीर के अन्दर से एक सुन्दर प्रभा प्रस्फुटित होती है।

शवद तिफ़्लो जवानो कोह्लो कम पीर।
बदानद इल्मो राये फ़हमो तदबीर।।

रसद अंगह अजल अज़ हज़रते पाक।
रवद पाकी बेपाको ख़ाक बा ख़ाक।।

हमा अजज़ाए आलम चो नबातन्द।
कि यक क़त्रा ज़े दरयाये हयातन्द।।

ज़माँ चूंबगुज़रद बरूये शवद बाज़।
हमह अंजाम ईशाँ हमचु आग़ाज़।।

रवद हर यक अज़ी शाँ सूए मरकज़।
कि न गुज़ारद तबीयत जूए मरकज़।।

चु दरियायस्त वहदत लेक पुर ख़ूँ।
कज़ो ख़ेज़द हज़ाराँ मौजे मजनूँ।।

नगर ता क़त्रए बाराँ ज़े दरिया।
चगूना याफ़ चन्दीं शक्लो अस्मा।।

बुख़ारो आबो बाराँ व नमो गिल।
नबातो जानवरो इनसाने कामिल।।

वह बालक, युवा और वृद्ध होता है और विद्या, ज्ञान और प्रयत्न के मूल्य को समझने लगता है।

उस समय ईश्वर के दर्बार से मृत्यु का आगमन होता है। पवित्रता, पवित्रात्मा के पास चली जाती है और मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है।

संसार के जितने भी परमाणु हैं वह सब इसी जीवन रूपी सरिता को बूँदों के समान हैं।

जब उसपर संसार का भार आ पड़ता है तब उसका समस्त फल, उसका अन्त आदि के समान खुल जाता है।

उन बिन्दुओं में से प्रत्येक अपने केन्द्र की तरफ़ आकर्षित होने लगता है। कारण कि मानवी इच्छा उसकी तरफ़ सदैव लगी रहती है।

अद्वैत एक नदी के समान है, परन्तु वह नदी ऐसी है जो रक्त से भरी हुई है। उसमें से सहस्रों लहरें मजनूँ के समान निकलती हैं।

यह तो देखो कि वर्षा के एक बिन्दु ने उस नदी में से निकल कर कितने नाम पाए और कितने रूप धारण किए।

वाष्प, जल, वर्षा, नमी और गीली मिट्टी और इसके उपरान्त वृक्ष, जानवर और पूर्ण मनुष्य।

हमा यक क़त्रा बूद आख़िर दर अव्वल।
कज़ो शुदीं हमा अशया मुमस्सिल॥
जहाँ अज़ अक़्लो नफ़सो चर्ख़ों अजराम।
चु आँ यक क़त्रा दाँ ज़ा आग़ाज़ो अंजाम॥
अजल चूँ दर रसद दर चर्ख़ो अनजम।
शवद हस्ती हमह दर नेस्ती गुम॥
चु मौजे बर ज़नद गर्दद जहाने तमस।
यक़ीं गरदद कि ईं लम तग़न बाला लमस॥
ख़याल अज़ पेश बर खेज़द बयक बार।
नमानद ग़ैर हक़ दर दारे दय्यार॥
तुरा क़ुरबे शवद आँ लहज़ा हासिल।
शवे बे तू तूई बा दोस्त वासिल॥
विसाल ईंजायगह रफ़ा ख़यालस्त।
चु ग़ैरज़ पेश बर ख़ेज़द विसालस्त॥
मगो मुमकिन ज़े हद्दे ख़ेश बगुज़श्त।
न ऊ वाजिब शुदो न वाजिब ऊ गश्त॥

यह सब प्रारम्भ में एक ही बिन्दु थे, परन्तु फिर उसी बिन्दु ने इतने रूप धारण कर लिये।

बुद्धि, इच्छा, आकाश, शरीर इत्यादि संसार की यह समस्त वस्तुएँ आदि से लेकर अन्त तक सब उसी बिन्दु के समान हैं।

जब आकाश और तारों को मृत्यु आ उपस्थित होगी तब इनका अस्तित्व नाश रूपी गहरे गर्त में विलीन हो जायगा।

जब एक लहर आक्रमण करती है तब सारा संसार मिट जाता है और यह विश्वास हो जाता है कि जो कुछ भी था वह स्वप्न था।

ऐसे विश्वास के उपरान्त समस्त विचार यकायक सामने से विलीन हो जाते हैं और फिर इस सूने घर में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा।

तुझको उस समय ऐसा सुयोग प्राप्त होगा कि तू बिना ही किसी साधना के अपने मित्र से जा मिलेगा।

इस स्थान पर एक दूसरे के बीच में आजाने के कारण मिलने और अलग होने का विचार हृदय से जाता रहता है।

जब यह अटकाव मिट जाता है, मिलन सहज हो जाता है॥

हराँको दर मआनी गश्त फ़ायक।
निगोयद कीं बुवद क़ल्बे हक़ायक़॥
हज़ाराँ निशाहे दारी ख़ाजा दर पेश।
बरो आमद शुद .खुद रा बीनदेश॥
ज़े बहसे ज़ुज़ो कुल व निश्श इन्साँ।
बगोयम यकबयक पैदा व पिन्हाँ॥

सवाल

विसाल वाजिबो मुमकिन बहम चीस्त।
हदोसे क़ुर्बो बादो बेशो कम चीस्त॥

जवाब

ज़े मन बिशनो हदीसे बे कम वेश।
ज़े नज़दीकी तो दूर उफ़्तादी अज़ ख़ेश॥
चु हस्ती रा ज़हूरे दर अदम शुद।
अज़ांजा क़ुर्बो बादो बेशो कम शुद॥

तू यह न समझ कि मनुष्य अपनी सीमा से आगे बढ़ जायगा। न तो वह सत् हुआ ही है और न होवेगा ही।

जो मनुष्य आत्मज्ञान से पूर्ण हो गया है, वह यह बात नहीं कहेगा कि ऐसा होना सत् का उलट जाना है।

मित्र! तुम्हारे ही सम्मुख सहस्रों जीवधारी उत्पन्न हुए हैं और मृत्यु के ग्रास बने हैं। इस बात को छोड़ कर तनिक अपने ही आवागमन पर विचार करो।

मनुष्य के जीवन-मरण के इन रहस्यों को एक एक करके खोलकर तथा छिपा कर देखो। उसका वर्णन करूँगा।

प्रश्न

ईश्वर और मनुष्य का आपस में मिल जाना क्या वस्तु है? निकट, दूर, अधिक और कम से क्या आशय है?

उत्तर

मैं बिना किसी प्रकार के घटाव-बढ़ाव के तुझ से कहता हूँ, उसे सुन। तू स्वयम निकट होने के ही कारण अपने आप से दूर जा पड़ा है।

जब इस संसार में किसी जीव का जन्म हुआ, उसी स्थान से समीपता, दूरी, अधिकता और कमी का आविर्भाव हुआ है।

क़रीब आनस्त कूरा रश नूरस्त।
बईदाँ नेस्ती कज़ हस्त दूरस्त ॥
अगर नूरे जे ख़ुर दरे तो रसानद।
तुरा अज़ हस्तिए ख़ुद वा रहानद ॥
चे हासिल मर तुरा जीं बूदो नाबूद।
कज़ो गाहत ख़ौफ़ो गह रिजा बूद ॥
नतरसंद जू कसे कूरा शनासद।
कि तिफ़्लज़ सायए ख़ुद मी हरासद ॥
नमानद ख़ौफ़ अगर गरदी रवाना।
नख़ाहद अस्पे ताज़ी ताज़याना ॥
तुरा अज़ आतिशे दोज़ख़ चे बाकस्त।
कि अज़ हस्तीए तनो जाँ तो पाकस्त ॥
ज़े आतिश ज़र ख़ालिस बर फ़रोज़द।
चु ग़ैशै नै बुवद अन्दर वै चे सोज़द ॥
तोरा ग़ैरज़ तो चीज़े नेस्त दर पेश।
वलेकिन अज़ वजूदे ख़ुद बीन्देश ॥

निकट वह है जिस पर प्रकाश की वर्षा होती रहती है। और दूर वह वस्तु है जो ईश्वर से बहुत दूर नाशवान् जगत के एक कोने में पड़ी हुई है।

यदि उस प्रकाश की कुछ किरणें तुझ तक पहुँच जावें तो तू अपने जीवन के बन्धनों से मुक्त हो जावे।

तुझको अपने इस अस्तित्व से क्या प्राप्त होता है? केवल भय और निराशा।

जो मनुष्य उसके भेद को जानता है, वह उससे कभी भय नहीं खाता। अपनी छाया से बच्चे ही डरा करते हैं।

यदि तू अपने मार्ग पर चल खड़ा हो तो फिर तुझे किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। तू अरब-अश्व के समान शीघ्र गामी है। तुझे कोड़े की क्या आवश्यकता है।

तुझे नर्क की अग्नि से बिल्कुल ही डरना न चाहिये। तेरा शरीर और तेरे प्राण संसार की मलिनता से स्वयं पवित्र हैं।

अग्नि में पड़ने से स्वर्ण निखर जाता है। परन्तु जिस सोने में किसी प्रकार की मिलावट अथवा ख़राबी न हो उसे अग्नि में डाला ही क्यों जावे? वह जलेगा ही नहीं।

तेरे सम्मुख तुझे छोड़कर और कोई भी वस्तु नहीं है, किन्तु तू आप ही सोच कि वास्तव में तू है कैसा।

अगर दर ख़ेश्तन गर्दी गिरफ़्तार।
हिजाबे तो शवद आलम बयक बार॥
तुई दर दौरे हस्ती जुज़्वे असफ़ल।
तुई बा नुक़्तए वहदत मुक़ाबिल॥
ताअय्युनहाय आलम बर तो तारीस्त।
अज़ाँ गोई चो शैतां हमचो मन कीस्त॥
अज़ां गोई मरा ख़ुद इख़्तयारस्त।
तने मन मुरक़बो जानम सवारस्त॥
ज़मामे तन बदस्ते जाँ निहादंद।
हमाँ तकलीफ़ बर मन जाँ निहादंद॥
न दानीं कीं हमाँ आतिशपरस्तीस्त।
हमाँ ईं आफ़तो शोख़ी ज़े हस्तीस्त॥
कुदामी इख़्तियार ऐ मर्दे आक़िल।
कसे रा कू बुवद बिज़्ज़ात बातिल॥
चो बूदे तुस्त यकसर हम चो नाबूद।
बेगोई केख़्तियारत अज़ कुजा बूद॥
कसे कूरा वजूद अज़ ख़ुद न बाशद।
बज़ाते ख़ेश नेको बद न बाशद॥

तुझमें यदि किसी प्रकार का पर्दा है, तो वह केवल तेरा अभिमान है।

इस जन्म मरण के चक्कर में—इस मर्त्य-लोक में तू सब से नीचा है। और अद्वैत प्राप्त करने का अधिकारी भी तू ही है।

तू इस संसार के बंधनों में विश्वास रखता है, इसी कारण तू शैतान के समान कहा करता है कि यह मेरा निवास स्थान है।

और मैं स्वतंत्र हूँ। मेरा शरीर अश्व है और मेरी आत्मा इसका सवार है।

शरीर की लगाम आत्मा के हाथ में दे दी है। इसी कारण मुझ पर यह सब बन्धन डाले गये हैं।

तू नहीं जानता कि यह सब कुछ अग्नि की पूजा करने के समान है। यह सारी विपत्तियाँ और ढिठाइयाँ केवल इसी जीवन के कारण हैं।

हे ज्ञानवान्! तेरा जीवन क्षणिक है। इस पर भी तू अपने अधिकार प्रकट करता है।

बता, तेरे वह अधिकार किस काम के हैं और उनका अस्तित्व भी क्या है? और वह तुझे कहाँ प्राप्त हुआ था?

जिस मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता उसे अपने में भलाई अथवा बुराई किस प्रकार ज्ञात हो सकती है?

के रा दीदी तू अन्दर हर दो आलम।
कि यकदम शादमानी याफ़्त बेग़म ॥

कि रा शुद हासिल आख़िर जुम्ला उम्मीद।
कि माँद अन्दर कमाले ता बजावीद ॥

मरातिब बाक़िओ अहले मरातिब।
बज़ेरे अम्रे हक़ वल्लाहो ग़ालिब ॥

मो अस्सिर हक़ शनास अन्दर हमा जाय।
ज़े हद्दे ख़ेशतन बेरूँ मनेह पाय ॥

ज़े हाले ख़ेशतन पुरेसीं क़दर चीस्त।
वज़ीं जा बाज़दाँ कहले क़दर कीस्त ॥

हराँ कस रा कि मज़हब ग़ैरे जब्रस्त।
नबी फ़रमूद कू मानिन्दे गब्रस्त ॥

चुनाँ काँ गब्र यज़दाँ अहमन गुफ़्।
हमीं नादाने अहमक़ मा व मन गुफ़् ॥

बमा अफ़आल रा निस्बत मजाज़ीस्त।
निसब ख़ुद दर हक़ीक़त लहओ बाज़ीस्त ॥

इन दोनों जहानों में तूने कभी किसी को क्षण भर के लिये भी सुखी होते देखा है ?

किस मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हुई हैं ? और कौन सदैव एक ही समान रहा है ?

ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार चलने वाले ही लोग शेष हैं और उसका भय सभी को लगता है।

सभी स्थानों में ईश्वर को ही प्रत्येक कार्य का कर्त्ता-धर्त्ता मान और निर्धारित सीमा से आगे मत बढ़।

तू अपना हाल देख ले और फिर अपने हृदय से पूछ कि प्रतिष्ठा क्या वस्तु है।

फिर यह सोच कि प्रतिष्ठा किसे प्राप्त होनी चाहिये।

और कौन ऐसे मनुष्य हैं जो प्रतिष्ठित होने योग्य हैं। जिस मनुष्य का धर्म्म बल प्रयोग के अतिरिक्त कोई और वस्तु है, नबी के कथनानुसार वह अग्नि पूजक है।

इसी प्रकार मूर्ख ने "मैं" और "हम" को समझ लिया है। कार्यों के सम्बन्ध में हमारे यहाँ कह दिया गया है।

निबूदी तू कि फ़ेलत आफ़रीदन्द।
तुरा अज़ बहे कारे बरगुज़ीदन्द॥
बक़ुद्रत बेसबब दानाए बर हक़।
बइल्मे ख़ेश हुक्मे करदा मुतलक़॥
मुक़द्दर गश्ता पेश अज़ जानो अज़ तन।
बराए हर यके कारे मोअय्यन॥
यके हफ़्सद हज़ाराँ साल ताअत।
बजा आवुर्दा गरदन तौक़े लानत॥
दिगर अज़ मासियत नूरो सफ़ादीद।
चो तोबह कर्द नामे इस्तिफ़ा दीद॥
अजबतर आँके ईं अज़ तर्के मामूर।
शुदज़ अलताफ़े हक़ मरहूमो मग़फ़ूर॥
मरा दीगर जे मनहा गश्ता मलऊँ।
जेहे फ़ेले तोबे चन्दो चे वो चूँ॥
जनाबे किब्रेआई ला उबालीस्त।
मुनज़्ज़ह अज़ क़यासाते ख़ियालीस्त॥

और वास्तव में मनुष्य के सभी प्रयत्न सारहीन खिलवाड़ के समान हैं।

जिस समय तू नहीं था उसी समय तेरे कार्यों को उत्पन्न कर दिया था और तुझे एक विशेष काम के लिये चुन लिया था।

बिना किसी कारण के परमेश्वर ने अपने आप एक आज्ञा दे डाली।

शरीर और प्राणों से पहले ही प्रत्येक मनुष्य के लिये एक न एक कार्य निर्धारित कर दिया जाता है।

एक मनुष्य ने सात लाख वर्ष तपस्या की पर उस पर भी उसके गले में धर्म्महीनता का तौक़ पड़ गया।

दूसरे ने पाप और अपकर्म करके भी पवित्रता और ईश्वरीय प्रकाश को प्राप्त किया।

जब उसने अपने इन कर्मों को त्याग देने की प्रतिज्ञा की तब उसने ईश्वर के प्रिय मनुष्यों की सूची में अपना नाम पाया।

सबसे बड़े आश्चर्य की बात यह हुई कि यह दूसरा, ईश्वरीय आज्ञा को न मानने पर भी क्षमा कर दिया गया, परन्तु वह पहिला केवल मना कर देने ही के कारण क्षमा नहीं किया गया।

तेरे कार्यों का कहना ही क्या है, जो न तो वर्णन ही में आ सकते हैं और न उनकी गणना ही की जा सकती है। ईश्वर बिल्कुल लापर्वाह है। वह विचारों की बुराइयों से परे है।

चे बूद अन्दर अज़ल ऐ मर्दे ना अह्ल ।
कि ईं गश्ता मोहम्मद व आँ अबूजेह्ल ॥
कसे कू बा ख़ुदा चूनो चरा गुफ़्त ।
जो मुशरिक हज़रतश रा ना सज़ा गुफ़्त ॥
वरा ज़ेबद के पुरसद अज़ चे व चूँ ।
न बाशद एतराज़ अज़ बन्दा मौज़ूँ ॥
ख़ुदावन्दी हमाँ दर किब्रयाईस्त ।
न इल्लत लायक़े फ़ेले ख़ुदाईस्त ॥
सज़ावारे ख़ुदाई लुत्फो क़हस्त ।
वलेकिन बन्दगी दर शुक्रो सब्रस्त ॥
करामत आदमी रा ज़े इज़तरारीस्त ।
न आँ कूरा नसीबे इख़्तयारीस्त ॥
न बूदा हेच ख़ैरश हरगिज़ अज़ ख़ुद ।
पसंगाह पुर्सदश अज़ नेको अज़ बद ॥
नदारद इख़्त्यारो गश्ता मामूर ।
जहे मिसकीं कि शुद मुख़तारो मजबूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

न ज़ुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त।
न जौरस्ती कि महज़े लुत्फ़ो फ़ज़लस्त॥
ब शरअत जाँ सबब तकलीफ़ करदन्द।
कि अज़ ज़ाते ख़ुदत तारीफ़ करदन्द॥
चो अज़ तकीफ़े हक़ आजिज़ शवी तू।
बयकबार अज़ मियाँ बरूँ रवी तू॥
बकुल्लीयत रेहाई यावी अज़ ख़ेश।
ग़नी गर्दी बहक़ ऐ मर्दे दुरवेश॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह।
बतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्ताँ।
सदफ़ बाला रवद अज़ बहे अम्माँ॥
जे शीबे क़ार बह आयद बरफ़राज़।
बरूए बह बनशीनद दहन बाज़॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़बर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुझको इसीलिये धर्म्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जायगा।

और अहंकार को बिल्कुल छोड़ देगा। हे त्यागी! उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगा।

प्रिय पुत्र! जा ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करना आरम्भ कर दे। अपना शरीर उसको अर्पण कर दे और वह जो कुछ करता है उसमें प्रसन्न रह।

उदाहरण

मैंने सुना है कि स्वाती में सीपियाँ पानी के अन्दर से नदी के गम्भीर गर्त्त में से निकल कर उसकी सतह पर आ जाती हैं।

इसके उपरान्त मुँह खोलकर फिर पानी के ऊपर बैठ जाती हैं।

बुख़ारे मुरतफ़ा गरदद ज़े दरिया।
फ़रो बारद बा मेह्रे हक़ तआला॥

चकद अन्दर दहानश क़त्रए चन्द।
शवद बस्ता दहाँ ऊ बसद बन्द॥

रवद बा क़ारे दरिया बादले पुर।
शवद आँ क़त्रए बाराँ यके दुर॥

बक़ार अन्दर रवद ग़व्वास दरिया।
वज़ो आरद बरूँ लूलू लह लाला॥

तने तू साहिलो हस्ती चु दरियास्त।
बुख़ारश फ़ैज़ो बाराँ इल्मे इस्मास्त॥

ख़रद ग़व्वासे ईं बहे अज़ीमस्त।
कि ऊरा सद जवाहिर दर गलीमस्त॥

दिल आमद इल्म रा मानिन्द यक ज़र्फ़।
सदफ़ बर इल्मे दिल सोतस्त ब हर्फ़॥

नफ़स गर्दद रवाँ चूँ बर्क़ लामा।
रसद ज़ू हरफ़हा बरगोशे सामा॥

नदी से भाप ऊपर उठती है और फिर नीचे ही बरस जाती है। ईश्वर की कृपा से सीप के मुख में कुछ बूँदें टपक जाती हैं।

बस उसका मुख फिर इस प्रकार बन्द हो जाता है जैसे उसमें सैकड़ों ताले डाल दिये गये हों।

प्रसन्नता के साथ सीप पुनः नदी की तह में चली जाती है और वह बूँदें एक बड़े मोती के रूप में परिणित हो जाती हैं।

पनडुब्बा—डुबकी लगाकर तह में पहूँचता है और उस उज्ज्वल मोती को बाहर ले आता है।

तेरा शरीर तट है और जीवन सरिता के समान है। उस सरिता की भाप ईश्वर है और उसके नामों का ज्ञान वर्षा है।

बुद्धि इस बड़ी नदी में डुबकी लगाने वाली है। सहस्रों मोती उसकी झोली में आ जाते हैं।

हृदय, ज्ञान के लिये एक बर्तन के समान है। शब्द और अत्तर, हृदय की ज्ञान शक्ति के सीप हैं।

श्वास इस प्रकार चलती है, जैसे चपला—चपल गति से। और उससे बातें सुनने वाले के कानों तक पहुँचती हैं।

सदफ़ बशिकन बरूँ कुन दुर शहवार ।
बैकिगन पोस्त मग़ज़े नग़ज़ बरदार ॥

लुग़त बा इश्तिक़ाक़ो नह्व बा सर्फ़ ।
हमी गरदद हमा पैरामन हर्फ़ ॥

हराँको जुम्ला उम्र ख़ुद दरीं कर्द ।
बहर ज़ेह सर्फ़ उम्र नाज़नीं कर्द ॥

ज़ जोज़िश क़शर ख़ुश्क उफ़ताद दरोस्त ।
बयाबद मग़ज़ हर कू पोस्त बशकस्त ॥

वले बे पोस्त ना पुख़्तस्त हर मग़ज़ ।
ज़े इल्म ज़ाहिर आमद इल्मे दीं नग़ज़ ॥

ज़े मन जाँ बिरादर पन्द बेनोश ।
बजानो दिल बरो दर इल्मे दीं कोश ॥

कि आलम दर दो आलम सरवरे याफ़्त ।
अगर कमतर बुदज़ वै मेहतरी याफ़्त ॥

अमल काँ अज़ सरे अहवाल बाशद ।
बसे बेहतर ज़े इल्मे क़ाल बाशद ॥

सीप को तोड़ डाल और उसके अन्दर से सम्राटों के योग्य मोती को बाहर निकाल ले। स्मरण रहे कि छिलके से क़ोई लाभ नहीं होगा। उसके गूदे को ले ले।

भाषा और उसके ज्ञान के सम्पर्क में और वाक्य विश्लेषण के साथ यह सब वस्तुएँ शब्द के आस पास चक्कर लगाती रहती हैं।

जिस मनुष्य ने अपने सम्पूर्ण जीवन को इसी कार्य में लगा दिया, उसने अपनी प्यारी अवस्था को व्यर्थ में ही खो दिया।

अख़रोट में से केवल छिलका उसके हाथ आया। गूदे को उसी ने प्राप्त कर पाया जिसने छिल्के को तोड़ कर पृथक कर दिया।

यह सत्य है कि छिल्के के बिना अन्दर का गूदा कड़ा नहीं होता। इसी प्रकार धर्म्म का ज्ञान प्रकट विद्या के ही कारण अच्छा होता है।

प्रिय भाई! मेरी एक शिक्षा मान ले। तू अपने मन और प्राण दोनों से धर्म्म-शिक्षा को प्राप्त करने में लग जा।

स्मरण रख विद्वान की प्रतिष्ठा दोनों जहानों में होती है। यदि वह एक साधारण स्थिति का पुरुष है, तब भी 'बुज़ुर्गी' का पद उसको अवश्य मिलता है।

मौखिक ज्ञान से अनुभव द्वारा प्राप्त हुआ ज्ञान कहीं उत्तम होता है।

वले कारी कि अज़ आबो गिल आमद।
न चूँ इल्मस्त काँ कारे दिल आमद॥

मियाने जिस्मो जाँ वनिगर चे फ़र्क़स्त।
कि ईं रा ग़र्ब गीरो आँ चु शरक़ीयत॥

अज़ींजा बाज़दाँ अह्वाले आमाल।
बनिस्बत बा उल्मे क़ालो बामा हाल॥

न इल्मस्त आँके दारद मेले दुनयई।
कि सूरत दारद आला नीस्त मानयई॥

नगरदद जमा हरगिज़ इल्म बा आज़।
मलक ख़्वाही सगज़ ख़ुद दूर आँदाज़॥

उल्मे दीं ज़े इख़लाक़ फ़रिश्तत।
नबाशद दर दिले कू सग सरिश्तत॥

हदीसे मुसतफ़ा आख़िर हमींनस्त।
नेको बशुनो कि अलवत्ता चुनींनस्त॥

दुरूँ ख़ानए चूँ हस्त सूरत।
फ़रिश्ता नयाबद अन्दरूए ज़रूरत॥

परन्तु यह मिट्टी और जल के मिश्रण का कार्य उस ज्ञान के समान नहीं है जो हृदय से प्राप्त होता है।

तनिक ध्यान से देख कि शरीर और प्राण में कितना अन्तर है। यदि एक पूर्व है तो दूसरा पश्चिम।

यहीं से तू इस बात की पहचान कर कि कौन सा कार्य तुझे किस ओर लिये जा रहा है। मौखिक ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान के अन्तर पर दृष्टि डाल।

जो ज्ञान संसार की ओर ले जाता है, उसे ज्ञान के नाम से कदापि सम्बोधित नहीं कर सकते हैं। कारण कि इसका अस्तित्व अवश्य है, परन्तु उसमें किसी प्रकार का आशय नहीं पाया जाता।

ज्ञान लालच और इच्छा से परे है। यदि तू देवता बनना चाहता है तो कुत्ते को (इच्छाओं को) अपने पास से हटा दे।

धार्म्मिक ज्ञान—देवताओं का ज्ञान है। यह उस मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता है, जो कुत्ते के समान स्वभाव रखता है।

धर्म्म का यही सार है। धार्म्मिक ग्रन्थों की अन्तिम शिक्षा यही है। इसको ध्यान से सुन कर समझ ले कि निस्सन्देह ऐसा ही है।

किसी घर में—जहाँ इस ज्ञान का अभाव है, देवता आ ही नहीं सकते।

बरो नवरदाए रूए तख़्तए दिल।
कि ता साज़द मुल्क पेशे तू मंज़िल ।।
अज़ो तहसील कुन इल्मे विरासत।
ज़े बह्र आख़िरत मीकुन हिरासत ।।
किताबे हक़ बख़्वाँ अज़ नफ़्सो आफ़ाक़।
मुज़ीं शो वासल जुमला अख़लाक़ ।।

तमसील

अगर्चे .ख़ुर बचर्ख़े चार मीनस्त।
शुआअश नूरे तदबीरे ज़मीनस्त ।।
तबीयतहाय अनसुर नज़्द .ख़ुर नीस्त।
कवाकिब गरमो सरदो .ख़ुश्को तर नीस्त ।।
अनासिर जुम्ला अज़ वै गरमो सर्दस्त।
सफ़ेदो सुरख़ो सब्ज़ो आलो ज़रदस्त ।।
बुवद हुक्मश रवाँ चूँ शाहे आदिल।
कि न ख़ारिज तुआँ गुफ़ न दाख़िल ।।
चु अज़ तादील गश्त अरकाँ मुवाफ़िक़।
ज़े हुसनश नफ़्स गोया गश्त आशिक़ ।।

अतएव अपनी हृदय-रूपी तख्ती को साफ़ करने का प्रयत्न कर। जिससे उस स्वर्गीय दूत का सत्संग तुझे प्राप्त हो।

दिखावटी ज्ञान के स्थान पर वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न कर और फिर अपने अन्तिम समय के लिये इसका संग्रह करता रह।

शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों का अध्ययन कर और अपनी इन्द्रियों की गति का ज्ञान प्राप्त कर ले।

उदाहरण

यद्यपि सूर्य चौथे आकाश पर स्थित है, परन्तु उसकी किरणें पृथ्वी पर पड़कर उसे उज्ज्वलता प्रदान करती हैं।

सूर्य के समीप तारों की पहुँच नहीं है। कारण ग्रहों में ताप, शुष्कता ठण्डक और आर्द्रता इत्यादि नहीं है।

सम्पूर्ण पदार्थ उसी सूर्य के प्रभाव से ऊष्ण अथवा शीतल होते हैं और उसी के कारण श्वेत, हरित और पीत वर्ण के हैं।

उसकी आज्ञा इसी प्रकार चलती है जिस प्रकार एक न्यायी सम्राट की आज्ञा, जिससे कोई कभी बच ही नहीं सकता।

जब समानता के विचार से सभी भीतरी बातें एक सी कर दी गईं तो उनके सौन्दर्य पर प्राण आसक्त हो गये।

निकाहे मानवी उफ़्ताद दर दीं।
जहाँरा नफ़्से कुल्ली दाद काबीं ॥
अज़ीशाँ मे पिदीद आयद फ़साहत।
उलूमो नुत्क़ो एख़लासो सबाहत ॥
मलाहत अज़ जहाने बेमिसाली।
दर आमद हमचो रिन्दे ला उबाली ॥
बशहीरस्तानेश नेकोई अलम ज़द।
हमह तरतीब आलम रा बहमज़द ॥
गहे बर रख़्श हुस्न ऊ शहसवारस्त।
गहे बा तेग़े नुत्क़े आबदारस्त ॥
चु दर शख़सस्त ख़ानन्दश मलाहत।
चु दर नुत्क़स्त गोयन्दश फ़साहत ॥
वलीओ शाहो दुरवेशो पयम्बर।
हमह दर तहते हुक्मे ऊ मसख़्ख़र ॥
दरूने हुस्न रूए नीकू आँ चीस्त।
न आँ हुस्नस्त तनहाई गो आँ चीस्त ॥
जुज़ अज़ हक़ मी न आयद दिलरुबाई।
कि शिरकत नेस्त कस रा दर ख़ुदाई ॥

उनका सम्बन्ध आन्तरिक रूप से धर्म्मानुसार हो गया और इन्द्रियों ने सारे संसार को मेहर में दे दिया।

उन्हीं से आनन्द प्रदायिनी बातें, सुन्दर स्वभाव तथा गुण उत्पन्न होते हैं।

इसके उपरान्त इस विलक्षण संसार से लावण्य एक मस्त और मतवाले के समान प्रकट हुआ।

उसने सौन्दर्य-प्रदेश में अपनी विजय-पताका फहरा दी और संसार के संम्पूर्ण ज्ञान को भुला दिया।

कभी तो वह घोड़े पर आसन जमाए हुए दिखलाई देता है और कभी सुन्दर और मनोमोहक वार्त्तालाप की तीक्ष्ण तलवार हाथ में लिए हुए दृष्टिगोचर होता है।

यदि वह किसी मनुष्य में है तो उसे मधुरता कहते हैं।

सिद्ध, सम्राट साधु और सन्यासी सब उसी की आज्ञानुसार चलते हैं।

सुन्दर मुख में कौनसी बात है ? यदि वह केवल सौन्दर्य ही नहीं है तो और क्या वस्तु है ?

ईश्वर के पास से यदि वह नहीं आया है तो उसमें मादकता कहाँ से आती है। वह केवल उसी की देन है। उसकी सम्पत्ति में कोई हिस्सेदार नहीं है।

कुजा शहवत दिले मरदुम रुबायद।
कि हक़ गह गह ज़े बातिल मे नुमायद॥

मोअस्सिर हक़ शनास अन्दर हमा जाए।
ज़े हद्दे ख़ेशतन बेरूँ मनहे पाए॥

हक़ अन्दर किसवते हक़ दीन हक़ दाँ।
हक़ अन्दर बातिल आमंद कारे शैताँ॥

नदारद कुल वजूदे दर हक़ीक़त।
कि ऊ चूँ आरिज़े शुद बर हक़ीक़त॥

वजूदे कुल कसीरे वाहिद आयद।
कसीर अज़ रूए कसरत मी नुमायद॥

अरज़ शुद हस्तिए काँ इजतमाईस्त।
अरज़ सूए अदम बिज़्ज़ात साईस्त॥

बहर जुज्वे ज़े कुल काँ नेस्त गर्दद।
कुल अन्दर दम ज़ेइम्काँ नेस्त गर्दद॥

जहाँ कुल्लस्त ब दर हर तुर्फ़तुलऐन।
अदम गर्दद वला चबक़ी ज़मानैन॥

इच्छाएँ मनुष्य का हृदय छीन नहीं सकतीं। कभी कभी झूठ से भी ईश्वर का जलवा प्रकट होता है।

स्मरण रख कि प्रत्येक बात ईश्वर के ही संकेत से होती है। इसलिये अपनी सीमा से बाहर पैर न बढ़ा।

सत्य में ईश्वर विद्यमान् रहता है। इसके अतिरिक्त यदि झूठ में सत्य समावेश हो तो यह शैतान का कार्य होता है।

वास्तव में उस सर्वेश का कोई दूसरा आधार नहीं है। क्योंकि अस्तित्व वास्तविकता में एक काल्पनिक वस्तु के समान है।

वह कार्य और कारण दोनों ही स्वयं है और वह शक्ति (माया) के कारण इस रूप में दिखलाई देता है।

यह बात सभी लोगों ने स्वीकार की है कि सृष्टि क्षणभंगुर है। यह क्षणभंगुरता अपने में से मृत्यु की ओर दौड़ रही है।

कुल का प्रत्येक भाग जो कि नाशवान् है, क्षण भर में सारे संसार से मिट जाता है।

संसार ही कुल है और पलक झपकते ही नाश को प्राप्त हो जाता है और दोनों जमानों में इसका लेश मात्र भी शेष नहीं रह जाता।

दिगर बारा शवद पैदा जहाने।
बहर लहज़ा ज़मीनो आसमाने॥
बहर लहज़ा जवाँ ईं कोहना पीरस्त।
बहरदम अन्दरो ब हशरो बशीरस्त॥
दरों चीज़े दो सायत मनीआयद।
दराँ लहज़ा कि मी मीरद बे ज़ायद॥
वलेकिन तामुतुलकुबरा न ईनस्त।
कि ईं बूमे अमल वाँ योम हीनस्त॥
अज़ाँ ताईं बसे फ़ुरक़त ज़ीनहार।
बनादानी मकुन ख़ुद राज़े कुफ़्फ़ार॥
नज़र बकुशाय दर तफ़सीलो जमाल।
निगर दर सायतो रोज़ो महो साल॥

तमसील

अगर ख़ाही कि ईं मानी बेदानी।
तोरा हम हस्त मरकब ज़िन्दगानी॥
ज़ेहर चे अन्दर जहाँ अज़ शेबो बाला अस्त।
मिसालश दर तनो जाने तो पैदास्त॥

इसके उपरान्त, दूसरी बार फिर एक संसार उत्पन्न हो जाता है और प्रत्येक क्षण में एक पृथ्वी और एक आकाश उत्पन्न होता है।

क्षण भर में यह वृद्ध युवक हो जाता है। और प्रतिक्षण उसमें नवीनता की लहर दौड़ती रहती है।

एक ही वस्तु अधिक समय तक उसमें नहीं रह सकती। जैसे ही उसकी मृत्यु होती है, वैसे ही उत्पत्ति भी हो जाती है।

परन्तु इसको प्रलय नहीं कह सकते। इस दिन सर्कार के सम्मुख अपने कार्यों का विवरण नहीं देना पड़ता है।

वरन् यह वह समय है जब कि कार्य किया जाता है। उस प्रलय में और इस संसार के जीवन तथा मरण में बहुत अन्तर है।

सावधान, मूर्खता में पड़कर ईश्वर से विमुख मत होना। तू थोड़े समय में बहुत करने पर अपनी दृष्टि लगाले और घन्टों, महीनों और वर्षों की अवस्था को देख।

उदाहरण

यदि तू इस जन्म-मृत्यु सम्बन्धी रहस्य को समझना चाहता है तो अपने ही मृत्यु और जन्म को देख।

इस संसार में ऊपर और नीचे की जो वस्तु है, उसका उदाहरण तेरे ही शरीर में वर्त्तमान है।

जहाँ चूँ तुस्त यक शख़्से मोअय्यन।
तू ऊ रा गश्ता चूं जाँ ऊ तुरा तन॥

सेगूना नौये इन्साँ रा ममातस्त।
यके हर लहज़ा वाँ बर हस्बे ज़ातस्त॥

दो दीगर दाँ ममाते इख़्तियारीस्त।
शियुम मुरदन मरू रा इज़्तिरारीस्त॥

चु मर्गो ज़िन्दगी बाशद मुक़ाबिल।
से नौ आमद हयातश दर सेह मंज़िल॥

जहाँ रा नेस्त मर्गे इख़्तयारी।
कि ईं रा अज़ हमा आलम तो दारी॥

वले हर लहज़ा मी गर्दद मुबद्दल।
दर आख़िर हम शवद मानिन्दे अव्वल॥

हरआँचे आँ गर्दद अन्दर हश्र पैदा।
ज़े तो दर नज़्आ मी हवेदा॥

तने तो चूँ ज़मीं सर आसमानस्त।
हवासत अंजुमो खुरशीद जानस्त॥

संसार तेरे ही समान एक शरीर धारी मनुष्य है। तू ही उसका प्राण है और तू ही शरीर।

मनुष्यों की मृत्यु तीन प्रकार की होती है। पहली वह है जो प्रतिक्षण होती रहती है और वह है उसकी जाति के अनुसार।

दूसरी मृत्यु वह है जो अपने अधिकार की कही जा सकती है। परन्तु तीसरी मृत्यु लाचारी की मृत्यु है।

जब मृत्यु और जीवन एक दूसरे के सम्मुख आते हैं, उस समय मनुष्य का जीवन तीन भागों में विभाजित हो जाता है।

संसार स्वयम् अपनी इच्छा से ही मृत्यु का आवाहन नहीं करता है। यह अधिकार केवल तुझे ही प्राप्त है।

परन्तु संसार प्रति क्षण बदला करता है और अन्तिम क्षण में भी पहले ही के समान रहता है।

जो वस्तु जन्म लेते समय तुझमें उत्पन्न हो जाती है, वह प्राण निकलने की अवस्था में तुझसे पृथक हो जाती है।

तेरा शरीर पृथ्वी के समान है और शिर आकाश की तरह। तेरी इन्द्रियाँ और इच्छायें तारागणों के समान हैं और तेरी आत्मा सूर्य के समान है।

चु कोहस्त उस्तुख़्वाँहाये कि सख़्तस्त ।
नबातस्त मूयो अतराफ़त दरख़्तस्त ॥

तनत दर वक्त मुर्दन अज़ नदामत ।
बेलर्ज़द चूँ ज़मीं रोज़े क़यामत ॥

दिमाग़ आशुफ़्तो जाँ तीरा गर्दद ।
हवासत हमचो अंजुम ख़ीरा गर्दद ॥

मसामत गर्दद अज़ ख़वै हमचो दरिया ।
तू दरवै ग़र्क़ा गश्ता बे सरोपा ॥

शवद अज़ जाँ कनिश ऐ मर्द मिसकीं ।
ज़े सुस्ती उस्तख़्वाँहा चूँ पश्मे रंगीं ॥

बहम पेचीदा गर्दद साक़ बा साक़ ।
हमा जुफ़्त शवद अज़ जुफ़्ते ख़ुद ताक़ ॥

चो रूह अज़ तन बकुल्लीयत जुदा शुद ।
ज़मीनत क़ाए सफ़सफ़ ला तुरा शुद ॥

बदाँ मिनवाल बाशद कारे आलम ।
कि तू दर ख़ेश मे बीनी दरानाँदम ॥

तेरी मज़बूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे बाल घास हैं। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान हैं।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी कांपेगी।

उस समय तेरा मस्तिष्क घबड़ा उठता है और तेरे प्राणों के आगे अँधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणों के समान झिलमिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रों से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमें डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य ! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती है और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते हैं।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते हैं उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

बक़ा हक़्क़स्तो बाक़ी जुम्ला फ़ानीस्त।
बयानश जुम्ला दर सबउल मसानीस्त॥
चु कुल्लो मन अलैहा फ़ाँ बयाँ कर्द।
लफ़ी ख़ल्क़ इन जदीद हम अयाँ कर्द॥
बुवद ईजादो एदामे दो आलम।
चु ख़ल्क़ो बासे नफ़्से इब्ने आदम॥
हमेशा ख़ल्क़े दर ख़ल्क़े जदीदस्त।
अगर्चे मुद्दते उमरश मदीदस्त॥
हमेशा फ़ैज़े फ़ज़्ल हक़ तआला।
बुवद दर शाने ख़ुद अन्दर तजल्ला॥
अज़ाँ जानिब बुवद ईजादो तकमील।
वज़ीं जानिब बुवद हर लहज़ा तबदील॥
वलेकिन चूँ गुज़श्ते ईं तौरे दुनिया।
बक़ाए कुल बुवद दर रोज़े उक़बा॥
कि हर चीज़े कि बीनी बिज़्ज़रूरत।
दो आलम दारद अज़ मानी व सूरत॥
विसाले अव्वलीं ऐने फ़िराक़स्त।
मराँ दीगर ज़े इन्दल्लाह बाक़स्त॥

इस संसार में सत् के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। क़ुरआन में यही दिखलाया गया है।

संसार की सभी वस्तुयें क्षणिक हैं। परन्तु उन सबका सम्बन्ध नवीन जीवन से है।

दोनों जहानों का उत्पन्न करना और नाश करना, एक मनुष्य के चित्र बनाने और उसको मिटा देने के समान है।

संसार में जीव सदैव जन्म धारण किया करते हैं, गोकि उनका जीवन विस्तृत होता है।

ईश्वरीय कृपा, उसकी दान शीलता सदैव अपने जलवे दिखलाया करती है।

ईश्वर सदैव बनाने और रचना करने में व्यस्त रहता है और संसार सदैव परिवर्तनशील है।

परन्तु जब इस संसार का यह ढंग व्यतीत होगया, तो अन्तिम दिन ही क़ायम रहने वाला ठहरा।

जो वस्तु तू देखता है, उसके वास्तव में दो रूप होते हैं।

एक तो वह रूप जो क्षणिक है, जो लोगों को मिटता हुआ दिखलाई देता है और दूसरा वह रूप जो सदैव रहता है अर्थात् आत्मा।

बक़ा इस्मे वजूद आमद व लेकिन।
बजाये कू बुवद सायर चु साकिन॥

मज़ाहिर चू फ़ितद बरवफ़्क़े ज़ाहिर।
दर अव्वल मी नुमायद ऐनें आख़िर॥

हर उंचे हस्त बिलक़ूवत दरीं दार।
बफ़ेल आमद दराँ आलम बयकबार॥

क़ायदा

ज़े तो हर फ़ेल कव्वल गश्त ज़ाहिर।
बराँ गर्दी बबारे चन्द क़ादिर॥

ब हरबारे अगर नफ़अस्तो गर ज़र।
शवद दर नफ़्से तो चीज़े मुदख़्ख़र॥

बआदत हालहा बा ख़ूए गर्दद।
बमुद्दत मेवहा ख़ुशबूए गर्दद॥

मृत्यु वास्तव में जीवन को ही कहते हैं। परन्तु उस स्थान में जहाँ किसी प्रकार का रूपान्तर नहीं होता है परिवर्त्तन का नाम भी नहीं है।

वहाँ पर प्रत्येक वस्तु आदि में भी ऐसी ही दिखलाई देती है, जैसी अन्त तक रहती है।

और वहाँ पर ईश्वर की महिमा प्रकट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वह ऐसा स्थान है, जहाँ पर संसार की सम्पूर्ण गुप्त वस्तुएँ प्रकट दिखलाई पड़ती है।

क़ायदा

जिस कार्य को तू पहले करता है वह कुछ कठिन-सा ज्ञात होता है। परन्तु बार बार करने से वही कार्य सरल हो जाता है।

उस कार्य के बार बार करने में लाभ हो अथवा हानि परन्तु तेरे मस्तिष्क में एक वस्तु पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी हो जाती है। अर्थात् उस कार्य के करने में जितनी भी वस्तुओं को तुझे आवश्यकता पड़ती है वे सब ज्ञान में आ जाती हैं।

यहाँ तक कि जिस प्रकार समय व्यतीत होने पर फलों में सुगन्ध आने लगती है उसी प्रकार उस कार्य के करने का स्वभाव पड़ जाता है।

अज़ाँ आमोख़्त इंसाँ पेशहारा।
वज़ाँ तरकीब कर्द अन्देशहारा ॥
हमा अफ़आलो अक़्वाले मुदख़्ख़र।
हवेदा गर्दद अन्दर रोज़े महशर ॥
चु उरियाँ गरदी अज़ पैराहने तन।
शवद ऐबो हुनर यकबारा रौशन ॥
तनत बाशद व लेकिन बे कुदूरत।
कि बिनुमायद अज़ो चूँ आब सूरत ॥
हमा पैदा शवद आँजा ज़मायर।
फ़रो ख़्वाँ आयते तुब्लसरायर ॥
दिगर बारा बवफ़्क़े आलमे ख़ास।
शवद अख़लाक़े तो अजसामो अशख़ास ॥
चुनाँ कज़ कुव्वते उनसुर दरींजा।
मवालीदे से गाना गश्त पैदा ॥
हमा अख़लाक़े तो दर आलमे जाँ।
गहे अनवार गरदद गाहे नीराँ ॥

इसी ढंग से मनुष्यों ने पेशों को सीखा है और इसी प्रकार उनकी गुत्थियों को सुलझाया है—उनकी बारीकियों को निकाला है।

यह सब बातें जो तुझमें इकट्ठी हो रही हैं मृत्यु के समय सामने आ जायँगी।

जब तू इस शरीर रूपी वस्त्र को पृथक करके नग्न हो जावेगा उस समय सम्पूर्ण भलाइयाँ और बुराइयाँ प्रकट हो जावेंगी।

तेरा शरीर तो रहेगा परन्तु उसमें मलीनता न होगी। उससे जल के समान सूरत दिखलाई देगी।

वहाँ दृश्य के भीतर छिपी हुई सभी बातें प्रकट हो जायँगी। पर्दा दूर कर दिया जायगा। इस परम मंत्र को पढ़ ले।

दूसरी बार तेरी अच्छाइयाँ तेरे शरीर और मनुष्यत्व के रूप में प्रकट होंगी।

ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार प्रकृति के अनुसार संसार में बनस्पतियाँ, जानवर और मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

तेरे स्वभाव में जितनी भी बातें हैं वे उस अध्यात्मिक जगत में कभी तो उज्ज्वल होकर दिखलाई देंगी और कभी अग्नि (नर्क) के रूप में प्रकट होंगी।

तग्रायुन मुरतफ़ा गरदद ज़े हस्ती।
नमाँनद दर नज़र बाला व पस्ती॥

नमानद मर्गे तन दर दारे हैवाँ।
बयक रँगी बरायद क़ालिबो जाँ॥

बुवद पा व सरे तो जुमला चूँ दिल।
शवद साफ़ी ज़े ज़ुल्मत सूरते गिल॥

वे बीनी बे जहत हक़ रा तग्राला।
कुनद अज़ नूर हक़ बर तो तजल्ला॥

नदानम ता चे मस्तीहा कुनी तू।
दो आलम रा हमा बरहम ज़नी तू॥

सक़ाहुम ज़बोहुम चे बुवद बेग्रन्देश।
तहूरन चीस्त साफ़ी गश्तन अज़ ख़ेश॥

ज़ेहे लज्ज़त ज़ेहे दौलत ज़ेहे ज़ौक़।
ज़ेहे हैरत ज़ेहे हालत ज़ेहे शौक़॥

ख़ुशाआँदम कि मा बेख़ेश बाशेम।
ग़नीए मुतलक़ो दुर्वेश बाशेम॥

उस समय वर्तमान संसार से तेरा विश्वास उठ जायगा। बड़ाई और छुटाई का विचार जाता रहेगा।

उस लोक में शरीर की मृत्यु न होगी और शरीर तथा आत्मा दोनों का एक ही रंग हो जायगा।

तू शिर से लेकर पैर तक दिल के ही समान हो जायगा और इस मिट्टी की मूर्त्ति के सामने का अन्धकार मिट जायगा।

उस समय तुझे बड़ी सरलता के साथ उस महान् परमेश्वर के दर्शन होंगे। वह अपने प्रकाश से तुझे प्रकाशित कर देगा।

मैं नहीं कह सकता उस समय तुझे कैसी प्रसन्नता होगी और कैसे कैसे विचार तेरे हृदय में उठेंगे। उस समय तुझमें दोनों जहानों को उलट डालने की शक्ति विद्यमान होगी।

उस समय तू यही सोचेगा आह! ईश्वर ने कैसा अमृत पिला दिया। इस प्रकार पवित्रता प्रदान करने वाली क्या वस्तु है? इस अहंकार को छोड़ देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

अहा! किस मुख से उस आनन्द का और उस वैभव का वर्णन करूँ?

वह कौनसी आश्चर्यमय घड़ी होगी, वह कौन सी सुखद अवस्था होगी जब हम बिल्कुल अपने को भूल जायँगे, चिन्ता से रहित होकर मतवाले बन जायेंगे।

न दीं न अक़्ल न तक़वा न इद्राक।
फ़ितादा मस्तो हैराँ बर सरे ख़ाक॥
बहिश्तो ख़ुल्दो हूर आँजा चे संजद।
कि बेगाना दराँ ख़िलवत न गुंजद॥
चु रूयत दीदमो ख़ुरदम अज़ाँ मै।
नदानम ता चे ख़ाहद शुद पस अज़वै॥
पए हर मस्तिए बाशद ख़ुमारे।
दरीं अन्देशा दिल .ख़ूँ गश्तबारे॥

सवाल

क़दीमो मोहदिस अज़ हम चूँ जुदा शुद।
कि ईं आलम शुद आँदीगर ख़ुदा शुद॥

जवाब

क़दीमो मोहदिस अज़ हम ख़ुद जुदा नेस्त।
कि अज़ हस्तस्त बाक़ी दायमानेस्त॥
हमा आनस्तो ईं मानिन्दे अनक़ास्त।
जुज़ अज़ हक़ जुम्ला इस्मे बे मुसम्मास्त॥

वह कौन सी शुभ घड़ी होगी जब हमारे पास धर्म्म, परहेज़गारी और ज्ञान के नाम से कुछ भी न होगा और हम इस पृथ्वी पर मस्त पड़े हुए लोटते होंगे ?

स्वर्ग—वह सदैव आनन्द देने वाला जगत और अप्सराओं की वहाँ क्या गणना होगी ? उस स्थान पर किसी दूसरे का जाना हो ही नहीं सकता।

जब मैंने तेरा मुखड़ा देख लिया और उस मदिरा का घूँट ले लिया तब मैं नहीं कह सकता कि आगे क्या होगा।

मदिरा में मस्ती होती है, वह मतवाला बना देती है, परन्तु उसके उपरान्त नशा उतरता भी है और .ख़ुमार आता है। मेरे हृदय में सदैव यही चिन्ता व्याप्त है कि कहीं इस मस्ती के उपरान्त भी ख़ुमार न आ जावे।

प्रश्न

शाश्वत् और नाशवान एक दूसरे से पृथक क्यों हुए और यह संसार तथा वह ईश्वर क्यों होगया ?

उत्तर

शाश्वत् तथा नाशवान दोनों एक दूसरे से पृथक नहीं है, क्योंकि मृत्यु जीवन से ही उत्पन्न है।

शाश्वत् सब कुछ है और यह नाशवान सदैव नष्ट होने वाली वस्तु है। ईश्वर के अतिरिक्त जितने नाम रूप हैं सब नष्ट होने वाले हैं।

अदम मौजूद गर्दद ईं मुहालस्त।
वजूद अज़ रूए हस्ती लायज़ालस्त॥
ज़ आँ ईं गर्ददो न ईं शवद आँ।
हमा इश्काल गर्दद बर तो आसाँ॥
जहाँ खुद जुम्ला अमरे एतबारीस्त।
चे आँ यक नुक़्ता कंदर दौर सारीस्त॥
बेरौ बयक नुक़्तए आतश बेगर्दां।
कि बीनी दायरा अज़ सुरअत आँ॥
यके गर्दद शुमार आयद बनाचार।
नगर्दद वाहिद अज़ आदाद बिसयार॥
हदीसे मा से वल्लाहारा रहा कुन।
बअक़्ले ख़ेश आँरा ज़ीं जुदा कुन॥
चु शकदारी दराँ कीं चूँ ख़यालस्त।
कि बा वहदत दुई ऐने ज़लालस्त॥
अदम मानिन्दे हस्ती बूवद यकता।
हमा कसरत जे निस्बत गश्त पैदा॥
जहरे इख़्तिलाफ़ो कसरते शाँ।
शुदो पैदा जे बू क़ल्मूने इमकाँ॥

सृष्टि की उत्पत्ति से सत् में किसी प्रकार का विकार नहीं आता। सत् से यह जगत उत्पन्न होता है, परन्तु इसमें और उसमें अन्तर है।

सारी कठिनाइयाँ तेरे सम्मुख सरल हो जाती हैं। एक बिन्दु के समान जो घुमाने पर बराबर घूमता रहता है यह संसार भी एक विश्वास के योग्य विषय है।

एक आग की चिनगारी को लेकर घुमा। उसकी तीव्रता से एक वृत्त बन जायगा।

यदि एक गणना में आजाए तो फिर यह न हो सकेगा कि उसको बहुत सी संख्याओं में से निकाल दिया जावे।

ईश्वर के अतिरिक्त और जितनी वस्तुएँ हैं, उन सबको पृथक कर दे। अपनी बुद्धि द्वारा उसे अलग कर।

यदि तुझे उसमें सन्देह है, तो यही तेरे मार्ग का रोड़ा है। अद्वैत में दो का विचार करना ही पथ से विचलित हो जाना है।

मृत्यु भी जीवन के समान एक ही है और यह सारे भेद भाव केवल एक दूसरे का मिलान करने ही से उत्पन्न हुए हैं।

मनुष्य रंग बिरंगे संसार में आकर चौकड़ी भूल जाता है। इसी से यह सम्पूर्ण भिन्नता उत्पन्न होती है।

वजूदे हर यके चूँ बूद वाहिद।
ब वहदानीयते हक़ गश्त शाहिद॥

सवाल

चे ख़ाहद मर्द मआनी जाँ इबारत।
कि दारद सूए चश्मो लब इशारत॥
चे जोयद अज़ रुख़ो ज़ुल्फ़ो ख़तो ख़ाल।
कसे कंदर मक़ामातस्तो अहवाल॥

जवाब

हर आँ चीज़े कि दर आलम अयानस्त।
चु अक्से ज़ाफ़ताबेआँ जहानस्त॥
जहाँ चूँ ज़ुल्फ़ो ख़त्तो ख़ालो अबरूस्त।
कि हर चीज़े बजाये ख़ेश नेकूस्त॥
तजल्ली गह जमालो गह जलालस्त।
रुख़ो ज़ुल्फ़आँ मआनी रा मिसालस्त॥
सिफ़ाते हक़ तआला लुत्फ़ो क़हरस्त।
रुख़ो ज़ुल्फ़े बुताँरा जाँ दो बहरस्त॥

जब कि प्रत्येक का अस्तित्व समान था तो फिर ईश्वर के एक होने का साची और कौन हो सकता है?

प्रश्न

आध्यात्मिक जगत में स्थित पुरुष उन शब्दों का क्या आशय समझता जो नेत्रों और ओठों की ओर संकेत करते हैं?

और जो मनुष्य संसारी कार्यों में फंसा हुआ है वह मुख और बाल भौंह और तिल से क्या समझता है?

उत्तर

इस संसार में जो वस्तु आँख से देखी जाती है, वह उस संसार के सूर्य की एक किरण के समान है।

यह संसार अलकों और भृकुटियों के समान है। क्योंकि अपने अपने समय पर यहाँ की सभी वस्तुएँ भली हैं।

ईश्वर का प्रकाश कभी चमत्कार है और कभी संसार है। मुख तथा अलकें उसके उदाहरण के समान हैं।

भगवान् कभी आनन्द मय होते हैं और कभी क्रोधित होकर वज्र गिराते हैं। प्रियतमाओं की अलकों और उनके सुन्दर मुखों के भी इसी प्रकार दो भाग किए जाते हैं।

चु महसूस आमदीं अल्फ़ाज़े मसमू।
नखुस्तज़ बहरे महसूसन्द मौज़ू॥
नदारद आलमे माना निहायत।
कुजा बीनद मरूरा लफ़्ज़ ग़ायत॥
हराँ मानी कि शुद वर ज़ौक़ पैदा।
कुजा ताबीरे लफ़्ज़ी या बद ऊरा॥
चु अहले दिल कुनद तफ़सीरे मानी।
बमानिन्दे कुनद ताबीरे मानी॥
कि महसूसात अज़ाँ आलम चु सायस्त।
कि ईं चूँ तिफ़्लो आँ मानिन्दे दायस्त॥
बनज़्दे मन ख़ुद अल्फ़ाज़े मोअव्वल।
बराँ मआनी फ़िताद अज़ वज़ेर अव्वल॥
बमहसूसात ख़ासु अज़ उर्फ़े आमस्त।
चे दानए आम कदाँ मानीं कुदामस्त॥
नज़र चूँ दर जहाँ अक़्ल करदन्द।
अज़ाँजा लफ़्ज़हारा नक़्ल करदन्द॥

यही शब्द सौन्दर्य में भी सम्मिलित हैं और उसके साथ ही साथ इनकी भी प्रशंसा की जाती है।

अध्यात्मिक जगत की कोई निर्धारित सीमा नहीं है। कोरी बातों से निर्बल प्रतिज्ञाओं से वहाँ तक किस प्रकार पहुँच हो सकती है!

उस संसार के गुप्त रहस्यों का वर्णन शब्दों द्वारा किस प्रकार किया जा सकता है!

जब कोई साधु उन रहस्यों का वर्णन करता है तो उदाहरण द्वारा उनको समझाने का प्रयत्न करता है।

उस संसार की वे वस्तुएँ, जिनका हम अपनी इन्द्रियों द्वारा अनुभव करते हैं, छाया के समान हैं। कारण कि उसकी उपमा यदि हम छाया से देते हैं तो यह बच्चे के समान हैं और वही बच्चे को पालने वाली दाई है।

मैं विश्वास करता हूँ कि, उस जगत को विवेचना करने वाले शब्द पहले ही से निर्धारित कर लिये गये होंगे।

जिससे कि उनके द्वारा रहस्यों का उद्घाटन किया जा सके। जो शब्द साधारणतया बाद में निर्धारित किये गए हैं, उनसे रहस्यों की विवेचना उचित रूप से नहीं की जा सकती।

साधारण शब्द भला वहाँ तक किस प्रकार पहुँच सकते हैं? और साधारण लोग उन बातों की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हैं।

तनासुब रा रियायत कर्द आक़िल ।
चु सूए लफ़्ज़ो मानी गश्त नाज़िल ॥
वले तशबीह कुल्ली नेस्त मुमकिन ।
जे जुस्तो जूए आँ मे बाश साकिन ॥
दरीं मानी कसे रा बरतो दिक़ नेस्त ।
कि साहब मज़हब ईजाँ ग़ैरे हक़ नेस्त ॥
वले ता बा ख़ुदी ज़िनहार ज़िनहार ।
इबाराते शरीयत रा निगहदार ॥
कि रुख़्सत अहले दिल रा दर से हालस्त ।
फ़नाओ सुक्रो, पस दीगर दलालस्त ॥
तुरा चूँ नेस्त अहवाले मवाजीद ।
मशो काफ़िर बनादानी व तक़लीद ॥
हराँकस कू शनासद ईं से हालत ।
बदानद वज़ो अलफ़ाज़ो दलालत ॥
मजाज़ी नेस्त अहवाले हक़ीक़त ।
न हर कस याबद असरारे हक़ीक़त ॥

बुद्धिमानों ने बुद्धि द्वारा शब्दों को ढूँढ़ निकाला और उनके अर्थ का विचार करके उनको उचित रूप में रक्खा ।

परन्तु इस पर भी पूर्ण विवेचना उन्होंने भी नहीं कर पाई । उन रहस्यों का स्पष्ट वर्णन करने में वह भी समर्थ न हो सके । इस पूर्णता तक पहुँचने का प्रयत्न तुम भी न करो ।

इस विषय में यहाँ पर तुम्हारे ऊपर कोई शंका भी नहीं कर सकता है । कारण कि ईश्वर के अतिरिक्त यहां पर धर्म्म का स्वामी कोई अन्य नहीं है ।

परन्तु जब तक तू अपने आपे में है, तब तक सावधान, धर्म्म ग्रन्थों की पंक्तियों का ध्यान रख ।

सन्यासियों के लिये केवल तीन बातों में कुछ सुगमता कर दी गई है । नाश, मस्ती और तदुपरान्त पूर्णता ।

जब तेरे पास धार्म्मिक विषयों का पूरा मसाला नहीं है तो व्यर्थ की बातें बनाकर और अपने आपको धर्म्म का ज्ञाता जताकर विधर्म्मी बनने का प्रयत्न मत कर ।

जो मनुष्य इन उपर्युक्त तीन बातों का ज्ञान रखता है, वह शब्दों, उनके व्यवहार और तर्क इत्यादि को समझता है ।

ईश्वरीय सत्ता कोई सांसारिक वस्तु नहीं है और प्रत्येक मनुष्य सत् के रहस्यों को नहीं समझ सकता है ।

गज़ाफ़ ऐ दोस्त नायद ज़हले तहक़ीक़ ।
मरीरां कश्फ़ यावद या कि तसदीक़ ।।
बेगुफ़्तम वज़ए अलफ़ाज़ो मानी ।
तुरा सरवस्ता गर दारी बदानी ।।
नज़र कुन दर मआनी सूए ग़ायत ।
लवाज़िम रा यकायक कुन रियायत ।।
बवज्हे ख़ास अज़ाँ तशबीह मी कुन ।
ज़े दीगर बज्हा तनज़ीह मीकुन ।।
चु शुदईं क़ायदा यकसर मुक़र्रर ।
नुमायम जाँ मिसाले चन्द दीगर ।।

इशारत बचश्मो लब

निगर कज़ चश्मे शाहिद चीस्त पैदा ।
रियायत कुन लवाज़िम रा बदाँजा ।।
ज़े चश्मश ख़ास्त बीमारी व मस्ती ।
ज़े लालश गश्त पैदा ऐने हस्ती ।।
ज़े चश्मे ऊ हमा दिलहा जिगर ख़ार ।
लबे लालश शफ़ाए जाने बीमार ।।

ऐ मित्र ! खोज करने वालों से व्यर्थ की बातें नहीं आतीं, इन बातों को समझने के लिए पूरी जांच या अनुभव की आवश्यकता है ।

मैंने तुझे शब्दों और उनके अर्थों का भेद बतला दिया है । अब यदि तुझमें बुद्धि होगी तो सब बातों को समझ जायगा ।

तू अर्थ के भीतर छिपी हुई उसकी असलियत को देख और फिर जिस असलियत के वास्ते जिस वस्तु की आवश्यकता पड़े उसका ध्यान रख ।

किसी एक ख़ास ढंग से तू उन अर्थों की व्याख्या करता जा और दूसरे ढंगों से उन व्याख्याओं की काट-छाँट करता जा ।

जब इस ढंग को तू बिल्कुल समझ गया है, अतएव मैं थोड़े से उदाहरण और भी तेरे सम्मुख रखता हूँ ।

नेत्रों और ओठों के प्रति

ध्यान से देख, प्रियतमा की आँख से कौनसी वस्तु प्रकट हो रही है । और उस वस्तु की आवश्यक बातों का विचार कर ।

उसके नेत्र से पीड़ा और मस्ती उत्पन्न हुई और उसके होठ से जीवन-प्रद धारा प्रकट हुई ।

उसकी आँख के कारण सभी अपने हृदयों को थामे हुए बैठे हैं और होठों के कारण सब जानें मस्त हैं ।

ज़े चश्मे ऊस्त दिलहा मस्तो मख़मूर।
ज़े लाले ऊस्त जाँहा जुम्ला मसरूर॥
बचश्मश गर चे आलम दर नयायद।
लबश हर सायते लुत्फ़े नुमायद॥
दमे अज़ मरदुमी दिलहा नवाज़द।
दमे बेचारगाँ रा चारा साज़द॥
बशोख़ी जाँ देहद दर आबो दर ख़ाक।
बदम दादन ज़नद आतिश बर अफ़लाक॥
अज़ो हर ग़म्ज़ा दामो दानए शुद।
वज़ो हर गोशए मैख़ानए शुद॥
ज़े ग़म्ज़ा मी देहद हस्ती बग़ारत।
बबोसा मी कुनद बाज़श इमारत॥
ज़े चश्मश ख़ूने मा दर जोश दायम।
ज़े लालश जाने मा बेहोश दायम॥
बग़म्ज़ा चश्मे ऊ दिल मी रुबायद।
बअशवा लाले ऊ जाँ मी रुबायद॥

उनमें एक पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं और उसके अरुणारे अधर पीड़ित हृदय के लिये, प्रेम-रोगी के लिये अमृत हो रहे हैं।

उन अधरों से सभी के प्राण प्रसन्न हो रहे हैं। उसकी दृष्टि में यद्यपि संसार समाता नहीं है, परन्तु उसका होंठ सदैव आनन्द प्रदान किया करता है।

किसी समय प्रेम से व्यक्ति हृदयों को सान्त्वना प्रदान किया करता है, और कभी दीनों की सुध लिया करता है। भटकतों को मार्ग बतलाया करता है।

वह अपनी चुलबुलाहट से बेजान में भी जान डालता है और फूँक मारकर आकाश में अग्नि उत्पन्न कर देता है।

उस आँख का प्रत्येक कटाक्ष, एक जाल और एक दाने के रूप में परिणत हो गया और उस होठ से प्रत्येक कोना एक मदिरा-गृह बन गया।

शोख़ी और मान से वह जीवन को बर्बाद कर देता है, परन्तु चुम्बन देकर पुनः उसे जीवन प्रदान करता है।

हमारा रक्त उसकी आँख के कारण सदैव खौलता रहता है और हमारा प्राण उसके होठ के कारण सदैव संज्ञाहीन रहता है।

उसकी आँख, शोख़ी से हृदय को मुट्ठी में कर लेती है और उसका होठ हिल करके प्राण को आकर्षित कर लेता है।

चो अज़ चश्मो लबश ख़ाही कनारे।
मरीं गोयद न आँ गोयद कि आरे॥

ज़े ग़म्ज़ा आलमे रा कार साज़द।
बबोसा हर ज़माँ जाँ मी नवाज़द॥

अज़ो यक ग़म्ज़ओ जाँ दादन अज़ मा।
वज़ो यक बोसओ इसतादन अज़ मा॥

कलमहिन बिलबसर शुद हश्रे आलम।
ज़े नफ़हे रूह पैदा गश्त आदम॥

चु अज़ चश्मो लबश अन्देशा करदन्द।
जहानें मै परस्ती पेशा करदन्द॥

नयायद दर्दों चश्मश जुम्ला हस्ती।
दरो चूँ आयद आख़िर ख़ाबे मस्ती॥

वजूदे मा हमा मस्तीस्त या ख़ाब।
चे निस्बत ख़ाक रा बा रब्बे अरबाब॥

ख़िरद दारद अज़ीं सद गूना आशुफ़।
कि वल्तसना अला ऐनी चरा गुफ़॥

यदि तू एक बार उस आँख से और उस ओठ से मिलने की इच्छा प्रकट करेगा तो आँख कहेगी 'न' और ओठ कहेगा 'हाँ'।

शोख़ी दिखला कर आँख संसार की भलाई करती है और ओठ प्राणों को प्रसन्न रखता है।

उस आँख की एक तिरछी चितवन ऐसी है जिससे हमारे प्राण निकलने लगते हैं और उसका एक चुम्बन हमें प्राण दान देकर, जीवित कर देता है।

इस संसार का अन्त उस आँख के एक पलक मारने में हो जायगा जैसे आत्मा की फूँक से आदम उत्पन्न हो गया।

उसकी उस आँख और उस रसीले ओठ का विचार करके सारे संसार ने मदिरा पान करना स्वीकार कर लिया।

जब सम्पूर्ण जगत उसके दोनों नेत्रों में नहीं आता तो फिर मस्ती की निद्रा उसे किस प्रकार प्राप्त हो।

हमारा यह अस्तित्व या तो मस्ती है अथवा स्वप्न। मिट्टी को ईश्वर से क्या सम्बन्ध है ?

उसने मेरी आँखों में बैठ कर क्या कहा ? इस बात को सोचने में बुद्धि के सम्मुख सैकड़ों कठिनाइयाँ उपस्थित हैं।

सवाल

शराबो शमओ शाहिद रा चे मानीस्त।
ख़राबाती शुदन आख़िर चे दावीस्त॥

जवाब

शराबो शमओ शाहिद ऐन मानीस्त।
कि दर हर सूरते ऊ रा तजल्लीस्त॥

शराबो शमा नूरो ज़ौक़े इरफ़ाँ।
बे बीं शाहिद कि अज़ कस नेस्त पिनहाँ॥

शराब ईंजा ज़ुजाजह शमा मिसबाह।
बुवद शाहिद फ़ुरूग़े नूरे अरवाह॥

ज़े शाहिद बर दिले मूसा शरर शुद।
शराबश आतिशो शमश शजर शुद॥

शराबो शमा जाँ आँ नूरे असरास्त।
वले शाहिद हमा आयाते कुबरास्त॥

प्रश्न

मदिरा, दीपक, और प्रियतमा से क्या आशय है? मतवाला हो जाना किस प्रकार के अधिकार का द्योतक है?

उत्तर

मदिरा, दीपक और प्रियतमा, ये सब मुख्य अंतरङ्ग वस्तुएं हैं, जिसकी झलक इन सभी सूरतों में दिखलाई पड़ती है।

ऐ देखने वाले! देख, मदिरा, दीपक और प्रियतमा में कौनसा आनन्द छिपा हुआ है। यह एक ऐसा रहस्य है जिसको सभी जानते हैं।

इस स्थान में मदिरा फ़ानूस के समान है और शमअ दीपक है। और साक्षी क्या है? आत्माओं के प्रकाश की चमक।

उसी प्रियतमा की तरफ़ से हज़रत मूसा के हृदय पर एक चिनगारी उड़कर पहुँची, जिसके कारण वह उसकी चाह में लवलीन हो गये।

मुहम्मद साहब, इन प्राणों के लिये दीपक और मतवाला बना देने वाली मदिरा है। और वह बड़े बड़े चिन्ह ही साक्षी हैं।

शराबो शमओ शाहिद जुम्ला हाज़िर।
मशो ग़ाफ़िल जे शाहिद बाजी आख़िर ॥
शराबे बेखुदी दर कश जमाने।
मगर अज़ दस्ते खुद याबी अमाने ॥
बेखुर मै ता जे खेशत व रिहानद।
वजूदे क़तरा दर दरिया रसानद ॥
शराबे खुर कि जामश रूए यारस्त।
पियाला चश्मे मस्ते बादा ख़ारस्त ॥
शराबे रा तलब बे साग़रो जाम।
शराबे बादा ख़ारो साक़ी आसाम ॥
शराबे खुर जे जामे वज्हे बाक़ी।
सक़ाहुम रबहुम ऊ रास्त साक़ी ॥
तहूरन मी बुवद कज़ लौसे हस्ती।
तुरा पाकी देहद दर वक्ते मस्ती ॥
बखुर मै वारेहाँ खुद रा जे सर्दी।
कि बदमस्तो बेहस्त अज़ नेक मर्दी ॥

मदिरा, दीपक और साक्षी सभी वस्तुएँ तेरे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इस अवस्था में तुझे प्रणय-मार्ग में बढ़ते रहना उचित है।

कुछ समय के लिये तू वह मदिरा पी ले जिससे तू अपने आप को भूल जावे। कदाचित् तू अपने आप ही अपनी शरण पाजावे।

तू वह मदिरा पान कर, जिससे अहंकार को भूल जावे और समझने लग कि एक बूंद का अस्तित्व उस महासागर के अस्तित्व से सम्बन्ध रखता है।

तू वह मदिरा पी, जिसका बड़ा प्याला तेरे प्यारे का मुख है और छोटा प्याला शराब पीने वालों के मतवाले नेत्र हैं।

उस मदिरा की खोज कर, जो छोटे और बड़े प्याले के बिना ही पी जाती हो। वह ऐसी मदिरा है जो साक़ी भी है और अपने आपको स्वयम् पी जाती है।

तू उस अमर मुख के प्याले से शराब पी, जिसका साक़ी ईश्वर है। और वह लोगों को पिलाया करता है।

वह अत्यन्त पवित्र और जीवन की बुराइयों को दूर करने वाली है। वह मस्ती के समय तुझे पवित्र बना देगी।

मदिरा पान कर, निज को इस शीत से बचाने का प्रयत्न कर। मतवाला होना, धार्मिक मनुष्य बनने से बढ़कर है।

कसे कू उफ़्तद अज़ दरगाहे हक़ दूर।
हिजाबे ज़ुल्मत ऊरा बेहतर अज़ नूर॥

चु आदम रा ज़े ज़ुल्मत सद मदद शुद।
ज़े नूर इबलीस मलऊने अबद शुद॥

अगर आईनए दिल रा ज़ दूदस्त।
चु ख़ुद रा बीनद अन्दर वै चे सूदस्त॥

ज़े रूयश परतवे चू बर मै उफ़्ताद।
बसे शक्ले हुबाबी बरवे उफ़्ताद॥

जहानो जाँ दरो शक्ले हबाबस्त।
हबाबश औलियाई रा क़बाबस्त॥

शुदाज़ो अक़्ले कुल हैरानो मदहोश।
फ़िताद नफ़्से कुल रा हल्क़ा दर गोश॥

हमा आलम चु यक ख़ुम्ख़ानए ऊस्त।
दिले हर ज़र्रए पैमानए ऊस्त॥

जो मनुष्य ईश्वर के मन्दिर से निकाल दिया जाता है उसके लिये प्रकाश से बढ़कर अँधेरा होता है।

जब आदम को अँधेरे में रहते हुए बहुत समय लग गया तो इबलीस (शैतान) उस प्रकाश से सदैव के लिये पृथक कर दिया गया।

किसी ने अपने हृदय-दर्पण को स्वच्छ कर लिया है—उसके धब्बे मिटा डाले हैं। परन्तु उसमें यदि अपना ही मुख देखता है तो क्या लाभ हो सकता है? इतनी स्वच्छता के उपरान्त भी यदि तुझमें अहंकार शेष रह गया है, तो तेरे प्रयत्नों से क्या लाभ हुआ?

उसके मुख की एक झलक जब मदिरा पर पड़ गई तो उसमें बहुत से बुलबुले उत्पन्न हो गये।

यह संसार और आत्माएँ उन्हीं बुलबुलों के रूपान्तर मात्र हैं। वह बुलबुला भटके हुओं के लिये एक आश्रय देने वाला स्थान है।

संसार की बुद्धि उसके रहस्य को पाने के लिये आकुल हो रही है और सम्पूर्ण इन्द्रियाँ उसी की तरफ़ लगी हुई हैं।

सम्पूर्ण जगत उसके कोष के समान है और प्रत्येक परमाणु उसकी प्रेम-मदिरा में मतवाला हो रहा है।

ख़िरद मस्तो मलायक मस्तो जाँ मस्त।
हवा मस्तो ज़मीं मस्त आस्माँ मस्त॥

फ़लक सरगश्ता अज़ वै दर तगापूए।
हवा दर दिल ब उमीदे यके बूए॥

मलायक ख़ुर्दा साफ़ अज़ कूज़ए पाक।
बजुरआ रेख़ता दुर्दी बरीं ख़ाक॥

अनासिर गश्ता जाँ यक जुरआ सरख़श।
फ़िताद गह दरआबो गह दर आतश॥

ज़ेबूए जुरेए कुफ़ाद बर ख़ाक।
बरामद आदमी ता शुद बर अफ़लाक॥

ज़े अक्से ऊतने पज़मुर्दा जाँ गश्त।
ज़े ताबश जाने अफ़सुर्दा रवाँ गश्त॥

जहाने ख़ल्क़ अज़ो सरगश्ता दायम।
ज़े ख़ानो माने ख़ुद बरगश्ता दायम॥

यके अज़ बूए दुर्दश आक़िल आमद।
यके अज़ रंगे साफ़श नाक़िल आमद॥

बुद्धि, स्वर्गीय दूत, और प्राण सभी उसके कारण मतवाले हो रहे हैं। यही नहीं वरन् वायु, पृथ्वी और आकाश तक सब उसी मस्ती का राग अलाप रहे हैं।

आकाश उसी के कारण चक्कर लगा रहा है और वायु उसकी सुगन्ध की एक लहर पाने के लिये उत्सुक हो रही है।

स्वर्गीय दूतों ने पवित्र घट में से स्वच्छ मदिरा के घूँट ले लिये हैं और इस मिट्टी पर एक चुल्लू तलछट डाल दिया है।

उसी एक चुल्लू से सब के सब मस्त हो गये और कभी पानी और कभी अग्नि में जा पड़े।

जो घूंट (चुल्लू) पृथ्वी पर गिरा उसकी सुगन्ध से मनुष्य उत्पन्न हुआ और वह आकाश तक जा पहुँचा।

उसकी आभा से कुम्हलाए हुए शरीर में प्राण आगये और उसकी मस्ती की लहर से सुस्त आत्मा में एक नवीन जीवन का संचार हुआ।

उससे संसार भर के लोग मतवाले हो रहे हैं और सदैव अपने घर और कुटुम्ब से पृथक उदासीन फिरा करते हैं।

एक मनुष्य उसकी तलछट की सुगन्ध से ही बुद्धिमान हो गया और दूसरा उसके साफ़ रंग का वर्णन करने में व्यस्त होगया।

यके अज़ नीम जुरआ गश्ता सादिक़ ।
यके अज़ यक सुराही गश्ता आशिक़ ।।
यके दीगर फ़रो बुर्दी बयकबार ।
ख़ुमो ख़ुमख़ानओ साक़ीओ मैख़ार ।।
कशीदा जुम्लओ माँदा दहन बाज़ ।
ज़ेहे दरिया दिले रिन्दे सरफ़राज़ ।।
दरा शम्मीदा हस्ती रा बयकबार ।
फ़राग़त याफ़्ता ज़े इक़रारो इन्कार ।।
शुदा फ़ारिग़ ज़े ज़ोहदे ख़ुश्को तामात ।
गिरिफ़्ता दामने पीरे ख़राबात ।।

इशारत ब ख़राबातियान

ख़राबाती शुदन अज़ ख़ुद रिहाईस्त ।
ख़ुदी कुफ़्रस्त अगर ख़ुद पारसाईस्त ।।
निशाने दादा अन्दत अज़ ख़राबात ।
कि अत्तोहीदो इस्क़ातुल इज़ाफ़ात ।।
ख़राबात अज़ जहाने बेमिसालीस्त ।
मुक़ामे आशिक़ाने ला उबालीस्त ।।

कोई केवल आधे ही घूँट के पीने से उसकी लगन में मतवाला हो गया और दूसरे ने एक सुराही पीली तब उसके प्रेम में पड़ा ।

एक और भी मनुष्य है । उसने एक ही बार में मदिरा के मटके, मदिरा-गृह, साक़ी और पीने वाले को अपने मुख में रख लिया ।

परन्तु फिर भी उसकी पिपासा शान्ति नहीं हुई है । वाह ! वह कितना विशाल हृदय साहसी और मतवाला है ।

जो जीवन को ही एक बार में निगल गया है वह मानने और न मानने दोनों से छुटकारा पा गया है, कर्म और अकर्म के वन्धनों से निकल गया है ।

दोनों से किनारा कर बैठा और मदिरागृह के पुजारी का दामन पकड़े हुए उपस्थित है ।

मदिरापान करने वालों के प्रति

मदिरापान करना अपने आप से छुटकारा पाने के समान है । अहंकार चाहे कितना ही पवित्र क्यों न हो परन्तु फिर भी नास्तिकता ही का एक रूप है ।

मदिरागृह का तुझको एक पता बतला दिया है । वह है अपने सम्बन्ध के सम्पूर्ण बन्धनों का तोड़ डालना । मदिरागृह एक ऐसी वस्तु है, जहाँ किसी प्रकार के बन्धन नहीं हैं ।

मदिरागृह एक विलक्षण स्थान है । और मस्त प्रेमियों का स्थान है ।

खराबात आशयाने मुर्ग़ें जानस्त ।
खराबात आसताने लामकानस्त ॥
खराबाती खराब अन्दर खराबस्त ।
कि दर सहराए ऊ आलम सुराबस्त ॥
खराबातिस्त बे हद्दो निहायत ।
न आग़ाज़श कसे दीदा न ग़ायत ॥
अगर सद साल दर वै मी शिताबी ।
न खुद रा ओ न कस रा बाज़याबी ॥
गरोहे अन्दरो बे पाओ बे सिर ।
हमा ना मोमिनो ना नीज़ काफ़िर ॥
शराबे बेखुदी दर सर गिरिफ़्ता ।
बतर्के जुम्ला खैरो शर गिरिफ़्ता ॥
शराबे खुरद हर यक बे लबो काम ।
फ़राग़त याफ़ता अज़ नंगो अज़ नाम ॥
हदीसे माजराये शतहो तामात ।
खयाले खिलवतो नूरो करामात ॥

मदिरागृह प्राण रूपी पक्षी के लिये एक घोंसले के समान है और इस संसार के दर्वाज़े की चौखट के समान है ।

पीने वाला मतवाला है, खराब है और उससे भी बढ़कर मदिरा है। उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण संसार एक मदिरागृह है ।

उसकी खराबी की कोई सीमा नहीं है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है ।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज में रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा ।

इस विस्तृत क्षेत्र में कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नहीं हैं । उन्हें न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते हैं और न ईश्वरवादी ।

उनके मस्तिष्क में उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है । संसार की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों से वह बहुत परे हैं ।

उनमें से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है । अब उन्हें न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का ।

छल-कपट की बातों का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

बबूए दुर्दिए अज़ दस्त दादा।
ज़े ज़ौक़े नेस्ती मस्त ओफ़तादा॥
असाओ रिकवाओ तसबीहो मिसवाक।
गिरौ करदा बदुर्दा जुम्ला रा पाक॥
मियाने आबो गिल उफ़ताँ व ख़ेज़ाँ।
बजाए अश्क ख़ूँ अज़ दीदा रेज़ाँ॥
दमे अज़ सर ख़ुशी दर आलमे नाज़।
शुदा चूँ शातिराने गरदन अफ़राज़॥
गहे अज रूसियाही रू बदीवार।
गहे अज सुर्ख़रूई बर सरेदार॥
गहे अन्दर समाए शोक़े जानाँ।
शुदा बेपा व सर चूँ चर्ख़े गरदाँ॥
बहर नग़मा कि अज़ मुतरिब शुनीदा।
बदो वज्दे अज़ाँ आलम रसीदा॥
समाए जाँ न आख़िर सौतो हरफ़स्त।
कि दर हर पर्दए सिर्रे शिग्रफ़स्त॥

एक तनिक सी तलछट के कारण छोड़ दिया है। वह इस मिट जाने वाले जीवन के मद में मतवाले होकर पड़े हुए हैं।

उन्होंने प्याला कमण्डल और माला इत्यादि, सभी को उस तनिकसी तलछट के ऊपर न्यौछावर कर दिया है।

वह कीचड़ में सने हुए हैं। मिट्टी में गिर रहे हैं। आँसुओं के स्थान में नेत्रों से रक्त बहा रहे हैं।

कुछ समय के लिये, नशे की अवस्था में, उनकी हालत ऐसी हो गई है जैसी घमण्डी चालबाज़ों की होती है।

कभी तो वह लज्जा और शर्म्म के कारण, जो अपकृत्यों से उत्पन्न होती हैं, एक कोने में अपना मुँह छिपाकर बैठ जाते हैं और कभी अपने आपको पापों से परे समझकर—बड़ा जान करके आनन्द मनाते फिरते हैं।

कभी अपनी प्रणयिनी की प्रशंसा के गीत सुनने में तल्लीन हो रहे हैं।

गायक के मुख से निकले हुए प्रत्येक राग के साथ, उन्हें उस स्थान से एक प्रकार की मस्ती और भी प्राप्त हुई है।

प्राणों का राग सुनना, शब्द अथवा अक्षर के समान नहीं है। उस राग के प्रत्येक स्वर में प्रत्येक पंक्ति और पर्दे में एक विलक्षण रहस्य छिपा हुआ है।

ज़े सर बेरूँ कशीदा दल्क़े दह तूय।
मुजर्रद गश्ता अज़ हर रंगो हर बूय॥
फ़रोशुस्ता बदाँ साफ़े मुरव्वक़।
हमा रंगे सियाहो सब्ज़ो अज़रक़॥
यके पैमाना ख़ुर्दा अज़ मए साफ़।
शुदा जाँ सूफ़िए साफ़ी ज़े औसाफ़॥
बजाँ ख़ाके मज़ाबिल पाक रुफ़्ता।
ज़े हरचाँ दीदा अज़ सद यक न गुफ़्ता॥
गिरफ़्ता दामने रिन्दाने ख़म्मार।
ज़े शेख़ीओ मुरीदी गश्ता बेज़ार॥
चे जाए ज़ोहदो तक़वा ईं चे क़ैदस्त।
चे शैख़ोयो मुरीदे ईं चे शैदस्त॥
अगर रूए तू बाशद बर केहो मेह।
बुतो ज़ुन्नारो तरसाई तुरा बेह॥

सवाल

बुतो ज़ुन्नारो तरसाई दरीं कूए।
हमा कुफ़्रस्त वगर न चीस्त बर गूए॥

इन लोगों ने दस पर्त की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं।

उन्होंने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को मिटा डाला है। उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धब्बों को धोकर साफ़ कर दिया है।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ़ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातों को उसने हृदय में छिपा रक्खा है।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियों की शरण में जा पड़ा है। साधु बनने और चेला होने की इच्छाओं को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है।

परहेज़गारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है? साधु और चेला होने का ढकोसला कैसा है?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन। जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले।

प्रश्न

मूर्त्ति-पूजा, जनेऊ, और धूनी (अग्निपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नहीं तो और क्या हैं?

जवाब

बुत ईंजा मज़हरे इश्क़स्तो वहदत।
बुवद ज़ुन्नार बस्तने अक़्दे ख़िदमत॥
चु कुफ़्रो दीं बुवद क़ायम बहस्ती।
शवद तौहीद ऐने बुतपरस्ती॥
चु अशया हस्त हस्ती रा मज़ाहिर।
अज़ाँ जुम्ला यके बुत बाशद आख़िर॥
निको अन्देशा कुन ऐ मर्दे आक़िल।
कि बुत अज़ रूए हस्ती नेस्त बातिल॥
बेदाँ के ज़िद तआला ख़ालिक़े ऊस्त।
ज़े नीको हर्चे सादिर गश्त नीकूस्त॥
वजूद आँजा कि बाशद महज़ ख़ैरस्त।
अगर शर्रेस्त दर वे आँ ज़े ग़ैरस्त॥
मुसलमाँ गर बदानिस्ती कि बुत चीस्त।
बदानिस्ते कि दीं दर बुत परस्तीस्त॥
अगर मुशरिक़ ज़े बुत आगाह गश्ते।
कुजा दर दीने ख़ुद गुमराह गश्ते॥

उत्तर

मूर्ति यहाँ पर प्रेम और अद्वैत के प्रकट होने का स्थान है। जटा बाँधना और जनेऊ पहनने से सेवा करना समझा जाता है।

जब इस जीवन के साथ नास्तिकता और आस्तिकता दोनों ही उपस्थित हैं तो फिर अद्वैत ठीक मूर्त्ति पूजा हो जाता है।

जब कि सभी वस्तुएँ सत को प्रकट करती हैं तो मूर्त्ति भी उन्हीं में से एक होगी।

ऐ बुद्धिमान् मनुष्य ! तू इस बात को ख़ूब ध्यान से देख ले कि मूर्त्ति सब से बिलकुल पृथक है या नहीं।

तुझे यह समझ लेना चाहिये कि ईश्वर ने ही उसे उत्पन्न किया है और अच्छे आदमियों द्वारा सम्पादित कार्य भले ही हुआ करते हैं।

अस्तित्व जहाँ भी कहीं हो उसे अच्छा ही समझना चाहिये। यदि उसमें किसी प्रकार की बुराई होती है तो वह केवल दूसरों के कारण।

मुसल्मान यदि मूर्त्ति के रहस्य को समझ पाता तो उसके ध्यान में यह बात आजाती कि धर्म्म केवल मूर्ति-पूजा ही में है।

यदि मतवाले मनुष्य इस भेद से परिचित होते तो धर्म्मान्ध होकर वह धर्म्म की दुहाई न देते।

नदीद ऊ दर बुत इल्ला खल्क़े ज़ाहिर।
बदाँ इल्लत शुद अन्दर शर्रा काफ़िर॥

तो हम गर ज़ो न बीनी हक़्के पिनहाँ।
बशर्रा अन्दर न खानन्दत मुसलमाँ॥

व तसबीहो नमाज़ो खत्मे क़ुरआँ।
नगर्दद हरगिज़ ईं काफ़िर मुसलमाँ॥

ज़े इसलामे मजाज़ी गश्ता बेज़ार।
किरा कुफ़्रे हक़ीक़ी शुद पिदीदार॥

दरूने हर तने जानेस्त पिन्हाँ।
बज़ेरे कुफ़्र ईमानेस्त पिन्हाँ॥

हमेशा कुफ़्र अज़ तसबीहे हक़्क़स्त।
"व इममिन शै" गुफ़्त ईं जा चे दक़्क़स्त॥

चे मी गोयम कि दूर उफ़्तादम अज़ राह।
फ़ज़रहुम बअदमा जाअत क़ुल इल्लाह॥

बदाँ खूबी रुखे बुत रा कि आरास्त।
कि गश्ते बुतपरस्त अर हक़ नमीख़ास्त॥

उसने मूर्त्ति के केवल काट-छाँट को उसके प्रकट आकार को ही देखा है। इसी कारण धर्म्म ग्रन्थों के अनुसार वह विधर्म्मी बन गया।

तू भी, यदि मूर्ति के छिपे हुए रहस्य को न समझेगा तो तू भी धर्म्म ग्रन्थ में सच्चा धर्म्म वाला न कहलायेगा।

माला फेरने, पूजा करने और धर्म्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लेने ही से एक विधर्म्मी धर्मात्मा नहीं हो सकता है।

जिस मनुष्य ने नास्तिकता के वास्तविक रूप को समझ लिया है वह मज़हब से बिल्कुल पृथक हो गया है।

प्रत्येक शरीर में एक प्राण छिपा हुआ है और नास्तिकता के पर्दे में एक प्रकार की आस्तिकता अन्तर्हित हो रही है।

ईश्वरीय पवित्रता उसके गुणों का बखान करना ही सच्चा धर्म्म है, आस्तिकता है। उसके विरुद्ध करना ही नास्तिकता है।

क्या कोई ऐसी भी वस्तु है जो ईश्वर का गुणानुवाद न करती हो? तू कहाँ आगया है अपना मार्ग छोड़कर? ईश्वर के लिये अब उन मूर्त्तियों को छोड़ दे।

पाषाण प्रतिमा के मुख को इतना सुन्दर किसने बनाया? यदि भगवान् की इच्छा न होती तो मूर्त्तिपूजक होता ही कौन?

हमू कर्दो हमू गुफ़्तो हमू बूद।
निको कर्दो निको गुफ़्तो निको बूद॥
यके बीनो यके गोयो यके दाँ।
बदीं ख़त्म आमद अस्लो फ़र्रे ईमाँ॥
न मन मीगोयम ईं बिश्नो ज़े क़ुरआँ।
तफ़ाउत नेस्त अन्दर ख़ल्क़े रहमाँ॥

इशारत बज़ुन्नार

निशाने ख़िदमत आमद अक़्दे ज़ुन्नार।
नज़र करदम बदीदम अस्ले हरकार॥
नबाशद अह्ले दानिश रा मुअव्वल।
ज़े हर चीज़े मगर बर वज़ए अव्वल॥
मियाँ दर बन्द चूँ मरदाँ बमरदी।
दरआ दर ज़ुमरए औफ़ू, बे अहदी॥
बरख़्शे इल्मो चौगाने इबादत।
ज़ेमैदाँ दर रुबा गूए सआदत॥

वही कहने वाला और वही करने वाला था। उसके अतिरिक्त किसी दूसरे का हाथ इसमें नहीं था। वह अच्छा है। उसने कहा, सो भी अच्छा है और किया वह भी बुरा नहीं है।

एक ही को सदैव अपनी दृष्टि के सम्मुख रख एक ही से बोल और एक ही को अपने हृदय में धारण कर। धर्म्म की सब शिक्षाओं का मूल यही है।

मैं ही इस बात को नहीं कह रहा हूँ, अपितु धार्म्मिक ग्रन्थ भी यही शिक्षा दे रहे हैं कि ईश्वर के रूपों में किसी प्रकार का अधिक अन्तर नहीं है।

जनेऊ के विषय में

मैंने ध्यान पूर्वक प्रत्येक बात के तत्व को समझ लिया है। जनेऊ पहन लेना धर्म्म का चिन्ह धारण कर लेना, सेवा करने की निशानी है।

ज्ञानी पुरुष इस बात पर सभी जगह विश्वास करते हैं। क्योंकि इस बात से प्रकट होता है कि तू सेवा के लिए कमर बाँधे हुए उद्यत है।

वीर मनुष्यों के समान साहसी होकर फेंट बाँध ले और उसके बन्दों में, जो अपने वचन के सच्चे हैं, सम्मिलित हो जा।

तूने विद्या प्रदान की है और तू ईश-प्रार्थना का मूल्य समझता है। इन्हीं दोनों की सहायता लेकर रणक्षेत्र में आगे बढ़ और उसकी कृपा पर उसके समीप रहने का अधिकार जमाले।

तुरा अज़ बहरकार आफ़रीदन्द।
अगर चे ख़ल्क़ बिस्यार आफ़रीदन्द ।।
पिदर चूँ इल्मो मादर हस्त आमाल।
बिसाने क़ुरत्तुलऐनस्त अहवाल ।।
नबाशद बे पिदर इन्साँ शाके नेस्त।
मसीह अन्दर जहाँ बेश अज़ यके नेस्त ।।
रिहा कुन तर्रहातो शतहो तामात।
ख़याले नूरो असबाबे करामात ।।
करामाते तो अन्दर हक़ परस्तीस्त।
जुज़ाँ किब्रो रियाओ उज्बे हस्तीस्त ।।
दरीं हर चीज़ कानज़े बाबे फ़क्रस्त।
हमा असबाबे इस्तिदराजो मक्रस्त ।।
ज़े इबलीसे लानते बेशहादत।
शवद सादिर हज़ाराँ खर्क़े आदत ।।
गह अज़ दीवारत आयद गाह अज़ बाम।
गह दर दिल नशीनद गाह दरन्दाम ।।
हमी दानद ज़े तो अहवाले पिनहाँ।
दर आरद दर तोक़िरको कुफ़्रो इसयाँ ।।

तुझे इस संसार में इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया गया है। और तू ही क्या, बहुतों का जन्म इसी लिये हुआ है।

तेरा पिता विद्या और माँ तेरे कार्य हैं। यह सब तुझे प्रिय होने चाहियें।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बिना पिता के मनुष्य उत्पन्न नहीं हो सकता। भगवान् ईसा मसीह के भी पिता थे।

और वह भी एक से बढ़कर नहीं थे। छल-कपट, मिथ्या और बनावटी बातों से मुख मोड़ ले। चमत्कारों का विचार हृदय से निकाल दे।

तेरा बड़प्पन तो ईश्वर के भजन में है, बस यही एक बात तत्वमय है। इसके अतिरिक्त सभी बातें छल-कपट और जीवन के अहङ्कार से परिपूर्ण हैं।

यह बातें साधुओं के योग्य नहीं हैं और इसी कारण छल-छद्म से शून्य नहीं हैं।

तू देख नहीं सकेगा परन्तु शैतान तेरे सम्मुख सैकड़ों बातें ऐसी उपस्थित करेगा जो इन उपयुक्त-भावनाओं के नितान्त विरुद्ध होंगी।

वह चारों तरफ़ से तेरे सम्मुख साँसारिक प्रलोभन लेकर उपस्थित होगा। कभी वह तेरे हृदय में घुस जायगा और कभी शरीर में प्रविष्ट हो जायगा।

तेरी गुप्त बातों को, तेरे छिपे हुए कार्यों को वह जान जाता है और तेरे हृदय में बुरे और पापमय विचारों को उत्पन्न कर देता है।

शुद इबलीसत इमामो दर पसी तू।
बदो लेकिन बदींहा कै रसी तू॥

करामाते तो गर दर खुद नुमाईस्त।
तू फ़िरऔनी व ईं दावा खुदाईस्त॥

कसे कू रास्त बा हक़ आशनाई।
नआयद हरगिज़ अज़वै खुद नुमाई॥

हमा रूए तो दर खलक़स्त ज़िन्हार।
मकुन खुद रा दरीं इल्लत गिरिफ़्तार॥

चूँ बा आमा नशीनी मस्ख़ गर्दी।
चे जाये मस्ख़ यक रह फ़स्ख़ गर्दी॥

मबादत हेच बाआमत सरोकार।
कि अज़ फ़ितरत शवी नागाह निगूँसार॥

तलफ़ कर्दी बहरजा नाज़नीं उम्र।
नगोई दर चे कारस्त ईंचुनीं उम्र॥

बजमईयत लक़ब करदन्द तशवीश॥
ख़रेरा पेशवा कर्दा ज़ेहे रीश॥

इस समय शैतान तेरा गुरु हो जाता है और तू उसके पीछे उसका अनुयायी बनकर चल देता है। परन्तु इन वस्तुओं के द्वारा तू उस तक कदापि नहीं पहुँच सकता।

तेरा चमत्कार दिखाने में यदि अहंकार प्रगट होता है तो तू विरोधी है और तेरा यह दावा ईश्वरीय दावा है (जैसा फ़रऊन का था)।

जिसको ईश्वर से प्रेम है उससे यह मिथ्या अभिमान कभी भी नहीं हो सकेगा।

तू सदैव इस संसार के ध्यान में ही लिप्त रहता है। सावधान अपने आप को इस जाल में न फँसा।

जिस समय तू जन साधारण की सङ्गति में बैठेगा, उस समय तू बिगड़ जायगा और तेरा बिगड़ना ही तेरा एक प्रकार से ढेर हो जाना है।

सावधान, साधारण मनुष्यों (संसारी पुरुषों) से कोई सम्बन्ध न रखना यदि ऐसा करेगा तो तू अपने उच्चासन से गिर जायगा।

ऐसा करके तू एक दिन पछतायगा और कहेगा कि मैंने अपने प्रिय जीवन को व्यर्थ में ही गँवा दिया। यह जीवन किस काम आया।

समूह के ख़िताब की उन्होंने जांच की। क्या ही अच्छी बात है, अपना मुखिया उन्होंने एक ऐसे को बनाया है जो बिल्कुल ही मूर्ख है।

फ़तादा सरवरी अकनूँ बजुहाल।
अज़ीं गश्तन्द मरदुम जुम्ला बद हाल।।
निगर दज्जाले आवर ता चे गूना।
फ़िरस्तादस्त दर आलम नमूना।।
नमूना बाज़बीं ऐ मर्दे हस्सास।
ख़र ऊरा दाँ कि नामश हस्त जस्सास।।
ख़राँरा ईं हमा हम नंग आँ ख़र।
शुदा अज़ जेह्ल पेश आहँग आँ ख़र।।
चु ख़्वाजा क़िस्सए आख़िर जमा कर्द।
बचंदीं जाँ अज़ी मानी निशा कर्द।।
बेबीं अकनूँ कि कोरो कर शबाँ शुद।
उलूमे दीं हमा बर आसमाँ शुद।।
नमानंद अन्दर मियाना रिफ़्क़ो आज़र्म।
नमीदारद कसे अज़ जाहिली शर्म।।
हमा अह्वाले आलम बाज़गूनस्त।
अगर तू आक़िली बेनिगर कि चूँ नस्त।।

इस काल में मूर्खों को ही सर्दारी मिल गई है और इसी कारण सभी मनुष्यों की दशा बुरी हो गई है।

यह देख कि मक्कार ने अपना किस प्रकार का एक नमूना संसार में भेजा है।

तुझे संसार का अधिक अनुभव है। तू वस्तुओं के अवगुणों और गुणों को अति शीघ्र समझ जाता है। तू ही उस गधे को देख और गधा उसे समझ जिसका नाम है।

वह मूर्ख उन सभी मूर्खों के लिये अपयश का कारण है और नादानी के कारण सब के आगे चल रहा है।

जब पैग़म्बर साहब ने अन्तिम काल का इतिहास सुनाया तो कई स्थानों पर यह भी कहा,

कि इसी काल में मूर्खाधिराजों ने लोगों के गुरुओं की पदवी धारण की और जितनी भी धार्म्मिक विद्यायें थीं, संसार से किनारा कर गईं,

नम्रता. दया और लज्जा विलुप्त हो गईं और किसी भी मनुष्य को निरुद्योगी अथवा मूर्ख होने के कारण लज्जा नहीं आती। संसार की सभी बातें, पलट गईं हैं।

पहले जो होता था अब उसके नितान्त विपरीत कार्य होने लगे हैं। तुझमें यदि बुद्धि है तो उन्हें देख और समझ।

कसे कज़ बाबे लानो तर्दो मन्नतस्त।
पिदर नीको बुद अकनूँ शैख़े वक्तस्त॥
ख़िज़िर मीकुश्त आँ फ़रज़न्दे तालेह।
कि ऊरा बुद पिदर बा जद सालेह॥
कनूँ बा शेख़े ख़ुद कर्दी तु ऐ ख़र।
ख़रे रा कज़ ख़री हस्त अज़ तो ख़रतर॥
चु ऊला यारुफ़लहर्म मिनलउबिर।
चेगूना पाक गरदानद तुरा सिर॥
अगर दारद निशाने बाबे ख़ुद पूर।
चेगोयम चूँ बुवद नूरन अला नूर॥
पिसर कू नेक रायो नेक बख़्तस्त।
चु मेवा ज़ु बदए सिर्रे दरख़्तस्त॥
वलेकिन शेख़े दीं कै गर्दद आँकू।
नदानद नेक अज़ बद, बद अज़ नीकू॥
मुरीदी इल्मे दीं आमोख़्तन बूद।
चिरागे दीं ज़े नूर अफ़रोख़्तन बूद॥

उस मनुष्य का बाप, जो लानत-मलामत, फटकार और नापसन्दी का कारण हो रहा है, बहुत ही बुरा था; परन्तु अब वह इन दिनों अच्छा समझा जाता है।

हज़रत ख़िज्र ने उस मूर्ख लड़के का वध किया था, जिसका पिता और पितामह दोनों धार्मिक थे।

अब तूने अपने गुरु के साथ, ओ गधे! एक ऐसे गधे को कर दिया है, जो तुझसे भी कई पग बढ़ा हुआ है।

जब कि वह मूर्ख पाप और पुण्य, भलाई और बुराई को नहीं समझता है, उनके अन्तर को नहीं समझता है तो वह तेरे रहस्य को, तेरे हृदय को किस प्रकार पवित्र कर सकेगा?

यदि पुत्र के पास पिता का कोई चिन्ह है तो वह संसार में ख़ूब ही ख्याति प्राप्त करेगा।

जो पुत्र बुद्धिमान् और पवित्र आचरणों वाला है वह इस संसार में एक अत्यन्त उत्तम वस्तु है। वह अपने पिता के नाम को बढ़ायगा।

परन्तु वह मनुष्य, जो भले और बुरे का ज्ञान नहीं रखता, धर्म्माधिकारी किस प्रकार हो सकता है?

शिष्य होना, धार्म्मिक विद्या को सीखना था और धर्म्म के दीपक को प्रकाश से प्रकाशित करना।

कसे अज़ मुर्दा इल्म आमोख़्त हरगिज़ ।
ज़े ख़ाकिस्तर चिराग़ अफ़रोख़्त हरगिज़ ।।
मरा दर दिल हमी गर्दद बदीं कार ।
बबन्दम दरमियाने ख़ेश ज़ुन्नार ।।
न जाँ मानी कि मन शोहरत नदारम ।
वले दारम वले जाँ हस्त आरम ।।
शरीकम चूँ ख़सीस आमद दरीं कार ।
ख़मूलम बेहतर अज़ शोहरत बिस्यार ।।
दिगर बारा रसीद इल्हामे अज़ हक़ ।
कि बर हिकमत मगीर अज़ अबलही दक़ ।।
अगर कन्नास नबूवद दर मुमालिक ।
हमा ख़ल्क़ ओफ़तन्द अन्दर महालिक ।।
बुवद जिनसियत आख़िर इल्लते ज़म ।
चुनीं आमद जहाँ वल्लाहो आलम ।।
वलेक अज़ सोहबते ना अह्ल बगुरेज़ ।
इबादत ख़ाही अज़ आदत बेपरहेज़ ।।
नगर्दद जमा आदत बा इबादत ।
इबादत मी कुनी बेगुज़र ज़े आदत ।।

परन्तु एक मृतक से विद्या कौन प्राप्त कर सकता है ? राख से दीपक कौन जला सकता है ?

इस कार्य के कारण मेरे हृदय में बार बार यही विचार उठता है कि मैं अपनी कमर जनेऊ से कस लूँ । धर्म्म की दीक्षा लेकर उसमें आगे बढ़ चलूँ ।

यह विचार अपने आपको विख्यात करने के लिये नहीं उठता है । मैं विख्यात तो हूँ, परन्तु यह विचार इसलिये होता है कि इस झूठी ख्याति से मैं लज्जित हूँ ।

मेरा साथी जब इस काम में निष्फल रहा, उसने अपना ओछापन प्रकट किया, तो मेरा गुप्त रहना ही उत्तम है ।

तदुपरान्त ईश्वर की ओर से एक दूसरी ही बात सुनाई दी कि तू अपनी मूर्खता के कारण ईश्वरीय कार्यों में मीन-मेष न निकाल ।

यदि इस संसार में, कूड़ा कर्कट साफ़ करने वाले न हों तो सभी घातक रोगों के शिकार बन जायँ ।

एक भाँति का होना ही, एक जाति का होना ही आपस में मिलने का कारण है । संसार को यही दशा है । आगे ईश्वरेच्छा ।

परन्तु तू दुष्टों की संगति से अपने आपको बचाए रख । यदि तुझे ईश्वर-भजन में निमग्न रहना है तो अपने स्वभाव से बच ।

भक्ति और आदत एक साथ नहीं रह सकती हैं । यदि तू भक्ति करता है तो आदत का त्याग कर दे ।

इशारत ब तरसाई

ज़े तरसाई ग़रज़ तजरीद दीदम ।
ख़लास अज़ रबक़ए तक़लीद दीदम ।।
जनाबे क़ुदसे वहदत दैरे जानस्त ।
कि सीमुर्ग़ बक़ा रा आशयानस्त ।।
ज़े रूहुल्ला पैदा गश्तईं कार ।
कि अज़ रूहुल्क़ुदुस आमद पदीदार ।।
हमज़ अल्लाह दर पेशे तो जानेस्त ।
कि अज़ रूहुल्क़ुदुस दर वै निशानेस्त ।।
अगर यात्री ख़लास अज़ नफ़्से नासूत ।
दराई दर हयाते क़ुदसे लाहूत ।।
हराँ कस कू मुजर्रद चूँ मलक शुद ।
चु रूहल्लाह बर चारुम फ़लक शुद ।।

तमसील

बुवद महबूस तिफ़्ले शीरख़ारा ।
बनज़्दे मादर अन्दर गाहवारा ।।

परमेश्वर से डरना

ईश्वर से भय खाना, मेरी समझ में नया होने का आशय रखता है। उसके प्रेम में रंगना नंगा होने के समान है। इससे मेरा मतलब यह है कि जो कोई ऐसा करता है वह संसार के बोझ से पृथक हो जाता है।

प्राणों का पूजा-गृह, ईश्वर का पवित्र स्थान है। जो जीवन रूपी मुर्ग़ के घोंसले के समान है।

भगवान् ईसा, स्वयम् ईश्वर की आत्मा के अंश थे, और यह कार्य स्वयम् भगवान् ईसा से ही उत्पन्न हुआ है।

तेरे पास भी एक प्राण है, जिसमें ईश्वरीय अंश वर्त्तमान है।

यदि तू वासनाओं से छुटकारा पा जावे, तो तेरी भी आत्मा पवित्र हो जावे।

जो मनुष्य स्वर्गीय दूतों के समान बन्धनों से मुक्त हो गया, वह ईश्वरीय आत्मा के समान चौथे आकाश पर पहुँच गया।

उदाहरण

दूध पीने वाला शिशु माँ की गोद में उसके अंचल के भीतर बन्दी बना हुआ रहता है।

चु गश्त ऊ बालिग़ो मर्दे सफ़र शुद।
अगर मर्दस्त हमराहे पिदर शुद॥
अनासिर मर तुरा चूँ उम्मे सिफ़लीस्त।
तू फ़रज़न्दो पिदर आबाए उलवीस्त॥
अज़ाँ गुफ़्तस्त ईसा गाहे असरा।
कि आहंगे पिदर दारम बबाला॥
तो हम जाने पिदर सूए पिदर शौ।
पिदर रफ़्तन्द हमराहाँ पिदर शौ॥
अगर ख्वाही कि गर्दी मुर्गे परवाज़।
जहाने जीफ़ा पेशे करगस अन्दाज़॥
बदूना देह मरईं दुनियाए ग़द्दार।
कि जुज़ सग रा नशायद दाद मुर्दार॥
निसब चे बुवद मुनासिब रा तलब कुन।
बहक़ रू आवरो तर्के निसब कुन॥
बबहे नेस्ती हर कू फ़िरोशुद।
फ़ला अनसाबा नक़दे वक्ते ऊ शुद॥
हराँ निस्बत कि पैदा शुद ज़े शहवत।
नदारद हासिले जुज़ किब्रो निख़वत॥

जब वह तनिक बड़ा हो जाता है और चलने लगता है, तब यदि वह लड़का है तो पिता के साथ जाने लगता है।

तेरे शरीर के यह भाग, अंग-प्रत्यंग, तेरे लिये पवित्र प्राणों के समान हैं। तू वह शिशु है, जिसका पिता ऊपर आकाश में निवास करने वाला है।

इसीलिये ईसा ने पवित्र रात में यह कहा था कि मैं ऊपर इसलिये आया हूँ कि मैं अपने पिता के पास पहुँचने का इच्छुक हूँ।

तू भी, ऐ पिता के प्राण, अपने पिता के पास चल। तेरे सब साथी पिता बन के चले गये, तू भी, उन्हीं की तरह चल।

यदि तू यह चाहता है कि उड़ान भरने वाला पक्षी बन जाये, तो इस जीवन से वंचित जगत को गिद्ध के सम्मुख फेंक कर उड़ जा!

यह संसार छल-छिद्र से परिपूर्ण है। इसमें वही स्वार्थी जीव रहने योग्य हैं जो कपटी हैं। अतएव इसका त्याग कर देना ही उचित है।

जीवन क्या वस्तु है? उस जीवनदाता को ढूंढ़। ईश्वर की ओर मुख कर और सांसारिक झगड़ों से अपना हाथ खींच ले।

जो मनुष्य मृत्यु-सागर में डूब गया, उसका समय व्यर्थ ही गया।

इच्छाओं के सम्पर्क से उसे अभिमान और अहंकार के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं हुआ।

बगर शहवत न बूदे दरमियाना।
नसब्हा जुमला मी गश्ती फ़साना॥

चु शहवत दरमियाना कारगर शुद।
यके मादर शुदाँ दीगर पिदर शुद॥

नमीगोयम कि मादर या पिदर कीस्त।
कि बा ईशाँ बइज्ज़त बायदत जीस्त॥

निहादा नाक़िस रा नाम ख़ाहर।
हसूदी रा लक़बकर्द बिरादर॥

अदूए ख़ीश रा फ़रज़न्द ख़्वानी।
जे ख़ुद बेगाना ख़ेशावन्द ख़्वानी॥

मरा बारे बेगो ता ख़ालओ अम कीस्त।
अज़ीशाँ हासिले जुज़ दर्दो ग़म चीस्त॥

रफ़ीक़ाने कि बा तो दर तरीक़न्द।
पए हज़्ल ए बिरादर हम रफ़ीक़न्द॥

बकूए जद अगर यकदम नशीनी।
अज़ीशाँ मन चे गोयम ता चे बीनी॥

हमा अफ़साना व अफ़सूनो बन्दस्त।
बजाने ख़ाजा कीँहा रीशाख़न्दस्त॥

यदि अभिलाषायें और इच्छायें बीच में न आतीं तो सांसारिक नस्लों का कोई अस्तित्व ही न रह जाता।

जब इच्छाओं ने आकर अपना प्रभाव दिखलाया, तब एक माँ बन गई और दूसरा उत्पन्नकर्ता पिता।

मैं यह नहीं कहता हूँ कि इनमें माँ कौन है और पिता कौन है,

अपूर्णता, बुराई, डाह और बैरी इत्यादि को तूने अपना सम्बन्धी बना रक्खा है।

तू दूसरों को अपना प्रिय बनाता है। अपनों को बुरा समझता है।

तनिक यह भी तो बता कि तूने मामा और चाचा का सम्बन्ध किससे स्थापित कर रक्खा है? और उनकी तरफ़ से तुझे दुःख और चिन्ता के अतिरिक्त क्या प्राप्त होता है?

मित्र! इस मार्ग में जो तेरे साथी हैं, वे केवल हँसी-दिल्लगी के लिये हैं।

यदि तू एक बार भी सीधे मार्ग पर आ जावे तो न जाने उनकी क्या दशा होगी।

संसार की सम्पूर्ण बातें छल, कपट और हँसी मात्र हैं। यह ईश्वर के पीछे लगे हुए हैं।

बमर्दी बारहाँ ख़ुद रा चो मर्दां ।
वलेकिन हक़्क़े कस जाये मगर्दा ।।
ज़े शरओ अरयक दक़ीक़ा माँद मोहमल ।
शवी दर हर दो कौन अज़ दीं मोअत्तल ।।
हक़्क़े शरआरा ज़िनहार मगुज़ार ।
वलेकिन ख़ेशतन रा हम निगहदार ।।
ज़े सोज़न नेस्त इल्ला मायए ग़म ।
बजा बेगुज़ार चूं ईसाए मरयम ।।
हनीफ़ी शौ ज़े हर क़ैदे मज़ाहिब ।
दर आ दर दैरे दीं मानिन्द राहिब ।।
तुरा ता दर नज़र अग़यारो ग़ैरस्त ।
अगर दर मसजिदो आँ ऐने दैरस्त ।।
चु बरख़ेज़द ज़े पेशत किस्वते ग़ैर ।
शवद बहे तो मसजिद सूरते दैर ।।
नमीदानम बहर हाले कि हस्ती ।
ख़िलाफ़े नफ़्स बेरूँ कुन कि रस्ती ।।

मनुष्य के समान वीरता और साहस से अपने आपको इन फन्दों से छुटा ले । परन्तु यह स्मरण रहे कि किसी के अधिकार में हस्तात्तेप न होने पावे ।

यदि धर्म्म से सम्बन्ध रखने वाली यह तनिक सी बात छूट गई तो दोनों जहानों में तू विधर्म्मी बन जायगा ।

तू धर्म का पालन कर परन्तु साथ ही अपने स्वरूप को न भूल ।

सुई से दुःख के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त न होगा । अतएव मरियम के पुत्र ईसा के समान उसे जहाँ का तहाँ छोड़ दे ।

समस्त धार्म्मिक बन्धनों से सम्बन्ध छोड़ दे । और एक उदासीन के समान धर्म्म-मन्दिर में आ जा ।

जब तक तेरे सामने ग़ैर लोग रहेंगे, तब तक तुझमें समानता के भाव उदय नहीं होंगे; तब तक मस्जिद भी तेरे लिए मूर्ति-गृह के समान है ।

जब तेरे हृदय में समानता के भाव अपना अस्तित्व जमा लेंगे तब मन्दिर (मूर्तिस्थान) भी तेरे लिये मस्जिद बन जायगा ।

मैं केवल यही जानता हूँ कि जिस दशा में भी तू है, तेरा उद्धार हो जायगा, यदि तू इन्द्रियों के विरोध को मिटा दे ।

बुतो ज़ुन्नारो तरसाईव नाक़ूस।
इशारत शुद हमा बा तरेक नामूस॥
अगर ख़ाही कि गर्दी बन्दए ख़ास।
मोहैया शो बराए सिदूक़ो इख़लास॥

बरो ख़ुद रा ज़े राहे ख़ेश बर गीर।
बहरयक लहज़ा ईमाने ज़े सर गीर॥
बबातिन नफ़्से तू चूं हस्त काफ़िर।
मशौ राज़ी बदीं इस्लामे ज़ाहिर॥

ज़े नौ हर लहज़ा ईमाँ ताज़ा गरदाँ।
मुसलमाँ शौ मुसलमाँ शौ मुसलमाँ॥
बसे ईमाँ बुवद कज़ कुफ़्र ज़ायद।
न कुफ़्रस्त आँ कज़ो ईमाँ फ़िज़ायद॥

रियाओ सुमअतो नामूस बगुज़ार।
बेयफ़गन ख़िरक़ओ बरबन्द ज़ुन्नार॥
चु पीरे मा शो अन्दर कुफ़्र फ़र्दे।
अगर मर्दी बदेह दिल रा बमर्दे॥
मुजर्रद शौ ज़े हर इक़रारो इन्कार।
बतरसा ज़ादा देह दिल रा बयकबार॥

मूर्त्ति, जनेऊ, अग्नि-पूजा और शंख इत्यादि सांसारिक दृष्टि में तुझे ऊँचा बनाते हैं। इस दिखावटी प्रतिष्ठा से अपने आप को बचा ले।

यदि तू ईश्वर का प्यारा सेवक होना चाहता है तो सत्य पर चलने के लिये और अपने हृदय को स्वच्छ बनाने के लिये उद्यत हो जा।

तू अहंकार को अपने हृदय से मिटा डाल, बस धार्म्मिक पथ में तू दिनों दिन बढ़ता ही जायगा।

जब तेरी हार्दिक इच्छायें तेरे अधिकार में नहीं हैं, तो इस दिखावटी धर्म पर कभी आनन्दित न हो।

प्रति क्षण अपने धर्म्म में आगे बढ़ता रह और सच्चा धार्म्मिक बन जा।

बहुत से ऐसे भी धर्म हैं जो नास्तिकता से उत्पन्न होते हैं और जिस चीज़ से धर्म्म में उन्नति होती है वह नास्तिकता हो नहीं सकती।

छल-कपट, प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा और दिखावटी यश की लालसा को छोड़ दे। गुदड़ी को उतार कर फेंक दे और जनेऊ को धारण कर ले।

हमारे गुरु के समान तू भी सत्य में अनुपम बन जा और यदि तू मर्द है मनुष्यता रखता है तो किसी मनुष्य का मित्र बन जा।

स्वीकृति और अस्वीकृति के प्रश्न को कभी उठने ही न दे और प्रभु को अपने हृदय का अधिकारी बना ले।

इशारत बबुतो तरसा बच्चा

बुतो तरसा बच्चा नूरेस्त जाहिर ।
कि अज़ रूए बुताँ दारद मज़ाहिर ॥
कुनद ऊ जुम्ला दिलहा रा व साक़ी ।
गहे गर्दद मुग़न्नी गाह साक़ी ॥
ज़ेहे मुतरिब कि ऊ अज़ नग़मए ख़स ।
ज़नद दर ख़िरमने सद ज़ाहिद आतश ॥
ज़ेहे साक़ी कि ऊ अज़ यक पियाला ।
कुनद बेख़ुद दोसदहफ़ताद साला ॥
अगर दर मसजिद आयद दर सहरगाह ।
न बेगुज़ारद दरो यक मरदे आगाह ॥
रवद दर ख़ानक़ाह मस्ते शब्बाना ।
कुनद अफ़ज़ूं सूफ़ी रा फ़िसाना ॥
शवद दर मदरसा चूँ मस्त मस्तूर ।
फ़क़ीह अज़ वै शवद बेचारा मख़मूर ॥
ज़े इश्क़श ज़ाहिदाँ बेचारा गश्ता ।
ज़े ख़ानो माने ख़ुद आवारा गश्ता ॥

मूर्ति और अग्नि-पूजक के प्रति

मूर्त्ति और अग्नि से उत्पन्न हुई आभा एक ऐसी दिखावटी आभा है जो प्रेमिकाओं के मुख से अपना जलवा दिखलाती है ।

वह आभा सभी दिलों को अपने प्रेम-जाल में फँसा लेती है । कभी वह एक गायक का रूप धारण कर लेती है और कभी मदिरा-वाहक का ।

वह गायक कैसा है ? ऐसा जो एक ही राग से सहस्त्रों परहेज़गारों के दिलों में आग उत्पन्न कर देता है ।

वह साक़ी कैसा है ? ऐसा जो एक ही प्याले में दो सौ सत्तर वर्ष के वृद्ध को मतवाला बना देता है ।

यदि प्रातःकाल उठकर वह साक़ी मस्जिद में चला जाय, तो वहाँ के सभी लोग ख़ुदा को भूल जावें ।

यदि वही साक़ी रात्रि के समय किसी साधु की कुटी में चला जावे, तो साधु का जप-तप सब हवा हो जावे ।

जब वह मतवाला, पाठशाला में पहुँचता है, तो शिक्षक, शिक्षा देना भूल कर नशे में चूर हो जाता है ।

जो मनुष्य परहेज़गार थे, वह उससे प्रेम करने के लिये बाध्य होकर अपने घरों से बाहर निकल आए हैं ।

यके मोमिन दिगर रा काफ़िर ऊ कर्द ।
हमा आलम पुर अज़ शोरो शर ऊ कर्द ॥

ख़राबात अज़ लबश मामूर गश्ता ।
मसाजिद अज़ रुख़श पुर नूर गश्ता ॥

हमा कारे मन अज़ वै शुद मअस्सर ।
बदो दीदम ख़लासज़ नफ़्से काफ़िर ॥

दिलम अज़ दानिशे ख़ुद सद हुजुब दाश्त ।
ज़े उजबो निख़वतो तलबीसो पिन्दाश्त ॥

दरामद अज़ दरम आँ बुत सहरगाह ।
मरा अज़ ख़ाबे गफ़लत कर्द आगाह ॥

ज़े रूयश ख़िलवते जाँगश्त रौशन ।
बदो दीदम कि ता ख़ुद चीस्तम मन ॥

चु कर्दम दर रुख़े ख़ूबश निगाहे ।
बरामद अज़ मियाने जानम आहे ॥

मरा गुफ़्ता कि शईयादो सालूस ।
बसर शुद उमरत अन्दर नामो नामूस ॥

उसी ने एक को आस्तिक और दूसरे को नास्तिक बनाया है और सारे संसार में एक कुहराम मचा दिया है ।

मदिरा-गृह उसी के ओठों से बसा हुआ है और मस्जिदों में उसी का उजाला है ।

मेरे जितने भी कार्य हैं सब उसी की सहायता से पूर्ण होते हैं और मैंने अपनी अत्याचारिणी इन्द्रियों से उसी की सहायता से छुटकारा पाया है ।

मेरा हृदय, छल-कपट से परिपूर्ण हो रहा था । दर्प और अहङ्कार ने उसमें घर कर रक्खा था । मैं अपने और अपनी इस विद्या के सामने किसी को कुछ समझता ही न था ।

वह यार, प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में मेरे द्वार से होकर अन्दर आया और मेरे आलस्य को दूर कर गया ।

उसके मुख की आभा से मेरी आत्मा प्रकाशित हो उठी और इसी प्रकाश में मैंने देखा कि मैं क्या था ।

उसके सुन्दर मुख पर पहली दृष्टि पड़ते ही मेरे हृदय से एक आह निकल गई ।

उसने मुझसे कहा कि ओ छलिया ! तेरा सारा जीवन इसी व्यर्थ के जप-तप में व्यतीत हो गया ।

बबीं ता इल्मो ज़ोहदो किब्रो पिन्दाश्त ।
तुरा ऐ ना रसीदा अज़ के वादाश्त ॥

नज़र कर्दम बरूयम नीम सायत ।
हमी अरज़द हज़ाराँ साला ताअत ॥

अलल जुम्ला रुखे आँ आलम आराए ।
मरा बामन नमूद अन्दर सरो पाए ॥

सियह शुद रूए जानम अज़ ख़िजालत ।
ज़े फ़ौते उम्रो ऐयामे बतालत ॥

चु दीदाँ माह कज़ रूए चु ख़ुर्शीद ।
कि बेबुरीदम मन अज़ जाने ख़ुद उम्मीद ॥

यके पैमाना पुर कर्दो बमन दाद ।
कि अज़ आबे वै आतश दर मन उफ़ताद ॥

कनूँ गुफ़ अज़ मए बेरंगो बे बूए ।
नक़ूशे तख़्तए हस्ती फ़ेरो शोए ॥

चु अशामीदम आँ पैमाना रा पाक ।
दर उफ़्तादम ज़े मस्ती बर सरे ख़ाक ॥

मूर्ख, ध्यान से देख कि तेरी इसी विद्या और घमंड ने तथा परहेज़गारी ने तुझे तेरे अभीष्ट स्थान तक पहुँचने से रोक दिया ।

आधी घड़ी के लिये मेरे मुख पर दृष्टि डाल ले, वह हज़ारों वर्षों की पूजा और भजन के समान है ।

सारांश कि परलोक को सँभाल देने वाले यार के मुखड़े ने मुझे यह दिखा दिया कि मैं क्या था ।

यह समझ कर कि मेरे जीवन के इतने दिन व्यर्थ की बातों ही में चले गये, मेरा मुख लज्जा से नीचा हो गया ।

उस यार ने यह समझ कर कि उसके सूर्य्य के समान मुख को अप्राप्त समझ कर मैं अपने जीवन से निराश हो गया हूँ,

एक प्याला भर के मुझे दे दिया । उसे पीते ही मेरे शरीर में बिजली सी दौड़ गई ।

उसने कहा कि उस मदिरा से, जिसमें न तो सुगन्ध ही है और न रंग, तू अपने अस्तित्व के अक्षरों को धोकर मिटा दे । मतवाला होकर अपने अस्तित्व को भूल जा ।

मैंने उस प्याले को बिल्कुल ख़ाली कर डाला । मदिरा ने वह रंग दिखला दिया कि मस्त होकर पृथ्वी पर लोट गया ।

कनूँ न नेस्तम दर ख़ुद न हस्तम।
न हुशयारम न मख़मूरम न मस्तम॥
गहे चूँ चश्मे ऊ दारम सरे ख़श।
गहे चूँ ज़ुल्फे ऊ बाशम दर आतश॥
गहे अज़ ख़ूए ख़ुद दर गिलख़नम मन।
गहे अज़ रूए ऊ दर गुलशनम मन॥

ख़ातमा

अज़ाँ गुलशन गिरिफ़्म शम्मए बाज़।
निहादम नाम ऊ रा गुलशने राज़॥
दरो अज़ राज़हा गुलहा शगुफ़्स्त।
कि ता अकनूं कसे दीगर नगुफ़्स्त॥
ज़बाने सौसनें ऊ जुम्ला गोयास्त।
अयूने नरगिसे ऊ जुम्ला बीनास्त॥
ताआमुल कुन बचश्मे दिल यकायक।
कि ता बर ख़ेज़द अज़ पेशे तू ईशक॥
बबीं मनक़ूलो माक़ूलो हक़ायक।
मुसफ़्फ़ा कर्दा दर इल्मे दक़ायक॥

अब देखता क्या हूँ कि मैं कोई दूसरा ही हूँ। न मुझमें जीवन है और न विनाश। न तो मैं बुद्धिमान ही हूँ और न मदिरा के मद में मतवाला।

कभी उसकी आँख का नशा मुझमें आ जाता है और कभी उसकी काली लटों के समान आग में बल खा रहा हूँ।

कभी अपनी आदतों के कारण नर्क की अग्नि में जल रहा हूँ और कभी उसका मुख देखकर, स्वर्ग के उपवन में भ्रमण कर रहा हूँ।

समाप्ति

उस उपवन का कुछ वर्णन करना ठीक होगा। इसका नाम मैंने रहस्यों का उपवन रक्खा है।

इसमें रहस्यों के ऐसे पुष्प खिले हुए हैं कि जिनका अभी तक कोई पता नहीं लगा पाया।

इस उपवन का सौसन सभी भाषा में बोलता है। नर्गिस के पुष्प में जितनी भी आँखें हैं सब देखने वाली हैं।

तू तनिक अपने भीतरी नेत्रों से इस उपवन को देख, ताकि सन्देह का पर्दा तेरी दृष्टि के सामने से हट जावे।

देख पर्दो, वास्तविकताओं और दलीलों की समस्त कठिनाइयों को यहाँ पर किस प्रकार हल कर दिया गया है।

बचश्मे मुनकरी मनिगर दरो ख़ार।
कि गुलहा गरदद अन्दर चश्मे तो ख़ार॥
निशाने नाशनासी ना सिपासीस्त।
शिनासाईए हक़ दर हक़ शिनासीस्त॥
ग़रज़ ज़ीं जुम्ला आँ ता गर कुनद याद।
अज़ीज़े गोयदम रहमत बरो बाद॥
बनामे ख़ेश करदम ख़त्मो पायाँ।
इलाही आक़बत महमूद गर्दां॥

पर उनकी तरफ़ सन्देहात्मक दृष्टि से न देख। इन रहस्यों में टीका टिप्पणी करने का विचार न कर। नहीं तो जितने भी पुष्प हैं सब तेरी दृष्टि में शूल हो जायंगे।

यह कहना कि मैं इन्हें जानता नहीं हूँ, कृतघ्नता प्रकट करना है। कृतज्ञता दर्शाने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है।

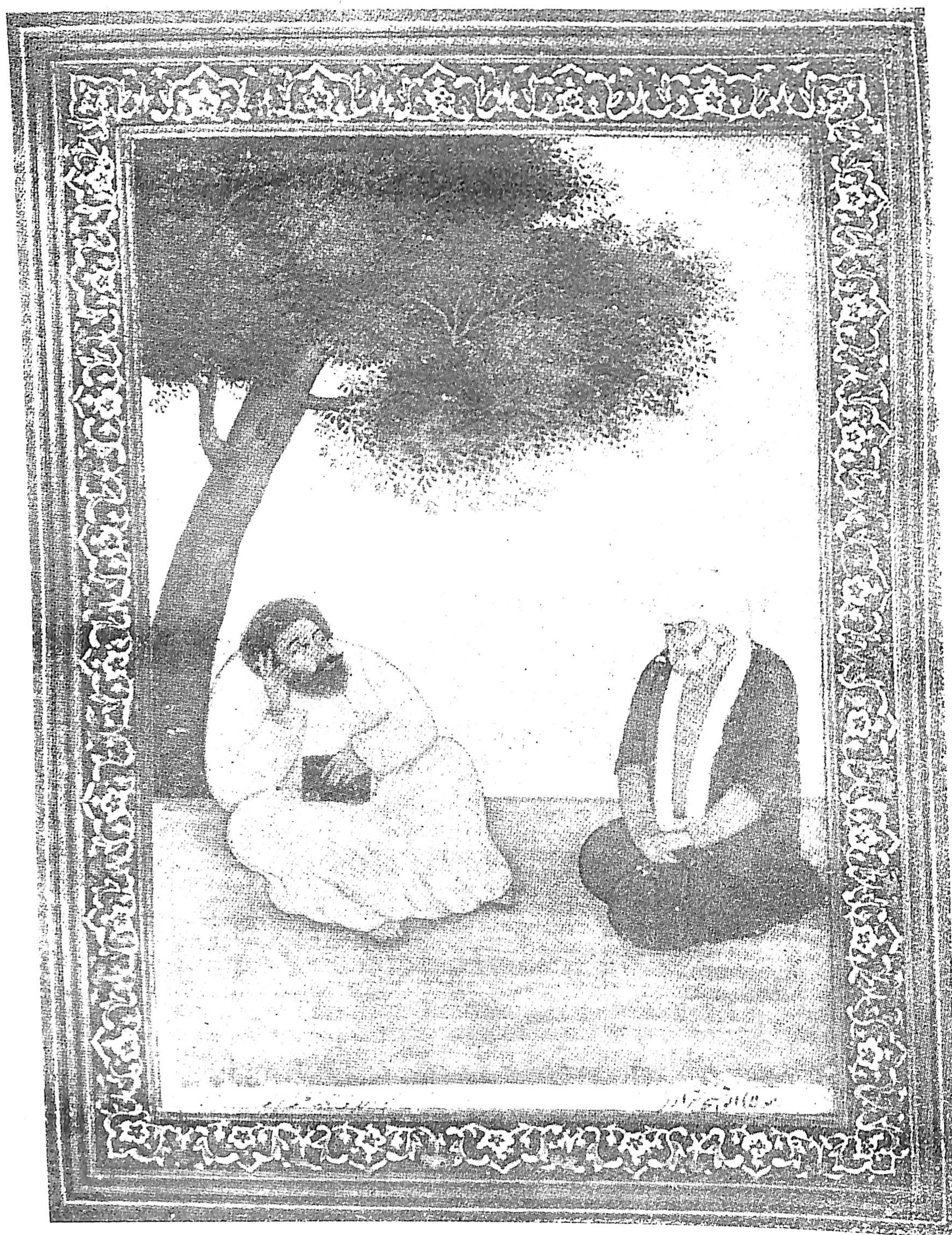
इस सब का आशय यह है कि यदि कोई महाशय किसी समय मुझे स्मरण करें, तो उनके मुख से यही निकले कि ईश्वर उस पर कृपा करे।

मैंने अपने नाम पर ही इसे समाप्त कर दिया है। हे ईश्वर मुझ "महमूद" को फल अच्छा देना।

हाफ़िज़

[मृत्यु १३९० ई०]





हाफ़िज़ (बाईं ओर)
(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

इनके जन्मकाल के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, इनकी मृत्यु सन् १३९० ईस्वी में हुई थी। इनका नाम शम्शुद्दीन मुहम्मद था। इन्हें लोग बहुधा लिसातुलग़ैब (अदृश्य की तलवार) तथा तर्जुमानुल असरार (रहस्य के अनुवादक) भी कहा करते थे। ब्राउन ने इनका जीवन-वृतान्त लगभग पचास पृष्ठों में लिखा है। उसके कथनानुसार शिबली की लिखी हुई पुस्तक इस विषय में सर्वोत्तम तथा विश्वसनीय और प्रमाणिक इतिहास है। फ़ारस के उन कवियों में जिन्होंने गान संबंधी पद लिखा है, हाफ़िज़ सर्वश्रेष्ठ हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। लेवी का कथन है कि भाषा, भाव और कल्पना के अनुसार, फ़ारस के कवियों में इनका स्थान सबसे ऊँचा है (Persian Literature P. 77)।

यह तो सभी मानते हैं कि हाफ़िज़ रहस्यवादी थे। प्रकट रूप में यह कहा जा सकता है कि हाफ़िज़ ने मदिरा तथा स्त्रियों की प्रशंसा में अधिक लिखा है। परन्तु इनके अन्दर छिपी हुई "गूढ़ रहस्यवाद की बातों" को सभी मानते हैं। जिन बातों को उन्होंने प्रकट करने का प्रयत्न किया है, जिस रहस्य को उद्घाटन करने का विचार किया है, वह सभी पूर्णतया उचित रूप में लोगों के सम्मुख रक्खी गई हैं। इस विषय में उन्हें सदैव सफलता प्राप्त हुई है। "हाफ़िज़ की मदिरा आन्तरिक प्रसन्नता, सराय पूजा गृह और फ़ारस का पुराना पुजारी आत्मिक गुरु है।" मुसलमानों में हाफ़िज़ के दीवान से शकुन उठाने की प्रथा प्रचलित है। यहाँ तक की भारतवर्ष के बादशाह भी उससे शकुन उठाया करते थे। जहाँगीर के विषय में ऐसा ही कहा जाता है।

हाफ़िज़ को मदिरा बहुत प्रिय थी। कुछ समय उपरान्त वह उसी मदिरा से आन्तरिक प्रसन्नता का आशय निकालने लगे। हाफ़िज़ की इच्छा इस प्रकार थी :—

"यदि अधिक मदिरापान से ही मेरी मृत्यु हो तो मुझे मेरी समाधि तक एक शराबी के ही भेष में लाना। ऐसे स्थान पर जहाँ चारों ओर अंगूर की बेलें हों, और जो किसी सराय की बग़ल में हो, मेरी क़ब्र बनाना। मेरी लाश को उसी सराय के पानी से स्नान कराना और शराबियों के कन्धों पर ही मेरी अर्थी भी ले जाई जावे। मेरी मिट्टी भी लाल मदिरा से नम की जावे और मेरा शोक मनाने के लिये वही तीन तारों वाली सितार बजायी जावे। यही मेरी अन्तिम इच्छा है—वसीयत है। मेरी मृत्यु का शोक मनाने वालों में केवल फ़ारस के अभिनेता तथा गानेवाले हों। हाफ़िज़ को मदिरा से पृथक मत करना। शराबियों के साथ बादशाहों को भी सख़्ती नहीं करनी चाहिये।"

मिस गार्ट्रड बेल ने भी कुछ पंक्तियाँ हाफ़िज़ के सम्बन्ध में लिखी हैं। कदाचित यह हाफ़िज़ का अनुभव हो :—

"हाफ़िज़ ने बहुत से राजाओं—महाराजाओं को देखा। उन्होंने शक्ति-सम्पन्न की—ख्याति प्राप्त की। और फिर एक एक करके मरुभूमि की सतह पर जमी हुई बर्फ़ के समान विलीन हो गये।"

अपने जीवन-काल में ही हाफ़िज़ को पूर्ण ख्याति प्राप्त हो गई थी। जिसके कारण उनके पास ख़ुरासान, तुर्किस्तान और मैसोपोटामियाँ से निमंत्रण आये थे। मुहम्मद शाह बहमनी ने भी उन्हें दक्षिण भारत में, निमंत्रण देकर बुलाया था। हाफ़िज़ ने चलने की तय्यारी भी कर ली थी। परन्तु दुर्भाग्य से जहाज़ पर चढ़ने से पहले ही एक ऐसी दुर्घटना होगई, जिससे उन्हें रुक जाना पड़ा। घर पर भी हाफ़िज़ को शाही दर्बार से बहुत कुछ मिलता था।

इनकी रचनाओं के अगणित अनुवाद हो चुके हैं। केवल इंगलैण्ड में ही छः अनुवाद हो चुके हैं, जिनमें से मिस बेल तथा मिस्टर ओन्सले के सर्वोत्तम समझे जाते हैं। मिस्टर ओन्सले ने उनके विषय में लिखा है :—

"इनकी भाषा मुहाविरेदार, सुन्दर तथा बनावट से रहित है। शैली को देखने से ही पता चल जाता है कि लेखक उच्च कोटि का विद्वान है और उसे प्रकट तथा अप्रकट वस्तुओं का पर्याप्त ज्ञान है। इसके अतिरिक्त भाषा में एक ऐसा आकर्षण है जो अन्य कवियों की रचनाओं में नहीं पाया जाता।"

जन साधारण में तैमूर लंग और हाफ़िज़ की कहानी अधिक प्रसिद्ध है। तैमूर लंग ने जब हाफ़िज़ के मुख से यह शब्द सुने :

"अगर आँ तुर्के शीराज़ी बदस्त आरद दिले मारा।
बख़ाले हिंदवश बख़्शम समरक़ंदो बुख़ारा॥"

तब वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने उन्हें बुलाकर पूछा कि तुम इन मुल्कों के विषय में ऐसी मामूली बातें क्यों कहते हो जिनके जीतने के लिये मुझे इतना ख़ून बहाना पड़ा। हाफ़िज़ का उत्तर बड़ा ही विलक्षण था :

"हे शाहनशाह! अपने इन्हीं उच्च विचारों के कारण मैं आजकल इतना कंगाल हूँ।"

रचनायें :—

दीवान।

(१)

अला या अईयो हसूसाक़ी इदर कासावना दिलहा ।
कि इश्क़ आसाँ नमूद अव्वल वले उफ़्ताद मुश्किल हा ।।
बबूए नाफ़ा काख़िर सबा जाँ तुर्रा बकुशायद ।
ज़े ताबे जुल्फ़े मिशकीनश चे खूं उफ़्ताद दर दिलहा ।।
ब मै सज्जादा रंगीं कुन गरत पीरेमुगाँ गोयद ।
कि सालिक बे ख़बर न बूद ज़े राहो रस्मे मंज़िलहा ।।
मरा दर मंज़िले जानाँ चे अमनो ऐश चूं हरदम ।
जरस फ़रियाद मीदारत कि बरबन्देद महमिलहा ।।
शबे तारीको बीमे मौजो गिरदाबी चुनी हामल ।
कुजा दानन्द हाले माँ सुबक साराने साहिल हा ।।
हमा कारम ज़े ख़ुद कामी ब बदनामी कशीद आख़िर ।
निहां कै माँदाँ कारे कज़ाँ साज़न्दो महफ़िलहा ।।
हज़ूरी गरहमी ख़ाही अज़ो गाफ़िल मशो हाफ़िज़ ।
मता मा तल्क़े मन तहवा दउद दुनियाँ व अहमिलहा ।।

(१)

ऐ शराब पिलाने वाले ! प्याले को, मुझे भी दे । क्योंकि प्रणय आरम्भ में सहल ज्ञात होता था परन्तु आगे चलकर इस समय बहुत सी कठिनाइयाँ आ पड़ी हैं ।

उसकी काली अलकों में लगी हुई कस्तूरी की सुगन्ध से जो कि हवा द्वारा इधर-उधर फैल गई है और उसकी घुंघराली लटों से हृदय में प्रेम समा गया है ।

यदि तुझसे मदिरा-गृह का स्वामी, आसन मदिरा में रंग लेने के लिये कहे तो ऐसा कर डाल । क्योंकि पथिक मार्ग के तरीक़ों से अनजान नहीं होता है ।

मुझे प्रियतमा के मार्ग में आराम करने का क्या विश्वास है जबकि क़ाफ़ले का घन्टा सदैव बजता रहता है और लोगों को अपनी अपनी लादी लादने के लिये सचेत करता रहता है ।

रात काली है, लहरें उठ रही हैं और भयानक भँवर उठ रहे हैं । तटों पर बैठे हुए चिन्ताहीन मनुष्य हमारी दशा को कैसे समझ सकते हैं ।

स्वार्थ के कारण मैं अपने कार्यों में बदनाम हो चुका हूँ । जो काम सब लोगों के सम्मुख किया जाता है वह गुप्त कैसे रह सकता है ।

ऐ हाफ़िज़ ! यदि तू प्रियतमा के दर्बार में रहना चाहता है, उसे देखना चाहता है तो उसके सामने से दूर मत हो । जिससे तू जिसको स्नेह की दृष्टि से देखता है उसकी दुनिया को छोड़ दे और उसका विचार न कर ।

(२)

ऐ नसीमे सहर आराम गहे यार कुजाअस्त।
मंज़िले आँ महे आशिक़ कुशे अय्यार कुजाअस्त॥
शबे तारस्तो रहे वादिए ऐमन दर पेश।
आतिशे तूर कुजा मौअदे दीदार कुजाअस्त॥
हर कि आमद ब जहां नक़्शे ख़राबी दारद।
दर ख़राबात मपुरसेद कि हुशयार कुजाअस्त॥
आँ कसस्त अह्ले बशारत कि इशारत दानद।
नुक़ताहाहस्त बसे महरमे असरार कुजाअस्त॥
हर सरे मूए मरा बा तू हज़ाराँ कारस्त।
मा कुजाएमो मलामत गरे बेकार कुजाअस्त॥
अक़्ल दीवाना शुद आं सिलसिले मिशकीं कू।
दिल ज़े मा गोशा गिरिफ़्त अब्रुए दिलदार कुजाअस्त॥
आशिक़े ख़स्ता ज़े दर्दग़मे हिज्रे तो ब सोख़्त।
ख़ुद न पुरसी तु कि आँ आशिके ग़मख़्वार कुजाअस्त॥

(२)

ऐ प्रभात के शीतल पवन! प्यारे के शयन करने का स्थान कौनसा है और उस प्रणयी को बध करने वाले उस दग़ाबाज चन्द्रमा का घर कहाँ है।

रात अँधेरी है और ऐमन घाटी का मार्ग सामने ही है (वह स्थान जहाँ मूसा को ख़ुदाई जलवा दिखाई दिया था) नूर की अग्नि कहाँ चली गई है और मिलन-मन्दिर किधर है?

संसार में जो मनुष्य आया है, वह नष्ट कर देने वाले चित्रों को लेकर आया है। इसलिये मदिरा-गृह में जाकर यह न पूछो कि कहाँ है।

शुभ समाचारों वाला वही मनुष्य है जिसे अन्य लोगों की तरफ़ से इशारा मिल गया है कि भीतर चले आओ। टीका-टिप्पणी करने के लिये तो बहुत स्थान हैं परन्तु रहस्य का जानने वाला कौन है? उसका होना भी आवश्यक है।

तेरे एक एक बाल में हमारे अगणित स्वार्थ छिपे हुए हैं। हम कहाँ आ पड़े हैं और व्यर्थ में खरी-खोटी कहने वाला कहाँ हैं?

हमारी समझ में पागलपन समा गया है। वह मुश्की रंग की अलकें न मालूम किधर छिप गई हैं। हमारा दिल एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ है। प्रियतमा की वह भौंएँ कहाँ हैं।

बेचारा प्रेमी तेरे प्रेम और विरह में जल रहा है और तू यह भी नहीं पूछता है कि वह दुखिया कहाँ है।

दिलम अज़ सोमआ सोहबते शेख़स्त मलूल।
यार तरसा बच्चओ ख़ानए ख़ुमार कुजाअस्त ॥

बादाओ मुतरिबो मुल जुम्ला मुहैआस्त वले।
ऐशे बे यार मुहैया न शवद यार कुजाअस्त ॥

हाफ़िज़ अज़ बादे ख़िज़ां दर चमने दह मरंज।
फ़िक्रे माक़ूल ब-फ़रमाँ गुले बेख़ार कुजाअस्त ॥

(३)

इमरोज़ शाहे अंजुमने दिल बराँ यकेस्त।
दिलबर अगर हज़ार बुवद दिल बराँ यकेस्त ॥

मन बहे आँ यके दो जहाँ दादाअम बबाद।
ऐबम मकुन कि हासिले हर दो जहाँ यकेस्त ॥

सौदाइयाँने आलमे पिनदार रा बुगो।
सरमाय कम कुनेद कि सूदो ज़ेयाँ यकेस्त ॥

ख़ल्क़े ज़बाँ बदावये इश्क़श कुशादा अंद।
ऐ मन ग़ुलाम आँ कि दिलश बाज़बाँ यकेस्त ॥

हाफ़िज़ बर आस्तानऐ दौलत निहादा सर।
दौलत दराँ सरस्त के बाआस्ताँ यकेस्त ॥

मेरा दिल उपदेशों को सुनकर और उदासीनों के साथ रह कर ऊब उठा है। वह मेरा सुन्दर प्रियतम और उस शराब विक्रेता का घर कहाँ है?

मदिरा पिलाने वाला और फूल सभी वस्तुएँ उपस्थित हैं, परन्तु जीवन का आनन्द बिना यार के नहीं मिलता। वह यार है कहाँ?

ऐ हाफ़िज़! इस समय रूपी उपवन में पतझड़ की हवा पर खेद मत करो। तनिक ध्यान से विचार करो कि कराक-हीन पुष्प कहाँ है।

(३)

आज माशूक़ों के जमाव में, सम्राट एक ही है। गिनती में वे हज़ारों हैं मगर उनके दिल को चुराने वाला एक ही है।

मैंने उसी एक को पाने की आशा में दोनों जहानों को मिटा डाला। इसके लिये मुझे दोष मत दो। दोनों जहानों का अन्त एक यही है।

इस संसार के अहंकारियों से कह दो कि अपनी पूंजी को कम कर दें। हानि और लाभ यहाँ समान हैं।

बहुत से लोग कहते हैं कि हम उसे प्यार करते हैं। परन्तु मैं उस मनुष्य का सेवक होने के लिये उद्यत हूँ जो उसे हृदय से भी प्यार करता हो।

हाफ़िज़ ने तो उसी प्रतिष्ठा की चौखट पर अपना सिर रख दिया है और वही सर प्रतिष्ठित भी है जो उस चौखट से मिलकर एक हो गया है।

(४)

बदामे ज़ुल्फ़े तू दिल मुब्तिलाए ख़ेशतनस्त।
बकुश बग़म्ज़ा कि ईनश सज़ाए ख़ेशतनस्त॥
गरत ज़े दस्त बर आयद मुरादे ख़ातिरे मा।
बदस्त बाश कि ख़ैरे बजाए ख़ेशतनस्त॥
बजानत ऐ बुते शीरीने मन कि हमचु शमा।
शबाने तीरा मरा दमे फ़नाए ख़ेशतनस्त॥
चुराए इश्क़ ज़दी बातू गुफ़्म ऐ बुलबुल।
मकुन कि आँ गुले ख़ुद रौ बराए ख़ेशतनस्त॥
बमिश्के चीनो चिगिल नेस्त बूए गुल मोहताज।
कि नाफ़हारा ज़े बंदे क़बाए ख़ेशतनस्त॥
मरो ब ख़ानए अरबाब बे-मुरव्वते दह।
कि कुंजे आफ़ियतत् दर सराए ख़ेशतनस्त॥
बसोख़्त हाफ़िज़ो देर शर्ते इश्क़ो जाँबाज़ी।
हनोज़ बर सरे अहदो वफ़ाए ख़ेशतनस्त॥

---

(४)

तेरी काली अलकों के जाल में यह हृदय अपने आप ही जाकर फँस गया है। अपनी तिरछी चितवन से तू उसे मार डाल। उसका यही दण्ड है।

यदि मेरी इच्छाएँ—हृदय की आकाँक्षाएँ तेरे द्वारा पूर्ण हो जायँ तो तेरा बोलबाला हो। यह अपने साथ भलाई करने के समान है।

ऐ सुन्दरी, प्रियतमा, तेरे प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रत्येक अंधेरी रात को मैं इसी विचार में रहता हूँ कि तेरे दीपक के समान रूप पर, पतंगा बनकर मैं अपने आप को न्यौछावर कर दूँ।

जब तूने प्रणय का उपदेश लिया था, मैंने तभी कह दिया था कि ऐ बुलबुल तू प्रेम न कर। वह पुष्प जो अपने आप उत्पन्न हुआ है वह स्वयम् अपने ही लिये उगा है।

फूल अपनी सुगन्धि किसी दूसरे से उधार नहीं लेता है वह स्वयं सुगन्धि का भंडार है। और उसके पर्दे के अन्दर कस्तूरी के बहुत से टुकड़े छिपे हैं।

जो लोग रूखे स्वभाव के हैं, जिन्हें दूसरों से स्नेह नहीं है उनके पास मत जाओ। तुम्हारे निजी घर में ही विश्राम करने के लिये कोना मौजूद है।

हाफ़िज़, जल कर मर गया परन्तु उसने जो प्रेम और प्राणों पर खेल जाने की प्रतिज्ञा की थी उस पर अब तक दृढ़ है।

(५)

बेरौ ऐ ज़ाहिदो दावत मकुनम् सूए बहिश्त।
कि ख़ुदा दर अज़ल अज़लह बहिश्तम बसरिश्त॥
यक जौ अज़ ख़िरमने हस्ती न तवानद बरदाश्त।
हर के दर कूए फ़ना दर रहे हक़ दाना नकिश्त॥
तू वो तसबीहो मुसल्ला वो रहे ज़ुहदो सलाह।
मनो मैख़ाना वो ज़ुन्नारो रहे दैरो कनिश्त॥
मन अम अज़ मै मकुने सूफ़िए साफ़ी कि हकीम।
दर अज़ल तीनते मारा ब मए नाब सरिश्त॥
सूफ़िए साफ़ बहिश्ती न बुवद हर कि चोमन।
ख़िरक़ा दर मैकदहा दर गिरे बादा बहिश्त॥
राहत अज़ ऐशे बहिश्तो लबे हूरश न बुवद।
हर कि ऊ दामने दिलदार ख़ुद अज़ दस्त बहिश्त॥
'हाफ़िज़ा' लुत्फ़े हक़ अरबातू इनायत दारद।
बाश फ़ारिग़ ज़े ग़मे दोज़ख़ो शादी व बहिश्त॥

---

(५)

ऐ परहेज़गार तू मुझे स्वर्ग की ओर मत बुला। मैं नाशवान् हूँ। ईश्वर ने मुझे आरंभ में अमरलोक के लिये उत्पन्न नहीं किया।

जिस मनुष्य ने मृत्यु की गली में और ईश्वर की राह में एक दाना तक नहीं बोया है, वह इस सांसारिक जीवन के खलिहान से एक जौ का दाना भी प्राप्त नहीं कर सकेगा।

यह नेकी, सच्चाई और पवित्रता का मार्ग तुम्हारे ही लिये मुबारक रहे। मैं मदिरागृह, जनेऊ और मन्दिर तक पहुँचाने वाला मार्ग हूँ।

ऐ पवित्र हृदय साधु ! मुझे मदिरा पान से न रोक। जिस समय मैं उत्पन्न हुआ था, उस समय स्रष्टा ने मेरी मिट्टी को मदिरा ही से गूंधा था।

चाहे जितना पवित्र मनुष्य क्यों न हो लेकिन तब तक वह स्वर्ग में नहीं जा सकता जब तक कि मेरे समान वह अपने वस्त्रों को शराब ख़ाने में शराब के लिये रेहन नहीं कर देता।

उस मनुष्य को, स्वर्ग के भोग-विलास और अप्सराओं के ओठों से भी आनन्द प्राप्त न होगा, जिसने अपनी प्रियतमा का अंचल हाथ से छोड़ दिया है।

ऐ "हाफ़िज़" ! यदि मेरा सहायक ईश्वर है तो मुझे स्वर्ग का आनन्द और नर्क की चिन्ता समान हैं।

(६)

बरौ बकारे ख़ुद ऐ वाइज़ ईं चे फ़र्यादस्त।
मरा फ़ितादा दिल अज़ कफ़ तुरा चे उफ़्तादस्त॥
बकाम ता न रसानद मरा लबश चूं नाय।
नसीहते हमा आलम बगोशे मन बादस्त॥
गदाए कूए तु अज़ हश्त ख़ुल्द मुस्तग़नास्त।
असीरे बंद तू अज़ हर दो आलम आज़ादस्त॥
मियाने ऊ कि ख़ुदा आफ़रीदास्त हेचस्त।
दक़ीक़ा एस्त कि हेच आफ़रीदर न कुशादस्त॥
अगर्चे मस्तिए इश्क़ ख़राब कर्द वले।
असास हस्तिए मन जाँ ख़राब आबादस्त॥
दिला मनाल ज़े बेदादो जौरे यार के यार।
तुरा नसीब हमीं करदास्त व ईं दादस्त॥
बरौ फ़िसाना मख़ानो फ़िसूँ मदम् "हाफ़िज़"।
कज़ीं फ़िसान अफ़सूं मरा बसे यादस्त॥

---

(६)

ऐ उपदेशक! क्या तेरे लिये और कोई काम नहीं रह गया है। मुझे इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। मेरा तो दिल चला गया है, तेरा क्या बिगड़ गया है।

जब तक उस प्रेमिका के ओठ मुझे वीणा के समान अपने बीच में नहीं ले लेंगे तब तक सारे संसार की शिक्षा मुझपर कोई असर नहीं कर सकती।

जो तेरी गली में धूनी रमाये बैठा है उसके लिये आठों स्वर्ग भी कोई चीज़ नहीं है और जिसके तेरी बेड़ियाँ पड़ी हुई हैं वह दोनों जहानों से स्वतंत्र है।

जिसे ईश्वर ने उत्पन्न किया है वह नाशवान है। यह एक ऐसी उलझन है जिसे किसी मनुष्य ने आज तक सुलझा नहीं पाया है।

यद्यपि मैं प्रणय की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ परन्तु यह मैं भली प्रकार समझता हूँ कि मेरे जीवन की नींव उसी बीहड़ स्थान से है।

तेरा यार अगर तेरे ऊपर अत्याचार करे और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न करे तो उसके विषय में किसी से शिकायत न कर। उस यार ने तेरे भाग्य का निर्णय इसी प्रकार किया है और इसी को न्याय भी समझो।

ऐ "हाफ़िज़," जा। मुझसे यह बनावटी बातें न कर। ऐसी भुलावा देने वाली बहुत सी बातें मुझे मालूम हैं।

(७)

बकूए मैकदा हर सालिके कि रह दानिस्त।
दरे दिगर ज़दन अंदेशए तबह दानिस्त॥
बर आस्तानए मैख़ाना हर कि याफ़ रहे।
ज़े फ़ैज़ जामे मै असरारे ख़ानक़ह दानिस्त॥
ज़माना अफ़सरे रिंदी नदाद जुज़ बकसे।
कि सरफ़राज़िए आलम दरीं कुलह दानिस्त॥
हरआँ कि राज़े दो आलम ज़े ख़त्ते साक़ी ख़ाँद।
रमूज़े जामे जम अज़ नक़्शे ख़ाके रह दानिस्त॥
बराए तायते दीवानगाँ ज़ेमा मतलब।
कि शैख़ मज़हबे मा आक़िली गुनह दानिस्त॥
दिलम ज़े नरगिसे साक़ी अमाँ नख़ास्त बजाँ।
चेरा कि शेवेए आँ तर्के दिल सियह दानिस्त॥
ज़े जौरे कोकबे ताले सहरगहाँ चश्मम्।
चुनाँ गिरीस्त कि नाहीद दीदो मह दानिस्त॥
ख़ुशाँ नज़र के लबे जामो रूए साक़ी रा।
हिलाले यक शबे माहे चार दह दानिस्त॥

(७)

जिस मतवाले को मदिरा-गृह का पता लग गया उसने फिर किसी दूसरे दर्वाज़े पर जाना उचित नहीं समझा।

जिसने उस दर्वाज़े को एक बार भी देख लिया उसने मदिरा के प्याले की कृपा से सराय का रहस्य मालूम कर लिया।

इस संसार ने साधु (जीवनमुक्त) की पदवी उसी को दी है जिसने उस पहनावे में ही सारी दुनियाँ की प्रतिष्ठा को समझ लिया।

जिसने शराब पिलाने वाले के पत्र से ही दोनों जहानों के रहस्य को समझ लिया है उसने बिना प्रयास के ही अपने मार्ग में जामे जम का पता लगा लिया।

हम पूजा और पाठ पागलों का सा ही जानते हैं। और किसी प्रकार की आशा रखना भूल है। हमारे धर्म्म-गुरु ने बुद्धिमान होने को पाप समझा है।

मेरे हृदय ने साक़ी से शान्ति प्राप्त कर लेने के लिये प्रार्थना नहीं की। वह उसके अत्याचार के ढंग को पहले ही से जानता था।

जब मैं हज को गया तो उसी समय मेरे भाग्य-नक्षत्र के विपरीत हो जाने से आँख में से इतने आँसू गिरे कि बृहस्पति ने भी उसे देख लिया और चाँद भी सब कुछ समझ गया।

मैं उस दृष्टि की बलिहारी जाता हूँ और उसकी श्रेष्ठता को समझता हूँ, जिसने प्याले से लगे हुए ओठों को पहली रात का चाँद और साक़ी के मुख को चौदहवीं रात का चाँद समझा।

बलंद मर्तबा शाही कि न ख़ाके सिपह्र।
नमूनए रुख़म ताक़े बारगह् दानिस्त ॥
हदीसे हाफ़िज़ो साग़र कि मी ज़नद पिनहाँ।
चे जाए मोह्तिसिबो शह्ना पादशह् दानिस्त ॥

(८)

बया के क़स्रे अमल सख़्त सुस्त बुनियादस्त।
बयार बादा के बुनियाद उम्र बर्बादस्त ॥
ग़ुलाम हिम्मते आनम कि ज़ेर चर्ख़े कबूद।
ज़े हर्चे रंग तअल्लुक़ पज़ीरद आज़ादस्त ॥
चे गोएमत कि बमैख़ाना दोश मस्तो ख़राब।
सरोशे आलमे ग़ैबम चे मुज़्दहा दादस्त ॥
के ऐ बुलन्दे नज़र शाह्बाज़े सिद्र नशीं।
नशेमने तू न ईं कुंजे मेह्नत आबादस्त ॥
तुरा ज़े कंगुरए अर्श मी ज़नन्द सफ़ीर।
नदानमत कि दरीं दामगहे चे उफ़्तादस्त ॥
नसीहते कुन्मत यादगीरे व दर अमल आर।
कि ईं हदीस ज़े पीरे तरीक़तम यादस्त ॥

वह सम्राट कितना महान् है। वह आकाशों को अपने मन्दिर के महराबों के समान समझता है।

(८)

हाफ़िज़ छिपकर मदिरा पान करता है। यह बात अब गुप्त नहीं है। इसे ऊँच और नीच सभी जान गये हैं।

आशाओं के भवन की नीव बहुत कमज़ोर है। उसकी दीवालें क्षण-भर में गिर सकती हैं। और मदिरा ला। जीवन का कोई भरोसा नहीं है।

मैं उस मनुष्य के साहस का क़ायल हूँ जो गीले आकाश के नीचे प्राप्त होने वाली वस्तुओं में से किसी से भी सम्बन्ध नहीं रखता और न किसी की चिन्ता रखता है।

कल रात को जब मैं शराब ख़ाने में, मदिरा के नशे में मतवाला हो रहा था, उस समय आकाशवाणी ने मुझे बहुत से शुभ समाचार दिये थे। वह इतने आनन्द दायक हैं कि उनका वर्णन करना मेरी शक्ति से परे है।

ऐ स्वर्गीय वृक्षों (कल्प वृक्ष) पर भ्रमण करने वाले जीव यह संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है। यहाँ अध्यवसाय की आवश्यकता है।

तेरे लिये आकाश से बुलावा आ रहा है, फिर न मालूम किस लिये इन बन्धनों में यहाँ बँधा हुआ पड़ा है।

मैं भी तुझे एक उपदेश दे रहा हूँ। इसे स्मरण रखकर काम में लाना। बुद्धिमानों की एक बात मैंने भी याद रक्खी है।

मजो दुरुस्तीए अहद अज़ जहानेसुस्त निहाद।
कि ईं अजूज़ा उरूसे हज़ार दामादस्त॥

ग़मे जहां मखुरो पन्दे मन मबर अज़ यार।
के ईं लतीफ़ा नग़ज़म ज़े रहरवे यादस्त॥

रज़ा बेदाद बदह वज़ जबीं गिरह बकुशा।
के बर मनो तू दरे इख़्तियार न कुशादस्त॥

निशाने अहदो वफ़ा नेस्त दर तबस्सुमे गुल।
बेनाल बुलबुले आशिक़ के जाए फ़रियादस्त॥

हसद चे मीं बरी ऐ सुस्ते नज़्म बरहाफ़िज़।
क़बूले ख़ातिरो लुत्फ़े सखुन ख़ुदा दादस्त॥

(९)

हासिले कारगहे कौनो मकाँ ईं हमा नेस्त।
बादा पेश आर कि असबाबे जहाँ ईं हमानेस्त॥

अज़दिलो जाँ शरफ़े सोहबते जानाँ ग़रज़स्त।
हमाआँनस्त बगर न दिलो जाँ ईं हमानेस्त॥

वह यह है कि इस नाशवान् जगत के जीवों से यह आशा मत रख कि वह अपने वादों को पूरा करेंगे। वह हज़ारों वादे करते हैं।

फिर उनका पूरा करना उनके लिये किस प्रकार सम्भव हो सकता है। संसार की चिन्ता मत कर और मेरी शिक्षा को भी न भूल।

यह एक मज़ेदार बात मैंने एक ज्ञानी से सीखी थी। जो कुछ तुझे मिल गया है उसी पर सब्र कर और सदैव प्रसन्न रहने की चेष्टा करता रह। यहाँ पर मेरी और तेरी का अधिकार किसी को भी नहीं दिया गया है।

पुष्प में वादा पूरा करने और अपने वचनों पर चलने का कोई भी लक्षण नहीं है। ऐ प्रेमी बुलबुल, तू इस बात की शिकायत कर सकता है और इसी के लिये यह जगह भी है।

ऐ कवि ! तू अच्छी कविता नहीं लिख सकता; फिर इसके लिये हाफ़िज़ से द्वेष क्यों रखता है। लोगों के दिलों में चुभना और पदों में रस होना इस दुनिया की दृष्टि पर निर्भर है।

(९)

इस संसार की समस्त वस्तुएँ नाशवान् हैं। ला, मेरे सामने मदिरा रख ताकि इस क्षणभंगुर जीवन का कुछ आनन्द ले सकूँ।

इस हृदय और इन प्राणों का उद्देश्य यही है कि प्रियतमा के साथ रहने की प्रतिष्ठा प्राप्त हो। यदि यह नहीं है तो हृदय और प्राणों का कोई अस्तित्व नहीं है। उनका होना और न होना समान है।

मिन्नते सिद्रा व तूबा ज़ पये साया मकश ।
के चो खुश बिनगरी ऐ सरवेरवाँ ईं हमा नेस्त ॥
अज़ तहत्तुक मकुन अन्देशा वचूँ गुल खुशबाश ।
ज़ाँ कि तमकीने जहाने गुज़रा ईं हमा नेस्त ॥
दौलत आनस्त कि बे खूने दिल उफ़्तद बकिनार ।
वरना बासइये अमल बाग़े जिनाँ ईं हमा नेस्त ॥
ज़ाहिद ऐ मन मशौ अज़ बाज़िये ग़ैरत ज़िनहार ।
कि रह अज़ सौमआ ता दैरे मुग़ाँ ईं हमा नेस्त ॥
पंज रोज़े कि दरीं मरहला मोहलतदारी ।
खुश बे आसाए ज़माने कि ज़माँ ईं हमा नेस्त ॥
बर लबे बह्रे फ़ना मुंतज़िरेम ऐ साक़ी ।
फुरसते दाँ कि ज़े लब ताब दहाँ ईं हमा नेस्त ॥
दर्दमंदीए मने सोख़्तए ज़ारो निज़ार ।
ज़ाहिरा हाजते तक़रीरो बयाँ ईं हमा नेस्त ॥
नमे हाफ़िज़ रक़्मे नेक पज़ीरफ़ वले ।
पेशे रिंदाँ रक़्मे सूदो ज़ियाँ ईं हमा नेस्त ॥

केवल छाया के लिये इन स्वर्गीय वृक्षों का अहसान अपने सर पर न लो । यदि तुम भले प्रकार विचार करोगे तो इन वस्तुओं को नाशवान् पाओगे ।

रहस्य प्रकट हो जाने का कोई शोक न करो और पुष्प के समान सदैव आनन्द से खिले रहो । इस बहुरूपिणी दुनियां में पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटने वाले हैं ।

वैभव और सम्पत्ति उसी को कहना चाहिये जो बिना परिश्रम के, बिना हृदय का रक्त बहाए हुए प्राप्त हो जावे । अन्यथा प्रयास और प्रयत्न से तो स्वर्ग का उपवन भी प्राप्त किया जा सकता है ।

ऐ पवित्र मनुष्य, विधाता के खेलों को सदैव अपने ध्यान में रख । पूजा-गृह से, मदिरा-गृह कुछ अधिक दूरी पर नहीं है ।

इस मार्ग में तुझे केवल पाँच दिवस का अवकाश प्राप्त हुआ है । याद रख यह बहुत कम है । इसलिये यदि विश्राम करना चाहता है तो शीघ्रता कर ।

हम इस सर्वभक्षक दरिया के तट पर साक़ी की प्रतीक्षा में खड़े हुए हैं । तनिक अवसर का भी विचार रख । पीने के लिये कुछ प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है । और जीवन भी स्थायी नहीं है ।

मुझ दुखिया और प्रणय-ग्रसित की अवस्था प्रकट में थोड़े ही शब्दों में कही जा सकती है । इसके लिये अधिक शब्दों की और वर्णन की आवश्यकता नहीं है ।

हाफ़िज़ की ख्याति दूर दूर तक फैल गई है परन्तु जीवनमुक्त पुरुषों के निकट इसका कुछ भी मूल्य नहीं है ।

(१०)

दर्दा के यार दर ग़मो दर्दम बमाँदो रफ़्।
मारा चो दूद बर सरे आतिश निशाँदो रफ़्॥
मख़मूर बादए तरबअंगेज़ इश्क़ रा।
जामी न दाद ज़हे जुदाई चशाँद रफ़्।
चूँ सैदे ऊ शुदम् मने मजरूहो ख़स्ता रा।
दर बहरे ग़म बमाँदो जनीबत बराँदो रफ़्॥
गुफ़्म मगर बहीला बक़ैदश, दर आवरदम्।
अज़ मन रमीदो तौसने बख़तम रमाँदोरफ़्॥
ख़ूने दिलम चो दर दिले मन जाए तंग याफ़्।
गुलगूँ जे राह दीद बसहरा दवाँदो रफ़्॥
चूँ बंदा रा सआदते ख़िदमत न दाद दस्त।
बोसीद आसतानओ ख़िदमत रिसाँदो रफ़्॥
गुल दर हिजाब बूद कि मुर्ग़े सहरगहे।
आमद बबाग़े हाफ़िज़ो फ़रयाद ख़्वाँदो रफ़्॥

---

(१०)

खेद है कि मित्र मुझे इस दुखित और पीड़ित अवस्था में डालकर चला गया है और हमको धूनी रमाने वालों के समान आग के ऊपर बिठाकर स्वयम् न मालूम किधर चला गया हैं।

उस मतवाले को प्रणय की मदिरा उसकी प्रसन्नता को और भी बढ़ा देती परन्तु उस मदिरा का प्याला न देकर जुदाई का प्याला उसके हाथ में दिया गया। उसने वह पी लिया और चला गया है।

जब मैं उसका शिकार हो गया तब मुझ आहत हृदय घायल को शोक रूपी समुद्र में छोड़ कर न मालूम वह अश्वारोही कहाँ विलीन हो गया है।

मैंने सोचा था कि किसी न किसी बहाने से क़िस्मत को अपने फन्दे में फँसा लूँगा। लेकिन वह भी मुझसे दूर रहती है।

मेरे हृदय के रक्त ने जब मेरे हृदय में कम स्थान पाया तो वह अपना गुलाबी घोड़ा मेरे नेत्रों से निकाल कर बाहर आया और उसे कुदाता फँदाता हुआ चला गया है।

जब उस सेवक को स्वामी के सन्मुख पहुँचने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ तब उसने उसकी चौखट को ही चूमना और सर झुकाना पर्याप्त समझा और यही करके वह चला गया है।

अभी पुष्प परदे के अन्दर से निकला भी नहीं था कि प्रभात-काल का पक्षी उपवन में आ उपस्थित हुआ। अर्थात् हाफ़िज़ आया और रोता चिल्लाता हुआ चला गया है।

(११)

दिल सरा पर्दए मुहब्बते ओस्त।
दीदा आईना दार तलअते ओस्त॥
मन कि सर दर नयावरम बद व कोन।
गरदनम् ज़ेर बार मिन्नते ओस्त॥
गर मन आलूदा दामनम् चे अजब।
हमा आलम गवाहे असमते ओस्त॥
मन कि बाशम् दराँ हरम कि सबा।
परदादारे हरीमे हुरमते ओस्त॥
मुलकते आशिक़ी व गंजे तरब।
हर्चे दारम ज़े चमन दौलते ओस्त॥
बे ख़यालश मबाद मंज़रे चश्म।
जाँ कि ईं गोशा ख़ासे ख़िलक़ते ओस्त॥
दौरे मजनूँ गुज़श्तो नौबते मास्त।
हर कसे पंज रोज़ नौबते ओस्त॥
मन व दिल गर फ़िदा शुदेम चे शुद।
ग़रज़ अन्दर मियाँ सलामते ओस्त॥

(११)

हृदय उसके प्रेम का स्थान है और नेत्र उसकी सूरत का दर्पण है।

मैं दोनों जहानों में किसी को सर नहीं झुकाता हूँ। परन्तु उसके एहसान के भार से यह सर झुक जाता है।

मैं पापी हूँ तो इसमें अश्चर्य्य ही क्या है। परन्तु उसकी पवित्रता का तो सारा संसार साक्षी है।

मैं उस रँगमहल में कुछ भी अस्तित्व नहीं रखता हूँ जहाँ की वायु उसकी प्रतिष्ठा की रक्षक है।

प्रणय की जागीर और आनन्द का कोष जितना भी मेरे पास है वह सब उसी की अनुकम्पा और विशाल हृदयता का फल है।

मैं यह चाहता हूँ कि मेरे नेत्रों में उसकी शोभा के अतिरिक्त और किसी वस्तु के लिये स्थान न रहे। यही एक ऐसा कोना है जो कि उत्तम पूजागृह कहा जा सकता है।

मजनूँ का ज़माना बीत गया अब उसके स्थान पर मैं हूँ। प्रत्येक मनुष्य की बारी केवल पाँच दिन की होती है।

मैं यदि अपने हृदय के साथ न्योछावर हो गया तो क्या हुआ। उसका प्रसन्न और सकुशल रहना आवश्यक है।

तू व तोवा व मा व क़ामते यार।
फ़िक्र हर कस बक़द्र हिम्मते ओस्त ॥
हर गुले नौ कि शुद चमन आरा।
असरे रंगों बूये सोहबते ओस्त ॥
फ़क्रे ज़ाहिर मबीं कि हाफ़िज़रा।
सोना गंजीनये मुहब्बते ओस्त ॥

(१२)

दिलम् मलाल गिरफ़् अज़ जहाँ व हर चे दरूस्त।
दरूँने ख़ातिरे मन कस न गुंजद इल्ला दूस्त ॥
अगर ज़े गुलशने वसलत बमा रसद बोए।
दिलम चो ग़ुंचा ज़े शादी न गुंजद अन्दर पूस्त ॥
नसीहते मने दीवाना दर तरीक़ते इश्क़।
हमाँ हिकायते दीवानओ संगो सोबूस्त ॥
बुगो ब ज़ाहिदे ख़िलवतनशीं कि ऐब मकुन।
अज़ाँ कि गोशए मेहराबे मा ख़ुमे अबरूस्त ॥
मियाने काबओ मैख़ाना हेच फ़र्क़े नेस्त।
बहर तरफ़ कि नज़र मी कुनी बराबर ऊस्त ॥

ऐ पवित्र हृदय मनुष्य ! तू अपने मित्र और प्याले का ख़्याल रख। प्रत्येक मनुष्य को अपने साहस के ही अनुसार कार्य करना चाहिये।

जिस नवीन पुष्प ने खिल कर उपवन की शोभा को बढ़ाया यह उसी के सम्पर्क की सुगन्धि और रँग का परिणाम है।

जो कुछ तुम प्रगट रूप में देख रहे हो केवल उसी से उसकी फ़क़ीरी का अनुमान मत करो। हाफ़िज़ का हृदय उसके स्नेह का आगार है।

(१२)

मैंने दुनियाँ की सभी वस्तुओं से अपना मुख मोड़ लिया है। यदि मेरे ध्यान में कोई वस्तु समाई हुई है तो वह है मेरे यार का मुखड़ा।

यदि तेरे मिलन की तनिक सी सुगन्धि भी मुझे मिल जाय तो मेरा हृदय प्रसन्नता से ओत-प्रोत हो जाये।

मुझ पागल को प्रणय-मार्ग में उपदेश करना एक पागल, पत्थर और घड़े की कहानी से उपमा देना है।

उसके ध्यान में मग्न बैठे हुये साधु से कह दो कि वह मुझे यह कह कर कि मैंने उसकी भृकुटियों के झुकाव को ही अपनी कुटिया की महराब बना रक्खा है, बदनाम न करे।

काबे में और शराबख़ाने में कोई अन्तर नहीं है। जिस तरफ़ भी तुम्हारी दृष्टि जायगी वह सामने आ जायगा।

क़लंदरी न बरेशस्तो मूए या अबरू।
हिसाबे राहे क़लंदर बदाँ के मूए बमूस्त॥
गुज़श्तन अज़ सरे मू दर क़लंदरी सहलस्त।
चो हाफ़िज़ आँ के ज़े सर बगुज़रद क़लंदरूस्त॥

(१३)

राहेस्त राहे इश्क़ कि हेचश किनारा नेस्त।
आँजा जुज़ अंगाह जाँ बसिपारंद चारा नेस्त॥
हरगह कि दिल बइश्क़ दिही ख़ुश दमे बुवद।
दर कारे ख़ैर हाजते हेच इस्तख़ारा नेस्त॥
मारा बमने अक़्ल मतरसाँ दमे बयार।
काँ शहना दर विलायते मा हेचकारा नेस्त॥
अज़ चश्मे ख़ुद बे पुर्स कि मारा कि मी कुशद।
जानाँ गुनाहे तालओ जुर्मे सितारा नेस्त॥
फ़ुरसत शुमर तरीक़ये रिन्दी कि ईं तरीक़।
चूँ राहे गंज बरहमा कस आशकारा नेस्त॥
ऊरा बचश्मे पाक तवाँदीद चूँ हिलाल।
हर दीदा जाए जल्वये आँ माहपारा नेस्त॥

शिर मुड़ाने अथवा दाढ़ी रखाने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता। इस मार्ग पर जो कि बाल के समान पतला है, चलना बहुत ही कठिन है।

बालों का बिचार करना तो इस मार्ग में एक बहुत ही साधारण बात है। परन्तु वास्तव में उदासी वही है जो इन बातों का बिचार छोड़ कर भी "हाफ़िज़" के समान अपने आप को मिटा डाले।

(१३)

प्रणय मार्ग अनन्त है। उस मार्ग में अपने आपको मिटा डालने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है।

जिस समय किसी के प्रेम में तू अपने हृदय को खो बैठे तो उस समय को बहुत ही शुभ समझना चाहिये। भले काम में किसी प्रकार के सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं है।

ज्ञान के उपदेश करने की धमकी मुझे मत दे और मेरे लिये मदिरा ला। क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ मदिरा के ऊपर निगरानी रखना व्यर्थ है।

प्रियतमे! इसमें मेरे भाग्य अथवा ग्रहों को दोष देना व्यर्थ है। अपनी ही आंखों से क्यों नहीं पूछती कि मुझपर अत्याचार का पहाड़ क्यों ढारही हैं?

यह भी ठीक है कि फ़क़ीरी का मार्ग कोष के मार्ग के समान किसी पर विदित नहीं है।

इस प्रियतमा को पहिली रात के चन्द्रमा के समान पवित्र और वासना-रहित दृष्टि से ही देखना उचित है। और इसीलिये प्रत्येक आँख इस कार्य के लिये अनुचित है।

नगिरफ़ दरतो गिरियए "हाफ़िज़" बहेच रूए ।
हैराने आँ दिलम कि कमअज़ संगेख़ारा नेस्त ॥

(१४)

रोज़गारेस्त कि सौदाये बुताँ दीने मन अस्त ।
ग़मे ई' कार निशाते दिले ग़मगीने मन अस्त ॥
दीदने रूये तुरा दीदये जाँ बी बायद ।
वीं कुजा मरतबए चश्मे जहाँ बीनेमन अस्त ॥
ता मरा इश्क़े तू तालीमे सुख़न गुफ़्तन दाद ।
ख़ल्क़ रा विर्दे ज़ुबाँ मदहतो तहसीने मन अस्त ॥
दौलते फ़क़्र ख़ुदाया बमन अरज़ानीदार ।
कीं करामत सबबे हश्मतो तमकीने मन अस्त ॥
यारे मन बाश कि ज़ेबे फ़लको ज़ीनते दह ।
अज़ महे रूये तूओ अश्क चो परवींने मन अस्त ॥
वाइज़े शहना शनास ई' अज़मत गो मफ़रोश ।
जाँ के मंज़िल गहे सुल्ताने दिले मिसकीने मनस्त ॥
यारब ई' काबए मक़सूदो तमाशा गहे कीस्त ।
के मुग़ीलाँ तरीक़श गुलो नस्रीने मनस्त ॥

"हाफ़िज़" के रोने का कोई भी असर तेरे हृदय पर नहीं हुआ। मैं ऐसे हृदय से हैरान हो गया हूँ जो कि कठोर पत्थर से भी कठोर है।

(१४)

बहुत समय से प्रियतमाओं से प्रेम करना ही मेरा धर्म हो गया है। और यह काम मेरे दुखी हृदय को आनन्द प्रदान करता है।

तेरा मुख देखने के लिये प्राणों के अस्तित्व को समझने वाली आँख चाहिये। मेरी आँख जो कि संसार की वास्तविकता को समझने में असमर्थ है, यह पद किस प्रकार प्राप्त कर सकती है!

जब से तेरे प्रणय ने मुझे कविता लिखना सिखाया है, सभी लोग मेरी बड़ाई करते हैं और मुझे प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं।

भगवन् कृपा करके मुझे संन्यासी बना दे। इसी में मेरी प्रतिष्ठा और ख्याति है। मेरी इच्छा है कि तुम मेरे साथ ही साथ चलो।

कारण, कि आकाश और पृथ्वी दोनों की शोभा तुम्हारे चन्द्रमा से मुख और मेरे प्रवीन से आँसुओं से है।

यह जो नाना प्रकार के उपदेश दे रहा है उस सुधारक से कह दो कि वह अधिक शान न दिखावे। यह मेरा दीन हीन हृदय जिसे वह उपदेश दे रहा है, सम्राट का निवास स्थान है। हे ईश!

यह लोगों का तीर्थ-स्थान काबा किसके सैर करने की जगह है? इसके माग के कांटे मेरे लिये गुलाब और चमेली के पुष्पों के समान हैं।

"हाफ़िज़" अज़ हश्मते परवेज़ दिगर क़िस्सा मख़ाँ।
कि लबश जुर्रा कशे ख़ुस्रवे शीरीने मनस्त ॥

(१५)

रौशन अज़ परतवे रूयत नज़रे नेस्त कि नेस्त ।
मिन्नते ख़ाके दरत बर बसरे नेस्त कि नेस्त ॥

नाज़िरे रूए तु साहब नज़रानंद आरे।
सिर्रे गेसूए तु दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥

अश्के ग़म्माज़े मन अर सुर्ख़ बर आमद चे अजब ।
ख़जिल अज़ कर्दए ख़ुद परदा दरे नेस्त कि नेस्त ॥

मन अज़ीं तालए शोरीदा बरंजम वरना ।
बहरमंद अज़ सरे कूयत दिगरे नेस्त कि नेस्त ॥

तू ख़ुद ऐ शोलए रख़्शिदा चे दारी दर सर ।
के कबाब अज़ हरकातत जिगरे नेस्त कि नेस्त ॥

ता दम अज़ शामे सरे ज़ुल्फ़े तू हर जा न ज़नद ।
बा सबा गुफ़्तो शुनीदम सहरे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ " हाफ़िज़ " परवेज़ बादशाह के ठाट बाट का वर्णन न करो, क्योंकि उसकी ख्याति भी तो मेरे ख़ुसरू और शीरीं के प्याले को ओठों से लगाने ही से थी ।

(१५)

तेरे मुख के प्रकाश से सभी निगाहें प्रकाशित हो रही हैं और तेरे दर्वाज़े की धूल का अहसान सभी के ऊपर है।

तेरे मुख को बड़े बड़े नज़र लड़ाने वाले लोग देखते हैं और कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसका दिल तेरी काली अलकों में न उलझा हो ।

मेरे यह चुग़ली खाने वाले अश्रुबिन्दु यदि लाल रंग के होकर निकल रहे हैं तो उसमें आश्चर्य की कौन सी बात है। क्योंकि रहस्य को खोलने वाला कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने इस कार्य से लज्जित न हो ।

मैं अपने इस दुर्भाग्य से ही विपत्तियों में आ पड़ा हूँ, नहीं तो संसार के सारे वैभव केवल तेरी गली में ही प्राप्त हो सकते हैं ।

ऐ चमकीली अग्नि-शिखा तेरे मस्तिष्क में क्या क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं ! तेरी शरारतों से कोई भी कलेजा ख़ाली नहीं है ।

सभी तेरी इन शरारतों से आरी आ रहे हैं। मैं प्रभात-वायु से प्रत्येक दिन यही बातचीत करता रहता हूँ कि वह तेरी लटों का कहीं दूसरी जगह चर्चा न कर बैठे ।

अज़ हयाये लबे शीरीने तू ऐ चश्मए नोश।
ग़र्क़े आबो अरक़ अकनूँ शकरे नेस्त कि नेस्त॥

मसलेहत नेस्त कि अज़ पर्दा बरूँ उफ़्तद राज़।
वरना दर मजलिसे रिंदाँ ख़बरे नेस्त कि नेस्त॥

अज़ वजूदीं क़दरम् नामो निशां ह्स्त कि ह्स्त।
वरना अज़ ज़ोफ़ दर आँजा असरे नेस्त कि नेस्त॥

शेर दर बादियए इश्क़े तू रूबाह शवद।
आह अज़ीं राह कि दर बे ख़तरे नेस्त कि नेस्त॥

नाज़ुकाँरा सफ़रे इश्क़ हरामस्त हराम।
कि बहरगाम दरीं रह ख़तरे नेस्त कि नेस्त॥

आबे चश्मम कि बरू मिन्नते ख़ाके दरे तुस्त।
ज़ेर सद मिन्नते ऊ ख़ाके दरे नेस्त कि नेस्त॥

ता बदामन न नशीनद ज़े नसीमत गर्दे।
सैले अश्कज़ मिज़ाअम बर गुज़रे नेस्त कि नेस्त॥

न मने दिल शुदा अज़ दस्ते तु ख़ूनीं जिगरम्।
कज़ ग़मे इश्क़े तु पुर ख़ूं जिगरे नेस्त कि नेस्त॥

ऐ मिठास के सोते, तेरे मीठे ओठों की स्पर्धा में सभी प्रकार को शक्करें पानी में डूब चुकी हैं अर्थात लज्जित हो चुकी हैं।

यह ठीक नहीं है कि किसी प्रकार रहस्य प्रकट हो जावे अन्यथा साधुओं के जमाव में सभी प्रकार के आनन्द उपस्थित हैं।

मुझे अपने जीवन का केवल इतना ही पता है कि वह है। गोकि उसमें सभी प्रकार की दुर्बलताएँ पाई जाती हैं।

तेरे प्रणय के वन में सिंह भी लोमड़ी बन जाता है। बड़े बड़े साहसी हृदय भी हिम्मत खो देते हैं।

यह मार्ग हो इतना कठिन है कि इसमें सभी प्रकार के ख़तरे उपस्थित हैं।

मेरा वह आँसू जो तेरे दर्वाज़े की स्मृति में गिरा है और जिसपर उसकी धूल का अहसान है, सभी दर्वाज़ों की धूल से अधिक प्रतिष्ठित और मूल्य-वान है।

इसलिये कि तेरे अञ्चल पर किसी प्रकार की धूल अथवा कूड़ा न पड़ जावे मैं रास्तों पर अपने आँसुओं का छिड़काव कर देता हूँ।

अकेला मैं ही एक दुखिया ऐसा नहीं हूँ जिसपर कि विपत्ति पड़ी है, बल्कि तेरे प्रणय में सभी हृदय रक्त के आँसू बहा रहे हैं।

क़मरे कीं बमने ख़स्ता चे बंदी कि ज़े मेह्र।
बर मियाने दिलो जानम् कमरे नेस्त कि नेस्त ॥

अज़ सरे कूए तु रफ़तम् न तवानम् गामे।
वरना अन्दर दिले बेदिल सफ़रे नेस्त कि नेस्त ॥

ग़ैर अज़ीं नुक्ता कि "हाफ़िज़" ज़े तु नाख़ुशनूदस्त।
दर सरापाए वजूदत हुनरे नेस्त कि नेस्त ॥

(१६)

रोज़ए ख़ुल्दे बरीं ख़िलवते दरवेशानस्त।
मायए मोहतशमी ख़िदमते दरवेशानस्त ॥

गंजे इज़्ज़त कि तिलिस्माते अजायब दारद।
फ़तहे आँ दर नज़रे रहमते दरवेशानस्त ॥

क़स्रे फ़िर्दोस कि रिज़वाँश ब दरबानी रफ़्।
मंज़रे अज़ चमने नुज़हते दरवेशानस्त ॥

उंचे ज़र मी शवद अज़ परतवे आँ क़ल्ब सियाह।
कीमयाएस्त कि दर सोहबते दरवेशानस्त ॥

उंचे पेशश नेहद ताज तकब्बुर ख़ुर्शीद।
किब्रिआएस्त कि दर हश्मते दरवेशानस्त ॥

तेरे प्रेम में, मैं अपने दिल और जान से लग रहा हूँ। क्या इसीलिये तूने मुझसे शत्रुता कर रक्खी है ?

तेरी गली से बाहर मैं अपना क़दम कभी हटा ही नहीं सकता गोकि इस बे दिल के दिल में भी अन्यान्य सैकड़ों प्रकार की इच्छाएँ हैं।

एक छोटी सी बात को छोड़कर कि "हाफ़िज़" तुझसे अप्रसन्न है और तुझमें सभी अच्छाइयाँ हैं।

सबसे ऊँचे स्वर्ग-स्थान का उपवन साधुओं का एकान्तवास है और साधुओं की सेवा से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

प्रतिष्ठा के कोष पर विलक्षण तिलस्म बँधे होते हैं। उनपर अधिकार प्राप्त करना साधुगणों की कृपा-दृष्टि पर ही अवलम्बित है।

स्वर्ग का वह भवन जिसका रक्षक ही उसका दर्बान है, साधुओं के घूमने का केवल एक बाग़ है।

वह विलक्षण वस्तु, जिसकी छाया मात्र से ही अँधेरे हृदय में प्रकाश हो जाता है, साधुओं की सत्संगति में ही प्राप्त होती है।

वह प्रतिष्ठा जो सूर्य से भी उच्च है, साधुओं की सेविका है।

दौलते रा के नबाशद ग़मज़ आसेबे ज़वाल।
बे तकल्लुफ़ बिशनो दौलते दरवेशानस्त।।
ऐ तवंगर बफ़रोशीं हमा नख़वत कि तुरा।
सरो ज़र दर कफ़े हिम्मते दरवेशानस्त।।
ख़ुसरवाँ क़िब्लए हाजाते जहानंद वले।
सबबश बरंदगीए हज़रते दरवेशानस्त।।
रूए मक़सूद कि शाहाँ बदुआ मी तलबंद।
मज़हरश आइनए तलअते दरवेशानस्त।।
गंजे क़ारूं कि फ़रो मी रवद अज़ क़ह्‌ हनोज़।
ख़ांदाबाशी के हमज़ ग़ैरते दरवेशानस्त।।
अज़ करां ताबा करां लश्करे ज़ुलमस्त वले।
अज़ अज़ल ता ब-अबद फ़ुर्सते दरवेशानस्त।।
मन ग़ुलामे नज़रे आसिफ़े अह्‌दम कूरा।
सूरते ख़ाजिगिओ सीरते दरवेशानस्त।।
"हाफ़िज़" अर आबे हयाते अबदी मी तलबी।
मंबाश ख़ाके दरे ख़लवते दरवेशानस्त।।
"हाफ़िज़" ईंजा ब-अदब बाश कि सुलतानिओ मुल्क।
हमा अज़ बंदगीए हज़रते दरवेशानस्त।।

वह वैभव, जिसका पतन कभी सम्भव ही न हो साधुओं का ही है।

ऐ धनवान्! तेरा यह सब घमंड व्यर्थ है। तेरा अभ्युदय और पतन सब साधुओं के आशीर्वाद पर ही निर्भर है।

संसार के सम्राट, संसार की आवश्यकताओं को निस्सन्देह पूरा करते हैं। परन्तु वे साधुओं की सेवा के ही उपलक्ष में सम्राट बने हुए हैं।

अपने अभीष्ट पर पहुँचना, जिसके लिये बड़े बड़े सम्राट इच्छुक रहते हैं, केवल साधुओं के संसर्ग पर ही निर्भर है।

क़ारूँ का प्रसिद्ध ख़ज़ाना साधुओं की ही कोप-दृष्टि से अभी तक पृथ्वी के अन्दर वर्त्तमान है।

पृथ्वी के एक सिरे से लेकर दूसरे तक अत्याचारों और विपत्तियों के दल छाए हुए हैं। परन्तु अनादिकाल से अंत समय तक साधुओं को उनसे किसी प्रकार का भय नहीं है।

मैं इस ज़माने के मंत्री का सेवक हूँ। उसका मुख धनवानों के समान है और स्वभाव उदासीनों के समान।

ऐ "हाफ़िज़" यदि तू अमृतमय "आबे हयात्" के जल को पीना चाहता है तो साधुओं के दर की भस्म से ही वह प्राप्त किया जा सकता है।

ऐ "हाफ़िज़" यहाँ सर नवा कर चल। यह राज्य और यह वैभव सब साधुओं की सेवा का ही परिणाम हुआ करता है।

(१७)

रूए तु कस नदीदो हज़ारत रक़ीब हस्त ।
दर पर्दई हुनोज़ो सदद अंदलीब हस्त ।।
गर आमदम् बकूए तु चंदाँ ग़रीब नेस्त ।
चूं मन दरीं दयार फ़रावाँ ग़रीब हस्त ।।
हर चंद दोरम अज़ तु कि दूर अज़ तु कस मबाद ।
लेकिन उमीदे वस्ले तू अम अनक़रीब हस्त ।।
दर इश्क़े ख़ानक़ाहो ख़राबात फ़र्क़ नेस्त ।
हर जा के हस्त परतवे रूए हबीब हस्त ।।
आँजा के कारे सोमा रा जलवा मी देहंद ।
नामूसे दैरे राहिबो नामे सलीब हस्त ।।
आशिक़ कि शुद के यार बहालश नज़र न कर्द ।
ऐ ख़ाजा दर्द नेस्त वगरना तबीब हस्त ।।
फ़रयादे "हाफ़िज़ी" हमा आख़िर बहर्ज़े नेस्त ।
हम क़िस्सए ग़रीबो हदीसे अजीब हस्त ।।

---

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहस्रों के दिलों में उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ों तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मैं तेरी गली में आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मैं तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओं के निवास स्थान और शराबख़ाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यों न हो यार के मुख का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सम्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज़्ज़त की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी उपस्थित है, परन्तु उसमें लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाफ़िज़ व्यर्थ में ही यह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जाँ यारे दिलनवाज़म शुक्रेस्त बा शिकायत।
गर नुक़तादाने इश्क़ी ख़ुश बिश्नो ईं हिकायत॥
बे मुज़्द बूदो मिन्नत हर ख़िदमते कि करदम।
यारब मबाद कसरा मख़दूमे बे इनायत॥
रिंदाने तिश्ना लब रा आबे नमी देहद कस।
गोई वली शनासां रफ़्तंद ज़ीं विलायत॥
दर ज़ुल्फ़ चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच काँजा।
सरहा बुरीद बीनी बे जुर्मो बे जनायत॥
चश्मत ब ग़म्ज़ा मारा ख़ूं रेख़्त मी पसंदी।
जाना रवा न बाशद ख़ूंरेज़ रा हिमायत॥
दरीं शबे सियाहम गुमगश्त राहे मक़सूद।
अज़ गोशए बुरू आ ऐ कोकबे हिदायत॥
अज़ हर तरफ़ के रफ़्तम जुज़ वह्शतम नयफ़ज़ूद।
ज़िनहार अज़ीं बयाबाँ वीं राहे बे निहायत॥

---

(१८)

मैं अपने उस मित्र को, जो इस हृदय को प्रसन्न करने वाला है, धन्यवाद देता हूँ, परन्तु शिकायत के साथ। यदि तू प्रणय के भेदों का ज्ञाता है तो इस कथा को आनन्द से सुन।

मैंने जो सेवा की थी उसका न तो कुछ अहसान ही था और न उसके प्रति कोई कृतज्ञता ही प्रकट की गई थी। भगवान् किसी का स्वामी कठोर न हो।

प्यासे उदासियों को पीने के लिये कोई थोड़ा पानी भी नहीं देता है। मानो उन सिद्ध पुरुषों को परखने वाले इस देश में है ही नहीं।

ऐ हृदय! देख सँभल जा और उसकी काली अलकों के जाल में मत फंस। वहाँ पर सैकड़ों निरपराधियों के सिर कटे हुए मौजूद हैं।

तेरी आँख ने अपनी मानलीला दिखला कर हमको मार डाला है, परन्तु तू इस कार्य को बुरा नहीं समझता है। ऐ जान! हत्यारों की सहायता करना उचित नहीं है।

इस अंधेरी रात में अपने लक्ष्य पर पहुँचाने वाले मार्ग से भटक गया हूँ। ऐ मार्ग-दर्शक तारे! तू ही किसी कोने से निकल कर मुझे ठीक मार्ग पर पहुँचा दे।

मैं चारो तरफ़ फिर आया परन्तु भटकने के अतिरिक्त हाथ कुछ भी नहीं आया। अब इस बीहड़ मार्ग से पनाह मांगता हूँ।

ईं राह रा निहायत सूरत कुजा तवाँ बस्त।
कश सद हज़ार मंज़िल बेशस्त दर बदायत॥

ऐ आफ़ाबे ख़ूबाँ मी जोशद अंदरूनम।
यक साअतम बगुंजाँ दर सायए हिमायत॥

हर चंद बरूए आबम रू अज़ दरत न ताबम।
जौर अज़ हबीबो ख़ुश्तर कज़ मुद्दई रियायत॥

इश्क़त रसद ब फ़रयाद गर ख़ुद बसाने "हाफ़िज़"।
क़ुरआँ ज़े बर बख़ानी दर चार दह रवायत॥

(१९)

ज़ाहिदे ज़ाहिर परस्त अज़ हाले मा आगाह नेस्त।
दर हक़्क़े मा हर चे गोयद जाय हेच इकराह नेस्त॥

दर तरीक़त हर चे पेशे सालिक आयद ख़ैरे ऊस्त।
बर सिराते मुस्तक़ीम ऐ दिल कसे गुमराह नेस्त॥

ता चे बाज़ी रुख़ नुमायद बैज़क़े ख़ाहम राँद।
अर्सए शतरंज रिंदाँ रा मजाले शाह नेस्त॥

जिस मार्ग के आदि में ही सैकड़ों मंज़िलें पार करने को हैं, उसके अन्त के विषय में भला क्या कहा जा सकता है!

ऐ सुन्दरियों के सूर्य! मेरा हृदय उबाल खा रहा है। उसे एक क्षण भर के लिये अपने साथ लेकर शान्त कर दो।

तू चाहे जितने अत्याचार मेरे साथ कर और मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा लगा परन्तु मैं तेरे दरवाज़े से मुख न मोड़ूँगा, क्योंकि मित्र का अत्याचार शत्रु की कृपा से बढ़कर होता है।

प्रेम तेरी सहायता उसी अवस्था में करेगा जबकि तू क़ुरआन पढ़नेवालों के समान क़ुरआन को चौदह रवायतों के साथ ज़ुबानी पढ़ेगा।

(१९)

वह पवित्र मनुष्य जिसे केवल प्रकट बातों का ही ज्ञान है हमारी अवस्था नहीं जानता है। अतएव वह हमारे विषय में जो कुछ भी कह रहा है, उसमें बुरा न मानना चाहिये।

जो कुछ भी ईश्वर के मार्ग के पथिक पर बीत रहा है, वह सब उसकी भलाई के लिए हैं। ऐ हृदय! कोई मनुष्य सीधे मार्ग से भटक नहीं जाता है।

फ़क़ीरों की शतरंज में बादशाह के बढ़ने के लिये स्थान ही नहीं है। इसलिये बाज़ी को समझने के लिये हम अपना केवल एक ही प्यादा आगे मैदान में बढ़ायेंगे।

चीस्त ईं सक़फ़े बलंद सादए बिस्यार नक़्श।
ज़ीं मुअम्मा हेच दाना दर जहाँ आगाह नेस्त॥

ईं चे इसतिग़नास्त यारब वीं चे क़ादिर हिकमतस्त।
कीं हमा ज़ख़्मे निहानस्तो मजाले आह नेस्त॥

साहबे दीवाने मा गोई नमी दानद हिसाब।
कंदरीं तुग़रा निशाने हस्बतन लिल्लाह नेस्त॥

हर के ख़ाहद गो बेयाओ हर चे ख़ाहद गो बगो।
गीरो दारे हाजिबो दरबाँ दरीं दरगाह नेस्त॥

हर चे हस्त अज़ क़ामते ना साज़ बे अंदामे मस्त।
वर्ना तशरीफ़े तू बर बालाए कस कोताह नेस्त॥

बर दरे मैख़ाना रफ़्तन कारे यकरंगाँ बुवद।
ख़ुद फ़रोशांरा ब कूए मै फ़रोशां राह नेस्त॥

बंदए पीरे ख़राबातम के लुत्फ़श दाइमस्त।
वर्ना लुत्फ़े शेख़ो ज़ाहिद गाह हस्तो गाह नेस्त॥

यह ऊँची और सादी छत, जिसमें बहुत से बेल बूटे भी खिंचे हुए हैं, क्या वस्तु है। इस भेद को कोई भी मनुष्य नहीं जानता है।

हे ईश्वर! यह कैसी बेपरवाही और कैसी विलक्षण बात है। मुझमें सैकड़ों गुप्त घाव हैं, परन्तु उस पर भी उनकी पीड़ा के कारण हाय कहने का साहस नहीं है।

ऐसा ज्ञात होता है कि हमारे कोषाध्यक्ष को गणित नहीं आता है, क्योंकि उस पेचीदह प्रश्न में ईश्वर के लिये कोई निशान ही नहीं है।

जो आना चाहे उसे चला आने दो और जो कुछ वह कहना चाहे कहने दो। यह वह दर्बार है जिसमें जाने के लिये न तो दर्बान ही रोकता है और न कोई दूसरा अफ़सर।

तेरे दिये हुए वस्त्र और पोशाक ऐसी नहीं है जो किसी के शरीर पर छोटी हो सके। यदि यह मेरे शरीर में ठीक ठीक नहीं आती है तो यह उस बेढङ्ग बदन का ही दोष है।

शराबख़ाने में उन लोगों को जाना चाहिये जो कि एक ही रंग में रंगे हुए हैं। स्वार्थी मनुष्यों का वहाँ कोई काम नहीं है।

मैं तो उस मदिरा-गृह के स्वामी का सेवक हूँ। वह सदैव मेरे ऊपर कृपा-दृष्टि रखता है। वरन् पवित्र (कर्मकांडी) मनुष्य कभी तो दयालु हो जाते हैं और कभी नहीं।

"हाफ़िज़" अर बर सद्र न नशीनद ज़े आली मश्रबीस्त।
आशिक़ो दरूकश अंदर बंदे मालो जाह नेस्त ॥

(२०)

सीनाअम ज़े आतशे दिल दर ग़मेजानानाँ बसोख़्त।
अतिशी बूद दरीं ख़ाना कि काशाना बसोख़्त ॥
तनमज़ वास्तए दूरिए दिलबर बगुदाख़्त।
जानमज़ आतशे इश्क़े रुख़े जानानाँ बसोख़्त ॥
हर कि ज़ंजीरे सरे ज़ुल्फ़े परीरूए दीद।
दिल सौदा ज़दाअश बर मने दीवाना बसोख़्त ॥
सोज़ दिल बीं कि ज़े बस आतशे अश्क़म दिले शमा।
दोश बर मन ज़े सरे मेह चु परवाना बसोख़्त ॥
ख़िर्क़ए ज़ाहिद मरा आबे ख़राबात बबुर्द।
ख़ानए अक़्ले मरा आतशे ख़ुमख़ाना बसोख़्त ॥
आशनायां न ग़रीबस्त कि दिल सोज़े मनंद।
चूँ मन अज़ ख़ेश बिरफ़्तम दिले बेगाना बसोख़्त ॥
माजरा कम कुनो बाज़ आ कि मरा मरदुमे चश्म।
ख़िरक़ा अज़ सर बदर आवर्दो बशुक्राना बसोख़्त ॥

हाफ़िज़ अपने उच्च विचारों के ही कारण कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि तलछट पीने वाला प्रेमी किसी प्रकार की पदवी अथवा ऊँचे और नीचे स्थान की चिन्ता ही नहीं करता है।

(२०)

हृदय की अग्नि से मेरा सीना यार की जुदाई में जल गया है। इस घर की आग ने सारे घर को जलाकर भस्म कर डाला है।

प्यारे के विरह में मेरा शरीर घुल गया और उसके प्रणय ने मेरे प्राणों में ही आग लगा दी।

जिस मनुष्य ने किसी प्रियतमा की काली अलकों को देखा है, उसका आकुल हृदय मुझ पागल पर जलने लगा है।

मेरे हृदय की तपन को तो देखो कि मेरे आँसुओं की गर्मी के होते हुए भी दीपक का दिल पतंगे के समान, मुझ पर तरस खा के रात समय जल कर भस्म हो गया।

मेरी पवित्रता के लिबास को मदिरा-गृह के पानी ने डुबा दिया और वहाँ की अग्नि ने मेरी बुद्धि के घर को जला दिया।

मुझे पागल देखकर दूसरों का हृदय भी पिघल गया है, फिर यदि मेरे मित्र मेरे ऊपर दयालु हैं तो इसमें आश्चर्य करने की कौनसी बात है।

बहुत बातें बनाना उचित नहीं है। आओ, अब लौट आओ। मेरे शरीर ने तुम्हारे आगमन की प्रसन्नता में अपने वस्त्रों को भी जला डाला है।

चूँ प्याला दिलम अज़ तोबा कि करदम बिशकस्त।
हम चो लाला जिगरम बे मयो पैमाना बसोख़्त ॥
तर्कें अफ़साना बगो हाफ़िज़ो मैं नोश दमे।
कि न खुफ़्तेम शबो शमां ब अफ़साना बसोख़्त ॥

(२१)

शगुफ़्ता शुद गुले हमरा ओ गश्त बुलबुल मस्त।
सलाए सर ख़ुशी ऐ आशिक़ाने बादा परस्त ॥
असासे तौबा कि दर मोहकमी चु संग नमूद।
बबीं कि जाम ज़े जाजे चे तुर्फ़ाअश बिशकस्त ॥
बे आर बादा कि दरबारगाहे इसतिग़ाना।
चे पासबानो चे सुल्ताँ चे होशयारो चे मस्त ॥
दरीं रबाते दो दर चूं मुक़र्ररस्त रहील।
रवाक़े ताक़े मईशत चे सर बलंदो चे पस्त ॥
मक़ामे ऐश मयस्सर नमी शवद बे रंज।
बले बहुक्मे बला बस्ताअंद अहदे अलस्त ॥

मैंने जो आन खींची थी, उसके कारण मेरा हृदय प्याले के समान टूक टूक हो गया है और मदिरा और प्याले के बिना मेरा दिल लाला के फूल के समान जल गया है।

ऐ हाफ़िज़ ! अब इस कहानी को बन्द करदो और थोड़ी देर बैठकर मदिरा पी लो और दम ले लो। दीपक यह कहानी सुनते ही सुनते बुझ भी गया और हम भी इसी के सुनने में रात भर जगते रहे।

(२१)

लाल गुलाब खिल गया और बुलबुल उसके प्रणय में मतवाली हो उठी। ऐ मदिरा-भक्त प्रेमियो ! आज तो पीने के लिये सभी आमंत्रित किये गए हैं।

लोग कान पर हाथ रख कर कहते हैं और बड़ी ही दृढ़ता के साथ कि अब शराब कभी नहीं पियेंगें। परन्तु उनकी प्रतिज्ञायें, काँच का प्याला (यानी शराब) आते ही तोड़ डालता है।

इस दरबार में सभी लोग मस्त हैं। चौकीदार, बादशाह, चालाक और मतवाले सब समान हैं।

मदिरा लाओ उसे पियें। इस दो द्वारों वाली सराय में जब चलना निश्चित है तो फिर शान से जीवन बिताना या साधारण तौर पर रहना सब समान हैं।

जीवन व्यतीत करने के लिये ऊंचा घर हो या नीचा, कम समान हो या अधिक सब बराबर है क्योंकि यह सत्य है कि ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न करने के समय बिना दुख सहे सुख न मिलने का नियम था।

ब हस्तो नेस्त मरंजाँ ज़मीरो ख़ुश मी बाश।
कि नेस्तीस्त सरंजामे हर कमाल के हस्त ॥
शिकोहे आसफ़ीओ अस्पे बादो मंतिक़े तैर।
बबाद रफ़्तो अज़ाँ ख़ाजा हेच तर्फ़ न बस्त ॥
बबालो पर मरो अज़ रह के तीरे पर तावी।
हवा गिरिफ़ ज़माने वले बख़ाक निशस्त ॥
ज़बाने किल्के तु "हाफ़िज़" चे शुकराँ गोयद।
कि गुफ़्तए सख़ुनत मी बरंद दस्त ब दस्त ॥

(२२)

सुबह दम मुर्ग़ चमन बा गुले नौख़ास्ता गुफ़्।
नाज़ कम कुन कि दरीं बाग़ बसे चूं तु शगुफ़्॥
गुल ब ख़न्दीद कि अज़ रास्त न रंजेम वले।
हेच आशिक़ सख़ुने तल्ख़ बमाशूक़ न गुफ़् ॥
गर तमा दारी अज़ां जामे मुरस्सा मै लाल।
गौहरे अश्क बनो के मिज़ाअत बायद सुफ़् ॥
ता अबद बूए मोहब्बत ब मशामश न रसद।
हर कि ख़ाके दरे मैख़ाना बरुख़सारा नरफ़् ॥

परन्तु धनी और निर्धन होने का कोई सोच मत कर और प्रत्येक अवस्था में प्रसन्नचित्त रह। उत्थान के बाद पतन अवश्यम्भावी है।

अवसफ़ का रोब, हवा का घोड़ा और चिड़ियों की बोली यह सब वस्तुयें मिट गईं। और ख़्वाजा भी इस पृथ्वी से अपने साथ कुछ भी न ले जा सका।

यदि तू उन्नति कर के बड़ा आदमी हो जावे तो भी अपने मार्ग से विचलित न हो। तू एक धनुष से छोड़े हुये बाण के समान है जो थोड़ी देर हवा में उड़ कर ज़मीन पर गिर जाता है।

ऐ "हाफ़िज़"! तेरी लेखनी इस बात का धन्यवाद किस प्रकार दे कि तेरी कविता सर्वप्रिय हो रही है।

प्रभात-काल में बुलबुल ने नये खिले हुये पुष्प से कहा कि घमंड में बहुत ऐंठिये मत। इस उपवन में आप के समान बहुत से खिल चुके हैं।

फूल हँस कर बोला कि मैं सच्ची बात पर खेद नहीं करता। बात वास्तव में यह है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से कठोर बात नहीं कहा करता।

यदि तुझे इस सुन्दर सजे हुए प्याले से लाल मदिरा की इच्छा है तो तुझे अपनी पलकों की नोक से आँसुओं के मोती पिरोने चाहिये।

जिस मनुष्य ने मदिरा-गृह के दरवाज़े की धूल अपने गालों से नहीं झाड़ी उसके मस्तिष्क में प्रणय की सुगन्धि कभी भी नहीं पहुँचेगी।

दर गुलिस्ताने हरम दोश चो अज़ लुत्फ़े हवा।
ज़ुल्फ़े सुम्बुल ज़े नसीमें सहरी मी आशुफ़्त ।।
गुफ़्तम ऐ पसन्दे जम जामे जहां बीनत कू।
गुफ़्त अफ़सोस कि आँ दौलते बेदार न ख़ुफ़्त ।।
सख़ुने इश्क़ न आनस्त कि आयद बज़बाँ।
साक़िया मै देहो कोताह कुनीं गुफ़्त शुनुफ़्त ।।
अश्के "हाफ़िज़" ख़िरदो सब्र बदरिया अंदाख़्त।
चे कुनद सिर ग़मे इश्क़े न्यारस्त ने नेहुफ़्त ।।

(२३)

मारा ज़े आरज़ूए तू परवाए ख़्वाब नेस्त।
बेरूए दिलफ़रेबे तु बूदन सवाब नेस्त ।।
दर दौरे चश्मे मस्ते तु हुशियार कस न दीद।
कू दीदा कज़ तसव्वुरे चश्मत ख़राब नेस्त ।।
दर हर कि बिनगरी बग़मे अज़ तु मुबतिलास्त।
यक दिल न दीदा अम कि ज़ी इश्क़त कबाब नेस्त ।।
हर कू ब तेग़े इश्क़े तु शुद कुश्ता बर दरद।
ऊ रा दराँ हिसाबे सवालो जवाब नेस्त ।।

गत रात्रि को स्वर्ग के उपवन में जब वायु की उत्तमता से सम्बुल की अलकें प्रभात-कालीन वायु के साथ उलझ रही थीं,

तब मैंने कहा कि ऐ जमशेद के सिंहासन! तेरा प्याला वह कहां है जिसमें संसार का सारा दृश्य दिखलाई देता था?

उसने कहा कि शोक है। वह जानता हुआ सो गया है। प्रेम वार्त्तालाप ऐसा नहीं है कि उसका वर्णन किया जावे। ऐ साक़ी! मदिरा ला। इस बात-चीत को समाप्त कर।

"हाफ़िज़" के आंसुओं ने ज्ञान और धैर्य को नदी में बहा दिया वह करता ही क्या! अपनी प्रणय-पीड़ा के रहस्य को गुप्त न रख सका।

तेरे मिलन की इच्छा में मैंने सोने की भी चिन्ता छोड़ दी है और तेरी मोहक छबि के बिना अब अकेले रहना अच्छा नहीं लगता है।

तेरी मतवाली चितवन सभी को मोह लेती है। ऐसी कोई भी आँख नहीं है जो उसके लिये व्याकुल न हो रही हो।

सभी मनुष्य तेरे कारण शोकित हो रहे हैं। मैंने ऐसा एक भी हृदय नहीं देखा जो तेरे प्रणय की अग्नि में जला न जा रहा हो।

जो कोई मनुष्य तेरे दर्वाज़े पर प्रेम रूपी तलवार के घाट उतारा गया है, उससे मरने के उपरान्त किसी प्रकार के प्रश्न नहीं किये जायँगे।

हाफ़िज़ चु ज़र बबूता दर उफ़्तादो ताब याफ़्त ।
आशिक़ न बाशद आँ कि चु ज़र ऊ बताब नेस्त ॥

(२४)

दर अज़ल परतवे हुसनत ज़े तजल्ली दम ज़द ।
इश्क़ पैदा शुदो आतिश बहमा आलमज़द ॥
जल्वए कर्द रुख़त दीद मुल्के इश्क़ न दाश्त ।
ऐन आतिश शुद अज़ीं ग़ैरतो बर आदम ज़द ॥
अक़्ल मीं ख़्वास्त कज़ाँ शोला चराग़ अफ़रोज़द ।
बर्क़ ग़ैरत बदरख़शीदो जहाँ बरहम ज़द ॥
मुद्दई ख़्वास्त कि आयद बतमाशा गहे राज़ ।
दस्ते ग़ैब आमदो बर सीनये ना महरम ज़द ॥
दीगराँ क़ुर्रए क़िस्मत हमा बर ऐश ज़दन्द ।
दिले ग़म दीदए मा बूद कि हम बर ग़म ज़द ॥
जाने अलवी हवसे चाह ज़नख़दाँ तो दाश्त ।
दस्त दर हल्क़ए आँ ज़ुल्फ़ ख़म अन्दर ख़मज़द ॥

प्रेमी सोने के समान घरिया में पड़कर ताव खा गया। वह प्रेमी जो सोने के समान तपाया गया हो वास्तविक प्रेमी नहीं कहा जा सकता है।

(२४)

सृष्टि के आदि में तेरे प्रतिविम्ब ने चमत्कार का विकास किया, अर्थात् तेरा जलवा प्रगट हुआ। उससे वह प्रेम उत्पन्न हुआ जिसने सारे संसार में आग लगा दी।

तेरे मुख ने अपनी प्रभा दिखला कर देखा कि स्वर्गीय दूतों में प्रेम था ही नहीं। इस पर उसे क्रोध आगया और इसी से दुःखी तथा लज्जित होकर वह आदम के ऊपर जा पड़ा।

बुद्धि यह चाहती थी कि उस प्रेम की लपट से अपना दीपक जला ले परन्तु लज्जा की बिजली ने चमक कर सम्पूर्ण संसार को परेशान कर दिया।

प्रणय का झूठा दावा करने वाले ने यह चाहा कि वह उस रहस्यों से भरे हुए उपवन की सैर करे, परन्तु अदृष्ट से एक ऐसा हाथ निकला जिसने उसे धक्का देकर पीछे लौटा दिया।

अन्यान्य सभी लोगों ने भोग विलास और आनन्दोपभोग को पसन्द किया परन्तु तेरे दुःखित हृदय ने पुनः उसी पीड़ा को पसन्द किया।

ऐ साहसी प्राण! तेरा साहस बहुत ही बढ़ा-चढ़ा था। इसी लिये उसने उन घुँघराली अलकों तक अपना हाथ बढ़ा दिया।

"हाफ़िज़" आँ रोज़ तरबनामये इश्क़े तो नविश्त।
कि क़लम बर सरे असबाब दिले ख़ुर्रम ज़द॥

(२५)

दर हर हवा कि जुज़ बर्क़ अन्दर तलब न बाशद।
गर ख़िरमने ब सोज़द चन्दाँ अजब न बाशद॥
मुर्ग़े कि बाग़मे दिल शुद उल्फ़तेश हासिल।
बर शाख़सार उम्रश बर्गे तरब न बाशद॥
दर कारख़ानये इश्क़ अज़ कुफ़्र ना गुज़ीर अस्त।
आतश करा ब सोज़द गर बूलहब न बाशद॥
दर महफ़िले कि ख़ुरशेद अन्दर शुमारो ज़र्ह अस्त।
ख़ुद रा बुज़ुर्ग दीदन शर्ते अदब न बाशद॥
दर केश जाँ फ़रोशां फ़ज़्लो अदब न बाशद।
ईंजा नसब न गुंजद आँ जा हसब न बाशद॥
मै ख़ुर के उम्रे सरमद गर दर जहाँ तवाँ याफ़्त।
जुज़ बादऐ बहिश्ती हेचश सबब न बाशद॥

हाफ़िज़ ने प्रेम और आनन्द से परिपूर्ण पत्र उसी दिन लिखा जिस दिन उसने आनन्दोपभोग की सभी सामिग्रियों को दूर कर दिया।

(२५)

उस वायुमंडल में, जहाँ प्रेमी को विद्युत् के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु नहीं मिलती है, उस स्थान में यदि कोई खलियान जल जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

वह जीव, जिसने प्रणय-पीड़ा से अपनी लगन लगा ली है, कभी फलता फूलता हुआ नहीं दिखलाई देगा।

प्रणय-मन्दिर में ईश्वर के नाम का उच्चारण न करना ही उचित है। जब वहाँ नास्तिकता का निवास होगा तो फिर भय किस वस्तु का रह जायगा। अगर बूलहब (रसूल का चचा) न हो तो आग किसको जला देगी।

जिस भवन में सूर्य एक कण के समान समझा जाता है वहाँ अपनी प्रतिष्ठा का विचार भी करना अनुचित है।

जो लोग प्राणों पर खेल जाने के लिये उद्यत् हैं उनके धर्म्म में बुद्धि और ज्ञान के लिये कोई स्थान नहीं है। प्रतिष्ठा, पद और मान का भी कोई काम वहाँ नहीं है।

स्वर्ग यदि प्राप्त किया जा सकता है तो मदिरा द्वारा। संसार में जीवन यदि अमर बनाया जा सकता है तो उसी के द्वारा। इसलिये मदिरा पान कर।

"हाफ़िज़" विसाल जानाँ बा चूँ तो तंगदस्ती।
रोज़े शवद कि बा आँ पैवन्द शव न बाशद॥

(२६)

दस्त अज़ तलब न दारम ता कामे मन बर आयद।
या तन रसद ब जानाँ या जाँ ज़े तन बर आयद॥
जाँ बर लब अस्तो हसरत दर दिल कि अज़ लबानश।
नगिरफ़्ता हेच कामे जाँ अज़ बदन बर आयद॥
अज़ हसरते दहानश आमद बतंग जानम्।
ख़ुद कामे तंगदस्ताँ कि जाँ दहन बर आयद॥
ब नुमाये रुख़ कि ख़ल्के बाला शवंदो हैरां।
ब कुशाये लब कि फ़रयाद अज़ मर्दो ज़न बर आयद॥
गुफ़्तम् ब ख़ेश कज़ वै बर दार दिल दिलम गुफ़्।
कार कीस्त ईं कू बा ख़ेशतन बर आयद॥
ब कुशाये तुरबतम् रा बाद अज़ वफ़ातो बनगर।
कज़ आतिशे दरूनम् दूदे कफ़न बर आयद॥
बर बूये आँ कि दर बाग़ या बुद गुले चो रूयत।
आयद नसीम हरदम गिर्दे चमन बर आयद॥

ऐ कंजूस "हाफ़िज़"! यदि तुझे तेरी प्रियतमा मिलेगी भी तो मृत्यु के दिन।

(२६)

मैं अपनी लगन से हाथ तब तक न खींचूँगा जब तक कि मेरी इच्छा पूर्ण न हो जायगी या तो यह शरीर प्रियतमा तक पहुँच जावेगा या इसमें से प्राण ही निकल जावेंगे।

प्राण निकलना चाहते हैं पर हृदय में अभी यह लालसा शेष है कि प्रियतमा के ओठों का स्वाद चख लिया जावे।

उसका मुख देखने की इच्छा से मेरे प्राण आकुल हो रहे हैं। मेरे समान बेचारों का यह अभीष्ट कैसे सिद्ध हो सकता है।

अपने मुख पर से घूँघट हटा ले जिससे तेरी रूप-सुधा का पान कर संसार चकित हो जावे और प्रेम में मतवाला हो जावे।

और अपने ओठ खोल दे ताकि सब कोई चिल्लाने लगें। मैंने अपने हृदय से कहा कि अब उसका ध्यान छोड़ दे।

उत्तर मिला कि यह कार्य वही कर सकता है, जिसे अपने ऊपर अधिकार हो।

मृत्यु के उपरान्त मेरी समाधि खोलकर देखना कि मेरे हृदय की अग्नि के कारण मेरे कफ़न से धुआँ निकलता हुआ दिखलाई देगा।

हर यक शिकन ज़े ज़ुल्फ़त पंजाए शश्त दारद।
चं ईं दिले शकिस्ता बा आँ शिकन बर आयद॥

बरख़ेज़ ता चमन रा अज़ क़ामतो क़यामत।
हम सर्व दर बर आयद हम नारवन बर आयद॥

हरदम चु बेवफ़ाया न तवाँ गिरफ़ यारे।
मायेमो ख़ाके कूयश ता जाँ ज़े तन बर आयद॥

गोयंद ज़िक्र ख़ैरश दर ख़ैले इश्क़बाज़ां।
हर जा कि नामे "हाफ़िज़" दर अंजुमन बर आयद॥

(२७)

दिला बसोज़ कि सोज़े तु कारहा बकुनद।
नियाज़े नीम शबी दफ़ए सद बला बकुनद॥

अताबे यारे परी चेहरा आशिक़ाना बकुश।
कि यक करिश्मा तलाफ़ी सद जफ़ा बकुनद॥

ज़े मुल्क ता मलकूतश हिजाब बर दारद।
हर आँ कि ख़िदमते जामे जहांनुमा बकुनद॥

तुम्हारे मुख के समान फूल देखने की आशा से वायु दिन भर बाग़ के चक्कर काटा करती है। तुम्हारी प्रत्येक लट में पचास पचास फंदे पड़े हुए हैं। भला यह टूटा हुआ हृदय उनसे किस प्रकार जीत सकता है।

तू उठकर चल जिससे कि उपवन में सरो और नारून के वृक्ष उत्पन्न हों। और वह भी तेरे क़द और तेरे चलने की शोभा से।

हर समय हृदय-हीन मनुष्यों के समान नये २ मित्रों को बनाना उचित नहीं है। हम उसकी गली की धूल के समान रहेंगे जब तक कि शरीर में प्राण हैं।

प्रेमियों के जमाव में उसकी कुशलता के समाचार क्यों सुनाये जाते हैं उसमें तो हाफ़िज़ का भी नाम आ जाता है।

(२७)

ऐ हृदय तू जल। तेरी जलन से अनेक कार्य पूर्ण होंगे और अर्द्धरात्रि की प्रार्थना सहस्रों विपत्तियों को टाल देती है।

उस अप्सरा के समान सुन्दर प्रेमिका के रूठने को प्रेमियों के समान सहन कर। यदि उसने तेरी तरफ़ एक भी कृपा-कटाक्ष फेंक दिया तो सैकड़ों झिड़कियों का बदला मिल जायगा।

वह मनुष्य जो अपने हृदय की सेवा में तत्पर है, बहुत ही अच्छा है। उसके लिये पृथ्वी से लेकर आकाश तक के सारे परदे उठा दिये जायँगे।

तबीबे इश्क़े मसीहा दमस्ते मुशफ़िक़ लेक।
चु दर्द दर तौ न बीनद कियत दवा बकुनद॥
तु बा ख़ुदाए ख़ुदंदाज़ कारए ओ दिल ख़शदार।
कि रह्म अगर न कुनद मुदई ख़ुदा बकुनद॥
ज़े बख़्ते ख़ुफ़्ता मल्लूलम बुवद कि बेदारे।
बवक़्ते फ़ातहा सबह यक दुवा बकुनद॥
बसोख़्त हाफ़िज़ो बूए ज़ुल्फ़े यार नबुर्द।
मगर दलालते ईं दौलतश सबा बकुनद॥

(२८)

वले कि ग़ैब नुमायस्त जामे जम दारद।
ज़े ख़ात्मे कि दमे गुम शुद चे ग़म दारद॥
बख़त्तो ख़ाल गदायाँ मदेह ख़ज़ीनए दिल।
बदस्ते शाहो शै देह कि महतरम दारद॥
दिलम् कि लाफ़ तजर्रुदज़दी कनूँ सद शग़ल।
बबूए ज़ुल्फ़ तो बा बादे सुबहदम दारद॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औषधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता!

"हाफ़िज़" प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोष को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख़्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए ख़िज़ाँ।
ग़ुलाम हिम्मते सर्दम कि ईं क़दम दारद ।।

रसीद मौसमे आँ कज़ तरब चु नरगिस मस्त।
नेहद बपाए क़दह हर कि शश दरम दारद ।।

ज़े राज़े बहाए मी अकनूँ चु गिल दरेग़ न दार।
कि अक़्ले कुल बसदते ऐब मुत्तहम दारद ।।

मुराद दिलज़ कि जोयम कि नेस्त दिलदारी।
कि जल्वए नज़रो शेवए करम दारद ।।

ज़े सिर्रे ग़ैब कस आगाह नेस्त ऐब मज़ोए।
कदाम महरमे दिल रह दरीं हरम दारद ।।

ज़े जेबे ख़िर्क़ए "हाफ़िज़" चे तर्फ़ो ब तवां बस्त।
कि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद ।।

(२९)

दमे बा ग़म बसर जहाँ यकसर नमी अरज़द।
बमै बफ़रोश दिल्क़े मा कज़ीं बेहतर नमी अरज़द ।।

प्रत्येक वृक्ष पतझड़ के अत्याचार को सहन नहीं कर सकता। मैं सरो के वृक्ष के साहस का क़ायल हूँ। उसी में इतनी सहनशीलता वर्त्तमान है।

अब वह ऋतु आ गई है कि लोग मतवाले हो कर मदिरा के पैरों पर अपना सर्वस्व लुटा दें। इस समय मदिरा का मूल्य देने में आगा पीछा न कर।

यह वह प्याला है जो कि गुलाब के समान अपने कोष को छिपाये हुये है। यदि तू ऐसा करेगा तो स्वर्गीय दूत सैकड़ों दोष तेरे मत्थे मढ़ देगा।

मैं किससे कहूँ कि मेरे हृदय की अभिलाषा को पूरा कर दे। एक भी यार ऐसा नहीं है जो मेरी दृष्टि के सम्मुख मुझे लुभाने के लिए आवे और दया दृष्टि दिखलावे।

अदृष्ट के रहस्यों को कोई नहीं जानता है और न उनके समझने का प्रयत्न करो। हृदय के रहस्यों से परिचित भी कोई जीव ऐसा नहीं है जो वहाँ तक पहुँच सके।

"हाफ़िज़" की गुदड़ी की जेब से क्या लाभ उठाया जा सकता है! हम तो ईश्वर को ढूढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं और उसमें मूर्त्ति वर्त्तमान है।

(२९)

दुःख में एक क्षण भी व्यतीत करना संसार के सम्पूर्ण सुखों से कहीं बढ़कर है। हमारी गुदड़ी को मदिरा से बदल ले। गुदड़ी का मूल्य उससे बढ़कर नहीं है।

बकूए मी फ़रोशानश बजामे बर नमी गीरंद।
ज़हे सज्जादए तक़वा कि यक साग़िर नमी अरज़द ॥

रक़ीबम् सरज़नशहा कर्द कज़ीं बाबे रुख़े बर ताब।
चे उफ़्ताद ईं सरे मारा कि ख़ाके दर नमी अरज़द ॥

तुरा आँ बेह कि रूए ख़ुद ज़े मुश्ताक़ाँ बपोशानी।
कि शादीए जहाँगीरी ग़मे लश्कर नमी अरज़द ॥

दयारो यार मरदम रा मुक़ीदे मी कुनद वर्ना।
चे जाए फ़ारसे कीं मेहनत जहाँ यकसर नमी अरज़द ॥

बिशो ईं नक़्शे दिल तंगी कि दर बाज़ारे यकरंगी।
मुरक़्क़ाहाये गूनागूं मए अहमद नमी अरज़द ॥

शिकोहे ताजे सुलतानी कि बीमे जाँ व राँ रह अस्त।
कुलाहे दिलकशस्त अम्मा तबर्रुक सर नमी अरज़द ॥

बस आसाँ मीं नमूद अव्वल ग़मे दरिया बबोए सूद।
ग़लत करदम कि एक मौजश बसद गौहर नमी अरज़द ॥

मदिरा बेचने वालों की गली में तो उसका मूल्य एक प्याला भी नहीं समझा जाता। आख़िर यह पवित्रता है क्या वस्तु जो एक प्याले के बराबर भी नहीं है।

मेरे प्रतिद्वन्दी ने मुझसे बहुत सी तीखी बातें कहकर उस दरवाज़े को छोड़ देने की आज्ञा दी। न मालूम मेरे इस सर को क्या हो गया है कि वह उस द्वार की धूल होने योग्य भी नहीं है।

ऐ प्रियतमा! तेरे लिये अपने प्रेमियों से मुँह छिपा लेना उत्तम होगा। संसार-विजय से जो प्रसन्नता होती है वह उस चिन्ता की समानता नहीं कर सकती जो सेना के प्रति होती है।

देश और मित्रों ने मुझे बाँध रक्खा है अन्यथा फ़ारस क्या एक संसार भी फ़िकर करने योग्य नहीं है।

इस हृदय के धब्बों को धोकर साफ़ कर डाल। विश्वास की हाट में यह साफ़ गुदड़ी लाल मदिरा के ही भाव में ली जाती है।

बादशाही ताज एक सुन्दर और मनोहर वस्तु है। एक बहुत बड़ी शान की चीज़ है। उसमें प्राण जाने का भय भी है। परन्तु वह सर दर्द के सम्मुख कुछ भी मूल्य नहीं रखता।

पहले पहल नदी को देखकर जो भय उत्पन्न होता है वह लाभ की आशा में बहुत ही सरल ज्ञात होता है। परन्तु मैंने भूल की। उसकी एक लहर सौ मोतियों से भी बढ़कर है।

बरो गंजे क़नायत जो बकुंजे आफ़ियत बिनशीं।
कि यकदम तंग दिल बूदन ब बह्रो बर नमी अरज़द ॥
चु "हाफ़िज़" दर क़नाअत कोश अज़ दुनियाए दूँ बगुज़र।
कि यक जौ मिन्नते दोना दो सद मन ज़र नमी अरज़द ॥

(३०)

राहे बे ज़न कि आहे बर साज़े आँ तवाँज़द।
शेरे बख़वाँ कि बा आँ रतले गिराँ तवाँज़द।
बर आसताने जानाँ गर सर तवाँ निहादन।
गुलबाँगे सर बलन्दी बर आस्माँ तवाँज़द ॥
क़दे ख़मीदए मा सहलत नुमायद अमाँ।
बर चश्मे दुश्मनाँ तीर अज़ीं कमाँ तवाँ ज़द ॥
दर ख़ानक़ह न गुंजद इसरारे इश्क़बाज़ी।
जामे मये मुग़ाना हम बा मुग़ाँ तवाँज़द ॥
दरवेश रा न बाशद नुज़्ले सराये सुल्ताँ।
मायेम व कोहना दलक़े कातश दराँ तवाँज़द ॥

जाकर किसी धैर्य्य के कोने को ढूंढ़ और उसमें बैठकर कुछ देर विश्राम कर ले। थोड़ी सी पीड़ा की बराबरी समस्त संसार की तरी और ख़ुश्की भी नहीं कर सकती।

"हाफ़िज़" के समान धैर्य्य धारण करने का प्रयत्न कर और इस निरुद्योगी संसार से दूर हो जा। नीच मनुष्यों से जौ बराबर भलाई की उम्मीद करना कठिन है।

(३०)

ऐ बजाने वाले कोई ऐसी गति बजा जिससे हृदय में पीड़ा उत्पन्न हो। और कोई ऐसी रागिनी अलाप कि जिससे मदिरा का एक बहुत बड़ा प्याला पिया जा सके।

यार की चौखट पर सर रखना एक बहुत बड़ी प्रतिष्ठा की बात है। यदि संयोग से ऐसा किया जा सके तो आनन्द से परिपूर्ण शब्दों से आकाश तक गुँजाया जा सकता है।

हमारे झुके हुये शरीर को तू अच्छा नहीं समझता परन्तु यह वह धनुष है जिसके बाण से शत्रु का नेत्र फोड़ा जा सकता है।

इस रहस्यमय हृदय के अन्दर प्रेम के रहस्यों के लिये पर्याप्त स्थान नहीं है। अब मदिरा बेचने वाले की मदिरा का प्याला उसी के साथ पीना चाहिये।

उदासियों के पास राजसी भवनों को सुसज्जित करने का सामान कहाँ से आया। उनके पास तो केवल गुदड़ियाँ हैं और वह भी पुरानी, जिनमें आग लगाई जा सकती है।

अह्ले नज़र दो आलम दर यक नज़र वे बाज़द।
इश्क़स्तो दावे अव्वल बर नक़्दे जाँ तवाँज़द॥
गर दौलते विसालत ख़ाहद दरी कशूदन।
सरहा बदीं तख़य्युल बर आस्ताँ तवाँज़द॥
बा अक़्लो फ़हमो दानिश दादे सख़ुन तवाँ दाद।
चूँ जम्मा शुद मआनी गूये बयाँ तवाँज़द॥
शुद रहज़ने सलामत ज़ुल्फ़े तो वीं अजब नेस्त।
गर राहज़न तु बाशी सद कारवाँ तवाँज़द॥
अज़ शर्म दर हिजाबम साक़ी तलत्तुफ़ कुन।
बाशद के बोसए चंद बरआँ दहाँ तवाँज़द॥
बर चोबयारे चश्मम् गर साया अफ़गनद दोस्त।
बर ख़ाके रह गुज़ारश आबे रवाँ तवाँज़द॥
बर अज़्मे कामरानी फ़ाले बज़न चे दानी।
मुमकिन के गूये दौलत दरईं जहाँ तवाँज़द॥
ईश्क़ो शबाबो रिन्दी मजमए मुरादस्त।
साक़ी बेआ के जामे दर ईं ज़माँ तवाँज़द॥

प्रेमी मनुष्य प्रेमिका के एक ही कटाक्ष पर दोनों जहानों को न्यौछावर कर देते हैं। प्रणय का प्रारम्भ हो गया है। उसके लिये अपने प्राणों की बाज़ी लगाना चाहिये।

यदि सौभाग्य से तू अपने अगणित प्रेमियों से मिलने के लिये उद्यत हो जाय तो बहुत से सर तेरी चौखट से ही टकरा जायँ।

बुद्धि, ज्ञान और विद्या के बल से कविता में मिठास भरी जा सकती है। जब बहुत से विषय इकट्ठे हो जायँ तो कविता का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

तेरी घुँघराली अलकों ने मेरे धैर्य को लूट लिया और इसमें कोई आश्चर्य्य की बात भी नहीं है। यदि तू लुटेरा होता तो प्रेमियों के सहस्रों क़ाफ़िलों को लूट सकता था।

मुझे झेंप लग रही है। ऐ साक़ी! तू मेरे ऊपर दया दिखला। तेरी कृपा के आधार पर ही संभव है कि मैं उसके मुख का कुछ चुम्बन ले सकूँ।

मैं अपने मित्र के मार्ग की धूल पर अपनी आँखों के आँसुओं से छिड़काव कर सकता हूँ।

सफलता की आशा रख कर तू अपना कार्य आरम्भ कर दे। मैं नहीं कह सकता हूँ कि परिणाम क्या होगा। सम्भव है कि सौभाग्य की बाज़ी तू इस संसार में जीत ले।

प्रेम, युवावस्था और फ़क़ीरी यह वस्तुयें अभिलाषा की जड़ हैं। साक़ी आगे बढ़। इस थोड़े से जीवन में ही एक प्याला पिया जा सकता है।

"हाफ़िज़" बहक़क़े क़ुरआँ कज़रिज़्क़ो शीर बाज़ आ।
बाशद कि गूये दौलत बा मुख़लिसाँ तवाँज़द ॥

(३१)

सालहा दिल तलबे जामे जम अज़ मा मी कर्द।
उँचे ख़ुद्दाश्त ज़े बेगाना तमन्ना मी कर्द ॥
गौहरे कज़ सदफ़े कौनो मकाँ बेरूनस्त।
तलब अज़ गुमशुदगाने लबे दरिया मी कर्द ॥
मुश्किले ख़ेश बरज़ पीरे मुग़ाँ पुर्दम दोश।
कू बताइदे नज़र हल्ले मोअम्मा मी कर्द ॥
दोदमश ख़ुर्रमों ख़ुशदिल क़दहे बादा बदस्त।
वंदराँ आईना सद गूना तमाशा मी कर्द ॥
गुफ़्तमीं जामे जहाँ बीं बतू कै दाद हकीम।
गुफ़्तआँ रोज़केईं गुम्बदे मीना मी कर्द ॥
आँ हमाँ शोब्दहा अक़्ल कि मी कर्द आँजा।
सामरी पेशे असाओ यदे बैज़ा मी कर्द ॥

ऐ "हाफ़िज" ! तू धर्म (क़ुरान) के लिये अपने हृदय की चिन्ता और बनावटी बातों को त्याग दे। कदाचित् तू संत मनुष्यों की संगति को प्राप्त कर सुखी हो सके।

(३१)

वर्षों से मेरा हृदय उस अमृतमय प्याले (जामे जम) की खोज में था। उसे यह भी नहीं ज्ञात था कि वह प्याला उसी के पास वर्त्तमान था।

उसे दूसरों से माँगने की क्या आवश्यकता थी ! जो मोती संसार की पहुँच से परे है उसको वह उन लोगों से माँगता था जोकि उचित मार्ग से भटके हुये थे।

मैं अपनी इस कठिनता को उन साधु महात्मा से कहने गया जोकि अपनी दृष्टि की सहायता से बड़ी २ कठिन पहेलियों को हल कर देते थे।

मैंने देखा कि वह बड़े ही आनन्द से मदिरा का प्याला हाथ में लिये बैठे हैं। और उसी मदिरा रूपी दर्पण में नाना प्रकार की सैरें देख रहे हैं।

मैंने उससे पूछा कि यह प्याला तुझे किस प्रकार प्राप्त हुआ। उसने कहा कि जिस दिन वह वैद्य यह गेंद (संसार) बना रहा था, उसी दिन उसी से मुझे यह प्राप्त हुआ है।

बुद्धि वहाँ एक से एक बढ़कर आश्चर्यमय कार्य करके दिखलाती थी। कभी किसी रूप में और कभी किसी रूप में। जैसा हज़रत मूसा और सामरी ने बुद्धि के बल से किया था।

बेदिली दर हमा अहवाले ख़ुदा बा ऊ बूद।
ऊ नमी दीदशो अज़ दूर ख़ुदारा मी कर्द॥

गुफ़्त आँ यार कज़ू गश्त सरे दार बलंद।
जुर्मश ईं बूद कि इसरार हवेदा मी कर्द॥

फ़ैज़े रूहुलक़ुदस अर बाज़ मदद फ़रमायद।
दीगराँ हम बे कुनद उंचे मसीहा मी कर्द॥

गुफ़्तमश ज़ुल्फ़ चु ज़ंजीर बुताँ अज़ पए चीस्त।
गुफ़्त "हाफ़िज़" गिलए अज़ दिले शैदा मी कर्द॥

(३२)

सहर बुलबुल हिकायत बासबा कर्द।
कि इश्क़ रूये गुले बामा चहा कर्द॥

अज़ाँ रंगे रुख़म ख़ूँ दर दिल अफ़्ग़ंद।
वज़ीं गुल्शन ब ख़ारम् मुब्तला कर्द॥

गुलामे हिम्मते आँ नाज़नीनम।
कि कारे ख़ैर बे रूओ रेया कर्द॥

एक ऐसा प्रेमी था कि जिसके साथ ईश्वर प्रत्येक अवस्था में वर्त्तमान रहता था परन्तु वह उन्हें देख नहीं पाता था और दूर से उनका नाम ले ले कर पुकारता था।

उस यार ने कहा कि उसे (मंसूर) को शूली मिलने का कारण यही था कि वह प्रणय के रहस्यों को समझ गया था और उन्हें खोलता था।

यदि यह पवित्र आत्मा फिर से सहायता करे तो अन्य लोग भी वही करने लगें जो ईसा किया करते थे (मृतकों को जिला देना और रोगियों को चंगा कर देना।)

मैंने उससे पूछा कि तेरी यह ज़ंजीर के समान अलकें किस लिये हैं। उसने उत्तर दिया कि "हाफ़िज़" अपने पागल दिल की शिकायत करता था, इसलिये उस पागल को बाँधने के लिये।

(३२)

सुबह को बुलबुल ने प्रभात कालीन वायु से कहा कि देखो पुष्प के रूप ने मेरी कैसी अवस्था कर दी है। उसके प्रेम में पड़कर मैं इस अवस्था को पहुँच गया हूँ।

अपने रूप के रंग से उसने मेरे हृदय को रक्त में परिणित कर दिया है और इस उपवन के द्वारा मुझे काँटों में फंसा दिया है।

मैं तो उस सुन्दरी के साहस का क़ायल हूँ, जिसने बिना किसी बनावट के हृदय पर अधिकार कर लिया है।

ख़ुशश बादआँ नसीमे सुब्हगाही।
कि दर्दे शब नशीनाँ रा दवा कर्द॥
मन अज़ बेगानगाँ हरगिज़ न नालम्।
के बामन हर्चे कर्द-आँ आश्ना कर्द॥
गरअज़ सुल्ताँ तमा करदम ख़ता बूद।
वरअज़ दिलबर वफ़ा जुस्तम् जफ़ा कर्द॥
ज़े हर सू बुलबुले आशिक़ दर अफ़ग़ाँ।
तनुम दरमियाँ बादे सबा कर्द॥
नक़ाबे गुल कशीदो ज़ुल्फ़े सुंबुल।
गिरहबन्दे क़बाए ग़ुंचा वा कर्द॥
वफ़ा अज़ ख़्वाजगाँन शहा बामन।
कमाले दीनोदौलत बुल वफ़ा कर्द॥
बशारत बरबकूये मै फ़रोशाँ।
कि "हाफ़िज़" तौबा अज़ ज़ुह्दे रेया कर्द॥

(३३)

इश्क़त न सिर्रेसरेस्त कि अज़ सर बदर शवद।
मेहरत न आरिज़ेस्त कि जाए दिगर शवद॥

यह प्रभात काल की शीतल वायु उसी को शीतलता प्रदान करे, जिसने रातभर जागने वालों के दुख को दूर करने का प्रयत्न किया है।

मैं दूसरे लोगों के विरुद्ध कुछ नहीं कहता। मेरे साथ तो जो कुछ भी किया है उसी मित्र ने किया है।

यदि मैंने बादशाह के सम्मुख किसी वस्तु के लिये प्रार्थना की तो वह मेरी भूल प्रमाणित हुई और यदि मैंने प्रियतमा से वादा पूरा करने की आशा की तो उसने मुझ पर अत्याचार किया।

ऐ प्रेमी बुलबुल! तू फूल के लिये चारों ओर चिल्लाता फिरता है, व्याकुल हो रहा है, परन्तु वास्तव में यदि किसी ने उसका मज़ा चक्खा तो प्रभात कालीन वायु ने।

पवन ने फूल के घूँघट को हटा दिया, सम्बुल की अलकों को बिखरा दिया और कलियों को खिला दिया।

(३३)

तेरा प्रेम कोई साधारण वस्तु नहीं है जिसकी सुधि भुला दी जाय। पर तेरे प्रति मेरे हृदय में जो प्रणय की जड़ जम गई है वह ऐसी नहीं है कि उसे निकाल कर दूर फेंक दिया जाय।

इश्क़े तु दर दरूँनमो मेहे तू दर दिलम।
बाशीर अंदरूँ शुदो बा जाँ बदर शवद॥

दर्देस्त दर्दे इश्क़ कि अंदर इलाजे ऊ।
हरचंद सई बेश नुमाई बतर शवद॥

अव्वल यके मनम् केदरीं शह्र हर शबे।
फ़रयादे मन ज़े इश्क़ ब अफ़लाक बर शवद॥

गर जाँ के मन सरिश्क फ़िशानम बज़िंदा रवद।
किश्ते इराक़ जुम्ला बयकबार तर शवद॥

वै दरमियाने ज़ुल्फ़ बदीदम रुख़े निगार।
बर हैअ्ते कि अब्र मुहीते क़मर शवद॥

गुफ़्तम कि इब्तिदा कुनमज़ बोसा गुफ़्त नै।
बगुज़ार ता कि माह ज़े उक़रब बदर शवद॥

ऐ दिल बयाद लालश अगर बादख़ुरा।
मगुज़ार हाँ कि मुद्दय्याँ रा ख़बर शवद॥

"हाफ़िज़" सर अज़ लहद बदर आरद बपाये बोस।
गर ख़ाके ऊ बपाए शुमा पए सिपर शवद॥

मेरे सीने और मेरे हृदय में तेरे प्रेम ने पैदाइश के साथ प्रवेश किया था और अब वह प्राणों के साथ निकलेगा।

प्रेम एक ऐसा रोग है कि उसकी जितनी ही औषधि की जाय उतनी ही रोगी की अवस्था और भी बुरी होती जाती है।

इस नगर में केवल मैं ही एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसकी प्रेम में रोने की आवाज़ आकाश तक पहुँच जाती है।

यदि मैं अपनी आँखों से आँसू बहाऊँ तो एक नदी प्रकट होकर तमाम खेतों को भर दे।

रात मैंने अपने प्रियतमा के मुख को देखा। उसे काली अलकों ने आच्छादित कर रक्खा था। उसे देखकर ऐसा ज्ञात होता था मानो चन्द्रमा को बादलों ने ढक लिया हो।

यह हाल देखकर मैंने कहा कि क्या मैं चुम्बन लेना प्रारम्भ करूँ। उसने उत्तर दिया कि तनिक ठहर जाओ। चन्द्र को बादलों में से निकल आने दो।

ऐ हृदय! यदि तू उसके अधरों की याद में मदिरा पीकर मतवाला बनना चाहता है तो इस प्रकार अपना कार्य कर कि बैरियों को ख़बर न होने पावे।

यदि तुम "हाफ़िज़" की समाधि पर चलो तो वह उसमें से निकल कर तुम्हारे पैरों का चुम्बन ले ले।

(३४)

इश्क़े तू निहाले हैरत आमद।
वस्ले तू कमाले हैरत आमद॥
बस ग़र्क़ए बहरे वस्ल काख़िर।
हम बा सरे हाल हैरत आमद॥
नै वस्ल बैमाँद व नै वासिल।
आँ जा कि ख़याले हैरत आमद॥
अज़ हर तरफ़े कि गोश करदम।
आवाज़े सवाले हैरत आमद॥
यक दिल बनुमाँ कि दर रहे ऊ।
बर चेहरा न ख़ाले हैरत आमद॥
शुद मुन्हज़ाम अज़ कमाले इज़्ज़त।
आँ रा कि जलाले हैरत आमद॥
सर ता क़दमे वजूदे "हाफ़िज़"।
दर इश्क़ निहाल हैरत आमद॥

(३५)

अक्से रूये तु चु दर आइनये जाम उफ़्ताद।
आरिफ़ अज़ ख़न्दये मए दर तमए ख़ाम उफ़्ताद॥

---

(३४)

तेरा प्रेम आश्चर्य्य का पौदा है और तेरा मिलना आश्चर्य्य की पराकाष्ठा।

मिलने के लिये बहुत से उत्सुक आश्चर्य्य में डूब गये। जहाँ विस्मय उत्पन्न हो जाता है,

वहाँ पर न मिलन ही रह जाता है और न मिलने वाला ही।

हमने जिस तरफ़ भी कान लगाया आश्चर्य्य के ही शब्द सुनाई पड़े। उसी के विषय में प्रश्न किये जाते थे।

कोई ऐसा जीव दिखला दो, जिसके मुख पर, इस प्रणय मार्ग में आश्चर्य्य की छाप न लगी हो।

जिस किसी ने भी इस आश्चर्य्य को समझ पाया वह प्रतिष्ठा की बाढ़ में बहने लगा।

"हाफ़िज़" का जीवन इस प्रेम की पृथ्वी में सर से पाँव तक आश्चर्य्य के वृत्त में परिणत होकर रह गया है।

(३५)

प्याले के दर्पण में तेरे मुख का प्रतिबिम्ब पड़ गया। मदिरा हँस उठी। छानने वाले ने समझा कि वह उसकी प्रेमिका की हँसी है।

हुस्ने रूये तु बयक जलवा कि दर आईना क़द ।
ईं हमा नक़्श दर आइनये औहाम उफ़्ताद ॥

चेकुनद कज़ पये दौराँ न रवद चूँ परेकार ।
हर कि दर दायरये गर्दिशे अय्याम उफ़्ताद ॥

मन ज़े मसजिद ब ख़राबात न ख़ुद उफ़तादम ।
ईंनम अज़ अह्‌दे अज़ल हासिले फ़रजाम उफ़्ताद ॥

आँ शुद ऐ ख़्वाजा कि दर सौमुआ बाज़म बीनी ।
कारे मन बारुख़े साक़ी व लबे जाम उफ़्ताद ॥

ईं हमाँ अक्से मयौ नक़्शे मुख़ालिफ़ कि नमूद ।
यक फ़रोग़े रुख़े साक़ीस्त कि दर जाम उफ़्ताद ॥

ग़ैरते इश्क़ ज़बाने हमाँ ख़ासाँ बबुरीद ।
कज़ कुजा सिर्रे ग़मश दर दहने आम उफ़्ताद ॥

हर दमश बा मने दिल सोख़्ता लुत्फ़े दिगर अस्त ।
ईं गदा बीं कि चे शाइस्तये इनआम उफ़्ताद ॥

बस वह उससे मिलने के लिये व्यर्थ के विचारों में पड़ गया । तेरे मुख ने दर्पण में जैसे ही अपनी शोभा दिखलाई वैसे ही उसके साथ ही साथ उसी दर्पण में सँसार की सारी विचित्रतायें अंकित हो गईं ।

जो मनुष्य समय रूपी चक्कर में पड़ गया है वह उसके साथ चक्कर लगाने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकता है ।

मैं स्वयँ पूजागृह से मदिरागृह में नहीं चला आया हूँ । मैंने जो सृष्टि के प्रारंभ में प्रतिज्ञा की थी यह उसी का फल है ।

महाशय जी ! वह समय व्यतीत हो गया जब आप मुझे पूजागृह में देखते थे । अब मैं प्रणय की पूजा करने लगा हूँ और मेरी पहुँच साक़ी के चेहरे और प्याले के ओंठों तक हो गई है ।

मदिरा की यह झलक और उसमें एक दूसरे के विरुद्ध दिखलाई देने वाले चित्र साक़ी के ही दृष्टि फेरने के परिणाम हैं । जैसा कि प्याले के दर्पण में हुआ है ।

प्रणय की शरमिन्दगी ने तमाम मुख्य मुख्य और बड़े बड़े आदमियों की ज़ुबान काट डाली थी । आश्चर्य्य यह होता है कि उसके प्रेम का रहस्य साधारण मनुष्यों को कैसे मालूम हुआ ।

देखो तो यह दीन हीन उसका पुरस्कार पाने के योग्य किस प्रकार हो गया है कि उसके साथ वह सदैव कोई न कोई दयाभाव प्रकट किया करता है ।

मन के दर जुम्रये उश्शाक़ बरिन्दी अलमम।
तबले पिन्हाँ चे ज़नम तश्ते मन अज़ बाम उफ़्ताद॥

ज़ेरे शम्शीरे ग़मश रक़्स कुनाँ बायद रफ़्।
काँ के शुद कुश्तये ऊ नेक सर अंजाम उफ़्ताद॥

दर ख़मे ज़ुल्फ़े तु आवेख़्त दिल अज़ चाहे ज़क़न।
आह कज़ चारा बरूँ आमदो दर दाम उफ़्ताद॥

पाक बीं अज़ नज़रे रास्त व मक़्सूद रसीद।
अहवल अज़ चश्मे दो बीं दर तमये ख़ाम उफ़्ताद॥

सूफ़ियाँ जुम्ला हरीफ़न्दो नज़र बाज़ वले।
ज़ीं मियाँ "हाफ़िज़े" दिल सोख़्ता बदनाम उफ़्ताद॥

(३६)

आशिक़ाँ रा दर्द दिल बिस्यार मी बायद कशीद।
दाग़े यारो ग़ुस्सये अग़यार मी बायद कशीद॥

दाद ख़ाही रा कि मी ख़ाहद ज़े सुल्ताँ दादे ख़ेश।
इन्तज़ारे बामदादे बार मी बायद कशीद॥

प्रेमियों में मेरा नाम एक बड़े और मतवाले प्रेमी के नाम से प्रसिद्ध है। अब जब मैं इस प्रकार कलंकित हो गया हूँ तो इस भेद को छिपाने से क्या लाभ।

उसकी प्रेम की तलवार के नीचे बड़ी ही प्रसन्नता से जाना चाहिये। उसके हाथ से जिसकी मृत्यु होती है वह एक बहुत ही उत्तम परिणाम पर पहुँचता है।

मेरा दिल पहिले तेरी ठुड्डी में आ कर अटक गया था। अब वहाँ से निकला तो तेरी काली लटों के फन्दे में फँस गया। शोक! कुएँ से निकल कर वह जाल में जा पड़ा।

ज्ञानी मनुष्य अपनी तीक्ष्ण और विचारपूर्ण दृष्टि के कारण अपने लक्ष्य पर पहुँच गया। परन्तु वह मनुष्य जिसकी दृष्टि ठीक न थी और जो एक को दो समझता था, वह बीच में ही रह गया।

साधारणतः सभी साधु इस जमाव में योग देने वाले और प्रेमी हैं। परन्तु दुखिया हाफ़िज़ ही के सर बदनामी का टीका लग गया है।

(३६)

प्रेमियों को बहुत ही सहनशील होना उचित है। उनको विरह की पीड़ा और प्रतिद्वन्द्वियों की सफलता का शोक सभी कुछ सहन करना चाहिये।

जो लोग न्यायालय से उचित न्याय की आशा रखते हैं उन्हें प्रभात के दरबार-आम का इंतज़ार करना चाहिये।

अज़ बराये दीदने दीदारे गुल यारे अज़ीज़ ।
ख़ारिये देहक़ानो जौरे ख़ार मी बायद कशीद ॥
ज़ुल्फ़ रा आहिस्ता गर्दां बज़ईफ़ाँ रा न कुश ।
सिल्क रंजूरस्त बर हिंजार मी बायद कशीद ॥
हर कि आशिक़ शुद अगर चे नाज़नीने आलमस्त ।
नाज़ ऊ कै रास्त आयद बार मी बायद कशीद ॥
दर दिले शबहाये तार अज़ इश्तियाक़े रूये यार ।
आहे सर्दो नालहाये ज़ार मी बायद कशीद ॥
"हाफ़िज़ा" चन्दीं अलम मारा दर अय्यामे फ़िराक़ ।
बर उमीदे वादये दीदार मी बायद कशीद ॥

(३७)

मुआशराँ गिरह अज़ ज़ुल्फ़े यार बाज़ कुनेद ।
शबे ख़ुशस्त बदीं वस्लश दराज़ कुनेद ॥
हज़ूरे ख़िलवते उंसस्त व दोस्ताँ जमा अंद ।
वाँ यकाद बख़ानेद व दर फ़राज़ कुनेद ॥
रबाबो चंग बबाँगे बलंद मी गोयंद ।
कि गोशे होश ब पैग़ामे अह्ले राज़ कुनेद ॥

उस पुण्य के समान सुन्दर प्रियतमा का मुख देखने के लिये बहुत से कष्ट और कंटकों के अत्याचार सहन करने चाहियें।

इन काली अलकों को तनिक धीरे से हटाओ। और निर्बलों को मत मारो। यह प्रेम के रोग से पीड़ित क़ैदियों की पंक्ति है। इनके ऊपर इतने कठोर मत बनो।

प्रेमी इस संसार में चाहे सभी से अधिक नाज़ुक क्यों न हो लेकिन उसको यह दिखलाना न चाहिये। उसे तो कष्ट झेलने के लिये उद्यत होना चाहिये।

अँधेरी रातों में प्रेमिका की स्मृति में ठंडी २ आहें भरना और प्रेम-व्यथा में आँसू बहाना चाहिये।

ऐ "हाफ़िज़" प्रेमिका के मिलने की आशा में प्रेमी को विरहकाल में यह सब कष्ट उठाना चाहिये।

(३७)

ऐ मित्रो! यार की घुँघराली अलकों के पेचों को सुलझाओ। इस आनन्दमयी रजनी में, इसी बहाने से उससे मिलन का समय बड़ा कर लो।

इस हृदय को प्रसन्न करने वाले एकान्त स्थान में आकर उपस्थित हो। अन्यान्य सभी मित्र भी इकट्ठे हो रहे हैं।

नज़र बन्द करने का मंत्र पढ़कर द्वार को बन्द कर लो। ढोलक और मृदंग दोनों ऊँचे स्वर से कह रहे हैं कि रहस्यवालों की बातें तनिक ध्यान से सुनो।

नखुस्त मोएज़ए पीर सोहबत ईं हर्फ़स्त।
कि अज़ मुसाहबे ना जिंस एहतराज़ कुनेद॥
बजाने दोस्त कि ग़म परदए शुमाँ न दरद।
गर एतमाद बर अल्ताफ़े कारसाज़ कुनेद॥
मियाने आशिक़ो माशूक़ फ़र्क़ बिस्यारस्त।
चु यार नाज़ नुमायद शुमा नियाज़ कुनेद॥
हर आँ कसे कि दरीं हल्क़ा ज़िंदा नेस्त बइश्क़।
बरू चु मुर्दा बफ़तवाए मन नमाज़ कुनेद॥
अगर तलब कुनद इनाम अज़ शुमा "हाफ़िज"।
हवालतश बलबे यारे दिलनवाज़ कुनेद॥

(३८)

मनो इंकार शराब ईं चे हिकायत बाशद।
ग़ालिब न ईं क़द्रम अक़्लो किफ़ायत बाशद॥
मनकि शबहा रहे तक़्वा ज़दा अम बादफ़ो चंग।
नागहाँ सर बरह आरम चे हिकायत बाशद॥
ज़ाहिद अर राह बरिंदी न बरद माज़ूरस्त।
इश्क़ कारेस्त कि मौक़ूफ़े हिदायत बाशद॥

बहुत ही अनुभवी साधु की शिक्षा यह है कि बेजोड़ साथी से सदैव अलग रहो।

यार के प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रणय में तुम्हारे सिर पर कलंक का टीका कभी भी नहीं लगेगा; यदि तुम ईश्वरीय कृपा पर विश्वास रक्खो।

प्रेमी और प्रेमिका में बहुत बड़ा भेद है। जब प्रेमिका अपनी मान लीला दिखलावे तो तुम उसको मनाने के लिये विनती किया करो।

इस जमाव में जिस मनुष्य के हृदय में लगन नहीं है, जाओ मैं आज्ञा देता हूँ, उसे मृत समझकर उसके ऊपर मंत्र पढ़ो।

"हाफ़िज़" यदि तुमसे कोई पुरस्कार मांगे तो उसे उसी मनोमोहक यार के पास भेज देना।

(३८)

यह कैसे हो सकता है कि मैं मदिरा-पान से इन्कार करूँ। जहाँ तक मैं समझता हूँ मुझमें इतनी बुद्धि और ज्ञान है।

मैंने इस प्रेम जाल में पड़कर बहुत सी रातें जागकर व्यतीत की हैं। अब यदि मैं ठीक मार्ग पर आजाऊँ तो यह कौन सी बड़ी बात होगी।

परहेज़गार यदि अपने मार्ग से विचलित न हो तो वह क्षमा करने योग्य है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है कि वह उसी को प्राप्त होता है जिसे ईश्वर देता है।

बंदए पीरे मुग़ानेम कि ज़े जेह्लम बरिहाँद।
पीरे मा हर चे कुनद ऐन विलायत बाशद॥
ता बग़ायत रहे मैख़ाना नमी दानिस्तम।
वर्ना मस्तूरीए माँ ता बचे ग़ायत बाशद॥
ज़ाहिदो उज्बो नमाज़ो मनो मस्तीओ नियाज़।
तातुरा ख़ुद ज़े मियाँ बा कि इनायत बाशद॥
दोश अज़ीं गुस्सा नख़ुफ़्तम कि फ़क़ीहे मी गुफ़्त।
"हाफ़िज़" अर मस्त बुवद जाए शिकायत बाशद॥

(३९)

मनो सलाहो सलामत कसीं गुमाँ नबरद।
कि कस बारिंद ख़राबात ज़न्ने आँ नबरद॥
मनो मुरक़्क़ए देरीना बहे आँ दारम।
कि ज़ेरे ख़िक़ा कश मै कसीं गुमाँ नबरद॥
मुबाश ग़र्रा बइल्मो अमल फ़क़ीह मुदाम।
कि हेच कस ज़े क़ज़ाए ख़ुदाए जाँ न बरद॥
मशो फ़रेफ़्तए रंगो बू क़दह दर कश।
कि ज़ंगे ग़म ज़े दिलत जुज़ मए मुग़ाँ नबरद॥

मैं तो अपने गुरु का सेवक हूँ जिसने ज्ञान का उपदेश देकर मुझे नादानी से बचाया है। मेरा गुरु जो कुछ करता है वह सब सत्य होता है।

मैं यह भी नहीं जानता था कि मदिरागृह किस दिशा में है। नहीं तो मैं अभी तक उससे इतनी दूरी पर क्यों पड़ा रहता।

परहेज़गार अपने कर्मकांड का गर्व करे और मैं अपने ज्ञान-ध्यान में मग्न रहूँ; देखूँ तो हम दोनों में से वह किसपर दयादृष्टि दिखलाता है।

(३९)

मुझको कोई मनुष्य चरित्रवान् और भला नहीं समझेगा; क्योंकि मदिरा-भक्त पर किसी को यह गुमान भी नहीं हो सकता।

मैंने अपना यह पुराना भेष (गुदड़ी) इसलिये नहीं बदला है कि उसकी ओट में मदिरा पीता रहूँ और किसी को मेरे इस काम की ख़बर भी न हो।

हे ज्ञानी ! अपनी विद्या का घमंड न कर। ईश्वर की आज्ञा से कोई भी नहीं बच सकता।

इस दिखावटी सौन्दर्य पर मोहित न हो और मदिरा पान कर। क्योंकि जबतक कोई मतवाला नहीं होजाता तब तक उसके मन का मैल दूर नहीं होता है।

मने ज़ईफ़ चेगूना ग़मे तु बर दारम।
कि बारे हिज्र तुई जाने नातवाँ न बरद॥
अगर्चे दीदा बूद पासबाने तू ऐ दिल।
बहोश बाश की नक़्दे तू पासबां न बरद॥
बसई कोश अगर मुज़्द बायदत ऐ दिल।
कसे कि कार न कर्द उज्र रायगाँ न बरद॥
सख़ुन ब निज़्दे सख़ुनदाँ अदा मकुन "हाफ़िज़"।
कि तोहफ़ा कस दुरो गौहर ब बह्रो काँ न बरद॥

(४०)

नक़्द सूफ़ी न हमाँ साफ़िए बेग़श बाशद।
ऐ बसा ख़िर्क़ा कि शाइस्तए आतश बाशद॥
सूफ़िए मा कि ज़े विरदे सहरी मस्त शुदे।
शामगहश निगराँ बाश कि सरख़ुश बाशद॥
ख़ुश बुवद गर महके तजरबा आयद बमियाँ।
तासिया रू शवद हर कि दरग़श बाशद॥
ख़त्ते साक़ी गर अज़ीं गूना ज़नद नक़्श बर आब।
ऐ बसा रुख़ कि ब ख़ूनाबा मुनक़्क़श बाशद॥

मैं दुर्बल हूँ, तेरे विरह में किस प्रकार जीवित रह सकता हूँ। मेरे प्राण यह भार सहन करने में असमर्थ हैं।

ऐ हृदय! नेत्र तेरी रखवाली अवश्य कर रहे हैं, पर इस पर भी तुझे सावधान रहना उचित है। कहीं चौकीदार तेरे संचित धन में हाथ न लगा दे।

ऐ हृदय! यदि तू मज़दूरी करने का इच्छुक है तो परिश्रम करने का प्रयत्न कर। जो परिश्रम नहीं करता है उसे व्यर्थ में मज़दूरी नहीं मिलती है।

जो भेद को समझने वाले हैं, ऐ "हाफ़िज़"! तू उनके पास भेद को समझने के लिए मत जा। समुद्र और खान के पास मोती और जवाहर लेकर उपस्थित होना उचित नहीं है।

(४०)

साधुओं की सभी चीजें खरी नहीं होती हैं। बहुत सी गुदड़ियाँ ऐसी होती हैं जो जला डालने के योग्य होती हैं।

हमारा वह उदासी जो प्रभात को प्रार्थना में मग्न रहता है, तनिक देखना सन्ध्या को किस प्रकार मदिरा में मतवाला हो जाता है।

अनुभव की कसौटी पर प्रत्येक कार्य को कसना चाहिये, जिससे उनमें जो कुछ खुटाइयां हों दूर हो जावें।

साक़ी यदि कपोलों पर अपने हाथ से लिखने लगे तो बहुत से मुख रक्त से रक्तवर्ण हो जाँयगे।

ग़मे दुनियाए दनी ख़ुरी बादा बख़ुर।
हैफ़ बाशद दिले दाना कि मुशव्वश बाशद ॥

नाज़ परवर्दे तनाम न बुरद राह बदोस्त।
आशिक़ी शेवए रिंदाने बला कश बाशद ॥

दल्क़ो सज्जादए "हाफ़िज़" बेबरद बादा फ़रोश।
गर शराबज़ कफ़े आँ साक़िए महवश बाशद ॥

(४१)

बा मुद्दई मगोयेद असरारे इश्क़ो मस्ती।
ता बेख़बर बे मीरद दर रंजे ख़ुद परस्ती ॥

आशिक़ शौवर ने रोज़े कारे जहां सर आयद।
नाख़ाँदा नक़्शे मक़सूद अज़ कारगाहे हस्ती ॥

बा ज़ोफ़ो नातवानी हम चू मसीम ख़ुशबाश।
बीमारे अन्दरी रह ख़ुश्तर ज़े तन्दुरुस्ती ॥

दर गोशये सलामत मस्तूर चूँ तवाँ बूद।
ता नरगिसे तो गोयद बा मारमूज़े मस्ती ॥

तू बेचारा इस संसार की चिन्ताओं में कब तक व्यस्त रहेगा। सब कुछ छोड़कर मदिरा पान कर और मतवाला हो जा। समझने बूझने वाला मनुष्य यदि इस प्रकार की भूल करे तो बड़े दुख की बात है।

जो बड़े सुख में पालित-पोषित होता है, वह कठिनाइयों से दूर भागता है। यार तक पहुँचने के लिये ऐसे आदमी की आवश्यकता होती है जो विपत्तियों से नहीं घबड़ाता।

"हाफ़िज़" का सर्वस्व उसी साक़ी के हाथ लगेगा। यदि उसको उसी मतवाले साक़ी के हाथ की मदिरा मिले।

(४१)

प्रेम की झूठी डींग मारने वालों से प्रणय और मस्ती के रहस्यों को प्रगट न कर। उसकी नादानी को दूर करने का प्रयत्न मत कर।

उसे अपने ही विश्वास के रोग में घुल घुल कर मरने दे। प्रेमी बन जा, नहीं तो यह संसार एक दिन मिट जाने को है। और तू इस क्षणभंगुर जगत से बिना ही अपने अभीष्ट को प्राप्त किये हुए चल देगा।

इस दुर्बल और रोगी जीवन में तुझे स्वस्थ्य रहने में इस प्रकार प्रसन्न रहना चाहिये जैसे कि प्रभात-वायु। कारण कि इस प्रेम-पथ में अस्वस्थ्य ही बैठा रहना उत्तम होगा।

भला हम प्रेमी लोग इस संसार के एक कोने में कुशलता पूर्वक कैसे बैठे रह सकते हैं। तेरी आँख का इशारा तो हमें मतवाले बनने को कह रहा है।

बर आस्ताने जानाँ अज़ आसमाँ मयन्देश।
कज़ औजे सर बलंदी उफ़्ती व ख़ाके पस्ती॥

इश्क़त बदस्ते तूफ़ाँ ख़ाहद सुपुर्दन ऐ जाँ।
चूँ बर्क़ अज़ीं कशाकश पिंदाश्ती कि जस्ती॥

ख़ारर चे जाँ बकाहद गुल उज़्रे आँ बख़ाहद।
सहलस्त तल्ख़िए मै दर जम्बे ज़ौक़े मस्ती॥

सूफ़ी पियाला पैमाँ "हाफ़िज़" क़राबा परदाज़।
ऐ कोतह आस्तीनां ता कै दराज़ दस्तो॥

(४२)

ऐ दिल मबाश ख़ाली यक दम ज़े इश्क़ो मस्ती।
वाँगह बरो के रस्ती अज़ नेस्ती व हस्ती॥

गर ख़िरक़ापोश बीनी मशग़ूले कारे ख़ुद बाश।
हर क़िब्लए कि बाशद बेहतर ज़े ख़ुदपरस्ती॥

दर मज़हबे तरीक़त ख़ामी निशाने कुफ़्रस्त।
आरे तरीक़े रिंदी चालाकी अस्त व चस्ती॥

प्यारे के द्वार पर पहुँचकर यह मत सोचना कि आसमानी विपत्तियाँ तुम्हें प्रतिष्ठा के शिखर से अप्रतिष्ठा के गढ़े में गिरा देंगी।

ऐ प्राण! तुझे यह प्रेम तूफ़ान में फँसा देगा। क्या तू यह समझता है कि जिस प्रकार बिजली अपनी क्षणिक् प्रभा दिखलाकर आकाश में विलुप्त हो जाती है उसी प्रकार तू भी इस तूफ़ान के चक्कर में पड़कर विलीन हो जायगा?

कण्टक प्राण को कष्ट देता है परन्तु पुष्प उसे सुख पहुँचा कर उसका बदला चुका देता है। मदिरा की तेज़ी व कड़वाहट उसके नशे के आनन्द के कारण सहन कर ली जाती है।

सूफ़ी! (फ़क़ीर) तू तो आनन्द से प्याले पर प्याला उड़ाता जा रहा है परन्तु "हाफ़िज़" मटके ख़ाली किये दे रहा है। ऐ प्यारे! तुम कब तक यह अत्याचार करते रहोगे?

(४२)

ऐ हृदय! तू एक क्षण भी प्रेम और मस्ती से रहित न रह। इससे तू स्वतंत्र हो जायगा। कारण कि तू संसार और मस्ती से स्वतंत्र हो जायगा।

यदि तू किसी को चिथड़ों में देखे तो उसी समय अपना कार्य आरम्भ कर दे। क्योंकि अपने ही आप धर्म पर चलने की अपेक्षा गुरु के बतलाये मार्ग पर चलना अच्छा है।

सुधार-मार्ग अथवा धर्म्म में देर करना धर्म्म के विरुद्ध है। एक फ़क़ीर को सदैव आलस्य से दूर रहकर कार्य करने के लिये उद्यत रहना चाहिये।

ता अक़्लो फ़ज़्ल बीनी बे मारफ़त नशीनी।
यक नुक्ता़अत बगोयम ख़ुद्रा मबीं कि रस्ती॥

आँ रोज़ दीदा बूदम ईं फ़ितनहा कि बरख़ास्त।
कज़ सरकशी ज़ेमानी वा मा नमी नशस्ती॥

सुल्ताने मन ख़ुदा रा ज़ुल्फ़त शिकस्त मारा।
ता कै कुनद सियाही चंदीं दराज़ दस्ती॥

दर मजलिसे मुग़ानम दोशाँ सनम् चे ख़ुश गुफ़्।
बा काफ़िराँ चे कारत गर बुत नमी परस्ती॥

अज़ राहे दीदा "हाफ़िज़" ता दीदा ज़ुल्फ़े पस्तत।
बा ज़ुम्ला सर बलंदी शुद पायमाले पस्ती॥

(४३)

ऐ बे ख़बर बकोश कि साहब ख़बर शवी।
ता राहरौ न बाश कि राहबर शवी॥
दस्तज़ मसे वजूद चु मर्दाने रह बुशोद।
ता कीमियाए इश्क़ बेयाबी व ज़र शवी॥

जब तक तू बुद्धि और विद्या के चक्कर में रहेगा तुझे सफलता कभी भी प्राप्त न होगी। मैं तुझे एक गुर बताए देता हूँ। स्वयम् कभी शिक्षक मत बनना।

बस फिर स्वतंत्रता तेरी है। उस दिन जब कि तू क्रोधित होकर उठ गया था मैंने सोच लिया था कि कुछ न कुछ बखेड़ा अवश्य ही उठ खड़ा होगा।

ऐ मेरे सम्राट ! ईश्वर के लिये अब तो कुछ मेरे ऊपर तरस खा। तेरी अलकों ने मेरे हृदय को चुटीला बना दिया है। यह काली नागिनें कब तक डसती रहेंगीं ? मेरी कुछ तो सुनाई कर।

रात को मदिरा बेचने वालों की सभा में उस प्यारे ने मुझसे एक बहुत ही अच्छी बात कही कि यदि तू मूर्तिपूजक नहीं है तो तेरा विधर्म्मियों से क्या सम्बन्ध है ?

"हाफ़िज़" बड़ा ही प्रतिष्ठित था। परन्तु जब से उसने तेरी बिखरी हुई अलकों को देखा है बरबाद हो रहा है और प्रतिष्ठा से बहुत दूर जा पड़ा है।

(४३)

ऐ अज्ञानी ! प्रयत्न कर ताकि तेरा अज्ञान दूर हो जावे। जब तक तू स्वयम् इस मार्ग पर नहीं चलेगा दूसरों के लिये क्या रास्ता बतावेगा।

अपने अस्तित्व को ईश्वरीय मार्ग पर चलने वालों के समान छोड़ दे। इससे तुझे प्रेम का कीमियाँ प्राप्त होगा और तू सुवर्ण बन जावेगा।

ख़ाबो ख़ुरत ज़े मर्तबए ख़ेश दूर कर्द।
अंगा रसी बख़ेश कि बे ख़ाबो ख़ुर शवी ॥
गर नूरे इश्क़े हक़ बदिलो जानत ओफ़्द।
बिल्लाह कज़ आफ़ताबे फ़लक ख़ूब तर शवी ॥
यकदम ग़रीक़ बहे ख़ुदा शो गुमाँ मबर।
कज़ आब हफ़् बह बयक मूए तर शवी ॥
अज़ पाए ता सरत हमा नूरे ख़ुदा शवद।
दर राहे ज़ुल जलाल चो बेपाओ सर शवी ॥
वज्हे ख़ुदा अगर शवदत मंज़रे नज़र।
ज़ीं पस शके निमाँद कि साहब नज़र शवी ॥
बुनियाद हस्तिए तु चू ज़ेरो ज़बर शवद।
दर दिल मदार हेच कि ज़ेरो ज़बर शवी ॥
दर मकतबे हक़ायक़े पेशे अदीबे इश्क़।
हाँ ऐ पिसर बकोश कि रोज़े पिदर शवी ॥
गर दरसरत हवाए विसालस्त "हाफ़िज़ा"।
बायद कि ख़ाके दरगहे अह्ले हुनर शवी ॥

खाना और सो रहना तुझे तेरे पद से गिराते हैं। तू अपने आप को उस समय पहिचानेगा जब विश्राम और विलास को तिलाञ्जुलि दे देगा।

यदि ईश्वर के प्रेम का प्रकाश तेरे हृदय में हो जावे और तेरा प्राण उससे ओतप्रोत हो जावे तो परमेश्वर की शपथ तू आकाशी सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो जायगा।

तू क्षण भर के लिये ईश्वरीय नदी में डूब जा और विश्वास कर ले कि सातों समुद्रों का जल तेरे एक बाल को भी नहीं भिगो सकेगा।

तू शिर से लेकर पैर तक ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा। पर यह होगा तभी जब तू परमेश्वर के मार्ग में निज को घुला देगा।

यदि ईश्वर की शक्ल सदैव तेरी दृष्टि में रहने लगी तो निस्सन्देह तू उसका प्यारा बन जायगा।

उस समय यदि तेरा जीवन विनष्ट भी हो जाय तो तुझे यह न समझना चाहिये कि तू नाश को प्राप्त होगया। यदि तू ऐसा समझ लेगा तो वास्तव में तू नष्ट ही हो जायगा।

ऐ डरपोक दिल ! तू सत्य की पाठशाला में प्रेम को अपना गुरु बनाकर विद्या प्राप्त करने का प्रयत्न कर, ऐसा करने से तुझे एक दिन पिता बनने का पद प्राप्त हो सकता है।

ऐ "हाफ़िज़" ! अगर तेरी हार्दिक अभिलाषा मिलने की है तो तू मालिक के द्वार की धूल बन जा।

ता अक़्लो फ़ज़्ल बीनी बे मारफ़त नशीनी।
यक नुक्ताअत बगोयम ख़ुदरा मबीं कि रस्ती॥

आँ रोज़ दीदा बूदम ईं फ़ितनहा कि बरख़ास्त।
कज़ सरकशी ज़ेमानी बा मा नमी नशस्ती॥

सुल्ताने मन ख़ुदा रा ज़ुल्फ़त शिकस्त मारा।
ता कै कुनद सियाही चंदीं दराज़ दस्ती॥

दर मजलिसे मुग़ानम दोशाँ सनम् चे ख़ुश गुफ़्।
बा काफ़िराँ चे कारत गर बुत नमी परस्ती॥

अज़ राहे दीदा "हाफ़िज़" ता दीदा ज़ुल्फ़े पस्तत।
बा जुम्ला सर बलंदी शुद पायमाले पस्ती॥

(४३)

ऐ बे ख़बर बकोश कि साहब ख़बर शवी।
ता राहरौ न बाश कि राहबर शवी॥

दस्तज़ मसे वजूद चु मर्दाने रह बुशोद।
ता कीमियाए इश्क़ बेयाबी व ज़र शवी॥

जब तक तू बुद्धि और विद्या के चक्कर में रहेगा तुझे सफलता कभी भी प्राप्त न होगी। मैं तुझे एक गुर बताए देता हूँ। स्वयम् कभी शिक्षक मत बनना।

बस फिर स्वतंत्रता तेरी है। उस दिन जब कि तू क्रोधित होकर उठ गया था मैंने सोच लिया था कि कुछ न कुछ बखेड़ा अवश्य ही उठ खड़ा होगा।

ऐ मेरे सम्राट! ईश्वर के लिये अब तो कुछ मेरे ऊपर तरस खा। तेरी अलकों ने मेरे हृदय को चुटीला बना दिया है। यह काली नागिनें कब तक डसती रहेंगीं? मेरी कुछ तो सुनाई कर।

रात को मदिरा बेचने वालों की सभा में उस प्यारे ने मुझसे एक बहुत ही अच्छी बात कही कि यदि तू मूर्तिपूजक नहीं है तो तेरा विधर्म्मियों से क्या सम्बन्ध है?

"हाफ़िज़" बड़ा ही प्रतिष्ठित था। परन्तु जब से उसने तेरी बिखरी हुई अलकों को देखा है बरबाद हो रहा है और प्रतिष्ठा से बहुत दूर जा पड़ा है।

(४३)

ऐ अज्ञानी! प्रयत्न कर ताकि तेरा अज्ञान दूर हो जावे। जब तक तू स्वयम् इस मार्ग पर नहीं चलेगा दूसरों के लिये क्या रास्ता बतावेगा।

अपने अस्तित्व को ईश्वरीय मार्ग पर चलने वालों के समान छोड़ दे। इससे तुझे प्रेम का कीमियाँ प्राप्त होगा और तू सुवर्ण बन जावेगा।

ख़ाबो ख़ुरत ज़े मर्तबए ख़ेश दूर कर्द।
अंगा रसी बख़ेश कि बे ख़ाबो ख़ुर शवी ।।
गर नूरे इश्क़े हक़ बदिलो जानत ओफ़्द।
बिल्लाह कज़ आफ़ताबे फ़लक ख़ूब तर शवी ।।
यकदम ग़रीक़ बहे ख़ुदा शो गुमाँ मबर।
कज़ आब हफ़्त बह बयक मूए तर शवी ।।
अज़ पाए ता सरत हमा नूरे ख़ुदा शवद।
दर राहे जुल जलाल चो बेपाओ सर शवी ।।
वज्हे ख़ुदा अगर शवदत मंज़रे नज़र।
ज़ीं पस शके निमाँद कि साहब नज़र शवी ।।
बुनियाद हस्तिए तु चू ज़ेरो ज़बर शवद।
दर दिल मदार हेच कि ज़ेरो ज़बर शवी ।।
दर मकतबे हक़ायक़े पेशे अदीबे इश्क़।
हाँ ऐ पिसर बकोश कि रोज़े पिदर शवी ।।
गर दरसरत हवाए विसालस्त "हाफ़िज़ा"।
बायद कि ख़ाके दरगहे अह्ले हुनर शवी ।।

खाना और सो रहना तुझे तेरे पद से गिराते हैं। तू अपने आप को उस समय पहिचानेगा जब विश्राम और विलास को तिलाञ्जुलि दे देगा।

यदि ईश्वर के प्रेम का प्रकाश तेरे हृदय में हो जावे और तेरा प्राण उससे ओतप्रोत हो जावे तो परमेश्वर की शपथ तू आकाशी सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो जायगा।

तू क्षण भर के लिये ईश्वरीय नदी में डूब जा और विश्वास कर ले कि सातों समुद्रों का जल तेरे एक बाल को भी नहीं भिगो सकेगा।

तू शिर से लेकर पैर तक ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हो उठेगा। पर यह होगा तभी जब तू परमेश्वर के मार्ग में निज को घुला देगा।

यदि ईश्वर की शक्ल सदैव तेरी दृष्टि में रहने लगी तो निस्सन्देह तू उसका प्यारा बन जायगा।

उस समय यदि तेरा जीवन विनष्ट भी हो जाय तो तुझे यह न समझना चाहिये कि तू नाश को प्राप्त होगया। यदि तू ऐसा समझ लेगा तो वास्तव में तू नष्ट ही हो जायगा।

ऐ डरपोक दिल! तू सत्य की पाठशाला में प्रेम को अपना गुरु बनाकर विद्या प्राप्त करने का प्रयत्न कर, ऐसा करने से तुझे एक दिन पिता बनने का पद प्राप्त हो सकता है।

ऐ "हाफ़िज़" ! अगर तेरी हार्दिक अभिलाषा मिलने की है तो तू मालिक के द्वार की धूल बन जा।

(४४)

बेरौ ऐ तबीबम अज़ सर कि ख़बर ज़े सर न दारम।
बख़ुदम दमे रिहा कुन कि ज़े ख़ुद ख़बर न दारम॥
बैयादतम् क़दम नेह कि ज़े बे ख़ुदी शवम बेह।
मै नाबो नोश वहमदेह कि ग़मे दिगर न दारम॥
ग़मम् अर ख़ुरी अर्ज़ी पस न कुनम् ज़े ग़म ख़ुरी बस।
नज़रे कि जुज़ तु बाकस बसरत नज़र न दारम॥
दिगरत मगू कि ख़ाहम् ज़े बरख़ुदत बिरानम।
तू बरीनो मन बरानम कि दिलज़ तु बर नदारम्॥
ज़े ज़रत कुनन्दे ज़ेवर ब ज़रत कशंद दर बर।
मने बेनवाए मुज़तर चे कुनम कि ज़र न दारम॥
बमन अर्चे मै परस्तम् मदेहेद मै कि मस्तम।
मबरेद दिल ज़े दस्तम कि दिले दिगर न दारम॥
दिले "हाफ़िज़" अरबज़ोई ग़मे दिल ज़े तुंद ख़ूई।
चु बगोएदत बगोई सरे दर्द सर न दारम॥

(४४)

ऐ वैद्य! मेरे सिरहाने से उठ जा। तू दवा किसे देने आया है? मुझे तो अपने शिर का भी होश नहीं है। मैं अपने आपे से बाहर हूँ। मुझे थोड़ी देर इसी अवस्था में पड़ा रहने दे।

मित्र! मेरी कुशलता पूछने के लिये आ जा ताकि मैं इन बन्धनों से छुटकारा पा जाऊँ। मुझे निर्मल और मीठी मदिरा पीने के लिये दे। और इस हृदय में अब कोई चिन्ता नहीं है।

मैं तेरे अतिरिक्त और किसी पर दृष्टि भी नहीं डालता। यदि तू अब भी मुझे देखने आ जाता तो मैं सम्पूर्ण दुखों को सहन करने के लिये उद्यत हूँ।

तेरे शिर की शपथ, तेरे अतिरिक्त मेरे लिये दूसरा कोई नहीं है। बस एक दृष्टि कृपा की चाहिये। मुझसे फिर यह न कहना कि मैं तुझे निकालना चाहता हूँ अपने पास रखना नहीं चाहता। यदि तूने मुझे अपने पास न रखने का प्रण कर लिया है तो मैंने तेरे साथ रहने का।

सोने से ही तेरे आभूषण बने हैं और सुवर्ण से ही तू प्राप्त होता है। मैं निर्धन दुखिया हूँ। करूँ क्या मेरे पास धन ही नहीं है।

मैं मदिरा-भक्त हूँ पर अब मुझे न चाहिये। मैं मस्त हो रहा हूँ। मेरे हाथ से मेरा दिल मत छीनो। मैं दीन हूँ और मेरे पास दूसरा दिल नहीं है।

तू हाफ़िज़ का प्यारा नहीं बनता और जब वह तेरे सम्मुख नए दिल की पीड़ा की कहानी रखता है, तब तू क्रोध में आकर कह देता है कि मुझसे यह शिर की पीड़ा सहन नहीं की जाती है।

(४५)

फ़ाश मी गोयमो अज़ गुफ़्ये ख़ुद दिल शादम् ।
बन्दये इश्क़मो अज़ हर दो जहाँ आज़ादम् ॥
तायरे गुल्शने क़ुदसम् चे देहम शरह फ़िराक़ ।
के दरीं बाँगहे हादिसा चूँ उफ़्तादम् ॥
मन मलक बूदमो फ़िरदौसे बरीं जायम् बूद ।
आदम् आर्वद दरीं दैरे ख़राब आबादम् ॥
सायए तूबाओ दिल जूये हूरो लबे हौज़ ।
बहवाये सरे कूये तु बेरफ़ अज़ यादम् ॥
नेस्त बर लौहे दिलम् जुज़ अलिफ़े क़ामते यार ।
चे कुनम् हर्फ़े दिगर याद न दाद उस्तादम् ॥
यक नज़र कर्दमो सद तीरे मलामत खुर्दम् ।
दानये चीदमो दर दामे बला उफ़्तादम् ॥
कौकबे बख़्ते मरा हेच मुनज्जिम न शनाख़्त ।
यारब अज़ मादरे गेती बचा ताले ज़ादम् ॥
मीख़ुरद ख़ूने दिलम् मर्दुमके चश्मो सज़ास्त ।
के चेरा दिल बजिगर गोशये मर्दुम दादम् ॥

---

(४५)

मैं बिल्कुल सत्यभाव से कहता हूँ और इस कहने पर प्रसन्न हूँ कि मैं प्रेम का अनुचर हूँ और दोनों जहान की मुझे कोई चिन्ता नहीं है ।

मैं पवित्र वाटिका का एक पक्षी हूँ। विरह का क्या वर्णन करूँ और कैसे कहूँ कि मैं इस विपत्ति में कैसे पड़ गया ।

मैं स्वर्गीय दूत था और स्वर्ग मेरा निवास स्थान था। आदम मुझको इस भग्न गृह में ले आया ।

स्वर्ग के वृक्ष और स्वर्ग के सम्पूर्ण आनन्द तेरी गली के प्रेम में विस्मृत सागर में विलुप्त हो गये ।

मेरे हृदय पटल पर प्रियतम के स्वरूप का अलिफ़ लिखा हुआ है। और उस पर कुछ अंकित ही नहीं है। मैं कर ही क्या सकता हूँ, गुरु ने मुझे दूसरा अक्षर बतलाया ही नहीं है।

केवल एक ही बार देख लेने पर, मेरे हृदय में सहस्रों तीखे बाण चुभ गये। वह घायल हो गया। और केवल एक ही दाना तोड़ लेने के कारण मैं विपद्-जाल में फंस गया ।

किसी भी ज्योतिषी ने मेरे नक्षत्रों को नहीं पहचाना। भगवन्! मैं किस घड़ी में इस संसार में उत्पन्न हुआ था ।

मेरा दिल मुझे धिक्कारता है कि तूने किसी मनुष्य को प्यार न किया, एक कोने को क्यों प्यार किया है ।

पिदरो मादरे मन बन्दा न बूदन्द वले।
मन तुरा बन्दा शुदम गर्चे ब अस्ल आज़ादम्॥
ता शुदम हल्क़ा ब गोशे दरे मैख़ानये इश्क़।
हरदम आयद ग़मे अज़ नौ बमुबारकबादम्॥
पाक कुन चेहए "हाफ़िज़" व सरे ज़ुल्फ़ अज़ अश्क।
वर्ना ईं सैल दमादम् ब बरद बुनियादम्॥

(४६)

मस्तम् अज़ बादए शब्बाना हनोज़।
साक़िए मा नरफ़् ख़ाना हनोज़॥
मैकशीओ बग़म्ज़ा मी गोई।
तौबा करदी ज़े इश्क़ या न हनोज़॥
नाज़नीनाँ ज़े इश्के तू बिल्लाह।
आलमे तौबा कर्द मा न हनोज़॥
हस्त मजलिस बराँ क़रार कि बूद।
हस्त मुतरिब दराँ तराना हनोज़॥
चश्म मस्तश बग़म्ज़ए जादू।
मी ज़नद तीर बर निशाना हनोज़॥

मेरे जन्म दाता पिता तेरे सेवक न थे पर मैं तेरा अनुचर बन गया हूँ। परन्तु सेवक होते हुए भी मैं स्वतंत्र हूँ।

जब से मैं ने प्रेम के मदिरा-गृह का सेवा व्रत धारण किया है तब से कोई न कोई नया रंज मुझे इस व्रत पर बधाई देने आ ही जाता है।

अपने इस सेवक के आँसुओं को अपनी काली अलकों से पोंछ दे नहीं तो यह दिन प्रति दिन की बाढ़ इसके अस्तित्व को भी बहा ले जायगी।

(४६)

रात को जो मदिरा पी थी उसका नशा अबतक बना हुआ है और पिलाने वाला भी अभी तक यहीं उपस्थित है।

तू मुझे घायल भी करता है और फिर बड़े दर्प के साथ कहता है कि तूने अब भी प्रेम करना छोड़ा या नहीं।

प्रियतम! तेरे प्रेम से सारा संसार हाथ खींच बैठा है, परन्तु मैं अभी तक उसमें लव-लीन हो रहा हूँ।

यह बैठक सदैव से ऐसी ही चली आ रही है और उसमें वही राग अब भी अलापा जा रहा है।

और उसकी मतवाली आँखों से तीर छूट छूट कर अब भी लक्ष्य पर पड़ रहे हैं।

"हाफ़िज़" ख़स्ता दरमियाँ आमद।
मी कुनदयार अज़ू केराना हनोज़॥

(४७)

ऐ बाद मुश्कबू बगुज़र सूए आँ निगार।
बकुशा गिरह ज़े ज़ुल्फ़श व बूए बमन बयार॥
बाऊ बगो कि ऐ बुते नामेहबाने मन।
बाज़ा कि आशिक़ाने तू मुर्दन्द ज़े इंतज़ार॥
दिलदादाएमो मेह तू अज़ जाँ ख़रीदायम।
बर मा जफ़ाओ जौरे फ़िराक़त रवा मदार॥
कर्दी ब रोज़गार फ़रामोश बंदा रा।
ज़िनहार अह्देयारे बफ़ादार गोश दार॥
ऐ दिल बेसाज़ बा ग़मे हिज्रानो सब्र कुन।
ऐ दीदा दर फ़िराक़श अज़ीं बेश ख़ूं मबार॥
बारे ख़याले दोस्त ज़े पेशे नज़र मशू।
चूँ बर विसाले दोस्त नदारेम इख़्तियार॥
"हाफ़िज़" तू ताबकै ग़मे हाले जहाँ ख़ुरी।
बिसयार ग़म मख़ुर कि जहाँ नेस्त पाएदार॥

ऐ दीन "हाफ़िज़"! तू निकट आ पहुँचा है परन्तु प्यारा अब भी तुझसे कनाई काट रहा है (कतरा रहा है)।

(४७)

ऐ कस्तूरी की सुगन्ध से सुगन्धित वायु! तू मेरे प्रियतम की गली से होकर आ। और उसकी काली घुंघराली लटों को बिखेर कर उनकी तनिक सी सुगन्ध मुझ तक पहुँचा।

उससे कहना कि कठोर हृदय! तू वापस चल। तेरे प्रेमी विरह-वेदना में पड़े हुए तड़प रहे हैं।

हमने दिल दे दिया है और प्राण न्योछावर कर तेरा प्यार पाया है। अब तो हम पर कृपा कर और इस जुदाई रूपी अत्याचार को रोक।

समय अधिक व्यतीत हो जाने के कारण तू ने इस सेवक को भुला दिया है। प्यारे ऐसा न कर। तू तो अपने प्रेमियों के प्रति अपने वचनों को पूरा करने के लिये विख्यात है!

ऐ हृदय! तू विरह-वेदना से मैत्री कर ले और धैर्य्य धारण कर। और नेत्रों! तुम उसके विरह में अब और अधिक रक्ताश्रु न बहाओ।

प्रियतम से मिलने का हमें अधिकार प्राप्त नहीं है परन्तु इतना तो कर कि उसके रूप को आँख से ओझल न होने दें।

"ऐ हाफ़िज़"! संसारी वस्तुओं का अधिक सोच मत कर क्योंकि संसारी सभी वस्तुएं नाशवान हैं।

(४८)

मुर्ग़े दिलम् तायरेस्त क़ुद्सीये अर्श आशियाँ।
अज़ क़फ़से तने मलूल सेर शुदा अज़ जहाँ॥

चूँ बेपरद ज़ीं जहाँ सिदरह बुअद जाये ऊ।
तकिया गहे बाज़े मा कंगूरये अर्श दाँ॥

अज़ सरे ईं ख़ाकदाँ चूँ ब पर व मुर्ग़े जाँ।
बाज़ नशेमने कुनद बर दराँ आस्ताँ॥

सायए दौलत फ़ितद बर सरे आलम बसे।
गर बे कुशद मुर्ग़े माँ बालो परे दर जहाँ॥

दर दो जहानश मकाँ नेस्त बजुज़ फ़ौक़े चर्ख़।
जिस्मे वै अज़ मादन अस्त जाने वै अज़ लामकाँ॥

आलमे उलवी बुवद जलवागहे मुर्ग़े माँ।
आबे ख़ुरेऊ बुवद गुल्शने बाग़े जिनाँ॥

तादमे वहदत ज़दी "हाफ़िज़े" शोरीदा हाल।
ख़ामये तौहीद कश बर वर्क़ें इन्सो जाँ॥

---

(४८)

मेरे हृदय का पवित्र पक्षी अमरलोक का निवासी है। अब वह इस शरीर के पिंजड़े से ऊब गया है और संसार से अपना मुख फेरने के लिये उद्यत है।

जब वह इस संसार से उड़ेगा तो उसके स्थान पर सदरह का वृक्ष होगा और हमारा बाज़ अमरलोक के शिखर पर जा बैठेगा।

प्राणपखेरू इस मृत्युलोक से उड़ कर पुनः उसी स्थान में अपना घोंसला बनावेगा जहाँ कि वह पहले रहता था।

यदि हमारा पक्षी आत्मिक जगत में अपने परों को फैला दे तो सारा संसार महत्वपूर्ण हो जावेगा जैसा कि हुमा के परों की छाया से होता है।

आत्मा का घर इन दोनों जहानों में कहीं भी नहीं है और यदि है तो आकाश पर, शरीर में इसका कुछ दिनों के लिये बसेरा होना आवश्यक है परन्तु रूह का निवास स्थान किसी ख़ास स्थान में है।

हमारे पक्षी का घर है अमरलोक में और यह चरता है स्वर्ग के उपवन में।

ऐ दीन "हाफ़िज़" चूँकि तू ने अद्वैत का दावा किया है, अतएव तू मानवी और जिन्नों के जगत से बाहर चला जा और अद्वैत में ही अपने जीवन को विसर्जित कर दे।

(४९)

बग़ैर अज़ाँ कि बे शुद दीनो दानिश अज़ दस्तम् ।
बेआ बगो कि ज़े इश्क़त चे तरफ़ बर बस्तम् ॥
अगर्चे ख़िर्मने उम्रम ग़मे तू दाद ब बाद ।
बख़ाक़ पाए अज़ीज़त कि अहद नशिकस्तम् ॥
चु ज़र्रा गर चे हक़ीरम बबीं बदौलते इश्क़ ।
कि दर हवाये रुख़त चूं बमेह्र पैवस्तम् ॥
बेयार बादा के उम्रेस्त तामन ज़ सरेअम्न ।
ब कुंजे आफ़ियत अज़ बहे ऐश नशिस्तम् ॥
अगर ज़े मर्दुमे हुशियारी ऐ नसीहत गू ।
सख़ुन ब ख़ाक़ मयफ़गन चेरा कि मन मस्तम् ॥
चे गूना सर ज़ेख़िजालत बरआवरम् बर दोस्त ।
के ख़िदमते बसज़ा बर नयामद अज़ दस्तम् ॥
बसोख़्त "हाफ़िज़ो" आँ यारे दिल नवाज़ न गुफ़्त ।
कि मरहमे ब फ़िरस्तम् चो ख़ातिरश ख़स्तम् ॥

---

(४९)

तू ही आकर बता दे कि तेरी लगन में मैंने क्या प्राप्त कर लिया ! हाँ, अपने धर्म्म और बुद्धि से अवश्य हाथ धो बैठा हूँ ।

तेरे प्रेम ने मेरी जीवन रूपी सम्पदा को मटियामेट कर दिया परन्तु तेरी पवित्र धूल की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने अपने वचनों का पालन किया ।

मैं एक धूल का कण हूँ परन्तु तेरे प्रेम की शक्ति से मैं तुझे देखने के लिये उड़ता हुआ सूर्य तक आ पहुँचा हूँ ।

साक़ी ! मदिरा ला । बहुत समय से आराम और चैन से किसी कोने में बैठने तक का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है ।

ऐ उपदेशक ! यदि तू समझदार है तो अपनी बात न जाने दे कि मैं तो मतवाला हो रहा हूँ ।

मैंने अभी तक उसकी कोई उत्तम सेवा भी नहीं की इसलिये लज्जा आती है । उस प्यारे के सम्मुख अपना शिर कैसे उठाऊँ !

"हाफ़िज़" मैं तो जल मरा परन्तु उस दिल को ख़ुश करने वाले प्रियतम ने यह भी नहीं कहा कि लाओ जिसे घायल किया है उसके लिये थोड़ा मरहम ही भेज दूँ ।

(५०)

हर कस कि नदारद ब जहाँ मेहे तु दरदिल।
हक़्क़ा कि बुवद तायते ऊ जायओ बातिल ॥

बरदाश्तन अज़ इश्क़े तू दिल फ़िक्रे मुहालस्त।
अज़ जाने ख़ुद आसाँ बुवद अज़ इश्क़े तू मुश्किल ॥

अज़ इश्क़े तू नासेह चु मरा मनांनुमायद।
ऐ दोस्त मगरहम तु कुनी हल्ले मसाइल ॥

गश्तेम जहाँरा कि बबीनेमो नदीदेम।
हमचू तो कसे ज़ेबा दर शक्लो शमाइल ॥

ऐ ज़ाहिदे ख़ुदबीं बदरे मैकदा बगुज़र।
आँ दिलबरे मन बीं कि बुवद मीरे क़बाइल ॥

अज़ वस्ल तू शुस्तंद रक़ीबाँ ज़े तमाँ दस्त।
चूँ गश्त मरा कामे दिल अज़ लाले तू हासिल ॥

"हाफ़िज़" तू बरो बंदगिए पीरे मुग़ाँ कुन।
दर दामने ऊ दस्त ज़नो अज़ हमा बगुसिल ॥

---

(५०)

इस संसार में जो मनुष्य तुझसे हार्दिक प्रेम नहीं रखता वह वास्तव में कुछ भी नहीं है। उसकी प्रार्थना सर्वांश में व्यर्थ और बेकार है।

तेरे प्रेम से दिल हटा लेना एक असम्भव विचार है। प्राण से हाथ धो बैठना सहल है परन्तु तेरे प्रति प्रणय का छोड़ देना कठिन है।

शिक्षा देने वाला जब मुझे यह शिक्षा देता है कि तेरे प्रेम में न पड़ूँ, उस समय प्यारे ! कदाचित् तू ही इन समस्याओं को सुलझा सके।

मैंने सम्पूर्ण जगत का चक्कर लगा डाला, पर तू कहीं भी नहीं दिखलाई पड़ा।

ओ अभिमानी विवेकी ! आ इस मदिरा-गृह के द्वार पर आजा और मेरे उस प्रियतम को देख जो सब देवताओं का स्वामी है।

प्यारे जब से मेरे हृदय की आकांक्षा तेरे ओठों से पूर्ण हो गई तब से लोभी प्रतिद्वन्दी तेरे मिलने के विचार में मतवाले हो रहे हैं।

ऐ "हाफ़िज़" ! तू जाकर शराब बेचने वाले के स्वामी की चाकरी कर ले और उसका दामन पकड़ कर फिर संसार की सभी आशायें छोड़ दे।

(५१)

हिजाबे चेहरए जाँ मी शवद गुबारे तनम्।
ख़ुशा दमै कि अज़ीं चेहरा पर्दा बरफ़िगनम्॥
चुनीं क़फ़स न सज़ाये चुँ मने ख़शइलहाँस्त।
रवम् व गुलशने रिज़वाँ कि मुर्गे आँ चमनम्॥
अयाँ न शुद कि चिरा आमदम् कुजा बूदम्।
दरेग़ो दर्द कि ग़ाफ़िल ज़े कारे ख़ेशतनम्॥
चिगूना तौफ़ कुनम् दर फ़िज़ाए आलमे क़ुदूस।
चु दर सरा चे तरकीबां तख़ता बंदतनम्॥
अगर ज़े ख़ूने दिलम् बूए मुश्क मी आयद।
अजब मदार कि हमदर्द नाफ़ए ख़ुतनम्॥
मरा कि मंज़रे हूरस्तो मसकनो मावा।
चरा बकूए ख़राबातियाँ बुवद वतनम्॥
तराज़े पैरहने ज़र कशम् मबीं चूँ शमा।
कि सोज़हास्त निहानी दरूने पैरहनम्॥
बयाओ हस्तिए "हाफ़िज़" ज़े पेशे ऊ बरदार।
कि बावजूद तु कस न शुनूद ज़े मन कि मनम्॥

(५१)

मेरे शरीर की धूल प्राणों के मुख का घूँघट है। वह कितना अच्छा समय होगा जब मैं उस मुख पर से यह घूँघट हटा दूँगा।

यह मिट्टी का पिंजड़ा मेरे समान मनोहर बोली बोलने वाली चिड़िया के योग्य नहीं है। मुझको तो स्वर्ग के उपवन में जाना चाहिये। कारण कि मैं उसी बाग़ का पंछी हूँ।

यह रहस्य प्रकट नहीं होता कि मैं कहाँ था और यहाँ क्यों आया हूँ। शोक तो यह है कि मैं अपने ही भेद से नितान्त अनभिज्ञ हूँ।

मेरा शरीर तो इस साँसारिक शरीर रूपी घर में बन्द है फिर मैं पवित्र जगत के वायु-मंडल में किस प्रकार भ्रमण करूँ।

मैं तो ख़ुतन की मुश्क का साथी हूँ। मेरे शरीर से यदि कस्तूरी की सुगन्ध निकलती है तो इसमें आश्चर्य्य करने की कौन सी बात है?

इस मदिरा—गृह के शोर गुल में मैं क्यों रहूँ जब मेरे देखने के लिए स्वर्गीय अप्सराओं का सौन्दर्य है और रहने के लिये स्वर्ग।

यह न देख कि मैं दीपक के समान उज्ज्वल और चमकीले वस्त्र धारण किये हूँ, क्योंकि मेरे इन वस्त्रों के नीचे एक कठोर जलन उपस्थित है।

प्यारे! "हाफ़िज़" के सामने से उसके लेखक को हटा क्योंकि तेरे होते हुए किसी अन्य को मेरे मुख से अभिमान के शब्द सुनना भी ठीक नहीं है।

(५२)

बारहा गुफ़्तमो बारे दिगर मी गोयम।
की मने दिल शुदा ईं रह न, बख़ुद मी पोयम॥
दर पसे आईना तूती सिफ़तम् दाश्ता अन्द।
उञ्चे उस्तादे अज़ल गुफ़् बुगोमी गोयम॥
मन अगर ख़ारमो गर गुल चमन आराए हेस्त।
कीं अज़ाँ दस्त कि मी परवरदम मी रोयम्॥
दोस्ताँ ऐब मने बेदिले हैराँ मकुनेद।
गौहरे दारमो साहब नज़रे मी जोयम्॥
गर्चे बादल्के मुलम्मा मए गुलगूँ ऐबस्त।
मकुनमा ऐब कज़ू रंगे रिया मी शोयम्॥
ख़न्दओ गिर्यए उश्शाक़ जे जोय दिगरस्त।
मय सरायम बशबो वक्ते सहर मी मोयम्॥
वायज़म गुफ़् कि "हाफ़िज़" दरे मयख़ाना मबू।
गो मकुन ऐब कि मन मुश्के ख़ुतन मी बोयम्॥

---

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ।

मुझको परछाईं के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है। मृत्यु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ।

मैं कण्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का माली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मैं वैसे ही उगता हूँ।

मित्रो! मुझ घबड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो। मेरे पास एक मोती है और मैं किसी अच्छे परीक्षक अथवा जौहरी की खोज में हूँ।

गुदड़ी बाज़ार में गुलाबी शराब कहाँ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई? लोग कहेंगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हँसते और आँसू गिराते हैं। मैं रात को गाना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ।

उपदेशक ने मुझसे पूछा है कि ऐ "हाफ़िज़" तू इस मदिरा-गृह के द्वार पर क्या सूँघा करता है? उससे कह दो कि वह बुरा न माने मैं तो ख़ुतन के मुश्क को सूंघा करता हूँ।

(५३)

दिलम् रबूदए लूली वशेस शोर अंगेज़।
दरोग़े बाद्ओ क़त्ताले वज़ओ रंगामेज़॥

फ़िदाए पैरहने चाके माहरूयाँ बाद।
हज़ार जामए तक़वाओ ख़िर्क़ए परहेज़॥

फ़िरश्तए इश्क़ नदानद कि चीस्त क़िस्सा मख़ाँ।
बख़ाह जामो गुलाबे बख़ाके आदमरेज़॥

गुलामे आँ कलमातम कि आतिश अंगेज़द।
न आबे सर्द ज़नद दर सख़ुन बर आतशे तेज़॥

फ़क़ीरों ख़स्ता बदरगाहत आमदम रहमे।
कि जुज़ विलायतुअम् नेस्त हेच दस्तावेज़॥

बेआ कि हातिफ़े मैख़ाना दोश बा मन गुफ़्।
कि दर मुक़ामे रिज़ा बाशो अज़ क़ज़ा मगुरेज़॥

मबाश ग़र्रा बबाज़ूए ख़ुद कि हर सायत।
हज़ार शोबदा बाज़द सिपहे मकरंगेज़॥

---

(५३)

मेरा हृदय उस सुन्दर दिलवर ने छीन लिया है और मुझे बहुत कष्ट दे रहा है। वह झूठी प्रतिज्ञाएं करता है, बध करने वालों का सा उसका ढङ्ग है और बातें ख़ूब बना लेता है।

उस रूपवान् प्रियतम के फटे हुए वस्त्रों पर सहस्रों ईश्वरोपासकों और फ़क़ीरों के वस्त्र न्योछावर हैं।

स्वर्गीय दूत को प्रेम करना नहीं आता। उससे व्यर्थ में कहानी न कहो। एक मदिरा का प्याला मंगालो और आदम की मिट्टी पर थोड़ा सा गुलाब छिड़क दो।

मैं तो उन शब्दों को उपयुक्त समझता और मानता हूँ जो हृदय में जलन (उत्कट प्रेम) उत्पन्न कर देते हैं। अपने शब्द को नहीं चाहता जो शीघ्र ही जलन को मिटा देता है, अग्नि की तेज़ी को अपनी वारि-धारा से शीतल कर देता है।

मैं दीन हूँ और दुखिया। तेरे द्वार पर आया हूँ। कुछ कृपा कर।

आजा, मदिरा-गृह का स्वामी मुझसे रात ही कह चुका है कि तुझे प्रसन्न रहना चाहिये और मौत से दूर न भागना चाहिये।

किसी भी अवस्था में अपनी शक्ति पर घमण्ड न कर। यह बहुरूपिया आकाश प्रतिघड़ी सहस्रों रंग दिखलाता है।

पियाला दर कफ़नम् बन्द ता सहगहे हश्र।
बमै ज़े दिल बे बरम् हौले रोज़े रस्ता ख़ेज़॥
मियाने आशिक़ो माशूक़ हेच हायल नेस्त।
तु ख़ुद हिजाबे ख़ुदी "हाफ़िज़" अज़ मियाँ बर ख़ेज़॥

मेरे कफ़न में प्याले को छिपा देना ताकि मरने के समय उससे मदिरा पीकर प्रलय का भय अपने हृदय से दूर कर सकूँ।

भगवान और भक्त के बीच में कुछ पर्दा नहीं। बस ऐ "हाफ़िज़" तू ख़ुद ही पर्दा है, अपनी ख़ुदी के पर्दे को हटा दे (तो उससे मिल जायेगा)।

जामी

[जन्म १४१४ ई० : मृत्यु १४९२ ई०]



जामी

(श्री० वाई० एम० काले के सौजन्य से)

इनका पूरा नाम था मुल्ला नूरद्दीन अब्दुल रहमान। परन्तु जन साधारण में यह जामी नाम से ही विख्यात थे। ख़ुरासान नामक एक छोटे से नगर में इनका जन्म हुआ था और उसी में मृत्यु भी। यह बड़े भारी विद्वान, ऊँचे कवि और जिज्ञासु थे। इन्होंने पचास से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनमें से तीन दीवान हैं जिनमें उच्च कविताएँ हैं, सात प्रेम कहानियाँ तथा उपदेश प्रद मसनवियाँ हैं। उन्होंने इतने विषयों पर अपनी लेखनी उठाई है कि लोगों को आश्चर्य होता है। मुहम्मद साहब के उपदेशों से लेकर, पौराणिक कहानियाँ, सन्तों के जीवन चरित्रों, व्याकरण, पिंगल इत्यादि पर भी उन्होंने लिखा है। रहस्यवाद पर उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं, वह वास्तव में ध्यान देने योग्य हैं। इनमें से दो पुस्तकें—लवाहे और तहफ़ातुल अहरार, जिसके पद मैंने उद्धृत किये हैं, विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से प्रथम, रहस्यवाद की उत्तम से उत्तम पुस्तकों में से एक है। कल्पना की ऊँची उड़ान, भाषा, और उसकी उपयुक्तता तथा शैली के लिहाज़ से इसकी गणना रूमी की मसनवी और अत्तार की मंतक़ुत्तैर के साथ ही की जाती है। इन दोनों से जामी ने सीखा भी बहुत कुछ था। उसके चरित्र में फ़िरदौसी, हाफ़िज़, सादी, अनवरी और ख़ाक़ानी इत्यादि के चरित्रों से भिन्नता थी। और यह भिन्नता थी उसकी स्वतंत्रता। वह किसी भी दर्बार में नहीं गया। जिस समय उसकी मृत्यु हुई वह प्रसन्न था और निर्धन भी। उसकी निर्धनता ने उसे कभी भी हतोत्साह नहीं बनाया और न कभी उसने आवश्यकता पड़ने पर दान करने से मुख मोड़ा। उसने जो कुछ भी लिखा अपनी इच्छा से परन्तु डेवीज़ के शब्दों में वह लोगों के लिये बहुत ही सुन्दर तथा उच्च कविताएँ छोड़ गया है।

इनकी रचनाओं में व्यंग देखने ही योग्य है। प्रोफ़ेसर ब्राउन ने इसका एक उदाहरण दिया है। एक बार वह कुछ पंक्तियाँ पढ़ रहे थे। जिनका आशय था:—

"तुम मेरी निद्राहीन आँखों तथा पीड़ित हृदय में इस प्रकार बस रहे हो कि कोई भी मुझे दूर से आता हुआ तुम्हारे ही रूप में दिखलाई देता है।"

इसी समय किसी ने पूछा:—

"मान लीजिये कि वह गधा हो।"

जामी ने उत्तर दिया "मैं तो सोचता हूँ वहाँ तुम्हीं हो।"

उनके जीवन के विषय में कैप्टन नैसन और वैरन विक्टर रौसन के लेख बहुत ही उत्तम हैं। इस विषय का अध्ययन करने वालों को इनसे लाभ हो सकता है।

प्रमुख रचनाएँ :—

लवाहे,

युसुफ़ ज़ुलेखा,

सुलेमान अवज़ाल

लैला मजनूं।

(१)

गुफ्तमश ऐ ख़िज्रे मसीहा नफ़स।
ख़िज्रो मसीहा तुई इमरोज़ ब बस॥

अज़ क़दमत सब्ज़ए ऐशम दमीद।
वज़ नफ़सत ज़ौक़े हयातम रसीद॥

ऐने शफ़ा शुद जे तो बीमारीयम।
बेह् जे सद इतलाक़ गिरिफ़्तारीयम॥

सेहते मन दौलते दीदारे तुस्त।
शरबते मन लज़्ज़ते गुफ़्तारे तुस्त॥

रूए तो शुद महबते ईमाने मन।
नूरे यक़ीं ज़द अलम अज़ जाने मन॥

आँचे रसीद अज़ तो बजाने सक़ीम।
बाशद अज़ाँ हुज्जतो बुरहाँ अक़ीम॥

उच्चे शुदम अज़ तो बआँरह शिनास।
मुनत्तिजे आँ नेस्त दलीलो क़ियास॥

---

(१)

मैंने उससे कहा कि हे मेरे पथ प्रदर्शक! यदि आज संसार में मेरा कोई शुभेच्छु अथवा उत्तम पथ पर चलाने वाला है, तो वह केवल आप ही हैं।

आपके चरणों के स्पर्श से मेरा जीवन रूपी पौधा लहलहाने लगा। आपके बचनों से मुझे जीवन का आनन्द प्राप्त हो गया।

आपकी कृपा से मेरा रोग आरोग्यता में परिवर्तित हो गया और अब मेरे बन्धन सहस्रों स्वतंत्रताओं से बढ़कर हैं।

आपके दर्शनों से मैं हरा-भरा हो जाता हूँ। आपके वचनों से जीवन में स्फूर्ति आती है।

आपका मुख देखने से मेरा हृदय सचाई से परिपूर्ण हो जाता है और मुख पर दृष्टि पड़ते ही दिल में विश्वास का उजाला हो उठता है।

आपकी तरफ़ से इस व्यथित हृदय को जो कुछ प्राप्त हुआ है वह तर्क तथा प्रेम से नहीं मिल सकता।

आपके कारण मुझे जितनी बातें ज्ञात हुई हैं वह वाद विवाद अथवा अनुमान के सहारे नहीं मालूम की जा सकतीं।

बर मन अज़ीं पस ग़मे बारे नमुन्द।
बर रुख़े मक़सूद ग़ुबारे नमुन्द॥
लेक अज़ीं बीम ज़े वा ओफ़्तम।
कज़ तो मबादा कि जुदा ओफ़्तम॥

(२)

गुफ़ कि जामी मशौ अन्देशा नाक।
चूँ शुदत आईना ज़े अन्देशा पाक॥
बाश हमेशा ज़ेरहे दिल बमन।
आईना अतदार मुक़ाबिल बमन॥
ता ज़े फ़रोग़े कि ज़े मन बर तो ताफ़।
दानिशो दीदे तो शवद दीद याफ़्त॥
याफ़्ते तोरा अज़ तो रिहानद तमाम।
जुम्ला यके याबीओ बस वस्सलाम॥

(३)

उज़्वे दिलज़ पेश न दानिस्ता बूद।
पेशे नज़र जुम्ला हवेदा नमूद॥

अब मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रही और मेरा लक्ष्य मेरे सम्मुख प्रकट हो गया।

परन्तु एक और भय मुझे व्याकुल कर रहा है। कहीं आपसे विलग न होना पड़े।

(२)

पीर ने कहा कि "जामी" अपने हृदय में किसी प्रकार के भय अथवा सन्देह को स्थान न दे।

जब तेरा हृदय-दर्पण निर्मल हो गया है तो सदैव प्रसन्नता से मेरे साथ रह और उस दर्पण को मेरे सम्मुख रख;

ताकि जो प्रकाश तुझे मेरे द्वारा प्राप्त हुआ है, उसकी कृपा से तेरा ज्ञान विस्तृत हो और नेत्रों को उसका दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो,

और प्रेम स्वरूप दाता तेरे अहंकार को हटा दे, जिससे तुझे सबमें वही दिखलाई पड़े। बस अब जा।

(३)

हृदय को जिन बातों का ज्ञान पहले नहीं था, वह सब अब साफ़ तौर से नेत्रों के सम्मुख वर्त्तमान हैं।

दीद के आलम ज़े समक ता समा।
नेस्त बजुज़ वाजिबो मुमकिन बमा ।।

(४)

हस्तिए वाजिब यके आमद बज़ात।
हस्त तआयुत ज़े शयूनो सिफ़ात ।।
कसरते सूरत ज़े सिफ़ातस्तो बस।
अस्ल हमा वहदते ज़ातस व बस ।।
बह यके मौज हज़ाराँ हज़ार।
रूए यके आईना हा बेशुमार ।।

(५)

कर्द चूईं बन्द कुशाई मरा।
दाद ज़े हर बन्द रिहाई मरा ।।
रिश्तए मन अज़ गिरहए क़ैदरस्त।
बर गिरहम गौहरे इतलाक़बस्त ।।
क़त्रए नाचीज़ बबह्र आरमीद।
हस्तिए खुद रा हमगी बह दीद ।।

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

(४)

वह एक ही है। उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

यदि यह नाना रूप उसके हैं भी तो वह केवल उसके गुणों के कारण हैं। प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है।

सबका मूल तथा तत्व एक ही है। समुद्र एक है, परन्तु लहरें लाखों। मुख एक है और दर्पण अगणित!

(५)

जब पीर ने यह रहस्य मेरे सन्मुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी बन्धन ढीले हो गये।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की वस्तुओं से मेरा सम्बन्ध छूट गया। हृदय में विश्वास आ गया।

अस्तित्व हीन बूंद समुद्र में मिल गया और अपने जीवन रूपी सरिता की सैर भी कर ली।

दर सूबरे बहर चो मौजे बिहार।
याफ़्त हमा जल्वए ख़ेश आशकार॥

चूँ पए गौहर सूए दरिया शिताफ़।
हेच गौहर जुज़ गौहरे ख़ुद न याफ़॥

चूं बतमाशा सूए ख़ुद बिनगिरीस्त।
हेच न दानिस्त कि जुज़ बह चीस्त॥

"जामी" अगर जाँके ज़दी दस्तो पा।
ता कि बदीं बह शवी आशनाँ॥

ग़र्क़ीए बह आमदा ग़व्वास शौ।
तालिबे दुर्रीं गौहरे ख़ास शौ॥

दर दिलत अज़ शोला हालोत हस्त।
लायेक़ा आँ हुस्न मक़ालीत हस्त॥

सोख़्तए शोलए हालात बाश।
साख़्तए शरहे मक़ालात बाश॥

(६)

रौनक़े ऐयामे जवानीस्त इश्क़।
माए कामे दो जहानीस्त इश्क़॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया।

जब मोती के लालच में, उसी सरिता की तरफ़ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही से था।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया।

ऐ "जामी"! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी ख़ास मोती और लाल की खोज कर।

तेरे हृदय में मस्ती की अग्नि प्रज्वलित हो रही है। अतएव मीठे वचन कहना उचित है।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत् हो जा।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है।

मैले तहर्रुक बफ़लक इश्क़ दाद।
ज़ौक़े तजर्रुद बमलक इश्क़ दाद॥

चूँ दिलो जाँ बूए ताआशुक़ गिरिफ़्त।
बा गिले तन रंग ताल्लुक़ गिरिफ़्त॥

राबतए जानो तने मा अज़ओस्त।
मुर्दने मा ज़ीस्तने मा अज़ओस्त॥

उलवी व सिफ़ली हमा बन्देवयन्द।
पस्ते शवे क़द्रे बलन्देवयन्द॥

मह कि ब शब नूर देही याफ़्ता।
परतवे अज़ मेह बरो ताफ़्ता॥

ख़ाक ज़े गरदूँ न बुवद ताबनाक।
ता असरे मेह न युफ़्द ब ख़ाक॥

चूँ बतन आज़ादा ज़े मेहरस्त दिल।
संगे सियाह हस्त दराँ तीरा गिल॥

हर कि दर आतिशे इश्क़स्त ग़र्क़।
अज़ दिले ऊ ता बसनोबर चे फ़र्क़॥

आकाश को हिलने-डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान की है और स्वर्गीय दूत में सदाकाँक्षी बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों ने मिट्टी तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसी के बल पर हम मरते तथा जीते हैं।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्सियों में बँधे हुए हैं और उसकी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर करता है, प्रेम के प्रकाश से ही प्रकाशित है।

मिट्टी तब तक नहीं चमकती जबतक आकाशस्थित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रहित है तो वह काली मिट्टी में काले पत्थर के समान है।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके हृदय तथा सनोबर के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है।

कारे सनोबर चे बुवद ग़ाफ़िली ।
अज़ ग़मे इश्क़े कि न साहबदिली ॥
ज़िन्दगिए दिल बग़मे आशक़ीस्त ।
तारके जाँ बर क़दमे आशक़ीस्त ॥
ता न शवद इश्क़ ब दिल बुर्दगी ।
गर्मिए दिल नेस्त जुज़ अफ़सुर्दगी ॥
ऐ शुदा कारे तो बद अज़ नीकू आँ ।
जुफ़्ते सद अन्दोह ज़े ताक़ अबरूआँ ॥

(७)

गह दम ज़े अन्देशए माहे ज़नी ।
मह बफ़लक बीनिओ आहे ज़नी ॥

(८)

गह बग़िज़ाले दिले शैदा शवी ।
रूए चो दीवाना ब सहरा नेही ॥

(९)

यार हम आग़ोश बहम बादा नोश ।
तू पसे ज़ानुए ग़म अन्दर ख़रोश ॥

सनोबर का क्या काम है ? बेख़बर रखना, और वह भी प्रणय की पीड़ा से । प्रेम से परिपूर्ण कर देना उसका काम नहीं है ।

दिल का अस्तित्व प्रेमी की जलन में ही है और प्राण का शिर प्रणयी के चरणों पर पड़ा हुआ है ।

जब तक दिल किसी दूसरे के अधिकार में नहीं चला जाता उसे प्रणय का अनुभव नहीं होता । और प्रणय के अनुभव के बिना दिल का होना न होना बराबर है । ऐ प्रणयी !

तेरा काम सुन्दरियों ने बिगाड़ रक्खा है और उनके तीखे कटाक्षों का शिकार बनकर तुझे सहस्रों विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है ।

(७)

कभी तो तू किसी चन्द्रमुखी के ध्यान में मस्त रहता है और चन्द्रमा को तरफ़ देख देख कर आहें भरा करता है ।

(८)

कभी तू किसी मृग की चाह में मतवाला होकर जंगलों में निकल भागता है और घरबार त्याग देता है ।

(९)

तेरे अंक में तेरा प्यारा बैठा हुआ मदिरा के प्यालों पर प्याले ख़ाली कर रहा है परन्तु तू शोक के बोझ से दबा हुआ रोता है ।

यारे हम आवाज़ बहम परदा साज़।
तू ज़े तपे फ़ुक़र्ते ऊ दर गुदाज़॥
यार हम आहंग बहर सीना तंग।
तू ज़े ग़मश कोफ़ा बर सीना संग॥
ज़ोरकये वर्ज़ चुनाँ गीर यार।
कश बुवद अन्दर दिलो जानत क़रार॥
महरमे ख़िलवत गहे राज़त शवद।
मूनिसे शबहाए दराज़त शवद॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे यकशाख़ शौ।
न ग़मा ज़ने ताहमे यक काख़ शौ॥
रू ब यक्के आर कि फ़रखुन्दा गीस्त।
तर्के दुई कुन कि परागन्दा गीस्त॥
मेवए मक़सूद कै आरद दरख़्त।
ता न कुनद पाए ब यक जाए सख़्त॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठा हुआ स्वर में स्वर मिला रहा है, और तू उसकी विरह-व्यथा में अपने आप को घुलाए डालता है।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो कर सीने पर पत्थर पटक रहा है।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे प्राणों और दिल ही में निवास करे।

वह तेरे रहस्यों की कोठरी की ताली अपने पास रक्खे और विरह की लम्बी रातों में तुझे सान्त्वना प्रदान करने का प्रयत्न करे।

(१०)

एक ही वृक्ष की चोटी पर बैठ जा और एक ही डाल पर आसीन होकर अपना राग अलाप। यदि तेरा ध्यान किसी की ओर आकर्षित होता है तो उसके अतिरिक्त और किसी को दिल में जगह न दे।

यह एक बहुत अच्छी बात है। अपने दिल को चारों तरफ दौड़ने से रोक, क्योंकि ऐसा करना अच्छा नहीं है।

वृक्ष में वह मेवा किस समय दिखलाई देता है? उस समय जब कि उसके फलने का समय आता है। उसी प्रकार तू भी उसी समय फलेगा जब एक स्थान पर दृढ़ हो जायगा।

लवाहे "जामी"

(१)

यारब दिले पाको जाने आगाहम देह।
आहे शबो गिर्यए सहर गाहम देह॥
दर राहे ख़ुद अहाल ज़े ख़ुदम बे ख़ुद कुन।
अंगह बेख़ुद ज़े ख़ुद बख़ुद राहम देह॥
यारब हमा ख़ल्क़ रा बमन बदख़ू कुन।
वज़ जुम्ला जहाँनियाँ मरा यकसू कुन॥
रूए दिले मन सर्फ़ कुन अज़ हर जिहते।
वज़ इश्क़ ख़ुदम यक जहतो यकरू कुन॥
यारब वेरिहानेयम ज़े हिरमाँ चे शवद।
राहे दिहीयम बकूए इरफ़ाँ चे शवद॥
बस गब्र कि अज़ करम मुसल्माँ करदी।
यक गब्र दिगर कुनी मुसल्माँ चे शवद॥
यारब ज़े दो कौन बे नियाज़म गरदाँ।
वज़ अफ़सेर फ़क्र सर्फ़राज़म गरदाँ॥
दर राहे तलब महरमें राज़म गरदाँ।
जाँ राह कि न सूर तुस्त बाज़म गरदाँ॥

---

(१)

हे ईश्वर! मुझे पवित्र हृदय और विचारवान् प्राण प्रदान कर और ऐसा कर जिससे मैं रात को तड़पूँ और दिन को रोऊँ।

अपने मार्ग में पहले मुझे ऐसा बना दे कि मैं अहंकार को भूल जाऊँ और फिर मुझे ऐसा मतवाला बना दे कि मैं तुझी को ढूंढ़ता फिरूँ।

हे ईश्वर! मुझे सभी लोगों के प्रति बुरा और उनसे पृथक कर दे।

मेरी इन्द्रियों को सभी सांसारिक वस्तुओं से हटाकर अपने में केन्द्रीभूत करले जिससे कि तू ही मेरा सर्वस्व हो जावे।

हे ईश्वर तू ने बहुत से पथ भ्रष्ट मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगाया है (अपने में विश्वास उत्पन्न कर दिया है) फिर मुझ गुमराह का भी यदि अपने में (ईश्वर में) विश्वास उत्पन्न कर देगा तो क्या बड़ी बात होगी?

मुझे भी उचित पथ पर ला। उस मार्ग से जो तेरी तरफ़ नहीं आता है मुझे लौटा कर उस पथ पर डाल जो तुझ तक पहुँचाता है।

मुझे दोनों जहानों के प्रलोभनों से छुटाकर अपनी खोज में मतवाला बना दे।

तूने बहुतेरों को उबारा है। मुझे भी उबार ले।

(२)

मन हेचम व कम ज़े हेच हम बिस्यारे ।
अज़ हेचो कम अज़ हेच न आयद कारे ॥
हर सिर कि ज़े असरारे हक़ीक़त गोयम ।
जानम न बुवद बहा बजुज़ गुफ़ारे ॥

दर आलमे फ़क्र बेनिशाने औला ।
दर क़िस्सए इश्क़ बेज़बाने औला ॥
ज़ाँकस कि न अह्ले ज़ौक़ो असरार बुवद ।
गुफ़्न बतरीक़े तर्जुमानी औला ॥

सुफ़्म गौहरे चन्द कि रौशन ख़िर्दआँ ।
दर तर्जुमए हदीसे आली सनदआँ ॥
बाशद ज़े मने हेचमदाँ मोतमिदाँ ।
ईं तोहफ़ा रसानन्द बशाहे हमदाँ ॥

(३)

ऐ आँके बक़िबल्लए बुताँ रूस्त तुरा ।
वर मग़ज़ चेरा हिजाब शुद पोस्त तुरा ॥

---

(२)

मैं अकर्मण्य हूँ और बहुत से अकर्मण्य मनुष्यों से गया बीता हूँ। साधारण और निम्न श्रेणी वालों का कार्य उसी श्रेणी वालों से नहीं सरता।

मैं रहस्यों को कहता अवश्य हूँ परन्तु रहस्य उद्घाटन करने वालों में से नहीं हूँ।

प्रेम के मार्ग में यदि सन्यास ले तो उसमें गुम नाम रहना ही उत्तम है और प्रणय की कथा कहने में गूंगा ही बना रहना उचित है।

उस मनुष्य से, जिसमें न ईश्वरीय बोध है और न रहस्य जानता है, कह देना कि उसके लिये ईश्वरीय बातों का किताब से पढ़ लेना ही उचित होगा।

ऊँची सनदें रखने वाले लोगों के वचनों का मर्म समझाने में मैंने भी बुद्धिमानो के समान ही सुन्दर शब्दों का प्रयोग किया है।

कदाचित् कुछ न समझने वाले मनुष्य मुझे भी, उसके दर्बार के विश्वास पात्रों द्वारा उस बादशाह के निकट पहुँचा दें अर्थात् मेरी भी गणना ज्ञानियों में होने लगे।

(३)

ईश्वर ने किसी मनुष्य को दो दिल प्रदान नहीं किए हैं। इसके अतिरिक्त उसने अपने जीवों को अनुपम बुद्धि और ज्ञान से भूषित किया है।

दिल दर पए ईनाँ आँ न नेकूस्त तुरा।
यक दिलदारी बसस्त यक दोस्त तुरा॥

(४)

ऐ दर दिले तू हजार मुशकिल जे हमा।
मुशकिल शवद आसूदा तुरा दिल जे हमा॥
चूँ तफ़्रुक़ए दिलस्त हासिल जे हमा।
दिल रा ब यके सिपारो बगुसिल जे हमा॥

मादाम कि दर तफ़्रुक़ए वसवासी।
दर मजहबे अह्ले जमा शर्रुननासी॥
वल्लह कि नई नास वले नसनासी।
नसनासिए खुद जे जेहल मीनशिनासी॥

ऐ सालिके रह सखुन जे हर बाब मगोए।
जुज राहे वसूले रब्बेअरबाब मपोए॥
चूँ इल्लते तफ़्रुक़स्त असबाबे जहाँ।
जमईअते दिल जे जमये असबाब मजोए॥

उसने किसी को दो दिल क्यों नहीं दिये हैं? इसमें भी भेद है। यदि तेरे एक ही दिल होगा तो तेरा झुकाव भी एक ही तरफ़ होगा।

(४)

ऐ मनुष्य! इन बहुत सी वस्तुओं की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने से तेरे हृदय में बहुत सी कठिनाइयाँ आ उपस्थित हुई हैं। तेरा हृदय इन्हीं कारणों से विपत्तियों का केन्द्र हो रहा है।

जब इतने रहस्यों के कारण तेरा हृदय इस प्रकार व्याकुल हो रहा है तो उसे सब ओर से हटा कर एक ही तरफ़ लगा।

जब तक तू प्रेम और विश्वास में संलग्न रहेगा तब तक तू लोगों की दृष्टि में बहुत बुरा जचेगा।

ईश्वर की शपथ, तू मनुष्य नहीं वरन् राक्षस है। परन्तु अपनी मूर्खता के कारण तू यह भी नहीं जान सकता कि तू राक्षस हो रहा है।

ऐ पथिक! तू अन्य प्रकार की बातों को न सोच और उस भक्तवत्सल तक पहुँचाने वाली सीधी राह को छोड़कर कोई दूसरा मार्ग ग्रहण न कर।

जब सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं तब तू केवल एक ही वस्तु से लगन क्यों नहीं लगाता।

ऐ दिल तलबे कमाल दर मदरस चन्द ।
तकमील उसूलो हिकमतो हिन्दसा चन्द ॥
हर फ़िक्र कि जुज़ ज़िक्रे ख़ुदा वसवसास्त ।
शरमे ज़े ख़ुदा बदारो ईं वसवसा चन्द ॥

(५)

बायार बगुलज़ार शुदम रहगुज़री ।
बर गुल नज़रे फ़गन्दम अज़ बेख़बरी ॥
दिलदार बताना गुफ़् शरमत बादा ।
रुख़सारे मन ईं जास्त तू दर गुल नज़री ॥

आमद सहर आँ दिलबरे ख़ूनीं जिगराँ ।
गुफ़्ए ज़े तो बर ख़ातिरे मन बारे गिराँ ॥
शरमत बादा कि मन बसूयत निगराँ ।
बाशम तू निही चश्म बसूए दिगराँ ॥

माएम बराहे इश्क़ पोयाँ हमा उम्र ।
वस्ले तो बजद्दो जेहद जोयाँ हमा उम्र ॥
यक चश्म ज़दन जमाले तो पेशे नज़र ।
बेहतर ज़े जमाले ख़ूबरोयाँ हमा उम्र ॥

ऐ हृदय ! तू कब तक इस संसारी ज्ञान के पीछे लगा रहेगा । शब्दों और अक्षरों को समझने में कबतक लगा रहेगा !

ईश्वरोपासना के अतिरिक्त और सभी प्रकार की चिन्ताएँ व्यर्थ हैं । ईश्वर की तो कुछ शर्म कर । इन व्यर्थ बातों के झंझट में कब तक रहेगा !

(५)

मैं अपने यार के साथ घूमता हुआ उपवन में पहुँचा और धोखे से एक दूसरे पुष्प की तरफ़ देखने लगा ।

मेरी प्रियतमा ने ताने के साथ कहा कि तुझको अपने कार्य पर लज्जित होना चाहिये । मेरा कपोल तेरे सम्मुख है और इस पर भी तू दूसरे पुष्प पर नज़र डालता है ।

सुबह को वह घायल हृदयों की प्रियतमा मेरे पास आई और कहने लगी कि देख तेरे कारण मेरे हृदय पर एक बड़ा भारी बोझ रहा करता है ।

तुझे दूसरों की तरफ़ ताकने में लज्जा नहीं आती जब कि मैं तेरी तरफ़ ताक रही हूँ ।

मैं अपने जीवन के प्रारम्भ काल से ही तुझको ढूँढ़ रहा हूँ और तेरे मिलने की प्रतीक्षा में हूँ ।

यदि क्षण भर के लिये भी तेरा मुख मुझे दिखलाई पड़ जाता है तो वह सैकड़ों प्रियतमाओं के मिलन से बढ़ कर है ।

(५)

हर सूरते दिलकश कि तुरा रूए नमूद।
ख़ाहद फ़लकश जे दूर चश्मे तो रबूद॥
दिल रा बकसे देह कि दर अतवारे वजूद।
बूदस्त हमेशा बा तोवो ख़ाहद बूद॥

रफ़ आँ के बक़िब्लिए बुताँ आरम।
हर्फ़े ग़मे शाँ बलौहे दिल बेनिगारम॥
आहंगे जमाले जावदानी दारम।
हुस्ने कि न जावेदाँ, अज़ो बेज़ारम॥

चीजे कि न रूए दर बक़ा बाशी अज़ो।
आख़िर हदफ़े तीरे बला बाशी अज़ो॥
अज़ हर्चे बमुर्दगी जुदा ख़ाही शुद।
आँ बेह कि बाज़न्दगी जुदा बाशी अज़ो॥

ऐ खाजा अगर मालो अगर फ़र्ज़न्दस्त।
पैदास्त कि मुद्दते बक़ायश चन्दस्त॥
ख़ुश आँ कि दिलश बदिलबरे दरबन्दस्त
किश बा दिलो जाने अह्ले दिल पैवन्दस्त॥

---

(५)

तुझको प्रसन्न करने वाले मुख शीघ्र ही तेरी निगाहों से ओझल हो जाते हैं,

यदि दिल ही देना है तो ऐसे को दे जो कि जीवन के उलट फेर में सदैव से तेरे साथ रहा है और रहेगा।

वह ज़माना व्यतीत हो चुका जब मैं नाशवान् वस्तुओं के चक्कर में था और मेरे हृदय से उनका सम्बन्ध टूट गया है।

अब मैं उस अविनाशी स्वरूप के जलवे को देखने के लिए व्याकुल हो रहा हूँ।

जिस वस्तु की वजह से तू अमरत्व को प्राप्त नहीं कर सकता आख़िर वह मिट जायेगी। जिसकी वजह से ईश्वर से पृथक रह कर विपत्तियों में पड़ता है, उसे अपने इस जीवन में ही त्याग देना अच्छा है।

मित्र ! धन और संतान जो कुछ भी है वह सब नाशवान् है।

इसलिये वही मनुष्य ज्ञानवान कहा जा सकता है जिसने इन सभी वस्तुओं का त्याग कर ऐसे से सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, जो बड़े २ ज्ञानियों का प्यारा है।

(७)

रफ़तम बतमाशाए गुल आँ शमा तराज़।
चूँ दीद मियाते गुलशनम गुफ़ बनाज़॥
मन असलमो गुलहाए चमन फरएमनन्द।
अज़ अस्ल चेरा बक़रा मी आई बाज़॥

अज़ लुत्फ़े क़दो सबाहते ख़द्चे कुनी।
बज़ सिल्सिलए ज़ुल्फ़े मुजुअद चे कुनी॥
अज़ हर तरफ़ जमाले मुतलक़ ताबाँ।
ऐ बेख़बर अज़ हुस्ने मुक़ैयद चे कुनी॥

(८)

ऐ बिरादर तू हमीं अन्देशई।
मा बक़ी तू उस्तख़ानो रेशई॥
गर गुलस्त अन्देशये तो गुलशनी।
वर बुवद ख़ारे तो हम चूँ गिलख़नी॥

(९)

गर दर दिले तो गुल गुज़रद गुल बाशी।
वर बुलबुले बेक़रार बुलबुल बाशी॥

---

(७)

मैं फूलों को देखने के लिए उपवन में गया। तब इस दीपक को प्रकाश प्रदान करने वाले ने बड़े ही भाव के साथ कहा,

कि वास्तव में मैं ही सब कुछ हूँ। और यह तमाम फूल मुझी से उत्पन्न हुए हैं। तू मूल को छोड़ कर टहनियों की तरफ़ क्यों वापस आ रहा है ?

तू शरीर के सौन्दर्य और गोरे गालों के पीछे क्यों पड़ा हुआ है ? और चोटी बँधी हुई घुँघराली अलकों से तेरा क्या काम चलेगा ?

ऐ अज्ञानी ! इस नाशवान् सौन्दर्य के क्षणिक् मोह में पड़ कर तू उस अविनाशी रूप को क्यों भुलाये बैठा है, जिसका प्रकाश सर्वत्र व्याप्त है।

(८)

ऐ भाई ! तुझमें जो कुछ भी है वह ध्यान और चिन्तन है। शेष सब हड्डी और मांस है।

इसी ध्यान के ही प्रभाव से तू शान्ति प्राप्त कर सकता है। यदि तू पुष्प का ध्यान करता है तो पुष्प बन जाता है और कण्टक का ध्यान करता है तो कण्टक हो जाता है।

(९)

यदि तू अपने हृदय में फूल का विचार करेगा तो तू फूल हो जायगा और यदि उसी के प्रेमी बुलबुल में ध्यान लगायेगा तो बुलबुल बन जायगा।

तू जुज़वी हक़ कुलस्त गर रोज़े चन्द।
अन्देशए कुल पेश कुनी कुल बाशी॥

जामेज़िशे जानो तन तुई मक़सूदम।
वज़ मुर्दनो ज़ीस्तन तुई मक़सूदम॥
तू देर बेज़ी कि मन बेरफ़्तम ज़े मियाँ।
गर मन गोयम ज़े मन तुई मक़सूदम॥

कै बाशदो कैलिबासे हस्ती शुदा शक़।
ताबाँ गश्ता जमाले वजहे मुतलक़॥
दिल दर सुतूवाते नूरे ऊ मुसतहलक़।
जाँ दर ग़लबाते शौक़े ऊ मुसतग़रक़॥

(१०)

रुख़ गर्चे नमी नुमाई तो मरा सालहासाल।
हाशा कि बुवद मेहे तोरा बीमे ज़वाल॥
दारम हमा जा बा हमा कस दर हमा हाल।
दर दिल ज़े तू आरज़ू व दरदीदा ख़याल॥

ईश्वर अंशी है और तू अंश है। यदि कुछ दिनों तू अंशी (उसी कुल) की धुन में लगा रहा तो फिर उसी के स्वरूप को प्राप्त कर लेगा।

प्राण और शरीर के पारस्परिक सम्मिलन में भी तू ही मेरा अभीष्ट है और मृत्यु तथा जीवन का भी तू ही अभीष्ट है।

तू बहुत दिनों तक जीवित रह। मैं तेरे बीच में से निकल गया हूँ। अब यदि मैं अपने को "मैं" कहकर बोलता हूँ तो उससे तेरा ही आशय निकलता है।

वह दिन कब आवेगा जब मैं अपने अस्तित्व के इन प्रकट वस्त्रों को फाड़ कर उसी प्रकाश में लवलीन हो जाऊँगा।

उस समय मेरा दिल उसके रूप के प्रकाश में मिलकर विलुप्त हो जायगा और मेरे प्राण उसकी चाह के दरिया की लहरों में डूब कर विलीन हो जायँगे।

(१०)

यद्यपि वर्षों से तूने मुझे अपना मुख नहीं दिखलाया है, परन्तु इससे यह नहीं हो सकता कि तेरा प्रेम मेरे हृदय से दूर हो जावे।

हर जगह, चाहे किसी भी अवस्था में मैं होऊँ तू मेरे हृदय के अन्दर वर्त्तमान रहता है। मेरे साथ कोई भी हो, पर दृष्टि के सम्मुख सदैव तेरा ही स्वरूप उपस्थित रहता है।

(११)

यारब मददे कज़ दुईए ख़ुद बेरेहम।
वज़ बद बेबरस वज़ बदीए .ख़ुद बेरेहम ॥
दर हस्तिए .ख़ुद मरा ज़े .ख़ुद बेख़ुद कुन।
ता अज़ .ख़ुदी, ओ बेख़ुदीए .ख़ुद बेरेहम ॥

आँरा के फ़ना शेवओ फ़क्र आईनस्त।
ना कश्फ़ो इक़ीं ना मार्फ़त ना दीनस्त ॥
रफ़्त ऊ ज़े मियाँ हमीं .ख़ुदा मानंद .ख़ुदा।
अलफ़क़्रो इज़ातम्मह हुवल्लाह ईनस्त ॥

(१२)

अज़ नेस्तीस्त ईं कि फ़नाए .ख़ेशतन मीख़ाही।
अज़ ख़िर्मने हस्तियत जूए गी काही ॥
ता यकसरे मू ज़े ख़ेश्तन आगाही।
गर दम ज़नी अज़ राहे फ़ना गुमराही ॥

---

(११)

हे ईश्वर मेरी सहायता कर जिससे मेरा अहंकार मिट जावे। मेरी सभी कुभावनाएँ दूर हो जावें और हृदय की मलिनता काफ़ूर हो जावे।

तू इतनी कृपा मेरे ऊपर दिखला दे कि जिससे अपनत्व को भूल कर मैं मतवाला हो जाऊँ और .ख़ुदी और मस्ती में किसी प्रकार का अन्तर न ज्ञात कर सकूँ।

जब मनुष्य इस अवस्था में पहुँच जाता है, वह पूर्ण उदासी हो जाता है और उसे धर्म इत्यादि से कोई सम्बन्ध नहीं रह जाता है।

ऐसा मनुष्य स्वयं किसी प्रकार का अस्तित्व न रखकर ब्रह्मस्वरूप हो जाता है। पूर्ण योगी वही होता है जिसमें ईश्वर के अतिरिक्त और किसी प्रकार की भावना नहीं रहती।

(१२)

तुझे यह स्मरण रखना चाहिये कि अपना आपा खो देने के लिये अस्तित्व का ज्ञान अणुमात्र भी हृदय में न रखना चाहिये।

यदि उसका अणुमात्र भी ज्ञान रहेगा तो अपनत्व को बिसार देने का दावा करना ही व्यर्थ है।

(१३)

तौहीद बउर्फ़े सूफ़िए साहबे सैर।
तख़लीसे दिल अज़ तवज्जहे ऊस्त बग़ैर॥
रम्ज़े ज़े निहायत मुक़ामाते तुयूर।
गुफ़्तम बतो गर फ़ह्म कुनी मंतिक़ेतैर॥

(१४)

ऐ बुलबुले जाँ मस्त ज़े यादे तो मरा।
वै मायए ग़म पस्त ज़े यादे तो मरा॥
लज़्ज़ाते जहाँरा हमा दर पाए फ़िगन्द।
ज़ौक़े कि देहद दस्त ज़े यादे तो मरा॥

(१५)

बर ऊदे दिलम नवाख़्त यक ज़मज़मा इश्क़।
जाँ ज़मज़मा अम ज़े पाए ता सर हमा इश्क़॥
हक्क़ा कि ब अहदहा नयायम बेरूँ।
अज़ ओहदए हक़ गुज़ारीए यकदमा इश्क़॥

---

(१३)

ऐ ईश्वर की खोज करने वाले! तुझे इस मार्ग पर चलने के लिये उसे छोड़कर सभी वस्तुओं से दिल को हटा लेना है।

मैं तुझ पर सन्यासियों के अन्तिम पद का एक रहस्य प्रकट कर रहा हूँ। यदि तू उनकी बातें समझता है, तो इसको भी समझ जा।

(१४)

कि हे मेरे प्राणों के स्वामी! तेरी स्मृति में यह हृदय मतवाला हो रहा है और शोक की पूँजी घटने लगी है।

तेरी याद में जो आनन्द मुझे प्राप्त होता है उसने तमाम ससार के मजों को अपने पैरों से रौंद डाला है।

(१५)

मेरे हृदय रूपी सितार पर, प्रेम ने एक ऐसी गति बजा दी है, जिसके प्रभाव से मैं सर से पैर तक प्रेम ही प्रेम हो गया हूँ।

सच तो यह है कि मैं सहस्र मुख से भी प्रेम को पूर्णतया धन्यवाद देने में सफल न हो सकूँगा।

(१६)

या मन बहवाका बिलरूहे समेहतो ।
हम फ़ौक़िओ हम तहतियो ना फ़ौक़ो न तहत ॥
ज़ाते हमा जुज़ वजूद क़ायम बवजूद ।
ज़ाते तू वजूदे साज़िजो हस्तिए बहत ॥

बस बेरंगस्त यारे दिलख़ाह ऐ दिल ।
क़ाने न शवी बरंग नागाह ऐ दिल ॥
अस्ले हमा रंगहा अज़ाँ बेरंगस्त ।
मन अहसना सिबग़ातम मिनल्लाहए दिल ॥

(१७)

हस्ती बक़यासो अक़्ले असहाबे क़यूद ।
जुज़ आरिज़े आयाँनो हक़ायक़ न नमूद ॥
लेकिन बमुकाशफ़ाते अरबाबे शहूद ।
आयाँ हमा आरिज़न्दो मारूज़ वजूद ॥

(१६)

परमात्मन् ! तेरी लगन में मैंने अपने प्राणों तक को न्योछावर कर दिया है । तू सर्वत्र व्याप्त है किन्तु तुझे ऊपर नीचे कहीं भी नहीं कह सकते ।

सभी वस्तुएँ तुझी से उत्पन्न हुई हैं परन्तु तू सब से अलग है । सब के जीवन का सम्बन्ध तुझ से है, परन्तु तेरा जीवन किसी से भी सम्बन्धित नहीं है ।

वह नितान्त पवित्र और निर्मल है । वह मित्र, जिसको हृदय चाहता है बिल्कुल बेरंग है । उस पर एक भी निशान नहीं है । ऐ हृदय ! तू कहीं रंग पर ही सब्र मत कर लेना ।

तमाम अंग केवल उसी बेरंग को प्रकट कर रहे हैं । ऐ दिल ! यह समझ ले कि ईश्वर रंगरहित होकर भी सब रंगों से बढ़कर है ।

(१७)

हस्ती ईश्वर के प्रकाश को प्रकट करने वाली एक वस्तु है अन्यथा शब्दों में इसका वर्णन ही नहीं हो सकता है ।

अब यह प्रश्न उठता है कि वह मुख्य मुख्य वस्तुएँ कौन सी हैं जिन्हें हस्ती अपने अन्दर धारण किए हुए है । वह वस्तुएँ हैं कुछ विशेषता रखने वालीं । उनकी सत्यता उस पर प्रकट है ।

(१८)

बा गुल रुखे ख़ेश गुफ़्म ऐ गुंचे देहाँ।
हर लहज़ा मपोश चेहरा चूँ अश्वा देहाँ॥
ज़द ख़न्दा कि मन बअक्से ख़ूबाने जहाँ।
दर पर्दा अयाँ बाशमो बे पर्दा नेहाँ॥

रुख़सारे तो बेनक़ाब दीदन न तवाँ।
दीदारे तो बेहिजाब दीदन न तवाँ॥

मादाम कि दर कमाले इशराक बुवद।
सर चश्मए आफ़ाब दीदन न तवाँ॥

ख़ुर्शीद चू बर फ़लक ज़नद रायते नूर।
दर परदा तू वो ख़ीरा शवद दीदा ज़े दूर॥
वाँदम कि कुनद ज़े पर्दए अब्र ज़हूर।
फ़न्नाज़िरो इल्महो ईलैहे मिन ग़ैरे क़ुसूर॥

(१९)

दामाने ग़िनाए इश्क़ पाक आमद पाक।
ज़ालूदगिए वजूदे बा मुश्ते ख़ाक़॥

---

(१८)

मैंने अपने गुलाब के से मुखवाली प्रियतमा से कहा कि ऐ सुन्दरी ! तू मानिनियों के समान अपने मुख को सदैव छिपाये न रखा कर।

उसने हँस कर उत्तर दिया कि मैं तो संसार की अन्यान्य प्रेमिकाओं से बिल्कुल भिन्न हूँ। मैं पर्दे के भीतर साफ़ दिखलाई देती हूँ, परन्तु उसके बाहर छिपी रहती हूँ।

जब तक तेरे मुख पर नक़ाब न पड़ा हो उसका दिखाई देना असम्भव है। और तेरी सूरत बिना पर्दे के दृष्टि में ही नहीं आ सकती।

जिस समय सूर्य, अकाश में पूर्ण रूप से प्रकाशित होता है, उस समय उसका देखना नामुमकिन है।

यदि तू पर्दे के भीतर भी हो तब भी पूर्णरूप से प्रकाशित देखने में, तेरी आँखें दूर से ही चौंधिया जाती हैं।

परन्तु, इसके विपरीत जब वह बादलों के अन्दर होता है तब सरलता से देखा जा सकता है।

(१९)

प्रेम का अञ्चल बिल्कुल पवित्र और अदाग़ है। वह किसी पर अवलम्बित नहीं है। उसका अस्तित्व एक मुट्ठी धूल के साथ सम्बद्ध नहीं हो सकता।

चूँ जल्वागरो नज़ारगाए जुम्ला .खुदस्त ।
गर मा व तू दर्मियाँ न बाशेम चे बाक ।।

हर शारों सिफ़त कि हस्तिए हक़ दारद ।
दर .खुद हमा माल्मो मोहक़्क़क़ दारद ।।
दर ज़िम्ने मुक़य्यदात मोहताज बख़्शेश ।
अज़ दीदने आँ ग़िनाए मुतलक़ दारद ।।

वाजिब ज़े वजूद नेको बद मुसतग़नीस्त ।
वाहिद ज़े मरातिबे अदद मुसतग़नीस्त ।।
दर .खुद हमा रा चू जावदाँ मी बीनद ।
अज़ दीदने शाँ बुरूँ ज़े .खुद मुसतग़नीस्त ।।

वह सब को प्रकाश और पवित्रता प्रदान करने वाला है। यदि हम और तुम दोनों उसके बीच में न रहें तब भी उसकी कोई हानि नहीं हो सकती।

उसके लिये किसी ऐसे मध्यस्थ की, जिसमें होकर वह अपने आपको प्रकट कर सके, आवश्यकता नहीं है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो ईश्वर के सभी गुणों और विशेषताओं में वर्त्तमान है।

फिर उसको क्या पड़ी है कि वह अपने आपको अन्य वस्तुओं द्वारा प्रकट करे।

उसको उचित और अनुचित, भले और बुरे किसी की भी पर्वाह नहीं है। उसको प्रतिष्ठा और उसके दर्जों की कोई चिन्ता महीं है।

जब वह सब को सदैव अपने अन्दर ही देखता है तो फिर उसको अपने से बाहर देखने की उसको क्या पर्वाह है ?

शब्दार्थ

पृ० ८—मंसूर हल्लाज : एक बहुत बड़े सूफ़ी भक्त थे, जिन्होंने घोषित किया था कि 'मैं सत्य हूँ।' उनके ऊपर धर्म-विरोध का दोष लगाया गया और ऐसे निडर वाक्यों को कहने के कारण उनको फांसी की सज़ा दी गई, क्योंकि उलमाओं की राय में ऐसे बचन इस-लाम धर्म के विरुद्ध थे। सूफ़ी उनको बहुत पूज्य और प्रतिष्ठित समझते हैं और महान सिद्ध पुरुष की तरह मानते हैं।

पृ० १०—याक़ूब : एज़क के पुत्र और एक सिद्ध पैग़म्बर थे जिनका हवाला क़ुरान में 'कुल के प्रधान' की तरह दिया गया है। वह यूसुफ़ के पिता थे।

पृ० १०—यूसुफ़ : क़ुरान में विस्तृत विवरण दिया हुआ है। "जामी" ने इनकी प्रेम कहानी को अपनी पुस्तक 'यूसुफ़ व ज़ुलेख़ा' में अमर बना दी है। वे अपनी शुद्धता के आदर्शों के लिये प्रसिद्ध हैं। एक बार जब वह अपने पिता और भाइयों सहित मिश्र जा रहे थे तो उनके डाही भाइयों ने उनको एक कुएं में ढ़केल दिया, किन्तु वह बच गये। बाद को मिश्र की शाहज़ादी ज़ुलेख़ा का उनके प्रति प्रेम हो गया। ज़ुलेख़ा बुराई की ओर उन्हें ले जाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर उनको क़ैदख़ाने में बंद कर दिया गया। जांच करने के बाद वह निर्दोष पाये गये, और छोड़ दिये गये।

पृ० ११—फ़रहाद व शीरीं : फ़रहाद एक महान प्रेमी था, जो शाहज़ाही शीरीं के प्रेम में फंस गया था। शीरीं ने उसकी बहुत कठिन परीक्षा ली जैसे पहाड़ में से नहर निकलवाई। लेकिन उसने उस कार्य्य को पूरा किया। किन्तु शीरीं ने अपने वादे को पूरा करने से इन्कार कर दिया। तब उसने अपनी आत्महत्या कर ली। अपने सच्चे प्रेमी की मृत्यु को सुनकर शीरीं ने भी अपने प्राण त्याग दिये। "निज़ामी" ने अपनी कविताओं से इस घटना को अमर कर दिया है।

पृ० १२—यमन : अरब का दक्खिनी-पश्चिमी भाग है, और उपजाऊ होने के कारण अरब का बाग़ कहा जाता है।

पृ० १२—ख़ुतन : तातारियों का स्थान।

पृ० १५—असहाबे क़हफ़ : 'गुफ़ा के साथी' : क़ुरान में इसका उल्लेख किया गया है। जब समराट डेसिको ईसाइयों को सताता था, तब सात नवयुवक एक गुफ़ा में छिप गये। उस अत्याचारी ने

गुफ़ा का मुंह बंद करवा दिया लेकिन उनको रास्ता मिल गया और उनकी कोई हानि नहीं हुई और अद्भुत रूप से बच गये।

पृ० २१—अफ़लातून : यूनान का एक बहुत बड़ा दार्शनिक था।

पृ० २२—क़ारूँ : मूसा पैग़म्बर के देश का था। वह अपनी सम्पत्ति के लिये प्रसिद्ध था। मूसा के विरुद्ध विद्रोह करने और अपनी दौलत के घमण्ड के कारण उसको सज़ा मिली।

पृ० २२—जैहूँ : स्वर्ग-लोक की एक नदी का नाम है।

पृ० २८—इब्राहीम : छे पैग़म्बरों में से एक हैं, और 'परमात्मा के मित्र' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीनों इसको अपने पैग़म्बरों में से मानते हैं।

पृ० २८—इसराफ़ील : एक स्वर्गदूत है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह प्रलय के दिन तुरही बजाकर मरे हुए लोगों को जगावेगा।

पृ० ३३—ज़ुलक़रनैन : यूनान का सम्राट, सिकन्दर : कोई बहादुर पुरुष जो इबराहीम के समय में रहता था।

पृ० ३५—फ़िरऔन : मूसा के समय में मिश्र का बादशाह था। वह लाल सागर में डूब कर मर गया।

पृ० ३९—सलमान: अली के मित्र का नाम।

पृ० ६२—क़यामत : प्रलय।

पृ० ६३—जुब्बा : सर का पहनावा।

पृ० ६३—सूफ़ : ऊनी लबादा जो सूफ़ी पहनते हैं।

पृ० ६३—सीमुर्ग़ : एक चिड़िया।

पृ० ६५—लुक़मान : एक बहुत बड़ा दार्शनिक जो अपनी बुद्धिमत्त के लिये मशहूर है। यूनानी उसको एसाप कहते हैं।

पृ० ७०—तयम्मुम : जहां पर नमाज़ के वज़ू के लिए पानी नहीं मिलता है, वहाँ मुसलमान नमाज़ी बालू का प्रयोग करते हैं, जिस क्रिया को इस नाम से पुकारा जाता है।

पृ० ७५—तरसा : मूर्तिपूजक : ईसाइयों को भी इस नाम से पुकारते हैं।

पृ० ७६—दफ़ व चंग : बाजों के नाम।

पृ० ८३—जिबराइल : स्वर्ग का दूत, जिसके द्वारा मुहम्मद साहब पर क़ुरान उतारी गई : कभी २ ईसाइयों के पाक दूत को भी इस नाम से बतलाया गया है।

पृ० ८६—ख़ुतबा : शुक्रवार की प्रार्थना। इसकी महत्ता यह है कि पैग़म्बर अकसर इस दिन उपदेश किया करते थे।

पृ० ८७—हातिफ़ : अदृश्य बोलने वाला : आकाश वाणी।

पृ० ९३—तौक़े सुरैया : एक गृह।

पृ० ९८—क़ैक़ुबाद : ईरान के एक प्रसिद्ध बादशाह का नाम।

पृ० १०२—संजर : ईरान के एक बादशाह का नाम।

पृ० १११—कुफ़्र : धर्मविरोध और अविश्वास। मुसलिम, मूर्ति पूजकों और अग्निपूजकों के मत को 'कुफ़्र' कहा करते थे।

पृ० ११६—ज़ुन्नार : माला।

पृ० १२२—तसबीह : माला।

पृ० १३४—मुसहफ़ : पूजा करने का आसन।

पृ० १३५—ख़िर्क़ा : सूफ़ी का लबादा।

पृ० १६१—अनलहक़ : मंसूर अल हल्लाज इन शब्दों को कहा करते थे 'मैं ख़ुदा हूँ, इस धर्म्मविरोध के लिये मुसलमानों ने उनको सूली पर चढ़ा दिया।

पृ० १६८—ईसा : ईसाइयों के पैग़म्बर। मुसलमानों ने इनको भी स्वीकार किया है।

पृ० १६९—मरियम : ईसा की माँ।

पृ० १९४—चलीपा : छोटा सलीब, जिसको ईसाई कमर में पहनते थे।

पृ० १९४—नसरानियाँ : ईसाई।

पृ० १९४—कोह क़ाफ़ : पहाड़ों का एक समूह। मुसलमानों का यह विश्वास है कि वहाँ पर जिनों और राक्षसों का निवासस्थान है। अक्सर काकेशस पहाड़ के लिये प्रयोग किया जाता है।

पृ० १९४—इब्नसीना : अरब का एक बहुत बड़ा मुस्लिम दार्शनिक।

पृ० १९४—क़ौस : ग्रहों का एक क्रम।

पृ० २०५—मजनूँ व लैला : जामी की लिखी हुई बहुत बड़ी प्रेमकहानी के प्रधान पात्र।

पृ० २०७—मुफ़्ती : वह हाकिम जो क़ानून बनाता है। वह क़ाज़ी को सहायता देता है और उसको अपना फ़तवा भी देता है। क़ुरान और हदीस का बड़ा ज्ञाता माना जाता है।

पृ० २०९—ख़लील : इब्राहम का दूसरा नाम।

पृ० २०९—नमरूद : एक ईश्वर-विरोधी बादशाह था जिसने इब्राहीम को सताया था और एक बार आग में फेंक दिया था, किन्तु संयोग वश वह बच गये। एक बार उसने जब इब्राहीम पर चढ़ाई की

तो उसकी सेना के लोगों में एक ऐसी अव्यवस्था फैल गई कि एक दूसरे की बोली न समझकर आपस में लड़-कट कर मर गए। एक मच्छड़ नमरूद की नाक में घुस गया, जिसके कारण उसे बहुत पीड़ा हुई और उसी रोग में उसकी मृत्यु हो गई।

पृ० २१५—यूनस : एक पैग़म्बर था। जब वह परमात्मा के उपदेश की शिक्षा देता था तो कोई नहीं सुनता था। किन्तु उसको एक मछली निगल गई। इस प्रकार वह सज़ा पाने से बच गया। बाद में वह मछली दिखाई पड़ी और वह बाहर निकल आया।

पृ० २२४—बैतुलमुक़द्दस : 'पवित्र-घर' : जेरूसलम के मन्दिर को यह नाम दिया गया है।

पृ० २२६—अलस्त, कालूबला : जिस समय सृष्टि हुई उस समय ईश्वर ने फ़रिश्तों से कहा, 'कहो मैं तुम्हारा स्वामी हूँ, उन्होंने इसे स्वीकार किया। अरबी शब्द, अलस्त, का शाब्दिक अर्थ है 'मैं तुम्हारा खुदा हूँ और कालूबला, का अर्थ है 'तू मेरा ख़ुदा है।'

पृ० ६५—मुहम्मद : हज़रत साहब के नाम से भी विख्यात हैं। इसलाम धर्म के पैग़म्बर और प्रवर्तक हैं।

पृ० २६५—अबूजेहल : पैग़म्बर मुहम्मद के चचा थे और अकसर उनसे लड़ा करते थे।

पृ० २८९—मूसा : छे पैग़म्बरों में से एक थे और इसलिए प्रसिद्ध थे कि परमात्मा के साथ बातचीत किया करते थे। उस समय फ़रऊन मिश्र में शासन करता था, और इसराईल के लड़कों को सताता था। इसका कारण यह था कि वह अपना साम्राज्य उन लड़कों में से एक के द्वारा खोने को था। वह लड़का मूसा था। उसने फ़रऊन को नष्ट कर दिया और इसराइलियों को बचा लिया और उन्हें क़ानून बतलाया और अच्छे चाल चलन का उपदेश दिया। उसने एक मर्तबा भगवान से प्रार्थना की कि तेरी शान देखा चाहता हूँ। तब तूर पहाड़ पर एक ज्योति प्रगट हुई। मूसा मूर्छित हो गया और तूर पहाड़ जल गया।

पृ० २९१—इबलीस : एक पिशाच है। पहले वह भूत प्रेत और जानवरों पर शासन करता था। किन्तु जब उसका जन्म हुआ और उसने आदम के सामने झुकने से इनकार किया, तब वह स्वर्ग के बाग़ से निकाल दिया गया।

पृ० ३०२—शेख़ : प्रधान मौलवी को कहते हैं। यह बहुत आदरणीय होता है।

पृ० ३२६—मोहतसिब : धर्म और लोगों के चालचलन का निरीक्षक होता है। मुस्लिम शासक इसको नियुक्त करता है कि वह धर्म की रीति-रिवाज के विपरीत चलनेवाले मुसलमानों को सज़ा दे।

पृ० ३२९—तूबा : स्वर्ग का एक वृक्ष।

पृ० ३८८—सिदरा : एक पेड़ है जो सातवें आकाश में है, और जिसकी जड़ छटवें आकाश में है। इसके फल घड़े की तरह होते हैं और पत्तियाँ हाथी के कान की तरह।

पृ० ३५३—सामरी : एक जादूगर जो मूसा से लड़ा, लेकिन उसके जादू की मूसा के असा (लाठी) के सामने कुछ बन न पड़ी।

पृ० ३८५—ख़िज़्र : कुछ लोगों द्वारा पैग़म्बर माने जाते हैं और अब भी जीवित समझे जाते हैं। वह सूफ़ियों की सहायता करते हैं और मूसा के साथी समझे जाते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि उन्होंने जीवन-रूपी झरने को प्राप्त कर लिया है जिससे वह जल पिया करते थे। वह हर एक काल के समकालीन व्यक्ति समझे जाते हैं और एक बड़े पथप्रदर्शक हैं।

पृ० ३९२—गब्र : एक बहुत पुराने मज़हब का नाम है। दानियाल इनका पैग़म्बर था। वे अग्नि की पूजा करते थे और अग्नि को परमात्मा का स्वरूप मानते थे। मूर्ति-पूजा को घृणा की दृष्टि से देखते थे। ज़ारूसथर ने इस धर्म में सुधार किया और इसके समर्थक प्रधानतः ईरान में थे जहाँ पर इसकी वृद्धि हुई, हिन्दुस्तान में वे पारसी के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी मज़हबी किताब 'ज़ेन्दावस्ता' है।

—